असम प्रवाह

असम प्रवाह

गोपाल जालान

विशाल प्रकाशन

राजगढ़, गुवाहाटी-3

Assam Pravah

A colletion of various articless written in Hindi by
Gopal Jalan and Published by Brajendra Nath Deka of
behalf of Bishal Prakasha, Rajgarh, Guwahati-3.

First Edition : March, 2023 Price : Rs. 200/- Only

असम प्रवाह

प्रकाशक : ब्रजेंद्र नाथ डेका
विशाल प्रकाशन, राजगढ़, गुवाहाटी-3
फोन : 98640-38814
लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम प्रकाश : मार्च, 2023
मूल्य : 200/- रुपए
मुख्य पृष्ठ : मनजीत मालाकार
डी.टी.पी. : केदार नाथ दास
मुद्रण : शराईघाट फोटो टाइप
बामुनीमैदाम, गुवाहाटी-21

सादर-समर्पित

पुज्यनीय पिताश्री स्वर्गीय वासुदेव जालान
और माताश्री स्वर्गीय पुष्पा देवी जालान की
पवित्र स्मृति में यह पुस्तक समर्पित करता हूं।

- गोपाल जालान

लेखक के दो शब्द

ब्रह्मपुत्र गवाह है 'असम प्रवाह' सदियों से जारी है। अपने काल प्रवाह के दौरान असम ने बहुत कुछ देखा है, महसूस किया है और सहन भी किया है। कहते हैं समय का प्रवाह कभी रुकता नहीं है, मगर असम परिवर्तनशील है। जो कल था, वह आज नहीं है और जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। अपने साथ बदलाव की निरंतरता को लिए समय का पहिया बिना रूके-बिना थके हमेशा घूमता रहता है। ठीक उसी तरह जैसे 'असम प्रवाह' जारी है। समय को कोई भी रोक नहीं सकता, लेकिन वर्तमान और भूतकाल की महत्वपूर्ण घटनाओं को तो सहेजकर रखा ही जा सकता है। 'असम प्रवाह' ऐसी ही महत्वपूर्ण घटना-दुर्घटनाओं का एक लेख संग्रह है, जिन घटनाओं ने हमारे सामाजिक जीवन के साथ ही देश-दुनिया को जागृत करने और मनन-चिंतन करने को प्रेरित किया। कलमकार, चित्रकार, कलाकारों में ही अपनी कलाओं के दम पर समय को एक ही स्थान पर रोककर रखने की क्षमता होती है। याद कीजिए प्राचीन गुफाओं

की दीवारों पर हजारों साल पहले उकेरी गई चित्रकारी और ताम्रपत्र-भोजपत्र पर उस जमाने की लिखी गई बातें । हजारों साल गुजर जाने के बाद भी समय वहीं ठहरा हुआ सा लगता है। मौजूदा पीढ़ी की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि वह अपनी आने वाली पीढ़ी को गुजरे जमाने की घटनाओं के बारे में बताए। युवा पीढ़ी को यह भी बताए कि उनके समय घटी किसी घटना ने समाज और देश-दुनिया को किस तरह से प्रभावित करने वाली थी और किसी घटना से बचा जा सकता था। इसी नजरिए को सामने रखकर प्रस्तुत लेख संग्रह 'असम प्रवाह' आपके सामने है।

मेरे इस लेख संग्रह में शामिल किए गए सारे लेख हिंदी दैनिक 'दैनिक पूर्वोदय' के अलावा राज्य के अन्य असमिया दैनिकों में प्रकाशित हो चुके हैं। दैनिक पूर्वोदय के प्रबंधन मंडल एवं संपादक मंडल के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं कि मेरे लेख को अखबार के नियमित स्तंभ में प्रकाशित किया। मैं उन सभी पाठकों का भी धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने मेरे लेख पढ़ने के बाद मेरा हौसला बढ़ाया और अपने बहुमूल्य सुझाव भी दिए। मैं विशाल प्रकाशन के प्रमुख ब्रजेंद्र नाथ डेका के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मेरे लेख-संग्रह को पुस्तक के आकार में प्रकाशित किया। 'असम प्रवाह' की सार्थकता पर विचार करने की जिम्मेदारी अपने पाठकों पर सौंपता हूं।

- गोपाल जालान

सूची पत्र

1. बंद हो रैगिंग का प्रचलन 15
2. वीर लाचित बरफूकन का 400वां जयंती समारोह संपन्न, अब इससे आगे क्या? 17
3. राष्ट्रीय राजधानी में लाचित दिवस के मायने 20
4. वीर लाचित बरफूकन 20
5. 'असम की बेटी' राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 23
6. चुनौतियों के भंवर में भ्रम्यमान थिएटर 25
7. हर घर तिरंगा कार्यक्रम 28
8. देश को हिंसा स्वीकार्य नहीं 31
9. पूरे राष्ट्र की मानव संपदा है मेधावी बच्चे 33
10. अष्टलक्ष्मी पूर्वोत्तर 35
11. गोरुखूंटी 38
12. 'द काश्मीर फाइल्स' 40
13. युद्ध नहीं बुद्ध की ओर लौटें 42
14. लोकप्रियता की ओर डॉ. हिमंत विश्व शर्मा 44
15. हिजाब और किताब 47
16. मारवाड़ी बिहू 50
17. मोदी की 'मन की बात' में असम 52
18. डीएसपी लवलीना बरगोहाईं 54
19. मोबाइल फोन की सुली पर मानवता! 56
20. माता-पिता के साथ चार दिन 58
21. संवेदनशील सरकार शहीदों का सम्मान 60
22. कृपया यहां न थूकें 62
23. बराकघाटी और भाषा विवाद 64
24. अतिक्रमण समर्थन योग्य नहीं 66
25. असम में पर्यटन की संभावनाएं 68
26. सरकार के सौ दिन 71

27. 'सबका प्रयास' 73
28. पूर्वोत्तर राज्यों का सीमा विवाद कहीं नासूर न बन जाए 75
29. असम-मिजोरम की सुलगती सीमा 77
30. संकल्प लें, स्वयं को सभ्य और अनुशासनप्रिय नागरिक बनने का . 79
31. जनहित जनसेवार्थ असम पुलिस 82
32. नए स्वरूप में असम पुलिस..... 84
33. जन आंदोलन बनें टीकाकरण अभियान 86
34. आने वाली पीढ़ी का अधिकार है शांतिमय असम..... 88
35. राज्य के15वें मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा 90
36. दवाई, कड़ाई नहीं समझदारी से ही रुकेगा कोरोना का तांडव 92
37. डरें नहीं, हिम्मत से करें कोरोना का मुकाबला 94
38. कोरोना की दूसरी लहर की चपेट में असम..... 96
39. जनप्रतिनिधि, जवाबदेही और जिम्मेदारी..... 98
40. असम के महापुरुषों के बारे में देश-दुनिया को बताएगा कौन..... 100
42. वर्ष 2020 : निराशा के बीच कुछ सफलताएं 102
43. नए साल का पैगाम : जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं 104
44. किसान आंदोलन : आमने-सामने है किसान और सरकार..... 106
45. कोरोनाकाल के बदलते मौसम में सतर्कता पहली शर्त..... 108
46. वोकल फॉर लोकल 110
47. मेरी गुवाहाटी, हमारी गुवाहाटी..... 112
48. असम-मिजोरम सीमा विवाद 114
49. कोविड-19 के साए तले दुर्गा पूजा..... 116
50. सवालों के घेरे में बालीवुड..... 118
51. कोविड-19 के कहर से परेशान बच्चे-बुजुर्ग 120
52. त्योहार से अधिक सुरक्षा जरूरी है..... 122
53. भारतीय वायु सेना का स्वाभिमान है राफेल 124
54. 'का'- कोविड-19, लॉकडाउन और जीएस रोड 126
55. लॉकडाउन : गुवाहाटी महानगर पुलिस तुझे सलाम 128
56. लॉकडाउन क्या कोरोना संक्रमण का एक मात्र हल है 130

57. गुवाहाटी का लॉकडाउन अच्छा है 132
58. कोरोना के संग रहकर ही बनना होगा अत्मनिर्भर 135
59. कोरोना से बचाव, अपनी सावधानी अपने हाथ 138
60. असम के स्वास्थ्य जगत को सलाम 140
61. बढ़ता कोरोना, परेशान सरकार 142
62. लॉकडाउन-4.0 का संदेश, अपनी आदतें बदलें-आत्मसंयमी बनें 144
63. आत्मनिर्भरता के दम पर 21वीं सदी भारत की होगी 146
64. जनता के द्वारा, जनता की खातिर, जनता का लॉकडाउन 148
65. लॉकडाउन : असम पुलिस को एक सैलूट तो बनता है 150
66. सामने से नेतृत्व दे सकनेवाला ही असली जनप्रतिनिधि 152
67. जल ही जीवन है 155
68. कोरोना वायरस 158
69. दंगों की आग : सरकारी संपत्ति का नाश 160
70. असम का मानचेस्टर और साहित्य सभा 162
71. परिपक्व होता लोकतंत्र 164
72. तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स और असमवासियों की खेल भावना 166
73. विवादों के घेरे में है देश का सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान जेएनयू 168
74. 21वीं शताब्दी के नए दशक के कुछ संकल्प 171
75. एनआरसी, 'का' और एनपीआर 174
76. किसने लगाई गुवाहाटी को आग 176
77. प्रदूषित दिल्ली, प्रदूषित गुवाहाटी का पानी 178
78. नलबाड़ी-माजुली का रासोत्सव 180
79. निर्मल ब्रह्मपुत्र 182
80. अमरीका के ह्यूस्टन में हाउडी मोदी 184
81. चंद्रयान-2 186
82. एनआरसी 188
83. अनुच्छेद 370 190
84. 'एक राष्ट्र- एक लाइसेंस' व्यवस्था लागू हो 193
85. तीन तलाक बिल 195

86. एक अपील, संपन्न लोग सरकारी सब्सिडी छोड़ें..... 197
87. असम की भीषण बाढ़ 199
88. कैसे होगा खेल प्रतिभाओं का विकास..... 201
89. रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला और तामुलबाड़ी चाय बागान 203
90. अंबुवासी मेला..... 205
91. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, भारत का उपहार..... 207
92. कमजोर विपक्ष, कमजोर लोकतंत्र 209
93. प्रचंड जनमत 211
94. ध्यानमग्न नरेंद्र मोदी 213
95. पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका 215
96. असम की जीवन रेखा है ब्रह्मपुत्र..... 217
97. किधर जा रही है युवा पीढ़ी 219
98. लोकतंत्र की बुनियाद है मतदान..... 221
99. स्वच्छ हवा : सौ बीमारी की एक दवा 223
101. भारत ने आंतरिक्ष में भी लहराया अपना परचम 225
102. गहराता जल संकट 227
103. पाक की शह पर भारत में चल रहा है आतंक का खेल 229
104. एनआरसी..... 231

बंद हो रैगिंग का प्रचलन

हमारे देश के शैक्षणिक जगत में 'रैगिंग' आज भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। देश के किसी न किसी हिस्से के उच्च शिक्षण संस्थान से हर साल रैगिंग संबंधी घटनाएं सामने आती रहती है। सरकार और शिक्षण संस्थानों के प्रबंधन द्वारा लाख कोशिशें करने के बावजूद रैगिंग के नाम पर नवागत विद्यार्थियों को शारीरिक व मानसिक रूप से उत्पीड़ित किए जाने की घटनाएं खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। शिक्षण संस्थानों में रैगिंग का प्रचलन बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है किसी को योजनाबद्ध रूप से सताना। अक्सर कॉलेज में नव प्रवेश पाने वाले छात्रों के साथ कॉलेज के वरिष्ठ छात्र प्रथम परिचय के तौर पर रैगिंग करते हैं। एक समय तक यह सामान्य परिचय प्रक्रिया थी, मगर आज यह कनिष्ठ छात्रों के लिए आतंक का पर्याय बन चुका है।

हर साल देखा जाता है कि बच्चे जिस उत्साह के साथ किसी बड़े शिक्षण संस्थान में प्रवेश लेते हैं, वह सारा उत्साह रैगिंग के डर से छू-मंतर हो जाता है। कभी-कभी उन्हें रैगिंग के नाम पर इस तरह से प्रताड़ित किया जाता है कि शिक्षण संस्थान में नया दाखिला लेने वाले छात्र लंबे समय तक उससे उबर नहीं पाते। रैगिंग के नाम पर बच्चों को कई बार तो बेहद शर्मनाक तथा अपमानजनक स्थिति से भी गुजरना पड़ता है। इससे उनके मन में कुंठा घर कर जाती है और वे आत्महत्या करने जैसा गलत कदम भी उठा लेते हैं। युवाओं को प्रताड़ित करने

वाली यह रैगिंग प्रथा आज की उभरती हुई एक भयानक समस्या है, लिहाजा समय रहते इस पर गंभीरता से विचार-विमर्श कर इसे रोकने के लिए कठोर कानून बनाने की आवश्यकता है। कई छात्र संगठन एक लंबे अरसे से इसका विरोध करते आए हैं, मगर उनकी बातों की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता है। यही वजह है कि आज बड़े स्तर पर शिक्षण संस्थानों में रैगिंग की समस्याओं से जुड़े मामले सामने आ रहे हैं।

हमारे देश में रैगिंग के इतिहास में वर्ष 2009-10 का सत्र बेहद खराब रहा, जिसमें सर्वाधिक संख्या में छात्रों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा अथवा उन्होंने कॉलेज आना ही छोड़ दिया। आज इतने साल गुजर जाने के बाद भी इस स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। रैगिंग की पीड़ा वही युवा समझ सकता है, जिसने रैगिंग के नाम पर किए जाने वाले उत्पीड़न को भोगा है। कभी-कभी वे न तो कुछ बताने की स्थिति में होते हैं और न ही कुछ छिपाने की। इस प्रकार से यदि देखा जाए तो रैगिंग पर पूरी तरह से अंकुश लगाना न तो सरकार के बस की बात है न ही शिक्षण संस्थानों के बूते में है। इसे तो सिर्फ शिक्षक व विद्यार्थी ही रोक सकते हैं, वह भी आपसी सद्भाव व सहयोग से। अब तक का अनुभव बताता है कि कठोरता और नियम कानून के दम पर रैगिंग को नहीं रोका जा सकता है। ऐसे में वरिष्ठ छात्र ही यदि आगे आकर संकल्प लें कि वे अपने कनिष्ठ विद्यार्थियों का रैगिंग न तो स्वयं करेंगे और न ही किसी को करने देंगे तो एक कामयाबी का मार्ग निकल सकता है। किसी भी शिक्षण संस्थान में शिक्षक एवं प्रबंधन के बाद यदि किसी का दबदबा होता है तो वह है वरिष्ठ छात्र। इसलिए शिक्षण संस्थान और वरिष्ठ छात्र इस कुप्रथा के खिलाफ खड़े हो जाएं तो वर्षों से चले आ रहे रैगिंग के सिलसिले को खत्म किया जा सकता है। कॉलेज में आने वाले नवागतों से परिचय हो, परिचय के नाम पर हंसी-ठिठौली भी हो, कुछ सवाल-जवाब भी हो तो इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन रैगिंग के नाम पर किसी बच्चे को यदि उत्पीड़ित किया जाता है, प्रताड़ित किया जाता है जिसकी वजह से वह मासूम आत्महत्या कर लें तो एक सभ्य समाज में ऐसी हरकत को कैसे गंवारा किया जा सकता है। लिहाजा ऐसी रैगिंग करने की इजाजत किसी भी हालत में नहीं दी जाती।

वीर लाचित बरफूकन का 400वां जयंती समारोह संपन्न, अब इससे आगे क्या ?

देश की राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में आहोम सेनापति वीर लाचित बरफूकन का 400वां जयंती समारोह सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। यह पहला मौका था, जब राज्य सरकार द्वारा आयोजित ऐसे सार्वजनिक कार्यक्रम में असम के पक्ष-विपक्ष के सभी नेता-विधायकों के अलावा केंद्रीय नेताओं ने भाग लिया और किसी ने भी समारोह को लेकर कोई मीन-मेख नहीं निकाली। सभी ने एक स्वर में उक्त कार्यक्रम की प्रशंसा की और सलाह दी कि सरकार को ऐसे कार्यक्रम आयोजित करते रहना चाहिए। दिल्ली में समारोह खत्म होने के बाद

यह सवाल भी उठना लाजिमी है कि अब इससे आगे क्या? लाचित बरफूकन को लेकर जनता में जो जागरुकता और उत्साह का संचार हुआ है, उसे बनाए रखना हम सभी के लिए एक चुनौती होनी चाहिए। दिल्ली में लाचित दिवस का आयोजन कर राज्य सरकार ने एक शानदार शुरुआत कर दी है। अब इस सिलसिले को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी सरकार के साथ-साथ राज्य के विभिन्न संगठनों को भी उठानी पड़ेगी। इस काम के लिए राज्य सरकार भी एक ऐसी कमेटी का गठन कर सकती है, जिस पर लाचित बरफूकन को महिमा मंडित करने और हमारे वीर सेनापति को युवा पीढ़ी तक पहुंचाने की जिम्मेदारी हो। हमें यह बात समझनी होगी कि युवा पीढ़ी ही लाचित बरफूकन के व्यक्तित्व और कृतित्व को जिंदा रख सकती है और अगली पीढ़ी को सौंपने का काम कर सकती है। यह अच्छी बात है कि भारतरत्न सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका की जयंती व पुण्यतिथि पर राज्य सरकार के अलावा विभिन्न गैर सरकारी संगठन राज्य के अलग-अलग हिस्सों के अलावा पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश तक में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। रसराज लक्ष्मीनाथ को लेकर भी कोलकाता और ओड़िसा तक में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। ऐसे कार्यक्रम ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों की स्मृति को बनाए रखने में सहायक साबित होते हैं। हमारे राज्य बहुत से ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों के नाम पर विभिन्न संस्थान-प्रतिष्ठान बने हैं, मगर युवा पीढ़ी उन सभी के बारे में बहुत अधिक नहीं जानती। क्योंकि युवाओं को उनके बारे में बताया नहीं गया। डॉ. बी. बरुवा कैंसर संस्थान में अपने आत्मीय का इलाज कराने के लिए जाने वालों में बहुत कम लोग ही डॉ. भुवनेश्वर बरुवा के बारे में जानते होंगे। प्रमुख असमिया साहित्यकार, आलोचक, विद्वान बानीकांत काकती, जिन्हें आधुनिक असमिया समालोचकों में सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। उनके बारे में भी लोग बहुत अधिक नहीं जानते। ऐसे ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों की जानकारी अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी की सामाजिक जिम्मेदारी है और इसका गंभीरता पूर्वक निर्वहन भी होना चाहिए। लाचित बरफूकन की स्मृति को किस प्रकार संजोकर रखा गया और युवा पीढ़ी को कैसे प्रेरित किया जाए इसको लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह से लेकर विभिन्नजनों की अलग-अलग सलाह-सुझाव आ चुके हैं। किसी

ने नया इतिहास लिखने की जरूरत को रेखांकित किया तो किसी ने लाचित बरफूकन से जुड़े अध्ययन को लिपिबद्ध व अनुवाद को जरूरी बताया। ऐसे और भी सुझाव लिए जाने चाहिए और उन पर चिंतन-मनन किया जाना चाहिए। यह सही समय है जब लाचित बरफूकन को असम की सीमाओं से बाहर देश-विदेश तक ले जाया जा सकता है। इसको लेकर राज्य सरकार के गंभीर प्रयास और केंद्र सरकार की सद्इच्छा हम सभी के सामने हैं। मगर, यह काम अकेले सरकार के बूते का नहीं है। इसके लिए सभी को अपने-अपने स्तर से काम करना होगा। हमारे लाचित बरफूकन को लेकर अभी चार दिन पहले देश की राजधानी से जो संदेश प्रेषित हुआ है, उसकी आवाज पूरी दुनिया में सुनाई देनी चाहिए। राज्य सरकार को एक बार फिर मेरा साधुवाद कि उसने दिल्ली में इतने बड़े व भव्य तरीके से आहोम सेनापति वीर लाचित बरफूकन का 400वां जयंती समारोह मनाया और इस समारोह का गवाह बनने के लिए मुझे भी आमंत्रित किया। आइए, हम सभी लाचित को जन-जन तक पहुंचाने के लिए काम करने का प्रण लें।

राष्ट्रीय राजधानी में लाचित दिवस के मायने

असम के वीर योद्धा-आहोम सेनापति लाचित बरफूकन की 400वीं जयंती देश की राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में मनाई जा रही है। यह पहला मौका है जब लाचित बरफूकन की जन्म जयंती समारोह असम से बाहर और वह भी देश की राजधानी में मनाया जा रहा है, लिहाजा इस आयोजन को लेकर अलग-अलग मायने भी निकाले जा रहे हैं। इन सब के बीच अच्छी बात है कि राज्य के किसी भी व्यक्ति-दल-संगठन ने इस आयोजन को लेकर अभी तक कोई नकारात्मक टिप्पणी नहीं की है। इस तीन दिवसीय जयंती समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, कानून एवं न्याय मंत्री किरेन रिजिजु जैसे राष्ट्रीय नेताओं की उपस्थिति यह बताती है कि राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर इस कार्यक्रम को गंभीरता के साथ लिया जा रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि तीन दिवसीय जन्म जयंती समारोह के आज दूसरे दिन (24.11.2022) भी यहां दिल्ली के विभिन्न महाविद्यालयों के युवा विद्यार्थियों की भारी भीड़ देखी गई। समारोह में आए युवाओं की जिज्ञासा, गंभीरता और जानने-समझने की इच्छा शक्ति को देख यह तो स्पष्ट हो गया कि यह लोग यहां सिर्फ अपना टाइम पास करने नहीं आए हैं। सच में दिल्ली के युवा हमारे लाचित को जानना-पहचानना और समझना चाहते हैं। यह आयोजन इस मायने में भी विशेष है कि राजनेता, राजनीतिज्ञ, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा सहित राज्य के तमाम मंत्री-विधायक, बुद्धिजीवी, लेखक-पत्रकार, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, शिक्षण संस्थानों के प्रमुख, विद्यार्थी लगातार तीन दिनों

से लाचित बरफूकन के व्यक्तित्व, कृतित्व, शौर्य और वीरता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर रहे हैं। राज्य सरकार की ओर से मुझे भी बतौर साहित्यकार-स्तंभकार इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया। राज्य सरकार के आथित्य में मैंने इस आयोजन में शिरकत की और विज्ञान भवन में संपन्न अलग-अलग परिचर्चाओं को सुनने-समझने की कोशिश की। इस कार्यक्रम में आकर मुझे दो बातें पता चली। पहली बात यह है कि देश के लोग असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों के बारे में बहुत कम जानते हैं और दूसरी यह कि स्वाधीनता के सात दशकों में देशवासियों को पूर्वोत्तर क्षेत्र की समुचित जानकारी देने के लिए पिछली सरकारों ने रंच मात्र भी कोशिश नहीं की।

इस बात में तनिक भी शंका नहीं है कि लाचित बरफूकन को लेकर तीन दिनों तक विज्ञान भवन के मंच से जो बातें कही जाएगी वह देश-दुनिया में सुनी जाएगी। अब तक असम की सीमाओं में बंधे रहे वीर लाचित को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पटल तक ले जाने की राह इसी आयोजन से निकलेगी, यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है।

तीन दिवसीय आयोजन के पहले ही दिन मंत्री निर्मला सीतारमण ने विज्ञान भवन में आहोम साम्राज्य, लाचित बरफूकन तथा अन्य वीरों की जीवन की उपलब्धियों पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए असम सरकार से देश भर में इस तरह की प्रदर्शनी आयोजित करने का आग्रह किया है ताकि लोगों को आहोम साम्राज्य की उपलब्धि और लाचित बरफूकन के साहस के बारे में जानकारी मिले। यहां इस बात का जिक्र करना भी जरूरी है कि वर्ष 1999 से भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को लाचित बरफूकन स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है ताकि हमारे सैनिक बरफूकन की वीरता से प्रेरणा लें। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा बार-बार यह बात कहते रहे हैं कि देश के इतिहास में असम के इतिहास की अनदेखी की गई तथा आहोम व कई अन्य साम्राज्य के वीरों को इतिहास में समुचित स्थान नहीं मिल पाया। इस तीन दिवसीय आयोजन के पीछे की मंशा यह है कि इससे देशवासियों को देश के असली नायकों के बारे में जानने में मदद मिले, हमारे लाचित बरफूकन को जानने में मदद मिले।

वीर लाचित बरफूकन

भारत वर्ष के इतिहास के पन्नों को पलटने पर मराठा वीर छत्रपति शिवाजी, मेवाड़ के महाराणा प्रताप सिंह के नाम सुनहरे अक्षरों में चमकते नजर आते हैं। इतिहास में महाराणा प्रताप सिंह का नाम वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ़ प्रण के लिए अमर है। उन्होंने मुगल बादशाह अकबर की पराधिनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष किया। महाराणा प्रताप सिंह ने मुगलों को कई बार युद्ध में भी हराया और पूरे मुगल साम्राज्य को घुटनों पर ला दिया था। अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए उन्होंने एक लंबा समय जंगलों में बिताया, घास की रोटियां तक खाई, मगर अकबर के सामने सर नहीं झुकाया। छत्रपति शिवाजी भोसले भी देश के एक महान राजा एवं रणनीतिकार थे। उन्होंने 1674 ई. में पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नींव रखी और इसके लिए मुगल साम्राज्य के शासक औरंगजेब से संघर्ष किया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उनका स्मरण एक नायक के रूप में किया जाता है। बाल गंगाधर तिलक ने

राष्ट्रीयता की भावना में उबाल लाने के लिए शिवाजी जन्मोत्सव की शुरुआत की।

ऐसे ही अन्य एक महान सेनापति थे असम के वीर लाचित बरफूकन, जिनको भारतीय इतिहास के पन्नों में वह जगह नहीं मिली, जिसका वे आज भी हकदार हैं। चार सौ साल पूर्व जन्में लाचित ने अपने शौर्य और वीरता के दम पर मुगलों के छक्के छुड़ा दिए थे। जिन्होंने वर्ष 1671 में हुई सराईघाट की लड़ाई में रामसिंह प्रथम के नेतृत्व वाली मुगल सेनाओं के असम पर पुन: अधिकार प्राप्त करने का प्रयास विफल कर दिया गया था। आहोम राजा चक्रध्वज ने गुवाहाटी के शासक मुगलों के विरुद्ध अभियान में सेना का नेतृत्व करने के लिए लाचित बरफूकन को जिम्मेदारी सौंपी थी। राजा ने लाचित को उपहार स्वरूप सोने की मूठ वाली एक तलवार (हेंगडांग) और विशिष्टता के प्रतीक पारंपरिक वस्त्र प्रदान किए थे। बाद में लाचित की सेना ने मुगलों के कब्जे से गुवाहाटी पुन: हासिल किया। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए उन्होंने किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया था। जिम्मेदारी में लापरवाही बरतने वाले अपने मामा के सर को धड़ से अलग करने के बाद उन्होंने साफ-साफ शब्दों में कहा था- 'देश से मामा बड़ा नहीं'। उफनते ब्रह्मपुत्र पर नाव लेकर उन्होंने मुगलों के साथ लड़ाई लड़ी और मुगलों को उल्टे पांव लौटने को मजबूर किया।

देश के अन्य वीरों की तुलना में लाचित बरफूकन किसी भी मामले में कम नहीं है, मगर यह अलग बात है कि इतिहासकारों ने लाचित को वह स्थान - सम्मान नहीं दिया, जिसका की वह सही मायने में हकदार थे। भरे मन से यह भी कहना पड़ेगा कि पूर्व की राज्य सरकारों ने राष्ट्र-पटल पर लाचित को महिमा-मंडित करने में थोड़ी-सी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। राष्ट्रीय स्तर पर उनकी शौर्य गाथा का जिस प्रकार से जयगान होना था, वह नहीं हो पाया। इसका नतीजा यह निकला कि हमारे लाचित सिर्फ असम तक में ही सीमित होकर रह गए।

भाजपा द्वारा राज्य की बागडोर संभालने के बाद से इस दिशा में चिंतन-मनन का दौर शुरू हुआ। असम के वीर नायकों का जयगान होने लगा। इसी कड़ी में राज्य सरकार ने वीर लाचित बरफूकन की 400वीं जयंती दिल्ली में मनाने

का निश्चय किया है ताकि दुनिया वालों को लाचित की वीरता और शौर्य गाथा सुनाई जा सके। 23 से 25 नवंबर तक दिल्ली में आयोजित उक्त कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लाचित पर आधारित पुस्तक का विमोचन करेंगे, जबकि गृह मंत्री अमित शाह बरफूकन के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित डॉक्यूमेंटरी का विमोचन करेंगे। लाचित बरफूकन को लेकर आयोजित इस कार्यक्रम को इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि देश की राजधानी में होने वाले इस आयोजन में प्रधानमंत्री–गृह मंत्री सक्रिय रूप से शामिल होंगे। इससे लाचित के वीरत्व की गाथा राष्ट्रीय पटल तक पहुंच सकेगी। काश, राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे आयोजन पहले ही कर लिए गए होते तो आज लाचित भी शिवाजी, राणाप्रताप सिंह की तरह देश भर के युवाओं के हीरो होते। अबकी बार दिल्ली में लाचित पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय स्तर की विचारगोष्ठी भी आयोजित की जा रही है। हमारे मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा यह समझते हैं कि वीर सेनानियों को महिमा मंडित करने के लिए ऐसे आयोजन बेहद जरूरी हैं और यह एक अच्छी बात है।

'असम की बेटी' राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

भारत की 15वीं राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू का पहला दो दिवसीय असम दौरा कई मायने में खास रहा। जनजातीय समुदाय की पहली राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू का असम के साथ अपने गृह राज्य की तुलना करना उनके असम प्रेम और मानवीय संवेदनाओं का प्रकटीकरण है। देश के राष्ट्रपति का असम भ्रमण पर आना कोई विशेष बात नहीं है। पूर्व राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद तो असम के ही बेटे थे। मगर, यह पहला मौका था जब किसी राष्ट्रपति का असम के साथ इस तरह से गहरा रिश्ता और तारतम्य स्थापित करने की कोशिश की। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने एक कार्यक्रम में जब उनको 'राज्य की बेटी' कहकर संबोधित किया तो भाव विभोर होकर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने उनको अपने ही घर में होने का अहसास कराया है। भारत की आजादी के बाद पैदा होने वाली पहली राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू का जन्म ओडिशा के मयूरभंज जिले के बैदापोसी गांव में एक संथाल परिवार में हुआ था। ओडिशा की तरह असम में भी आदिवासी जनगोष्ठियां निवास करती है। ओडिशा और असम के आदिवासी समुदाय की बहुत सी परंपराएं एक जैसी है। इसके अलावा आदिवासियों के पहनावे, बोलचाल, खानपान में भी बहुत अधिक फर्क नहीं होता। यहां इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगा कि कैसे ओडिशा सहित देश के विभिन्न हिस्सों के चाय बागान श्रमिक असम में बस गए और इसे अपना घर बना लिया। इसलिए श्रीमती मुर्मू को असम भ्रमण अपने घर का भ्रमण जैसा ही लगा। उन्होंने असम के आदिवासी समुदाय के बारे में जानकारी ली और उनके कल्याण के लिए 100 चाय बागान विद्यालय के अलावा 3000 आंगनबाड़ी केंद्र की आधारशिला

रखी, इस मौके पर उन्होंने जिस तरह से असम का वर्णन किया, वह एक बेटी ही कर सकती है।

विगत 13 अक्टूबर को खानापाड़ा स्थित असम प्रशासकीय पदाधिकारी महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रपति के कार्यक्रम में मुझको भी शामिल होने का अवसर मिला था। विभिन्न क्षेत्रों के करीब 400 गणमान्य लोगों को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। श्रीमती मुर्मू ने असम की चाय को जग विख्यात बताते हुए असम के आदिवासियों के योगदान का उल्लेख किया। उनके भाषण को सुनकर ऐसा लगा कि आदिवासियों को दरकिनार कर असम की संपूर्ण छवि नहीं बनाई जा सकती। उन्होंने असम को एक सांस्कृतिक राज्य बताते हुए कहा कि देश भर में असम की संस्कृति का एक अलग ही स्थान है। उन्होंने श्रीमंत शंकरदेव और श्रीमंत माधव देव को असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी बताया और कहा कि इन्होंने असम की संस्कृति, परंपरा और आध्यात्म को एक अलग दिशा प्रदान करने का काम किया। रूपकोंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला और सुधाकंठ भूपेन हजारिका का स्मरण करना यह इंगित करता है कि हमारी राष्ट्रपति ने असम के बारे में कितना गहरा अध्ययन किया है। वैसे तो यह भी कहा जा सकता है कि राष्ट्रपति ने दूसरे किसी के द्वारा लिखा भाषण पढ़ा होगा, मगर भाषण देते वक्त वे कितनी भावुक और लीन थी यह उल्लेखनीय है। उन्होंने वीर लाचित बरफूकन की भी चर्चा की। इतने दिन राष्ट्रीय पटल पर लाचित पूरी तरह से उपेक्षित थे। उनको लेकर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चाएं होती तो वे भी देश भर में वीर शिवाजी जैसे योद्धा के रूप में विख्यात होते। यह भी सच है कि पिछले पांच सालों में लाचित बरफूकन को राष्ट्रीय पटल पर स्थापित करने की कोशिशें की जा रही है। द्रौपदी मुर्मू ने ब्रह्मपुत्र को लेकर असम की संस्कृति विरासत पर भी विस्तार से चर्चा की। उनके स्वागत के लिए सड़क के दोनों ओर जो सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए थे, उनके बारे में देश की दूसरी महिला राष्ट्रपति ने कहा कि वे इस संस्कृति से पूर्व-परिचित है। उनके इस कथन में जो सार छिपा है, वह यह है कि वे सचमुच में असम की बेटी हैं। उनके कार्यक्रम में शामिल होना और करीब से उनको देखना-सुनना मेरे लिए अविस्मरणीय है।

चुनौतियों के भंवर में भ्रम्यमान थिएटर

वैश्विक महामारी कोरोना के कारण उत्पन्न भयावह स्थिति की वजह से पिछले दो सालों से भ्रम्यमान थिएटर की गतिविधियां पूरी तरह से ठप पड़ गई थी। जब पूरी दुनिया कोविड-19 के आतंक से पीड़ित थी वैसे समय में भ्रम्यमान थिएटर के पर्दे का न उठाना स्वभाविक ही था, कारण संस्कृति कभी भी धारा के विपरीत नहीं जाती। एक स्वस्थ सांस्कृतिक माहौल के लिए सबसे ज्यादा जरूरी लोगों के मन का शांत होना है। कोविड के डर के मारे लोगों के मन में कैसी-कैसी उथल-पुथल चल रही थी, यह सोचकर आज भी दिल घबराने लगता है। कभी-कभी तो ऐसे भी भाव आए कि कोरोना की चपेट में आकर पूरी दुनिया ही खत्म न हो जाए। ऐसी शंकाओं के दायरे से बाहर निकलने में भी लोगों को कम समय नहीं लगा था। लिहाजा यह स्वभाविक ही था कि ऐसी विषम घड़ी में भ्राम्यमान थिएटर को भी अपने कदम रोक देने पड़े। जब लोग अपने-अपने घरों में कैद हो। दो वक्त के खाने का संकट सामने खड़ा हो। शहर-सड़कें सूनी हो, वैसे माहौल में साहित्य-संस्कृति की चर्चा हो, ऐसा सोचना भी नासमझी है। लोगों को इस तनाव भरे माहौल से बाहर निकालने के लिए कई

भ्रम्यमान थिएटर प्रबंधन ने नाटक मंचित करने की बात सोची भी तो कोविड को लेकर सरकार द्वारा तय किए गए दिशा-निर्देश (एसओपी) आड़े आ गए। सरकारी एसओपी के अनुसार नाटक का मंचन तो दूर रिहर्सल करने पर भी पाबंदी थी। ऐसे संकट की घड़ी में आर्थिक समस्या को दरकिनार कर पूरे आत्मविश्वास के साथ नाटक के मंचित करने का साहस जुटाना यह साबित करता है कि भ्रम्यमान थिएटर को लेकर असमवासी कितने आशावादी हैं। दो साल तक गतिविधियों के स्तब्ध रहने के बाद एक बार फिर भ्रम्यमान थिएटर अपने-अपने मंच को जीवंत करने की कोशिशों में जुट गए हैं। सच में यह एक सकारात्मक पहलु है और इस हिम्मत की जितनी भी दाद दी जाए कम है। भ्रम्यमान थिएटर का यह संकल्प इस बात को दर्शाता है कि लाख चुनौतियों के बावजूद 'शो मॅस्ट गो ऑन'। चाहे कितनी भी भयावह परिस्थिति क्यों न हो मंच के पर्दे को हमेशा-हमेशा के लिए नहीं गिरा सकती। पर्दे का उठना-गिरना थिएटर के दिल की धड़कन है और यह दिल हमेशा धड़कता रहेगा। असमिया संस्कृति के लिए भ्रम्यमान थिएटर आत्मा स्वरूप है और असमिया संस्कृति से उसकी आत्मा को अलग नहीं किया जा सकता।

कोविड महामारी के कारण दो साल तक बंद पड़ा भ्रम्यमान थिएटर उद्योग फिर अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा, इस बात को लेकर बहुतों के मन में शंकाएं थीं। थिएटर से संबंधित बहुत सी ऐसी सामग्री है, जिनका लगातार दो साल तक उपयोग न किया जाए तो वे खराब हो जाती है। इसके अलावा एक थिएटर के नए प्रेक्षागृह के लिए यदि विशेष सामग्री खरीदनी पड़ जाए तो उसके लिए कितने रुपए की जरूरत पड़ सकती है, एक आम व्यक्ति यह सोच भी नहीं सकता। इतनी बड़ी धनराशि जुटा पाना भी कोई आसान काम नहीं है। मौसम की मार से भी थिएटर की बहुत सी सामग्री नष्ट हो जाती है। राज्य के बड़े-बड़े थिएटर ग्रुप तो जैसे भी हो, इतनी बड़ी धनराशि जुटा भी लें, मगर जैसे-तैसे अपनी गाड़ी खिंचने वाले थिएटर ग्रुप के लिए यह चुनौती भी किसी कोरोना से कम नहीं। ऐसे भारी-भरकम खर्च से निपटने के लिए किसी बैंक अथवा अन्य वित्तीय संस्थान से कर्ज ले भी लिया जाए तो बाद में कर्ज का भुगतान भी कम बड़ी समस्या नहीं है। कुल मिलाकर कोरोना महामारी के कारण राज्य के भ्रम्यमान

थिएटर उद्योग को जो नुकसान उठाना पड़ा है, उसे सहज शब्दों में नहीं बताया जा सकता। कई थिएटर ऐसी समस्या से नहीं निपट पाए बोलकर इस साल नाटक-मंचन के लिए स्वयं को तैयार नहीं कर पाए। भ्रम्यमान थिएटर जगत के लिए यह कोई सुखद स्थिति नहीं है।

भ्रम्यमान थिएटर से जुड़े कलाकार-तकनीशियन, अभिनेता-अभिनेत्रियों को पिछले दो सालों में जिस प्रकार की आर्थिक समस्याओं से गुजरना पड़ा है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। बहुतों को अपना कर्म-जीवन ही बदलना पड़ा। कइयों को तो दैनिक मजदूरी करते हुए भी देखा गया। भ्रम्यमान थिएटर ने इतनी गंभीर स्थिति का मुकाबला इससे पहले कभी भी नहीं किया था। कोविड ने हमें सिखाया कि ऐसे संकट का मुकाबला करने के लिए सभी के एकजुट प्रयासों की जरूरत है, क्योंकि हालात चाहे कितने भी बुरे क्यों न हो जाए 'शो मॅस्ट गो ऑन'।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम

आजादी के अमृत महोत्सव को यादगार बनाने के लिए केंद्र सरकार के देश के हर एक नागरिक से, स्वतंत्रता दिवस वाले सप्ताह अर्थात 11 से 17 अगस्त तक, अपने-अपने घरों पर तिरंगा फहराने की अपील की है। इसे 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' का नाम दिया गया है। वैसे भी हमारे राष्ट्र ध्वज देश के गौरव एवं मूल्यों का प्रतीक माना जाता है। देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर शुरू अमृत महोत्सव कार्यक्रमों के अनुपालन संबंधी राष्ट्रीय उच्च स्तरीय समिति (एनआईसी) ने इस साल स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' को मंजूरी दी है। इसके लिए केंद्र सरकार ने तिरंगा फहराने के नियमों में भी बदलाव किए हैं। इस बदलाव के बाद अब दिन और रात दोनों समय तिरंगा फहराये जाने की अनुमति रहेगी। इसके साथ ही अब पॉलिएस्टर और मशीन से बने राष्ट्रीय ध्वज का भी उपयोग किया जा सकता है। हर घर तिरंगा अभियान के तहत देशभर में 25 करोड़ घरों में तिरंगा फहराने का लक्ष्य रखा गया है।

'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' के मद्देनजर आने वाले दिनों में राष्ट्रीय ध्वज की बिक्री में जोरदार उछाल की उम्मीद की जा रही है। व्यापारियों के प्रमुख संगठन कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) का भी मानना है कि इस अभियान की वजह से तिरंगे की मांग में जोरदार उछाल देखने को मिल सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' को जन-जन तक पहुंचाने के लिए देश के विभिन्न संगठन, सामाजिक संस्थाएं आदि आगे आने लगी है। देश के करीब 40 हजार व्यापारी संगठनों ने इस अभियान को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी ली है। कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीसी भरतिया और राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा है कि 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा' का जय घोष करते हुए कैट देश भर के 40 हजार से अधिक व्यापारी संगठनों के माध्यम से न केवल व्यापारियों बल्कि अन्य लोगों में भी इस अभियान को घर-घर तक ले जाएगा। उन्होंने कहा कि इस अभियान के जरिए उन लाखों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और देश के वीर जवानों, जिन्होंने तिरंगे की रक्षा की खातिर अपनी जान देने में पीछे नहीं हटे और जो हर समय सीमा पर डटे रहते हैं, को देश अपनी श्रद्धा और आदर देगा।

इन तैयारियों को देखते हुए उम्मीद की जा सकती है कि अगले एक पखवाड़े में 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' का जोश युवाओं के रग-रग में दौड़ने लगेगा। इस कार्यक्रम को लेकर जनजागरुकता फैलाने के लिए बड़े स्तर पर योजना बनाई जा रही है। इस कार्यक्रम में देश के सभी वर्ग-धर्म, पेशे-करोबार, युवा-महिला सभी को जोड़ा जाएगा।

तिरंगा वैसे भी देशवासियों के लिए बेहद संवेदनशील रहा है। खेल का मैदान हो अथवा भारत की किसी भी प्रकार की सफलता या विजय तिरंगे की छांव तले युवाओं के हिलौरे मारते जोश को हमने कई मौकों पर देखा है। इस बात को स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि पिछले कई सालों में देशवासियों के दिल में राष्ट्र प्रेम की भावना और अधिक प्रगाढ़ हुई है। इसका यह मतलब नहीं है कि इससे पहले हम में राष्ट्र-प्रेम की कोई कमी थी। आज का हंसता-खिलखिलता, फलता-फूलता स्वतंत्र भारत हमारे शहीदों और

स्वतंत्रता सेनानियों के राष्ट्र प्रेम का ही प्रसाद है। राष्ट्र प्रेम में बावले होकर न जाने कितने वीरों ने मां भारती के चरणों में अपने सर की बलि चढ़ा दी। न जाने ऐसे कितने ही अनजाने शहीद हैं, जिन्होंने मां भारती के तन पर लिपटी पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए अपने खून की नदियां बहा दी। देश के अन्य प्रांतों के साथ-साथ असम के सैकड़ों युवाओं ने देश की आजादी के लिए अपने प्राण गंवाए थे। अमृत महोत्सव के मौकेपर 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' उन सभी गुमनाम शहीदों को भी नमन करने का जरिया है, जिनके नाम स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं हैं। जिनके सर्वोच्च बलिदान के बारे में हम किसी को भी जानकारी नहीं है। आईए, 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम' के माध्यम से हम उन सभी जाने-अनजाने शहीदों को नमन करें, जिन्होंने देश को आजाद कराने के लिए हंसते-हंसते अपनी जान की बाजी लगा दी।

देश को हिंसा स्वीकार्य नहीं

भाजपा प्रवक्ता नूपुर शर्मा द्वारा विवादित टिप्पणी करने के बाद भले ही उसे पार्टी से निष्कासित कर दिया गया हो, मगर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। नूपुर के समर्थन में सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के कारण राजस्थान के उदयपुर के एक टेलर की दिनदहाड़े हत्या कर दी गई। सिर्फ यही इस वारदात के बाद हत्यारों ने न सिर्फ हत्या का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल किया, बल्कि इस घटना की जिम्मेदारी भी लेते नजर आए। इस घटना को अभी कई दिन गुजरे थे कि एक ही कारण से महाराष्ट्र की अमरावती में भी एक दवा व्यापारी की धारदार हथियार से बड़ी ही बेरहमी से हत्या कर दी गई। इन घटनाओं में शामिल आरोपियों को भले ही गिरफ्तार कर लिया गया है, मगर अभी भी सब कुछ सामान्य नहीं हुआ है। देश के स्वाधीन होने के बाद संभवत: यह पहला मौका है, जब विवादित टिप्पणी करने वाले का समर्थन करने वाले दो लोगों की इतनी निर्ममता पूर्वक हत्या कर दी गई। इस पूरे घटनाक्रम ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। इस वजह से विदेशों में भी भारत की छवि प्रभावित हुई है।

विश्ववासियों को 'सर्व धर्म संभाव' का संदेश देने वाले हमारे देश में ऐसी भी स्थिति पैदा हो सकती है, किसी ने भी नहीं सोचा होगा। 'जितने मत, उतने मार्ग' के सिद्धांत पर चलने वाले हमारे देश में एक-दूसरे की धार्मिक भावनाओं

का सम्मान करने की प्रचीन परंपरा रही है। भारतीय दर्शन में कहा गया है कि ईश्वर तक पहुंचने के मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं। 'ईश्वर-अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान' रटते-रटते न जाने कितनी भी पीढ़ियां आई-गई हो गई। 'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो और विश्व का कल्याण हो' कामना रखने वाले भारत की मौजूदा स्थिति न सिर्फ डराती है, बल्कि चिंता में भी डालती है। भावना में बहकर यदि भाई-भाई के और पड़ोसी-पड़ोसी की जान का दुश्मन बन बैठा तो फिर देश को कौन संभालेगा। यह देश हम सभी का है। इसमें शांति और सद्भाव कायम रखने की जिम्मेदारी भी हम सभी की है। संविधान ने भले ही हमें बोलने का अधिकार दिया है, मगर हमारे द्वारा कही बात से यदि किसी का दिल दुखता है अथवा भावनाएं आहत होती है, वही अधिकार अपराध बन जाता है। अपनी बातों को तार्किक तरीके से कहने केकई तरीकेसे हो सकते हैं, मगर किसी की कही बात से सामनेवाले का दिल छलनी हो जाए, भारतीय संस्कृति हमें इस बात की इजाजत नहीं देती। हमें तो अप्रिय सच बोलने से भी बचने की सलाह दी जाती है। यहां बात सिर्फ कहने-समझने की है। कहने वाले की यदि जुबान फिसल जाती है तो सुनने वालों को भी बड़ा दिल दिखाना चाहिए। किसी गलती की सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने के बाद उसमें सजा की गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। मगर, ऐसा होता दिख नहीं रहा है। बात-बात पर एक-दूसरे के आमने-सामने हो जाना अब आम हो गया है। विरोध प्रदर्शन के नाम पर सुरक्षाकर्मियों पर पत्थरबाजी और सरकारी व सार्वजनिक संपत्ति के नुकसान को देश कैसे सहन कर सकता है। अपराधी को उसके किए की सजा दिलाने के लिए पुलिस है, अदालत है। लेकिन किसी भी व्यक्ति-समुदाय को यह इजाजत नहीं दी जा सकती कि वह स्वयं ही न्यायाधीश बन जाए और अपनी मर्जी की सजा मुर्कर करने लगे। गांधी के देश में विरोध-प्रदर्शन के अहिंसक तरीके भी हो सकते हैं। अहिंसा के दम पर तो बापू ने अंग्रेजों से देश को आजाद करा लिया था तो फिर इसी अहिंसा के रास्ते पर चलकर हम सरकार से अपनी उचित मांगें क्यों नहीं मनवा सकते। लेकिन कारण कोई भी हो देश को हिंसा का मार्ग अस्वीकार्य है।

पूरे राष्ट्र की मानव संपदा है मेधावी बच्चे

अभी चार दिन पहले ही मैट्रिक की परीक्षा के नतीजे घोषित किए गए। बहुत दिन बाद राज्य के शिक्षण संस्थानों में उत्सव का माहौल नजर आया। जिन शिक्षण संस्थानों के बच्चों ने 'टाप-10' की सूची में अपनी जगह बनाई, वहां के तो कहने ही क्या। ऐसे शिक्षण संस्थानों के शिक्षक-कर्मचारियों से लेकर तमाम विद्यार्थी खुशी के मारे नाचते-गाते नजर आए। वैसे यदि देखा जाए तो इस साल के मैट्रिक के नतीजे बहुत अच्छे नहीं आए हैं। जितने बच्चों ने मैट्रिक की परीक्षा दी थी, उनमें 56.49 प्रतिशत बच्चों ने ही परीक्षा पास की है अर्थात् आधे से कुछ कम बच्चे परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाए। हर एक बच्चे के लिए मैट्रिक की परीक्षा उसके जीवन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण परीक्षा होती है। मैट्रिक की परीक्षाओं को विद्यार्थी जीवन का 'आइरन गेट' तक कहा है। यानि की जिस बच्चे ने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली तो मानो उसने जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव पार कर लिया। मैट्रिक के परीक्षाफल को लेकर बच्चे, उनके अभिभावक, शिक्षकों में जितनी उत्सुकता बनी रहती है, उतनी बाद की अन्य परीक्षाओं को लेकर नहीं दिखती। महाविद्यालय में जाकर कोई बच्चा शानदार प्रदर्शन करता भी है तो घर अथवा शिक्षण संस्थानों में वैसा उत्सवमुखी परिवेश देखने को नहीं मिलता, जबकि एक विद्यार्थी के लिए उसके जीवन की हर एक परीक्षा महत्वपूर्ण होती है।

आज मैं विशेषकर उन विद्यार्थियों की बात करना चाहता हूं, जो मेधावी बच्चे मैट्रिक परीक्षा के 'टाप-10' में अपनी जगह बनाते हैं। ऐसे बच्चों को लेकर शिक्षण संस्थान के साथ-साथ सरकार, समाज और परिवार वालों की ढेर सारी उम्मीदें होती हैं। जिस दिन परीक्षा के नतीजे निकलते हैं, ये बच्चे उस दिन के हीरो होते हैं। टीवी चैनलों पर इन्हीं बच्चों को दिखाया जाता है। ऐसा होना ही चाहिए। लेकिन आगे जाकर ये बच्चे अपने सपनों को कैसे पूरा करते हैं, उनके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का सामना कैसे करते होंगे। इन सब बातों पर किसी का ध्यान नहीं रहता है। वैसे तो सभी बच्चों को ही देश का भविष्य कहा जाता है, मगर इन मेधावी बच्चों की किसको खबर रहती है। मैं नहीं जानता कि ऐसे बच्चों की उल्लेखनीय सफलता पर झूमने-गाने वाले सामाजिक-छात्र संगठनों के अलावा राज्य सरकार आगे चलकर इनकी कितनी खबर रखते हैं। कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि उचित सुविधा और संसाधनों के अभाव के कारण हमारे मेधावी बच्चे आगे चलकर अपने सपनों को पूरा करने में नाकाम रह जाते हैं। वैसे भी महाविद्यालय का माहौल विद्यालय के माहौल से अलग होता है। विद्यालय में कठोर अनुशासन दिखता है तो महाविद्यालय का परिवेश विद्यार्थियों को जरा आजादी का अहसास कराता है। एकाएक शिक्षण संस्थान का बदला यह माहौल भी बच्चों की पढ़ाई को प्रभावित करता है। कभी-कभी स्कूली जीवन में औसतन प्रदर्शन करने वाला विद्यार्थी महाविद्यालय में जाकर शानदार प्रदर्शन करने में कामयाब हो जाता है तो कभी-कभी इसकी विपरीत स्थिति भी देखने को मिलती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मेधावी बच्चे सिर्फ किसी परिवार विशेष के नहीं पूरे समाज और राष्ट्र की मानव संपदा होते हैं। इनके सपनों को उड़ान देने और अध्ययन के क्षेत्र में आने वाली हर एक समस्या के समाधान में परिवार, समाज, सरकार की साझी जिम्मेदारी होनी चाहिए। क्योंकि मानव संसाधन का विकास करने के साथ ही समाज और देश का विकास किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि मैट्रिक की परीक्षा की टाप-10 की सूची में शामिल बच्चों के आगे का मार्ग प्रशस्त करने के लिए हम सभी आगे आएं और अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें।

अष्टलक्ष्मी पूर्वोत्तर

देश-विदेश में असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों की छवि बड़ी तेजी से बदल रही है। कई दशकों तक उग्रवाद जैसी गंभीर समस्या का सामना कर रहे देश के इस अशांत क्षेत्र में अब धीरे-धीरे शांति की बयार बहने लगी है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, डोनर कैबिनेट मंत्री जी किशन रेड्डी जैसे नेताओं के आए दिन होने वाले असम दौरे से यह साबित होता है कि देश के इस क्षेत्र को कितना महत्व दिया जा रहा है। पहले ऐसा नहीं था, कोई केंद्रीय नेता भूले-भटके ही असम आता था। सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर रहे डॉ. मनमोहन सिंह असम से ही चुनकर गए थे। अपने दस साल के कार्यकाल में वे कितनी बार असम भ्रमण को आए और प्रधानमंत्री पद पर नहीं रहने के बाद उन्होंने कब असम दौरा किया यह सवाल पूछा जाना स्वाभाविक है। अब

स्थिति में बदलाव आया है, एस फांगनोन कोन्याक नगालैंड से पहली महिला राज्यसभा सांसद है। फांगनोन कोन्याक भाजपा नागालैंड महिला मोर्चा की अध्यक्ष हैं और उन्हें निर्विरोध चुना गया था। देश के कानून और न्याय विभाग संभाल रहे केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजु अरुणाचल प्रदेश से आते हैं। असम के पूर्व मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल पोत परिवहन, जलमार्ग तथा आयुष मंत्रालय की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

प्रधानमंत्री पूर्वोत्तर क्षेत्र को देश की अष्टलक्ष्मी तक बता चुके हैं। अब गुवाहाटी को दक्षिण पूर्व एशिया का मुख्यद्वार बनाने की बात कही जा रही है। असम के ढांचागत विकास के साथ अब बांग्लादेश, म्यांमार और भूटान तक को जोड़कर देखा जा रहा है। आज के दिन देश भर में शायद ही कोई दूसरा राज्य होगा, जिसके पास विकास का इतना बड़ा कैनवास हो। अभी पिछले ही दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिब्रूगढ़ के खनिकर स्टेडियम में एक साथ सात कैंसर चिकित्सा केंद्रों को डिजिटल माध्यम से राष्ट्र को समर्पित किया और साथ ही नए कैंसर चिकित्सा केंद्रों की आधारशिला रखी। तभी भी कहा गया था कि इस अत्याधुनिक स्वास्थ्य सेवा का लाभ न केवल पूर्वोत्तर क्षेत्र, बल्कि इससे जुड़े अन्य पड़ोसी देशों को भी मिलेगा।

केंद्र सरकार असम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र पर विशेष ध्यान दे रही है। केंद्रीय मंत्रियों के सघन दौरों से स्थानीय लोगों को अब लगने लगा है कि यह क्षेत्र भी भारत का ही हिस्सा है। न केवल पूर्वोत्तर राज्यों के बीच के दशकों पुराने सीमा विवादों को सुलझाया जा रहा है, बल्कि उग्रवादी संगठनों के साथ शांति समझौते कर उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल किया जा रहा है। देश को आजाद हुए सात दशक से अधिक बीत चुके, पूरे देश ने तरक्की भी की लेकिन पूर्वोत्तर के कई राज्य भारतीय रेल के नक्शे में अपना स्थान नहीं बना पाए। पिछले छह सालों में ऐसे कई राज्यों को भारतीय रेल के नक्शे में शामिल किया गया है। दशकों पुरानी समस्याओं को सुलझाया जा रहा है ताकि पूर्वोत्तरवासियों के खोए विकास को पुनः प्राप्त किया जा सके।

पहले यह क्षेत्र देश भर में उग्रवाद, अपहरण, हत्या, हिंसा, विस्फोटक घटना और आए दिन विभिन्न संगठनों द्वारा बुलाए जाने वाले बंद की वजह से जाना

जाता था। स्वाधीनता दिवस–गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व पर पूरा पूर्वोत्तर बंद रहता था, तिरंगा फहराना तो दूर रहा, बहुत से स्थानों पर तो लोगों को घरों से बाहर निकलने की इजाजत नहीं होती थी। आम बोलचाल की भाषा में इसे 'जनता कर्फ्यू' कहा जाता था। पिछले छह सालों में पूर्वोत्तर विशेषकर असम की स्थिति में खासा बदलाव आया है। सर्वानंद सोनोवाल के नेतृत्ववाली भाजपा मित्रदल की सरकार के समय से यह बदलाव दिखना शुरू हुआ। असमवासियों में एक कहावत प्रचलित थी कि कोलकाता तक आते–आते भारत की सीमा खत्म हो जाती है लेकिन यह मिथक बड़ी तेजी से टूटने लगा है।

डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की सरकार ने पिछले एक साल के अपने शासनकाल के दौरान जनहित में जो किया, अब वह दिखने लगा है। गुवाहाटी में जगह–जगह चल रहे निर्माण कार्य, बंद संस्कृति के खात्मे और कार्य संस्कृति के उत्थान को हिमंत सरकार की अन्य कामयाबियों के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। असम पर केंद्र सरकार का समुचित ध्यान और राज्य सरकार की मेहनत एक नए असम का अध्याय लिख रही है। आइए हम सभी नए असम, समृद्ध असम की विकास यात्रा में भागीदार बनें।

गोरुखूंटी

गोरुखूंटी याद है ना। दरंग जिले के सिपाझार राजस्व चक्र के धोलपुर चपरी के पास का वह गांव। जहां अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाने के कारण यह गांव राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में चर्चा का केंद्र बन गया था। पड़ोसी पाकिस्तान सहित विश्व के कई मुस्लिम बहुल देशों में इस गांव, इस गांव में चलाए गए अतिक्रमण हटाओ अभियान और इस वजह से विशेष रूप से अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के प्रभावित होने को लेकर कई दिनों तक चर्चाओं का बाजार गर्म रहा था। अब गोरुखूंटी का क्या हाल है, किसी को पता भी है।

इन दिनों गोरुखूंटी में मानो हरित क्रांति की बयार बह रही है। चारों ओर हरियाली बस हरियाली ही बिखरी नजर आती है। मानों कृषि क्रांति की शुरुआत गोरुखूंटी से ही होने जा रही हो। कुछ दिन पहले ही गोरुखूंटी जाने का मौका मिला। सिपाझार के विधायक तथा असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष के मनुहार भरे आमंत्रण पर पूर्व पुलिस अधिकारी प्रफुल्ल बर्मन सहित अन्य कई लोग भी हमारे साथ थे। हम सभी विधायक डॉ. राजवंशी के नेतृत्व में गोरुखूंटी और उसके आसपास के क्षेत्र को देखने निकले थे। गोरुखूंटी के विवाद में आने के बाद से ही इस क्षेत्र के भ्रमण का मन में था। सरकार ने जितने बड़े इलाके का अधिग्रहण किया था, वहां हरित क्रांति के आने की आहट सुनाई देने लगी है। हालांकि अभी भी बहुत बड़े भूखंड का अधिग्रहण बाकी है। इस परियोजना के संपूर्ण होने पर यहां हजारों की संख्या में स्थानीय बेरोजगार युवाओं को रोजगार हासिल होगा, इस बात में कोई संदेह नहीं दिखता। विधायक पद्म हजारिका के नेतृत्व तथा

डॉ. राजवंशी सहित बहुत से लोगों के सहयोग से 77,420 बीघा भूखंड पर राज्य की सबसे बड़ी परियोजना का काम चल रहा है। इस परियोजना के प्रारंभ वाले दिन विधायक श्री हजारिका और डॉ. राजवंशी ने स्वयं ट्रैक्टर चलाकर युवा पीढ़ी को कृषि क्रांति के साथ जुड़ने को प्रेरित किया था। डॉ. राजवंशी का यही उत्साह तब भी नजर आया, जब वे हमारे साथ गोरुखूंटी भ्रमण के लिए निकले थे। किसी भी क्षेत्र के विधायक का ऐसा उत्साह उस क्षेत्र की जनता को आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकता है। श्री चेतिया को पहले से ही 'कन्याकार' का अनुभव है। गोरुखूंटी में भी उनका यही अनुभव काम आ रहा है। बहुत कम लोगों को पता होगा कि यह 600 गिरी गाएं भी हैं। इस गायों को देखने पर मन उत्साह से भर उठता है। राज्य में कहीं भी ऐसा 'काऊ फर्म' नहीं है, जहां इतनी बड़ी संख्या में गिरी गायों का लालन-पालन किया जा रहा हो। पिछले माघ बिहू और बोहाग बिहू के मौके पर बाजार में गोरुखूंटी में उत्पादित दूध-दही भरे पड़े थे। इससे यहां के स्थानीय किसान भी खुश नजर आते हैं। राज्य में श्वेत क्रांति की लहर इसी रफ्तार से आगे बढ़ती रही तो बहुत जल्द वह दिन भी आएगा तब हमें दूध-दही के लिए अन्य किसी राज्य का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। हमारा राज्य भी इस मामले में आत्मनिर्भर बन जाएगा। इसके अलावा गोरुखूंटी में उपजाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की साग-सब्जियों को देखकर भी एक सुखद अनुभूति होती है। इन दिनों वहां माटी कलाई, सरसों और मक्के के लहराते खेत देखे जा सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय बात यह है कि इस पूरी परियोजना के साथ यहां के स्थानीय लोग जुड़े हुए हैं।

धोलपुर में एक ऐतिहासिक शिव मंदिर भी था। इस बारे में राज्यवासियों को अब जाकर मालूम पड़ा है। यहां बहुत से ऐतिहासिक कृतिचिन्ह भी मिले हैं। इन कृतिचिन्हों को देखकर लगता है कि इस शिव मंदिर का निर्माण नौवें-दसवें शतक में किया गया होगा। इन दिनों मंदिर के जीर्णोद्धार का काम चल रहा है। सरकार की ओर से भी यहां यात्री निवास आदि का निर्माण कराया जा रहा है। इस मंदिर का पुनर्निर्माण होने के बाद इतने दिनों तक समाचार माध्यम से छिपा रहा यह क्षेत्र पर्यटन के मुख्य केंद्र के रूप में उभर सकता है। इन दिनों गोरुखूंटी जनता के लिए उम्मीद की एक किरण बना हुआ है।

'द काश्मीर फाइल्स'

'द काश्मीर फाइल्स' को लेकर पूरे देश में शोर है। अभिषेक अग्रवाला द्वारा निर्मित इस फिल्म का लेखन और निर्देशन विवेक अग्निहोत्री द्वारा किया गया है। इस फिल्म को कश्मीरी हिंदू पंडितों के साथ वीडियो साक्षात्कार पर आधारित वास्तविक घटना बताया जा रहा है, जो कश्मीर नरसंहार से पीड़ित हैं। इस फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती, अनुपम खेर, पल्लवी जोशी जैसे कलाकारों ने दमदार भूमिका निभाई है। लेकिन इस फिल्म को लेकर देश भर में हो रही चर्चा का विषय कलाकारों की दमदार भूमिका नहीं, बल्कि इसको लेकर है कि यह देश के हिंदू और मुसलमानों के आपसी प्रेम और भाईचारे में खाई पैदा करने का काम कर सकती है। इस फिल्म को रिलीज होने से रोकने के लिए कथित तौर पर धमकियां देने से लेकर अदालत तक का दरवाजा खटखटाया जा चुका है। फिल्म निदेशक श्री अग्निहोत्री को लगातार मिल रही धमकियों को देखते हुए गृह मंत्रालय द्वारा उनको वाई-श्रेणी की सुरक्षा भी उपलब्ध कराई गई है। इसी तरह इस फिल्म पर रोक लगाने के लिए अदालत में जनहित याचिका तक दायर की गई, मगर उस जनहित याचिका को बॉम्बे हाई कोर्ट ने तकनीकी आधार पर खारिज कर दिया। इतना कुछ होने के बावजूद इस फिल्म को लेकर देशवासियों में जबर्दस्त रुझान देखने को मिल रहा है। बताया जा रहा है कि रिलीज होने के 12 वें दिन तक बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म 190 करोड़ से अधिक का संग्रह कर चुकी थी। इसे अपने आप में एक बड़ी सफलता और नया रिकार्ड बताया जा रहा है। वर्ष 1975 में ऐसी ही एक फिल्म आई थी 'जय संतोषी मां'। इस फिल्म ने पूरे देश को श्रद्धा व भक्ति के ज्वार में डूबो दिया था। गांव से लोग बस-ट्रकों में भर-भर कर शहर के सिनेमाघरों में फिल्म देखने आते थे और

पर्दे पर जमकर सिक्कों की बरसात भी करते थे। इस फिल्म की वजह से लोगों में माता संतोषी के प्रति श्रद्धा का ऐसा भाव जगा कि शहर के सड़क-चौराहों के किनारे धड़ाधड़ संतोषी माता के मंदिर बनने लगे। फिल्मी पंडितों का कहना है कि जय मां संतोषी के बाद 'द काश्मीर फाइल्स' ऐसी दूसरी फिल्म है, जिसने इस तरह से दर्शकों को सिनेमाघरों तक खिंचने का काम किया है। वैसे दोनों फिल्मों को लेकर एक अंतर भी है। जय संतोषी मां के साथ लोगों की आस्था व श्रद्धा जुड़ी थी, जबकि 'द काश्मीर फाइल्स' को कोई सत्य घटनाओं पर आधारित तो कोई विवादित बता रहा है। वैसे हमारे देश में विवादित फिल्मों का बनना कोई नई बात नहीं है। फिल्म 'किस्सा कुर्सी का' भारतीय सिने इतिहास की सबसे विवादास्पद फिल्म मानी जाती है। इंदिरा गांधी सरकार हिलाने से लेकर इमरजेंसी के बाद हुए चुनावों में यह फिल्म बड़ा मुद्दा बनी। 1974 में अमृत नाहटा द्वारा बनाई गई इस फिल्म पर 1975 में रोक लगा दी गई थी तथा इसके प्रिंट तक जब्त कर लिए गए थे। इसी तरह गुलजार की हिंदी फिल्म 'आंधी' ने भी देश भर में खासा विवाद खड़ा करने का काम किया था। इस फिल्म में संजीव कुमार, सुचित्रा सेन, ओमप्रकाश, एके हंगल ने अभिनय किया था। इस फिल्म को लेकर उस समय यह आरोप लगाया गया था कि यह फिल्म तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनके पति के साथ उनके रिश्ते पर आधारित थी। जब श्रीमती गांधी सत्ता में थी, तब फिल्म को पूर्ण रिलीज की अनुमति नहीं मिली थी। फिल्म को रिलीज होने के कुछ महीनों बाद 1975 के राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान प्रतिबंधित कर दिया गया था। लिहाजा भारतीय फिल्मों के इतिहास पर नजर डालें तो ऐसी विवादित और सत्य घटनाओं पर आधारित फिल्मों की एक लंबी फेहरिस्त हमें नजर आती है। राजनीतिक तौर पर किसी भी फिल्म का लाख विरोध किया जाए, ऐसी फिल्मों को बनने से नहीं रोक सकती। वैसे ही कोई फिल्म दर्शकों को पसंद आ जाए तो वह बेहतर-शानदार कारोबार जरूर करती है। 'द काश्मीर फाइल्स' तो कम से कम इसी बात को रेखांकित करती है। वैसे एक दर्शक के रूप में सिनेमा हॉल में जाकर इस फिल्म को देख भी लिया जाए तो क्या बुरा है।

युद्ध नहीं बुद्ध की ओर लौटें

रूस द्वारा यूक्रेन के खिलाफ पिछले कई दिनों से चल रहे युद्ध को लेकर समूची दुनिया के लोग हैरान-परेशान हैं। इस युद्ध के कारण अब तक लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं। युद्ध के कारण कितना नुकसान हुआ, कितने लोग मारे गए इसका आंकलन आने वाले दिनों में लगाया जाना है। युद्ध की भयावहता बताती है कि यह कदम मानव सभ्यता पर कितना बड़ा खतरा है। एक परमाणु बम संपन्न अपने पड़ोसी देश पर कैसे हमला कर सकता है, जबकि यूक्रेन में भी 15 न्यूक्लियर एनर्जी रिएक्टर हैं। इनमें से 6 रिएक्टर तो जपोरिजिया प्लांट में है। इस प्लांट को पूरे यूरोप में सबसे बड़ा और विश्व का नौवां सबसे बड़ा रिएक्टर माना जाता है। यदि ऐसे किसी भी परमाणु ईंधन से भरे रिएक्टर में विस्फोट होता तो कुछ ही सेकेंड में महाविनाश की ज्वाला धधकने लगेगी। इसी वजह से पूरी दुनिया के देश इन कोशिशों में लगे हैं कि जैसे भी हो दोनों देशों के बीच चल रहा युद्ध खत्म हो जाए। ऐसे देशों में भारत विश्व भर में एक प्रमुख देश के रूप में उभरकर सामने आया है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लोदिमिर जेलेंस्की के साथ भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मधुर और दोस्ताना संबंध बताए जाते हैं। जेलेंस्की श्री मोदी से अपील तक कर चुके हैं कि पुतिन पर अपने संबंधों का दबाव डालकर इस युद्ध को खत्म करने की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाएं। विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र भी भारत के प्रति कुछ ऐसी ही सोच रखते हैं। अमेरिका समेत तमाम यूरोपिए देश युद्ध के खतरे को टालने की कोशिश में लगे हैं। भारत ने भी पूरे मामले पर अपना

रुख स्पष्ट कर दिया है। यूक्रेन के ताजा संकट पर भारत ने अपना स्टैंड दोहराते हुए कहा कि दोनों पक्षों को मिलकर कूटनीतिक तरीके से समाधान निकालना चाहिए ।

श्री मोदी इस मसले को लेकर पुतिन और जेलेंस्की के साथ कई बार फोन पर बातचीत कर चुके हैं। इस युद्ध को लेकर भारत का स्पष्ट मत है कि कूटनीति बातचीत के माध्यम इस युद्ध को खत्म किया जाना चाहिए। इस युद्ध से बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। भारत ने जोर देकर यह भी कहा कि युद्ध प्रभावित यूक्रेन से छात्र सहित 20 हजार से अधिक भारतीय नागरिकों को निकालना उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस मामले को लेकर भारत संयुक्त राष्ट्र में हुई वोटिंग से खुद को अलग रखकर यह संदेश दे दिया है कि भारत 'युद्ध नहीं बुद्ध में' विश्वास रखता है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यूक्रेन संकट को लेकर बुलाई गई आपात बैठक में सभी पक्षों से संयम बरतने की अपील करते हुए यह भी कहा कि यूक्रेन और रूस की सीमा पर बढ़ता तनाव गंभीर चिंता का विषय है और इससे क्षेत्र की शांति एवं सुरक्षा प्रभावित हो सकती है।

यूक्रेन पर यूएनएससी की बैठक में भारत ने अपना पक्ष रखते हुए कहा, कि वह सभी पक्षों के लिए अत्यंत संयम बरतने और राजनयिक प्रयासों को तेज करने, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर देता है ताकि जल्द से जल्द एक पारस्परिक रूप से सौहार्द्रपूर्ण समाधान का मार्ग प्रशस्त हो सके।

यूएनएससी की बैठक में संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टीएस तिरुमूर्ति ने कहा कि पूरे विवाद के बीच हमारे देश के लोगों की सुरक्षा हमारे लिए अहम है। इन हालातों के बीच भारत द्वारा 'ऑपरेशन गंगा' जोर-शोर से चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत यूक्रेन के विभिन्न शहरों में फंसे भारतीय छात्र और नागरिकों को वहां से निकालकर भारत लाया जा रहा है। ऑपरेशन गंगा के तहत अभी तक हजारों लोगों को भारत में उनके घरों तक पहुंचाया जा चुका है। इस महासंकट की घड़ी में भारत का मुंह देख रहे विश्ववासियों को भारत का स्पष्ट संदेश है 'युद्ध नहीं बुद्ध की ओर लौटें'।

लोकप्रियता की ओर डॉ. हिमंत विश्व शर्मा

पूर्वोत्तर राज्यों में एक सशक्त नेता के रूप में अपना रुतबा स्थापित करने के बाद असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा राष्ट्रीय पटल पर लोकप्रियता हासिल करने लगे हैं। तेलंगाना के वारंगल में एक रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने एआईएमआईएम चीफ असुद्दीन ओवैसी को जमकर खरी-खोटी सुनाई थी। इसके अलावा उत्तराखंड की एक चुनावी रैली में कांग्रेसी सांसद राहुल गांधी को सवालों के कटघरे में खड़ा कर उन्होंने राष्ट्रीय मीडिया में खासी सुर्खियां बटोरी। इसी के साथ उनकी राष्ट्रीय पटल पर पहचान बढ़ने लगी। आज की घड़ी में उनका नाम उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ के साथ लिया जाता है।

डॉ. शर्मा पहले ही नॉर्थ-ईस्ट डेमोक्रेटिक एलायंस (नेडा) के संयोजक के रूप में अपनी क्षमता दिखा चुके हैं। भाजपा ने वर्ष 2016 की 24 मई को

नेडा का गठन कर डॉ. शर्मा को उसका संयोजक बनाया था। इस राजनीतिक मोर्चे का मकसद क्षेत्र के पूर्वोत्तर के लोगों के हितों की रक्षा के साथ-साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र में गैर-कांग्रेसी दलों को एकजुट करना था। इसी के साथ उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इसी के पुरस्कार स्वरूप उनको असम के मुख्यमंत्री के पदभार से नवाजा गया। यह भी याद दिला दूं कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के घर पर लंबी बैठक के बाद निवर्तमान मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने औपचारिक तौर पर उनको मुख्यमंत्री बनाने का प्रस्ताव रखा था। इसी के साथ पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व यह संदेश देने में भी कामयाब रहा कि मुख्यमंत्री पद को लेकर डॉ. शर्मा और श्री सोनोवाल के बीच किसी भी प्रकार का विवाद नहीं है।

मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी संभालने के बाद से ही वे बिना रुके अपने काम को अंजाम देने व चुनावी वादों को पूरा करने में लगे हैं। चुनाव के दौरान उन्होंने राज्य की महिलाओं से वादा किया था कि माइक्रो फाइनेंस कंपनियों से लोन लेने वाली महिलाओं का कर्ज राज्य सरकार की ओर से चुकाया जाएगा। इस दिशा में काम शुरू हो गया है और एक वर्ग की महिलाओं को इसका लाभ भी मिल चुका है। हर महीने की 10 तारीख को राज्य के लाभार्थियों के बैंक अकाउंट में पेंशन अथवा विभिन्न सरकारी योजनाओं की सहायता राशि को पहुंचाना भी डॉ. शर्मा की सरकार की एक उपलब्धि कहा जा सकता है। चुनावी सभा में उन्होंने और भी कई वादे किए थे। ऐसे वादों में एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने का वादा भी शामिल है। इस दिशा में बड़े ही जोर शोर से काम चल रहा है। डॉ. शर्मा असम विधानसभा में यह घोषणा कर चुके हैं कि सरकार गिन-गिन कर राज्य के एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरियां देंगी। इसके साथ ही कॉलेज के युवाओं को मुफ्त में मोटरसाइकिल देने का वादा भी लंबित पड़ा है।

युवतियों को सरकार की ओर से मुफ्त में स्कूटी दिए जाने के बाद युवकों ने बड़े ही जोर शोर से मुफ्त में मोटरसाइकिल की मांग उठाई थी। विधानसभा चुनाव के दौरान डॉ. शर्मा की हर चुनावी सभा में यह मुद्दा उठा, जिसे उन्होंने बड़े ही शानदार तरीके से भुनाया। राज्यवासियों में यह धारणा घर कर गई है कि

उनके मुख्यमंत्री जो वादा करते हैं, उसे जरूर पूरा करते हैं। बच्चे उनको 'मामा' कहकर पुकारते हैं और वे भी अपने भांजों का पूरा ध्यान रखते हैं। इसके अलावा गोरुखुंटी जैसे इलाकों से अतिक्रमणकारियों को हटाने जैसे दु:साहसी फैसले लेने वाले डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने प्रशासनिक सेवाओं में भी भारी बदलाव लाने की कोशिशें की। परिवहन, भूमि, राजस्व आदि विभागों में उन्होंने ऑनलाइन व्यवस्था को बढ़ावा दिया तो सरकारी विभागों में दशकों से चली आ रही अनियंत्रित अफसरशाही व्यवस्था को ठीक करने की दिशा में भी उन्होंने कई कदम उठाए। मुख्यमंत्री का पदभार संभाले उनको एक साल भी पूरा नहीं हुआ है। इस अवधि में उन्होंने जिस रफ्तार से अपनी योजनाओं को धरातल पर उतारने का काम किया है, वह अनुकरणीय है। आने वाले दिनों में उनकी लोकप्रियता और परवान चढ़ेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

हिजाब और किताब

इस साल की जनवरी में कर्नाटक के उडुपी जिले से उत्पन्न हुआ हिजाब विवाद आहिस्ता-आहिस्ता देश भर में फैल गया है। उडुपी के सरकारी पीयू कॉलेज में 6 मुस्लिम छात्राओं को हिजाब पहनकर क्लास में बैठने से रोक दिए जाने से यह विवाद उत्पन्न हुआ। कॉलेज प्रबंधन ने अपने इस आदेश की वजह नई यूनिफॉर्म पॉलिसी को बताया था। बाद में कॉलेज के इस फैसले के खिलाफ कुछ लड़कियों ने कर्नाटक हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की। लड़कियों का तर्क है कि हिजाब पहनने की इजाजत न देना संविधान के अनुच्छेद 14 और 25 के तहत उनके मौलिक अधिकार का हनन है। इसके बाद यह मामला बढ़ता ही गया और बात हिजाब व भगवा शॉल तक पहुंच गई। कई शिक्षण संस्थानों में हिजाब पहनकर आई छात्राओं को क्लास में जाने से रोक दिया गया। चूंकि यह मामला आदालत में विचाराधीन है, लिहाजा इस पर एक दायरे से बाहर जाकर कुछ भी कहना उचित नहीं होगा। लेकिन सवाल उठता है कि हिजाब और किताब

से जुड़े इस मामले का समाधान क्या अदालत में ही निकल सकता है। हमारे देश में इस्लाम धर्म को मानने वाली महिला अथवा युवती के हिजाब पहनने से किसी को आपत्ति नहीं है। किसी को आपत्ति होनी भी नहीं चाहिए। कुछ लोग हिजाब को इस्लाम को अनिवार्य बताते हैं तो लोगों की इस धार्मिक मान्यता और भावनाओं पर भी सवाल खड़े नहीं किए जाने चाहिए, मगर सवाल यह भी है कि क्या हिजाब और किताब के बीच किसी भी प्रकार का टकराव होना अच्छी बात है। उससे भी बड़ा सवाल यह है कि इस विवाद को राज्य सरकार, संबंधित धर्म के जानकार और स्कूल प्रबंधन आपस में मिल-बैठकर नहीं सुलझा सकते।

यह भी कहा जा सकता है कि किसी धर्म अथवा समाज में पर्दादारी की प्रथा है और लोग उस प्रथा को मानना चाहते हैं तो किसी अन्य को आपत्ति क्यों होनी चाहिए। लेकिन इस प्रकार की घूंघट प्रथा अथवा हिजाब का चयन महिलाओं की प्रगति में बाधक बन रहा हो या महिला स्वतंत्रता की राह का रोड़ा बने तो इस पर सवाल तो उठाया ही जा सकता है। चर्चा तभी होती है, जब सवाल उठते हैं। हमारे यहां बहुत से ऐसे स्कूल हैं, जहां लड़कियों को हाथों में मेंहदी अथवा हिना लगाकर जाने पर सख्त पाबंदी है। यह सभी जानते हैं कि हिंदुओं में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यक्रमों में युवतियों के मेंहदी लगाने की परंपरा है। ऐसे स्थिति में स्कूल की पाबंदियों के चलते युवतियां सालों तक अपनी हथेलियों पर मेहंदी नहीं लगा पाती। स्कूल-कॉलेज की ऐसी पाबंदियों के कारण जब कोई लड़की अपने भाई की शादी में मेहंदी नहीं लगा पाती तो एक बार उसको भी यह पाबंदी उसके धार्मिक अथवा मौलिक अधिकार का हनन लग सकती है। दिगंबर जैन मुनि पूरी तरह से निर्वस्त्र रहते हैं। एक शहर से दूसरे शहर की पदयात्रा के दौरान भी दिगंबर मुनि निर्वस्त्र ही रहते हैं। राजस्थान जैसे राज्यों में दिगंबर जैन मुनियों का निर्वस्त्र विचरण आम बात है लेकिन नगालैंड, मेघालय जैसे राज्यों में ऐसे दृष्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। कहने का मतलब यह है कि कुछ धार्मिक रीति-नीति, परंपरा अपने समाज-समुदाय तक ही सीमित रखी जाती है तो कुछ सार्वजनिक तौर पर सभी को साथ लेकर मनाई जाती है। दुर्गा पूजा, ईद, क्रिसमस धर्म विशेष के ऐसे त्योहार हैं, जिनको हमारे देश में सभी धर्म के लोग मिलजुलकर मनाते हैं।

जहां तक शिक्षण संस्थानों में हिजाब पहनकर जाने, न जाने का सवाल है तो बजाए इस पर विवाद खड़ा करने के इसको आपस में मिलजुलकर ही सुलझाया जाना चाहिए। जहां यूनिफॉर्म की बात आती है तो हमें यूनिफॉर्म के अर्थ, प्रासंगिकता और महत्व को भी समझना होगा। कोई भी यूनिफॉर्म समान रूपता और एकजुटता का प्रतीक होती है। किसी भी संस्थान-संगठन की यूनिफॉर्म पहन लेने के बाद उस व्यक्ति की पहचान उस संस्थान, संगठन से होती है किसी धर्म, जाति से नहीं। यूनिफॉर्म का संपूर्ण मतलब और उद्देश्य यही होता है। लिहाजा हिजाब को लेकर चल रहे विवाद को इस आलोक में भी देखे जाने की जरूरत है। हिजाब और किताब के बीच न तो पहले कोई विवाद था और न ही आज कोई विवाद है। हिजाब की गरिमा और किताब का महत्व बना रहे, यह सुनिश्चित करना हर एक भारतीय की जिम्मेदारी है।

मारवाड़ी बिहू

जबरन चंदा उगाही के खिलाफ शुरू से मुखर रहे डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने राज्य में बसे मारवाड़ियों से चंदा लेकर बिहू आयोजित करने के बजाए मारवाड़ी समाज को ही बिहू के आयोजन करने की जिम्मेदारी सौंपने की बात कहकर एक नई चर्चा को जन्म देने का काम किया है। इस प्रसंग में उन्होंने यह भी कहा कि मारवाड़ियों से चंदा लेकर बिहू आयोजित करना असमिया जाति के लिए शर्म की बात है। डॉ. शर्मा की कही इस बात को एक बड़े पटल पर देखे जाने की आवश्यकता है। वैसे भी बिहू का पर्व वृहत्तर असमिया जाति का पर्व है और असम में रहने वाले, असमिया कहकर स्वयं का परिचय देने वाले सभी बिहू को मनाने के अधिकारी हैं। वैसे भी असम के जातीय पर्व बिहू को मारवाड़ी, बिहारी में विभक्त नहीं किया जा सकता।

डॉ. शर्मा जब मारवाड़ियों को बिहू के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपने की बात कहते हैं तो मेरे हिसाब से बिहू के आयोजन में मारवाड़ियों की सहभागिता, सक्रिय सहयोगिता की बात कहते हैं। राज्य में कहीं भी स्थानीय समाज के संपूर्ण व सक्रिय सहयोग से और मारवाड़ियों की अगुवाई में बिहू का सफल आयोजन किया जाता है तो इससे देश-दुनिया में एक समन्वय का संदेश जाएगा। इस प्रकार का कोई भी आयोजन चाहे वह शिल्पी दिवस हो अथवा राभा दिवस वृहत्तर

असमिया समाज की बुनियाद को मजबूती प्रदान करने का काम करेगा।

यह एक सुनहरा मौका है, जब मारवाड़ी समाज के युवा स्थानीय परंपरा, कला-संस्कृति के और अधिक निकट आ सकते हैं। मारवाड़ी बहन-बेटियां लाडू-पीठा जैसे परंपरागत पकवान बनाना सीख सकती है। कुल मिलाकर यह सीखने-सिखाने के इस सिलसिला को शुरू किए जाने की जरूरत है। मारवाड़ी समाज में ऐसे बहुत से युवा हैं, जो बिहू गायन, बिहू नृत्य और स्थानीय गायकों के कालजयी गीत गाने में पारंगत हैं। मगर वैसे कलाकारों को न तो अब तक मंच मिला है और न ही पहचान। नीलम-दुर्गा अग्रवाल नामक दंपत्ति पिछले कई दशकों से मंच पर बिहू नृत्य करते आ रहे हैं। महेश हरलालका, संदीप चमड़िया ज्योति संगीत, भूपेन हजारिका के गीत को जब अपनी मखमली आवाज में गाते हैं तो श्रोता भाव विभोर हो जाते हैं। मगर मारवाड़ी समाज के ऐसे कलाकार आज भी गुमनामियों के अंधेरे में हैं। डॉ. शर्मा की इस सलाह पर अमल करते हुए राज्य के कई मारवाड़ी संगठनों ने अपने बूते बिहू के आयोजन करने की बात कही है। मारवाड़ी संगठनों की इस पहल का स्वागत किया जाना चाहिए, मगर ध्यान रखना होगा कि बिहू के आयोजन के नाम पर कहीं 'हैप्पी बिहू' अर्थात बिहू का विकृतिकरण न हो। अबकी बार मारवाड़ी संगठनों द्वारा आयोजित बिहू की जातीय संगठन और स्थानीय समाज की विशेष नजर होगी, लिहाजा यह सौ प्रतिशत सुनिश्चित करना होगा कि बिहू के आयोजन में रत्ती भर भी त्रुटि न रह जाए। बिहू से जुड़े सभी रीति-रिवाजों का सही ढंग से पालन हो, आयोजन में पूरी गंभीरता और पवित्रता हो, इसके लिए स्थानीय समाज और जानकारों की सलाह-सहयोग लेना भी एक समझदारी भरा कदम होगा। मेरी समझ में बिहू जैसे पर्व की सफलता जन-भागीदारी पर निर्भर करती है। बिहू का संदेश ही सामूहिकता में छिपा है। मिलजुल कर गाना-खाना और खुशियां मनाना बिहू का सार है। लिहाजा बिहू के मंच और दर्शकदीर्घा में मारवाड़ी समाज की उपस्थिति जरूर दिखनी चाहिए। सैकड़ों सालों से असम में बसे मारवाड़ियों के सामने मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने बिहू के आयोजन की जो चुनौती प्रस्तुत की है, उसे सफलता पूर्वक पूरा करने में मुख्यमंत्री का सम्मान और मारवाड़ियों का आत्मसम्मान दोनों ही निहित है।

मोदी की 'मन की बात' में असम

एकाधिक बार यह बात सामने आ चुकी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन में असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों के प्रति विशेष लगाव है। प्रधानमंत्री का यह असम प्रेम गाहे-बाहे देश के सामने आता रहा है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री योगासन के दौरान असमिया स्वाभिमान का प्रतीक समझे जाने वाले फूलाम गमछा पहन चुके हैं। श्री मोदी द्वारा इस प्रकार से असमिया संस्कृति एवं असमिया स्वाभिमान के प्रतीक चिह्न फूलाम गमछा को सम्मान देने को लेकर असमवासी काफी खुश हैं। प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही श्री मोदी जिस प्रकार फूलाम गमछा को अपने गले में अनेक अवसर पर पहनते आए हैं, उससे असमिया फूलाम गमछा को विश्वस्तर पर पहचान मिल रही है।

पिछले दिनों देश भर में प्रचारित-प्रसारित हुए प्रधानमंत्री की 'मन की बात' कार्यक्रम में उन्होंने असम और असम के एक सिंगवाले विश्व प्रसिद्ध गैंडे की चर्चा की। उन्होंने तस्करों द्वारा की जाने वाली गैंडों की हत्याओं का जिक्र करने के साथ ही इस बात पर संतोष जताया कि पहले की तुलना में ऐसी घटनाओं में भारी कमी आई है। बहुत दिनों बाद असम के गैंडों की राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा

की गई और यह भी बताया गया कि अब गैंडों की हत्या कर देना आसान काम नहीं रह गया है। प्रधानमंत्री ने बड़ी संख्या में जब्त किए गए गैंडों के सिंगों को जला देने का जिक्र करते हुए देशवासियों को समझाया कि असम की डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की सरकार ऐसे मामलों को लेकर कितनी गंभीर और संवेदनशील है।

असम के प्रति प्रधानमंत्री का प्रेम और चिंताएं राष्ट्र पटल पर बार-बार उभरकर सामने आई है। देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र को 'अष्टलक्ष्मी' का दर्जा देते हुए श्री मोदी कह चुके हैं कि बिना पूर्वोत्तर के समुचित विकास के देश का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। पहले पूर्वोत्तर को दिल्ली से बहुत दूर माना जाता था, मगर अब श्री मोदी के प्रेम और केंद्र सरकार की नीतियों ने पूर्वोत्तर को दिल्ली के बहुत निकट ला दिया है।

इस साल 26 जनवरी को 73वें गणतंत्र दिवस समारोह में नरेंद्र मोदी एक बार फिर से अपने अलग ही अंदाज में नजर आए। उन्होंने अपने गले में मणिपुर का गमछा पहना हुआ था। इसे प्रधानमंत्री के मणिपुर प्रेम के रूप में देखा गया।

वैसे भी प्रधानमंत्री मोदी फूलाम गमछा के प्रति अपना सम्मान बार-बार व्यक्त करते हैं । इतना ही नहीं असम और पूरे पूर्वोत्तर के प्रति उनका हमेशा ही विशेष लगाव देखने को मिलता है। प्रधानमंत्री के रूप में श्री मोदी जितनी बार पूर्वोत्तर का भ्रमण कर चुके हैं, इससे पूर्व शायद ही देश के किसी प्रधानमंत्री इतने भ्रमण किए होंगे। प्रधानमंत्री के पूर्वोत्तर प्रेम की वजह से ही उन्हें 2019 के लोकसभा चुनाव में 2014 के चुनाव से अधिक वोट मिला। प्रधानमंत्री मोदी की जो लोकप्रियता पूर्वोत्तर में दिखती है, ऐसा किसी भी प्रधानमंत्री के लिए पहले नहीं देखी गई। मोदी ने जब कोरोना का टीका लगवाया था, तब भी उन्होंने अपने गले में फूलाम गमछा डाला हुआ था। उस वक्त उनकी वेशभूषा पश्चिम बंगाल जैसी लग रही थी। उनकी लंबी दाढ़ी रवीन्द्र नाथ टैगोर की याद दिला रही थी। वैसे यदि देखा जाए तो प्रधानमंत्री के मन में देश के सभी राज्यों की कला-संस्कृति, साहित्य-संगीत के प्रति गहरा लगाव रहा है और उनका यह लगाव देशवासियों के सामने भी आता रहा है, मगर उनके मन में असम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र के प्रति विशेष लगाव है, यह बात किसी से भी छिपी नहीं है।

डीएसपी लवलीना बरगोहाईं

टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक को देश के नाम करने वाली असम की पहली मुक्केबाज लवलीना बरगोहाईं को असम पुलिस में प्रशिक्षु उप अधीक्षक (डीएसपी) के रूप में शामिल किया जाना राज्य के खेल जगत के लिए अनुकरणीय व प्रशंसनीय है। लवलीना को असम पुलिस परिवार में शामिल किया जाना यह बताता है कि राज्य सरकार खेल और खिलाड़ी के विकास और भविष्य को लेकर कितनी गंभीर है। लवलीना को उप अधीक्षक पद का नियुक्ति पत्र सौंपने के बाद मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने उम्मीद जताई कि लवलीना आने वाले दिनों में भारतीय पुलिस सेवा होंगी। उन्होंने यह भी कहा कि उसकी उम्र के मद्देनजर एक दिन वह असम पुलिस सेवा के किसी शीर्ष पद पर पहुंच सकती है। इस मौके पर लवलीना ने भी भावुक होते हुए पुलिस विभाग का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि वह असम पुलिस राज्य का सम्मान बढ़ाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगी। लवलीना के असम पुलिस में शामिल होने की घटना को न सिर्फ खेल जगत के लिए बल्कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी एक सबल कदम माना जा रहा है। इससे न केवल युवाओं में खेल के प्रति रुझान बढ़ेगा, बल्कि असम पुलिस में अपनी सेवाएं दे रहे अधिकारी-जवानों को भी खेल संबंधी प्रशिक्षण पाने का पूरा मौका मिलेगा। एक खिलाड़ी को आमतौर पर अपने भविष्य की चिंता होती है। इस वजह से बहुत से खिलाड़ी बीच में ही खेलना छोड़ देते हैं। लवलीना को डीएसपी पद का नियुक्ति पत्र सौंपकर सरकार ने युवाओं को यह स्पष्ट संदेश दिया है कि आप अपना पूरा ध्यान खेल पर लगाइए। देश-राज्य के लिए राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार जीतकर लाइए। अब से आपके भविष्य की चिंता सरकार करेगी। असम पुलिस में लवलीना के शामिल होने को इसलिए भी गंभीरता के साथ लिया जा रहा है कि अब से असम पुलिस के अधिकारी-जवानों में भी

खेल के प्रति दिलचस्पी पैदा होगी। कभी-कभी खेल संबंधी संरचना और अन्य सुविधाएं उपलब्ध रहने के बावजूद अनुभवी कोच की कमी के कारण खिलाड़ी उभरकर सामने नहीं आ पाते। उम्मीद की जाती है कि लवलीना के अनुभव के दम पर असम पुलिस के रिंग में और कई बेहतर मुक्केबाज उभरकर सामने आएंगे।

मुख्यमंत्री अपने साथी तथा पूर्व मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल के सपने को ही पंख देने की कोशिश में लगे हैं। श्री सोनोवाल ने ही गुवाहाटी को देश की खेल राजधानी बनाने की बात कही थी। पिछले कई सालों से राज्य भर में न सिर्फ खेल संबंधी बुनियादी सुविधाओं में सुधार आया है, बल्कि कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय फलक पर असम का नाम रौशन किया है।

धिंग एक्सप्रेस के नाम से लोकप्रिय हमारे देश की धावक हिमा दास को असमवासी आज भी बड़े गर्व के साथ याद करते हैं। हिमा ने न सिर्फ इंडोनेशिया के जकार्ता में 2018 एशियाई खेलों में 50.79 सेकेंड के समय के साथ 400 मीटर में वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया, बल्कि वह वर्ल्ड 20 चैंपियनशिप में ट्रैक इवेंट में गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय एथलीट भी बनी। राज्य की खेल नीति के तहत हिमा को भी असम पुलिस में पुलिस उपाधीक्षक के पद पर नियुक्ति दी गई। पिछले साल राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने हिमा को नियुक्ति पत्र सौंपा था। इस मौके पर हिमा ने खुलासा किया कि जब वह छोटी थी तब उसने एक पुलिस अधिकारी बनने का सपना देखा था और इसलिए यह उसके लिए एक बहुत ही खास क्षण है।

लवलीना और हिमा की एक जैसी उक्त दो कहानियां देश-दुनिया के सामने असम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र के महिला सशक्तिकरण की मिशाल पेश करती है। पूर्वोत्तर की वीरांगनाओं की सूची में मोनालिसा बरुवा मेहता से लेकर मैरीकाम साइखोम मीराबाई चानू, नमेइरक्पम कुंजरानी देवी जैसी बहुत सी महिला खिलाड़ियों के नाम शामिल हैं। उम्मीद की जा रही है कि राज्य की खेल नीति, खिलाड़ियों की कोशिशें और सरकार का सहयोग-समर्थन से खेल की दुनिया में एक दिन असम का भी सितारा बुलंद होगा।

मोबाइल फोन की सुली पर मानवता!

याद है 29 नवंबर को जोरहाट में घटी वह बर्बर घटना, जिसमें उन्मादी भीड़ ने छात्र नेता अनिमेष भुयां को पीट-पीटकर मार डाला था। इस घटना में एक पत्रकार सहित दो लोग बुरी तरह घायल हो गए। जोरहाट के एटी रोड पर ट्रक स्टैंड के पास भीड़ युवकों को पिटती रही और घटनास्थल के पास तैनात ट्रैफिक पुलिस के जवान मूकदर्शक बने रहे। सिर्फ यही नहीं अनिमेष को पिटने का सिलसिला काफी देर तक चला, पर किसी भी व्यक्ति ने उसे बचाने का प्रयास नहीं किया। इस घटना का जो सबसे दर्दनाक पहलू था, वह था- लोग अपने मोबाइल फोन पर बुरी तरह से घायल अनिमेष का वीडियो बनाते रहे, लेकिन उसको लेकर अस्पताल पहुंचाने के लिए भीड़ से एक भी व्यक्ति सामने नहीं आया। लोग यदि अपने मोबाइल फोन में घटना का वीडियो बनाने के बजाए अनिमेष की मदद के लिए आगे आए होते तो आज वह बच्चा अपने मां-बाप, अपने परिवार के साथ होता। भीड़ में से कोई यदि पुलिस अथवा प्रशासन के किसी अधिकारी को ही फोन कर दिया होता तो शायद उसे चिकित्सा सहायता मिल जाती। लोग यदि उन्मादी भीड़ को समझाते-बुझाते तो शायद अनिमेष जिंदा होता। इस घटना को एक सभ्य समाज को शर्मसार कर देने वाली घटना कहा जा सकता है। अपने आप में यह कोई पहली घटना नहीं है। बीच सड़क पर हो या अन्य कहीं, जब भी ऐसी घटना-दुर्घटना घटती है तो लोग अपने मानवीय गुणों को भूलकर बजाय संकटग्रस्त व्यक्ति की मदद करने के अपने मोबाइल फोन पर उसका वीडियो बनाने लग जाता है। बीच सड़क पर घायल व्यक्ति कराहता रहता है, लेकिन लोग उसकी मदद के लिए, उसको अस्पताल तक पहुंचाने के लिए आगे नहीं आते। पहले ऐसा नहीं था। संकटग्रस्त व्यक्ति की मदद के लिए एक साथ कई हाथ आगे बढ़ जाया करते थे। मगर, मोबाइल फोन के आने के बाद स्थिति में तनिक बदलाव आया है। लोग-बाग मोबाइल को

लेकर कुछ अधिक ही व्यस्त रहने लगे हैं।

मैं मोबाइल फोन की बुराई नहीं कर रहा हूं। मैं भी इस बात से सहमत हूं कि आज के संचार माध्यम में मोबाइल का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। हम यह भी कह सकते हैं कि मोबाइल फोन हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। बिजली बिल, टेलीफोन बिल सहित तमाम तरह के भुगतान अथवा अन्य प्रकार के लेन-देन मोबाइल फोन के माध्यम से घर बैठे ही किया जा सकता है। व्हाट्सएप, ट्विटर, आदि के माध्यम से हजारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति के साथ पल भर में संपर्क साधा जा सकता है। इसके अलावा आज के दौर का मोबाइल मनोरंजन का भी शानदार साधन है। फिल्म देखने से लेकर टीवी सीरियल आदि देखनी हो तो सिनेमा हॉल में जाने अथवा टीवी के सामने बैठे रहने की जरूरत नहीं है। अपने मोबाइल पर जहां मन चाहे, जब चाहे सिनेमा-टीवी का आनंद लिया जा सकता है। छात्रों के लिए भी मोबाइल एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। कोरोनाकाल में पूरे देश के बच्चों ने मोबाइल फोन के माध्यम से ही ऑनलाइन पढ़ाई की थी।

हमें यह बात भी स्वीकार करनी होगी कि मोबाइल फोन के अत्याधिक उपयोग ने बच्चे, युवा पीढ़ी, समाज सभी को बुरी तरह से प्रभावित किया है। बच्चे मोबाइल फोन की लत का शिकार हो रहे हैं। मोबाइल फोन पर ऑनलाइन उपलब्ध देशी-विदेशी गेम्स के चक्कर में कई बच्चे तो अपनी जान तक गंवा चुके हैं। युवा वर्ग भी मोबाइल के गिरफ्त में जकड़ा जा चुका है। किसी परिवार के तीन-चार सदस्यों को घंटों अपने-अपने मोबाइल फोन पर व्यस्त देखा जा सकता है। इससे पारिवारिक ताना-बाना भी प्रभावित हुआ है। मोबाइल का उपयोग हो तो उसका स्वागत है, लेकिन इसका दुरूपयोग देश और समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय हो सकता है। देश और समाज के लिए कीमती समय को मोबाइल फोन पर गेम्स खेलते हुए नष्ट नहीं किया जा सकता। और सबसे बड़ी बात मानवता को मोबाइल फोन की सुली पर तो हरगिज नहीं चढ़ाया जा सकता, जैसा जोरहाट में हुआ। मोबाइल से वीडियो बनाने वाले की संवेदनहीनता के कारण फिर किसी अनिमेष की असमय मृत्यु न हो। इसके बारे में हम सभी को सोचना-विचारना होगा।

माता-पिता के साथ चार दिन

राज्य सरकार ने पिछले दिनों बंगाईगांव में हुई कैबिनेट की बैठक में राज्य के वरिष्ठ नागरिकों को लेकर जो अनुकरणीय घोषणा की है, उसकी देश भर में प्रशंसा हो रही है। कैबिनेट के इस फैसले के अनुसार वर्ष 2022 के जनवरी में राज्य के सरकारी कर्मचारियों को दो अतिरिक्त छुट्टियां दी जाएगी। यह छुट्टियां अपने बीबी-बच्चों के साथ सैर-सपाटा करने के लिए नहीं अपनों के साथ, परिवार के बड़े-बुजुर्गों के साथ वक्त बिताने के लिए होंगी। सरकार ने अपने कर्मचारियों को यह छुट्टी मां-बाप या सास-ससुर के साथ समय बिताने या फिर उन्हें घूमने ले जाने के लिए दी है। यह दो अतिरिक्त छुट्टियां 6 और 7 जनवरी को मिलेगी जबकि बाद के दो दिन साप्ताहिक अवकाश हैं तो कुल मिलाकर चार छुट्टियां हो जाती है। मां-बाप, सास-ससुर का ध्यान रखने के सिवाय किसी अन्य कारण के लिए यह छुट्टी नहीं दी जाएंगी और इस स्पेशल छुट्टी का लाभ आईएएस, आईपीएस ऑफिस से लेकर ग्रेड 4 के स्टाफ तक से लेकर राज्य के मंत्रीगण भी उठा सकेंगे।

अपनी कैबिनेट के उक्त फैसले का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि उनको बहुत खुशी होगी अगर सभी सरकारी कर्मचारी नए साल की शुरुआत में अपने माता-पिता के साथ अच्छा वक्त गुजार कर और उनका आशीर्वाद लेकर करें। इससे वे राज्य के विकास और जनता की भलाई के लिए और अच्छी तरह से काम कर सकेंगे। मुझे याद है, उन्होंने बीते साल ऐलान किया था कि सरकार अपने अधिकारी-कर्मचारियों को अपने बुजुर्गों की देखभाल के लिए हर साल, अतिरिक्त साप्ताहिक अवकाश देगी। वैसे भी असम एम्प्लाइज पैरेंट रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड नॉर्म्स फॉर एकाउंटेबिलिटी एंड मॉनिटरिंग एक्ट, 2017 के अनुसार सरकारी कर्मचारियों के लिए अपने बूढ़े माता-पिता के साथ दिव्यांग भाई-बहन की देखभाल करना अनिवार्य है।

राज्य के वरिष्ठ नागरिकों को लेकर डॉ. शर्मा शुरू से ही काफी संवेदनशील

रहे हैं। इससे पहले सर्वानंद सोनोवाल की सरकार में राज्य के वित्त मंत्री रहते वर्ष 2018 में डॉ. शर्मा ने एक और बड़ी घोषणा की थी। उन्होंने कहा था, सरकारी कर्मचारी उन पर निर्भर अपने माता-पिता की देखभाल करने में फेल होते हैं तो ऐसे में उनके वेतन का 10 फीसदी हिस्सा सीधे उनके माता-पिता के अकाउंट में डाल दिया जाएगा। हमारे देश में बुजुर्गों की देखभाल के लिए किसी भी प्रकार की छुट्टी का प्रावधान नहीं है, ऐसे में बुजुर्गों के लिए असम कैबिनेट की इस अनूठी पहल की हर हलकों में जमकर तारीफ हो रही है।

वैसे तो हमारी इस दुनिया में सब कुछ बदल रहा है। बदलाव की इस आंधी से हमारे परिवार भी अछूते नहीं हैं। परिवारों का दायरा छोटा होता जा रहा है और हम ना चाहते हुए भी अपनों से दूर हो रहे हैं। बेहतर जिंदगी की तलाश में कई लोगों के शहर बदल जाते हैं, अपने गांव और मकान तक छोड़ने पड़ते हैं। अच्छे रहन-सहन और सुनहरे भविष्य की तलाश में लोग आगे तो बढ़ रहे हैं लेकिन पीछे छूट रहे हैं तो बूढ़े मां-बाप । बिखरे-टूटते और सिकुड़ते परिवारों को देख राज्य की कैबिनेट का यह फैसला दिल को सकून देने वाला लगता है।

वैसे भी हमारे समाज में परिवार नियोजन के तौर पर एक या अधिक से अधिक दो बच्चों को जन्म देने का प्रचलन चल पड़ा है, वो चाहे लड़का हो या लड़की। ऐसे में अब अगर बेटा अथवा बेटा-बहू दोनों ही घर से दूर नौकरी कर रहे हैं तब भी माता-पिता खुद को अनदेखा और अकेला महसूस करते हैं। बुढ़ापे में खराब स्वास्थ्य के दौरान उनकी स्थाई देखरेख के लिए कोई नहीं होता और ऐसे में अकेलेपन का एहसास और बढ़ने लगता है। इसे संवेदनशीलता की कमी ही कहा जाएगा कि हमारे देश में मैटरनिटी लीव और पैटरनिटी लीव का प्रावधान तो है, लेकिन बुजुर्गों की देखभाल के लिए ऐसा कुछ नहीं।

वैसे कई देशों में ओल्डएज होम की संस्कृति है और वहां का समाज भी इसे स्वीकार भी करता है। लेकिन हमारे देश में माता-पिता को वृद्धाश्रम भेजने को हमारा समाज आसानी से स्वीकार नहीं करता। ऐसे में बुजुर्गों की देखभाल के लिए अवकाश का प्रावधान जरूरी और असम कैबिनेट की यह घोषणा प्रशंसनीय लगती है।

संवेदनशील सरकार
शहीदों का सम्मान

वीर योद्धा और शहीदों का सम्मान करने की असम में बहुत पुरानी परंपरा रही है। लाचित बरफूकन से लेकर कनकलता तक हमारे आदर्श रहे हैं। ऐसे लोगों के परिवारों को राष्ट्र व समाज की धरोहर माना जाता है। डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने भी इसी परंपरा को और अधिक गरिमा के साथ आगे बढ़ाने का काम किया है। उनकी कैबिनेट में यह फैसला लिया गया कि सेना, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल सहित अन्य सभी अर्धसैन्य बल में तैनात असम का कोई भी जवान यदि देश के किसी भी हिस्से में उग्रवादी अथवा दुश्मन देश के सैनिकों से लोहा लेते हुए शहीद होता है तो राज्य सरकार उसके परिवार को एक मुश्त सहायता राशि के रूप में 50 लाख रुपए का आर्थिक मुआवजा प्रदान करेगी। असम-मिजोरम सीमा पर हुई हिंसक वारदात में शहीद हुए छह जवानों के

परिवारों को भी 50-50 लाख रुपए की आर्थिक मदद देने की घोषणा की गई। सबसे बड़ी बात है कि राज्य सरकार के ऐसे फैसले सिर्फ घोषणा तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि बिना देर किए इन पर अमल भी शुरू कर दिया जाता है। शहीदों के प्रति सम्मान और सरकार की सद्इच्छा प्रकट करने के लिए मुख्यमंत्री मणिपुर में उग्रवादियों के हमले में शहीद हुए सुमन स्वर्गीयारी के बाक्सा जिले के थेकेराकुची काहिमारी गांव स्थित घर गए। शहीद के सर्वोच्च बलिदान के समक्ष नतमस्तक होकर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने शहीद की पत्नी जूरी स्वर्गीयारी से मुलाकात कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त की और उसके तीन साल के बेटे बराड को गोद में लेकर यह संदेश देने की कोशिश की कि उसका भविष्य सुरक्षित हाथों में है। मुख्यमंत्री ने शहीद परिवार को अनुग्रह राशि के रूप में 50 लाख रुपए का चेक सौंपा और कहा- शहीद सुमन स्वर्गीयारी पर पूरे देश को नाज है। मुख्यमंत्री का शहीद के घर जाना, उसके परिवार के साथ बातचीत करना, संवेदना व्यक्त करना यह दर्शाता है कि असम सरकार इस मुद्दे पर कितनी संवेदनशील है। मुख्यमंत्री यदि चाहते तो अपने अन्य किसी वरिष्ठ मंत्री को भी इस काम के लिए शहीद के घर भेज सकते थे। लेकिन डॉ. शर्मा स्वयं सुमन के घर गए और राज्य के मुखिया के तौर पर यह भरोसा दिलाया कि शहीद परिवार के सदस्यों के लिए राज्य सरकार की ओर से हर संभव सहयोग किया जाएगा।

गांववालों की भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्होंने स्वर्गीयारी के सर्वोच्च बलिदान के सम्मान में थेकेराकुची-कान्हीबारी सड़क का निर्माण कराकर उसे शहीद के नाम पर समर्पित करने की घोषणा की। इसके अलावा हिडिम्बा बोड़ो हाईस्कूल में एक स्टेडियम बनाए जाने की भी उन्होंने घोषणा की, जहां सुमन ने पढ़ाई की थी। उस घटना को कोई भी नहीं भूला होगा, जब 13 नवंबर को मणिपुर में उग्रवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में सुमन की जान चली गई थी। मणिपुर के चुड़ाचांदपुर जिले में घात लगाकर किए गए हमले में मारे गए सात लोगों में से स्वर्गीयारी भी एक थे। उग्रवादियों ने असम राइफल्स के काफिले पर उस समय हमला किया जब असम राइफल्स की 46 बटालियन के जवान अपने कर्नल के साथ म्यांमार की सीमा से लगे चुड़ाचांदपुर में एक कार्यक्रम की निगरानी करने जा रहे थे।

कृपया यहां न थूकें

किसी भी सार्वजनिक स्थान पर थूकना अथवा उसे गंदा करना न सिर्फ असभ्यता का परिचायक है, बल्कि कानूनन जुर्म भी है। अभी दीपावली पर ही मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने महानगर के दिसपुर सुपर मार्केट में स्थित नवनिर्मित फ्लाईओवर का उद्घाटन किया था। अपने संबोधन में उन्होंने कहा भी था, 'मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि इस नए पुल पर थूकें नहीं।' लेकिन हमारे समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो साफ-सफाई, स्वच्छता-निर्मलता की बातें समझते ही नहीं। अभी चार दिन ही नहीं गुजरे थे कि असभ्य लोगों ने नए पुल की दिवारों पर बनाए गए चित्रों के ऊपर थूक-थूककर बदरंग कर दिया। कुल 127.20 करोड़ रुपए की लागत से बनाए गए 205 मीटर लंबे इस फ्लाईओवर को असम की पहचान और यहां के निवासियों के तौर-तरीकों के रूप में देखा जाएगा। महानगर की लाइफ लाइन कहे जाने वाले जीएस रोड पर बने इस फ्लाईओवर से प्रति दिन बड़ी संख्या में बाहरी राज्यों के लोगों का भी आना-जाना होगा। फ्लाईओवर पर थूके गए पान से बने निशान को देखकर उनके मन में क्या भाव उत्पन्न होगा, इस पर विस्तार से कहने की आवश्यकता नहीं है। फ्लाईओवर की दीवारों की पेंटिंग्स पर थूकने और इसके खंभों पर विज्ञापन पोस्टर चिपकाने की घटनाओं से राज्य का प्रबुद्ध वर्ग खासा नाराज है। फ्लाईओवर की दीवारों पर पूर्वोत्तर राज्यों की विविध संस्कृति और परंपराओं की झांकियां चित्रित करने वाले कलाकारों ने भी जनता से उनकी कलाकृतियों पर न थूकें तथा सड़कों

पर कूड़े न फेंकने की अपील की थी। इसके बावजूद फ्लाईओवर पर गंदगी फैलाने का सिलसिला जारी रहा। जीएमसी आयुक्त देवाशीष शर्मा कहते हैं कि महानगर के करीब पांच फीसदी नागरिक ही सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाते हैं। ऐसे लोग न सिर्फ जहां-तहां थूकते हैं, बल्कि मौका मिलते ही किसी भी जगह कचरा फेंकने से भी नहीं चूकते। ऐसे पांच फीसदी असभ्य लोगों के लिए महानगर के बाकी बचे 95 प्रतिशत नागरिकों को शर्मसार होना पड़ता है। महानगर की फ्लाईओवर-फुटब्रिज, डिवाइडर तथा अन्य सभी सार्वजनिक स्थानों को गंदा होने से बचाने के लिए गुवाहाटी नगर निगम ने गंदगी फैलाने वालों पर जुर्माना लगाने का ऐलान किया है। ऐसी पहली गलती के लिए 1000 रुपए और दूसरी बार वही गलती दोहराने पर ज्यादा जुर्माना लगाए जाने की बात कही गई है। वैसे यदि देखा जाए तो यह बहुत ही अफसोस की बात है कि नागरिकों को उनका नागरिक धर्म समझाने के लिए जुर्माने की व्यवस्था करनी पड़ रही है। किसी भी शहर, महानगर को साफ-सुथरा और स्वच्छ रखना वहां के नागरिकों की पहली जिम्मेदारी होनी चाहिए। गुवाहाटी नगर निगम भी लगता है, ऐसे असभ्य लोगों को सभ्यता सिखाने के लिए अपनी कमर कस चुका है। नगर निगम ने व्हाट्सएप नंबर जारी कर गंदगी फैलाने वालों की तस्वीरें भेजने और उसके एवज् में पुरस्कार देने की भी घोषणा की है। सरकार महानगर के सौंदर्यीकरण, स्वच्छता और नागरिक सुविधाओं के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च तो कर सकती है, मगर सरकार की ऐसी कोशिशों की सफलता नागरिकों पर भी निर्भर करती है। जहां-तहां कचरा फेंकने की आदत ने कभी गुवाहाटी के बीच से होकर गुजरने वाली भरलु नदी को गंदगी से भरे नाले में परिवर्तित कर दिया है। हर साल सरकार की ओर से भरलु नदी की सफाई भी कराई गई और नालों की खुदाई भी, इसके बाद भी समस्या जस की तस है, बजाए सिर्फ सरकार को जिम्मेदार ठहराने के, उन लोगों को भी चिन्हित करना होगा, जो जानबूझकर यहां-वहां गंदगी फैलाते हैं। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए महानगर के 95 फीसदी नागारिकों को आगे आकर पान-गुटका आदि खाकर सार्वजनिक स्थानों पर थूकने वालों से पुरजोर शब्दों में केवल यह वाक्य कहना होगा-'कृपया यहां न थूकें'।

बराकघाटी और भाषा विवाद

असम की ब्रह्मपुत्र घाटी और बराक घाटी के लोगों के बीच भाषा को लेकर उत्पन्न विवाद कोई नया नहीं है। वर्ष 1960 में भी जब असम सरकार ने बराक घाटी में असमिया को एक मात्र आधिकारिक भाषा बनाने का निर्णय लिया था, बराक घाटी में इसका जोरदार विरोध हुआ था। बराक घाटी की आबादी का एक बड़ा हिस्सा आज भी बांग्ला भाषा बोलता है । वहां बराक घाटी के लगभग 80% निवासी जातीय बंगाली हैं। बराक घाटी के सिलचर रेलवे स्टेशन पर 19 मई, 1961 को भाषा आंदोलन कर रहे लोगों में असम पुलिस द्वारा चलाई गई गोली में 11 आंदोलनकारी मारे गए थे। वर्ष 1960 के भाषा आंदोलन का एक अलग ही इतिहास है, लेकिन यह बात तय है कि बराक और ब्रह्मपुत्र घाटी के लोगों के लिए भाषा एक संवेदनशील मुद्दा रहा है।

विगत 18 अक्टूबर को यह मामला एक बार फिर गरमा गया, जब बराक लोकतांत्रिक युवा फ्रंट (बीडीवाईएफ) नामक संगठन ने बराक घाटी के सिलचर रेलवे स्टेशन के पास असमिया में लिखी सरकारी होर्डिंग पर सरेआम कालिख पोत दी और घाटी में असमिया भाषा के स्थान पर बांग्ला भाषा के प्रयोग की मांग की। मालूम हो कि एक दिन पहले ही इस संगठन ने अपने यहां असमिया भाषा के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने और बांग्ला भाषा को सरकारी भाषा के रूप में लागू करने की मांग उठाई थी। संगठन की यह भी मांग थी कि बराक घाटी में सरकारी प्रचार-प्रसार से संबंधित कामकाज भी बांग्ला में होने चाहिए।

एक ही राज्य के दो हिस्सों के निवासियों के बीच भाषा बोलने-पढ़ने-लिखने को लेकर विरोध हो सकता है, मगर विरोध प्रदर्शन का तरीका भी सभ्य होना चाहिए। ऐसे मामलों में विरोध प्रदर्शन करते वक्त दूसरे पक्ष के लोगों की भावनाओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। सिलचर रेलवे स्टेशन के पास असमिया में लिखी सरकारी होर्डिंग पर सरेआम कालिख पोते जाने की घटना निंदनीय है और ऐसी घटना का कतई समर्थन नहीं किया जा सकता। बराक घाटी में बांग्ला भाषा के प्रयोग के समर्थन में आंदोलन के और भी कई लोकतांत्रिक व शांतिपूर्ण तरीके हो सकते थे। बीडीवाईएफ अपनी मांगों को लेकर प्रधानमंत्री-राज्यपाल से लेकर अन्य सभी संबंधित मंत्री-अधिकारियों को ज्ञापन दे सकती थी। शांतिपूर्वक तरीके से धरना-प्रदर्शन भी किया जा सकता था, मगर असमिया भाषा में लिखे साइनबोर्ड पर कालिख पोत देना अनुचित ही नहीं अपराध भी है।

लोगों में समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली भाषा को कभी भी संघर्ष हथियार नहीं बनाया जाना चाहिए। हमारे देश में सभी धर्म-भाषा-संस्कृति-सभ्यता का आदर-सम्मान रहा है। भाषा-साहित्य के प्रति असमवासियों का अनुराग किसी से भी छिपा हुआ नहीं है। असम साहित्य सभा के मंच पर असमिया सहित विभिन्न भाषा-साहित्य का सम्मान होता आया है। बराक घाटी का बुद्धिजीवी वर्ग भी असमिया-बांग्ला समन्वय का पैरोकार रहा है। यही कारण है कि होर्डिंग पर कालिख पोते जाने की घटना का बराक घाटी में भी विरोध हुआ और बीडीवाईएफ के समर्थन में कोई खड़ा नहीं हुआ। लेकिन इस बात को यहीं पर खत्म नहीं किया जा सकता, यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि आगे भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो। इसके लिए बराकघाटी के बुद्धिजीवी वर्ग को आगे बढ़कर आना होगा। बराकघाटी में बांग्ला भाषा का धड़ल्ले से प्रयोग किया जाता है, इस पर किसी को कोई आपत्ति भी नहीं है। लेकिन सिलचर के रेलवे स्टेशन से बाहर सरकारी योजना से संबंधित किसी होर्डिंग में असमिया भाषा का प्रयोग किया गया है तो इस पर भी किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। भाषा के प्रयोग को लेकर यदि किसी भी व्यक्ति-संगठन के मन में कोई शंका, कोई आपत्ति है तो उसका विरोध-प्रदर्शन का तरीका जरूर लोकतांत्रिक और सभ्य होना चाहिए।

अतिक्रमण समर्थन योग्य नहीं

अतिक्रमण चाहे सीमाओं का हो अथवा अधिकारों का हो, कभी भी समर्थन योग्य नहीं हो सकता। वैसे भी अतिक्रमण की समस्या कोई नई नहीं है। हमारे देश के बहुत से राज्य अतिक्रमण की समस्या से ग्रस्त हैं। दो राज्यों के बीच के सीमा विवाद में अतिक्रमण एक मुख्य कारण हो सकता है। पिछले दिनों (23 सितंबर, 2021) दरंग जिले के सिपाझार राजस्व चक्र के ढोलपुर गोरुखुंटी गांव में अतिक्रमणकारियों से सरकारी जमीन मुक्त कराने गई पुलिस और सुरक्षाबलों के साथ हुई गांवों वालों की झड़प के बाद पुलिस को गोली चलानी पड़ी, जिसमें दो लोग मारे गए। इसके अलावा उक्त घटना में कई ग्रामीणों के अलावा पुलिसकर्मी भी घायल हुए। इस घटना की चर्चा न सिर्फ राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में हुई, बल्कि इस मामले पर पाकिस्तान ने भारतीय राजनयिक को भी बुलाया था। पाक विदेश मंत्रालय का आरोप था कि असम में मुस्लिम समुदाय को निशाना बनाया जा रहा है। यह पहला मौका नहीं है, जब जमीन को लेकर विवाद पैदा हुआ है। इससे पहले भी कब्जाई गईं सरकारी जमीन खाली कराने के दौरान जबरदस्त झड़पें हो चुकी हैं।

दरंग जिले के ढोलपुर गांव में पुलिस फायरिंग में दो लोगों के मारे जाने की घटना बहुत दुखद है। इस घटना को यदि टाला जा सकता तो बहुत अच्छा होता। राज्य का हर एक नागरिक चाहता है कि चाहे पड़ोसी राज्य की सीमा का

अतिक्रमण हो या फिर किसी व्यक्ति -समूह द्वारा सरकारी भूमि का, उस पर से कब्जा हटाया ही जाना चाहिए। मगर, कब्जा हटाए जाने की प्रक्रिया को तभी आदर्श माना जाएगा, जब यह पूरा काम बिना किसी खून-खराबे अथवा हिंसा के हो। सरकार की यह जिम्मेदारी होती है कि वह सरकारी जमीन अथवा अन्य संपत्ति की सुरक्षा का ध्यान रखे, मगर उससे भी बड़ी जिम्मेदारी होती है कि सरकार अपनी जनता के हितों को सबसे आगे रखे। राज्य के हर जिले, अभयारण्य, वन, उद्यान, संरक्षित वनांचल, जलाशय, पहाड़ आदि पर लोगों ने अतिक्रमण कर रखा है। ऐसे लोगों में यदि बाढ़ व कटाव से पीड़ित और भूमिहीन शामिल हैं तो सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह सबसे पहले ऐसे लोगों के लिए भूमि का प्रबंध करे। राज्य में सरकारी भूमि की कोई कमी नहीं है, इसके बावजूद एक भी परिवार यदि भूमिहीन है तो यह बहुत दुख की बात है। लेकिन कोई व्यक्ति अपने प्रभाव अथवा डंडे के जोर पर सरकारी या अन्य किसी की भी भूमि का अतिक्रमण करता है तो इसे एक कानून व्यवस्था से जुड़ा मामला मानते हुए उसी के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए।

ढोलपुर गांव की घटना को लेकर राज्य की राजनीति में जबर्दस्त ज्वार देखने को मिल रहा है। कांग्रेस, एआईयूडीएफ जैसे संगठन इस घटना में एक विशेष समुदाय को निशाना बनाए जाने का आरोप लगा रहे हैं तो भाजपा-अगप जैसे संगठनों को तो इस घटना के पीछे राष्ट्रविरोधी ताकतों का भी हाथ दिखता है। राज्य में यदि ऐसी राष्ट्रविरोधी ताकतें सचमुच में ही सक्रिय है तो हमारे खुफियातंत्र और शासन-व्यवस्था पर सवालिया निशान लग सकता है। अच्छा होगा, ढोलपुर गांव में हुई हिंसक झड़प और पुलिस फायरिंग से जुड़े सही कारणों का पता लगाकर उस पर कार्रवाई की जाए। इसको लेकर सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी रोटियां सेंकने की कोशिश करेंगे तो आगे चलकर यह घटना एक खतरनाक मोड़ ले सकती है। ऐसी घटनाओं में जितना अधिक संयम बरता जाए, उतना ही अच्छा है। सरकार की यह कोशिश होनी चाहिए कि ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो। कुछ दिन पहले असम-मिजोरम सीमा पर हुई हिंसक झड़प भी पड़ोसी राज्य द्वारा असम की भूमि पर किए गए अतिक्रमण का ही नतीजा था। आदर्श स्थिति तो यह है कि अतिक्रमण जैसी घटनाओं को सूझ-बूझ, संयम और समझदारी के साथ निपटा जाए।

असम में पर्यटन की संभावनाएं

हरी-भरी वादियां, पहाड़-झरने, नदियां-जलाशय, घने जंगल आदि से भरपूर हमारे असम में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। यहां धार्मिक पर्यटकों के लिए कामाख्या मंदिर-शिवदौल से लेकर उमानंद-शक्रेश्वर मंदिर है तो रोमांच प्रिय पर्यटकों के लिए उफनते ब्रह्मपुत्र पर नौका भ्रमण, पर्वतारोहण, काजीरंगा, मानस जैसे उद्यानों में रात गुजराने का अनुभव क्या नहीं है। पर्यटकों के लिए असम में इतना कुछ होने के बावजूद यहां का पर्यटन उद्योग का विकास क्यों नहीं हो पा रहा है, इस पर गंभीरता से विचार किए जाने की जरूरत है। हमारे देश में ऐसे बहुत से राज्य हैं, जहां की मुख्य आय पर्यटन उद्योग पर टिकी हुई है। ऐसे में देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राज्य सरकार, होटल उद्योग, टूर ऑपरेटर्स, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग आदि को मिलकर कोशिश करने की जरूरत है।

असम के प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन की अपार संभावनाओं को राष्ट्रीय-

अंतर्राष्ट्रीय पटल पर प्रस्तुत करने के लिए पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से राज्य सरकार को आगे आना होगा। इसमें कोई दो राय नहीं है कि हमारे यहां पिछले कई सालों में पुल-सड़क आदि का विकास बड़ी तेजी से हुआ है। पूर्वोत्तर के कई राज्यों को रेलवे से जोड़ा गया है तो राज्य के कई शहरों में हवाई सेवा भी प्रारंभ हो गई है। इसके बावजूद पर्यटन क्षेत्र के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए सभी स्थानों पर सर्वसुविधायुक्त अत्याधुनिक होटल-रेस्टूरेंट, कॉटेज आदि के निर्माण को जरूरत-सूची में पहले स्थान पर रखा जाना चाहिए। इसके अलावा हमारे यहां की यातायात व्यवस्था में अभी और सुधार की गुंजाइश है। राज्य सरकार पर्यटन उद्योग से जुड़ी विभिन्न इकाइयों के लिए विशेष पैकेज, योजना आदि की घोषणा कर इस दिशा में एक सार्थक कदम उठा सकती है। इस बात को दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि कोरोना महामारी का सर्वाधिक प्रभाव पर्यटन उद्योग पर पड़ा है।

होटल-रेस्टूरेंट, टूर-ऑपरेटर्स जैसे उद्योग से जुड़े लोगों को भी साकारात्मक सोचने का समय आ गया है। वे अपने लड़खड़ाते उद्योग को फिर से खड़ा करे और सरकार तथा वित्तीय संस्थानों को बताए कि इसके लिए उनको किस प्रकार का सहयोग चाहिए। हमारे राज्य में अधिक से अधिक पर्यटक आए, इसके लिए हम असमवासियों को भी आगे आना होगा। 'अतिथि देवो भव:' का भाव हर असमवासियों के मन में बसता है। बाहर से आने वाले पर्यटकों का हम इतना आदर-सत्कार करें कि वह न सिर्फ हमारी आथित्य की भावना का कायल हो जाए, बल्कि दूसरी बार असम आने को मजबूर भी हो जाए। इसके लिए हमें यह समझना होगा कि पर्यटकों को क्या-क्या पसंद है। हर देशी-विदेशी पर्यटक की नजरों में शांति, सुरक्षा और स्वच्छता सर्वोपरि होती है। दरअसल इन्हीं कारणों से वे अपना घर-बार छोड़ घूमने के लिए निकलते हैं। कोई भी पर्यटक जब किसी भी शहर-महानगर में पहुंचता है तो वह अपना पहला कदम वहां के हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन अथवा बस अड्डे पर रखता है। ऐसे सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा का चाकचौबंद होना सबसे पहली शर्त होनी चाहिए। कल्पना कीजिए किसी पर्यटक के शहर में कदम रखते ही उसकी जेब कट जाए अथवा उसके सामान की चोरी हो जाए तो उस पर क्या गुजरेगी। इसी प्रकार होटल-लॉज आदि

में पर्यटकों को बिल्कुल घर जैसा शांत माहौल मिलना चाहिए और होटलवालों का व्यवहार भी उसके साथ मित्रवत होना चाहिए।

इन सबसे अधिक जरूरी है पर्यटन स्थल की सुंदरता और स्वच्छता। कामाख्या मंदिर को पूरे विश्वभर में लोकप्रिय बनाने के लिए राज्य सरकार लगातार कोशिशों में लगी हुई है। यह सच है कि कोविड महामारी के कारण पिछले दो साल से अंबुवासी मेला नहीं हुआ, मगर उससे पहले मेले के आयोजन को लेकर राज्य सरकार और पर्यटन विकास निगम द्वारा जिस पैमाने पर आयोजन किए, उसकी लंबे समय तक चर्चा हुई। लेकिन किसी भी पर्यटन स्थल को साफ सुथरा और स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी आम नागारिकों की है। इसके लिए सरकार साधन उपलब्ध करा सकती है, मगर उन साधनों के उपयोग करने की जिम्मेदारी पर्यटक-दर्शक और वहां के स्थानीय निवासियों की होती है। कुछ दिन पहले शिवसागर जिले में स्थित अतिप्राचीन शिवदौल गया था। कई साल पहले अंतर्राष्ट्रीय शिव महोत्सव भी हुआ था। पिछले दिनों शिवदौल जाना हुआ, शिवदौल के निकट स्थित विष्णुदौल के पास लगे कचरे के ढेर को देखकर मन खट्टा हो गया। राज्य के कीर्तिचिन्ह स्थलों पर यदि ऐसे कचरों के ढेर लगे रहे तो हम पर्यटकों को आकर्षित कैसे कर पाएंगे। हम सरकार से राज्य के ऐतिहासिक स्थल, धार्मिक स्थलों के संरक्षण की तो मांग करते हैं, मगर यह भूल जाते हैं कि इन स्थानों की पवित्रता बनाए रखने और देखभाल की जिम्मेदारी हम सभी की है।

सरकार के सौ दिन

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने अपने शासनकाल के 100 दिनों में यह स्पष्ट कर दिया है कि वे अगले पांच सालों में राज्य को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं। आने वाले दिनों में असम को कौन-सी दिशा मिलेगी यह तो समय ही बताएगा। अपनी योजनाओं को लेकर मुख्यमंत्री की स्पष्टता से न सिर्फ राज्य का आम नागरिक, बल्कि विपक्षी दल भी कायल हैं। पिछले सौ दिनों में उनकी कथनी और करनी में जो एकरूपता दिखाई है, वह इनके पद की गरिमा के अनुकुल जान पड़ती है। सत्ता संभालते ही उनका सीधा सामना कोरोना महामारी की दूसरी लहर से हुआ। दूसरी लहर की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि शवों के अंतिम संस्कार के लिए महानगर के कब्रिस्तान-श्मशान भी कम पड़ने लगे। मुख्यमंत्री ने अपने सहयोगी तथा स्वास्थ्य मंत्री केशव महंत के साथ स्थिति को न केवल संभाला, बल्कि चिकित्सा सुविधाओं को भी बढ़ाने का काम किया। इसमें 13.56 मैट्रिक टन की कुल क्षमता वाले ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र स्थापित करने से लेकर राज्य के मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में गहन देखभाल इकाई (आईसीयू) बिस्तरों की संख्या लगभग दोगुनी करना शामिल है। सिर्फ यही नहीं कोरोना संक्रमण में अपने माता-पिता को खो चुके अनाथ बच्चों के लिए मुख्यमंत्री शिशु सेवा योजना के तहत उनके 24 साल के होने तक मासिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था की गई, बल्कि महामारी में पति को खोने वाली विधवाओं को ढाई-ढाई लाख रुपए की एकमुश्त आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई।

राज्य की बागडोर संभालते ही डॉ. शर्मा ने असम को ड्रग्स मुक्त करने की घोषणा की थी। पुलिस प्रशासन के सहयोग से इस दिशा में युद्ध स्तर पर

कार्रवाइयां भी होने लगी। इसी का नतीजा है कि सरकार के 100 दिनों में 183 करोड़ रुपए की ड्रग्स जब्त करने के साथ ही इस धंधे में लिप्त 1,760 लोगों को गिरफ्तार भी किया गया। इसी तरह मुख्यमंत्री पार्टी के चुनावी घोषणापत्र में जनता से किए गए वादों को पूरा करने में भी लगे हैं ताकि लोगों को उलहाना देने का मौका न मिले। भाजपा ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में गौ माता की सुरक्षा को अपनी पहली प्राथमिकता बताया था। अपने इस संकल्प को पूरा करने के लिए डॉ. शर्मा की सरकार ने विधानसभा में असम गौ-सुरक्षा अधिनियम 2021 पारित किया। इसके अलावा राज्य भर में चल रही मवेशियों की तस्करी को रोकने के लिए समुचित कदम उठाए गए। राज्य के नामघर-मंदिर आदि की जमीन पर अतिक्रमण राज्यवासियों के लिए हमेशा से ही एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। इस सौ दिन की सरकार ने पूरी कड़ाई के साथ अतिक्रमण अभियान चलाकर सत्र-मंदिरों की जमीन को कब्जा मुक्त कराने का काम किया।

इसके अलावा भाजपा ने विधानसभा चुनाव के दौरान स्वयंसेवी समूहों की महिलाओं से ऋण माफी का वादा किया था। सत्ता में आते ही इस वादे को पूरा करने के लिए कवायद शुरू की गई और मंत्री अशोक सिंहल की अगुवाई में एक समिति का गठन किया, जिसने ऋण माफी की प्रक्रियाओं और योग्यताओं को तय करने का कार्य किया। मुख्यमंत्री ने कहा है कि पिछले जून महीने तक राज्य में 14 लाख माइक्रो फाइनेंस कर्जदार थे, जिनके ऊपर 12,000 करोड़ रुपए बकाया हैं, जिसमें से राज्य सरकार को लगभग 7,200 करोड़ खर्च करने पड़ेंगे। इसके अलावा असम अरुणोदय योजना के तहत वित्तीय सहायता को 830 से बढ़ाकर 1,000 रुपए प्रति माह किया गया और इस योजना में 6,38,000 नए लाभार्थियों को जोड़ा गया। टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली असम की मुक्केबाज लवलीना बरगोहाईं की ऐतिहासिक उपलब्धि को भी सरकारी प्रोत्साहन के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। इसी दौरान करोड़ों रुपए के बिजली बिल वसूली के लिए सख्त लेकिन जनकल्याणकारी योजना भी बनाई गई। पिछले 42 सालों में यह पहला मौका है, जब असम में स्वतंत्रता दिवस किसी उग्रवादी संगठन द्वारा बंद आह्वान के मनाया गया। इस पूरे घटना-प्रवाह को राज्य सरकार की 100 दिवसीय यात्रा के रूप में देखा जा सकता है।

'सबका प्रयास'

स्वतंत्रता दिवस के मौकेपर लाल किले की प्राचीर से संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमेशा से ही देश को नई दिशा-नई दृष्टि देने का काम किया है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने पहली बार राष्ट्र को संबोधित करते हुए 'स्वच्छ भारत' अभियान का एलान किया था। उसके बाद जन-धन योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी न जाने ही कितनी ही योजनाओं का न सिर्फ एलान ही किया गया, बल्कि उन्हें धरातल पर भी उतारा गया। ऐसा ही एक नारा दिया गया था 'सबका साथ-सबका विकास' इस नारे पर पर लगातार काम किए जाने के पश्चात इसमें दो शब्द और जोड़ दिए गए 'सबका विश्वास' इन दो शब्दों को जोड़े जाने के पीछे की सोच थी कि सरकारी योजनाओं में उन लोगों को भी शामिल किया जाए तो आमतौर पर सरकारी योजनाओं को अविश्वास की नजरों से देखते हैं और इस भ्रम को पाले रहते हैं कि सरकारी योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ सही लाभार्थी तक नहीं पहुंच पाता। सरकार ने देशवासियों को यह समझाने का प्रयास किया कि सारी सरकारी योजनाएं किसी धर्म-वर्ग-संप्रदाय विशेष के लिए नहीं, सभी के लिए है। जनता को यह भी विश्वास दिलाया गया कि प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी तमाम योजनाओं का फायदा लाभार्थी की योग्यता और योजना के लिए तय मानदंडों पर तय होता है न कि जाति-धर्म के आधार पर।

इस बार 75वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले की प्राचीर से देश

को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने इस नारे के साथ दो शब्द 'सबका प्रयास' और जोड़ दिया। अब इस आठ शब्दों के नारे में परिपूर्णता दिखने लगी है। हम कह सकते हैं कि नारे में बताए गए चार स्तंभों के दम पर एक मजबूत भारत का निर्माण संभव है। किसी भी राष्ट्र के विकास की गति इस बात पर निर्भर करती है कि उस यात्रा में देश के सभी नागरिक शामिल हों और सभी को अपना विकास करने का समान अवसर मिले। इससे भी जरूरी यह है कि सरकार की नीयत और उसके काम पर सभी को विश्वास हो। इस साल 'सबका प्रयास' जोड़कर प्रधानमंत्री ने जनता को यह स्पष्ट संदेश दिया है कि सबका प्रयास हमारे हर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । लाल किले की प्राचीर से उन्होंने कहा, अगले 25 वर्ष की यात्रा नए भारत के सृजन का अमृतकाल है। इस अमृतकाल में हमारे संकल्पों की सिद्धि, हमें आजादी के 100 वर्ष तक ले जाएगी।

अगले 25 सालों में देश को सशक्त और आत्मनिर्भर बनना है तो सबका प्रयास जरूरी है। सभी देशवासी एकजुट होकर प्रयास करेंगे, एकसाथ मिलकर विकास के मार्ग पर चलेंगे तो भारत को विश्व गुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता। हमारे देश में उत्पादित सामग्री का मानदंड इतना ऊंचा होना चाहिए कि पूरे विश्व में 'मेड इन इंडिया' सर्व-श्रेष्ठ उत्पाद की पहचान बन जाए। देश के विकास में हर एक नागरिक के प्रयास को सुनिर्दिष्ट और सुस्पष्ट किए जाने की जरूरत है। देश का नागरिक पूरी ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर देश को आगे ले जाने में अपनी ओर से प्रयास कर सकता है। इसमें अंतिम पायदान पर खड़े मामूली व्यक्ति से लेकर उच्च शिखर पर बैठा उद्योगपति तक शामिल है। देश के सभी नागरिक पूरी ईमानदारी के साथ यदि अपने-अपने राष्ट्र धर्म का पालन करें तो इससे ज्यादा की जरूरत ही नहीं। जिस पर सरकार को टैक्स देने की जिम्मेदारी है, वह पूरा टैक्स दे। जिस पर बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी है, वह देश के भविष्य का निर्माण करे। किसान फसल उगाए और सरकार देश के हर एक नागरिक का एक समान ध्यान रखें। सभी का प्रयास तभी होगा, जब सभी का एक-दूसरे पर विश्वास होगा और सबका विकास भी तभी संभव है, जब सबका साथ बना रहे।

पूर्वोत्तर राज्यों का सीमा विवाद कहीं नासूर न बन जाए

पूर्वोत्तर के कई राज्यों के साथ पिछले कई दशकों से चले आ रहे सीमा विवाद को अब भी सुलझाया नहीं गया तो आगे चलकर यह विवाद एक गंभीर समस्या का रूप ले सकता है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में अलग-अलग राज्यों के विभाजन के बाद से आज तक कभी भी सीमा विवाद को सुलझाने के लिए गंभीर कोशिश नहीं की गई। चाहे वह केंद्र सरकार हो अथवा पूर्वोत्तर राज्यों की सरकारें, सभी ने इस विवाद को टालने में ही भलाई समझी। वैसे भी पूर्वोत्तर राज्यों के बीच के सीमा विवाद को हल करना कोई आसान काम नहीं है। पूर्वोत्तर का कोई राज्य अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में उसकी जो सीमा थी, उसके आधार पर सीमा का हल चाहता है तो कोई राज्य संवैधानिक तरीके से अर्थात जिस दिन राज्य बना था उस दिन जो सीमा तय थी, उसके हिसाब से विवाद के हल की बात करता है। इन सबके बीच यह भी देखने वाली बात है कि दो राज्यों के बीच के सीमा विवाद को सुलझाने में जब तक केंद्र सरकार सक्रिय पहल नहीं करती है, तब तक इस मसले को नहीं सुलझाया जा सकता। वैसे भी दो राज्यों के बीच की सीमा को तय करना केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों के बीच के सीमा विवाद को सुलझाने के लिए केंद्र सरकार यदि तैयार भी हो जाती है तो यह कोई आसान कवायद नहीं है। इस काम को पूरा करने में सालों लग सकते हैं। लेकिन पूर्वोत्तर राज्यों की मौजूदा स्थिति फिलहाल केंद्र सरकार के लिए अनुकूल है। असम तथा त्रिपुरा में जहां भाजपा की सरकारें हैं, वहीं पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में नॉर्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक एलायंस (नेडा) की

सरकारें हैं। इससे भी बड़ी बात है कि असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा नेडा के अध्यक्ष भी हैं। असम-मिजोरम सीमा विवाद को लेकर डॉ. शर्मा ने जिस प्रकार की परिपक्वता का परिचय दिया है और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दोनों राज्यों के मुख्यमंत्री को समझा-बुझाकर शांत किया है, उससे एक बेहतर नतीजे की उम्मीद जरूर जागती है।

असम-मिजोरम सीमा विवाद को लेकर पड़ोसी राज्य जितना उग्र था, स्थिति को संभालने के लिए असम के मुख्यमंत्री ने उतनी ही शांति और दृढ़ता से काम लिया। डॉ. शर्मा ने एक ओर जहां केंद्र सरकार की मध्यस्थता में सीमा विवाद को सुलझाए जाने की बात कही तो दूसरी ओर पूरी दृढ़ता के साथ यह भी कहा कि वह असम की एक इंच जमीन भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों के बीच केसीमा विवाद का स्थायी हल निकाला जाना चाहिए और केंद्र सरकार के कहे अनुसार वे अपनी ओर से सभी संभव कदम उठाने को तैयार है। हमें यह बात भी नहीं भूलना चाहिए कि पूर्वोत्तर राज्यों का सीमा विवाद इस क्षेत्र की जनता की भावनाओं से जुड़ा मामला है। लिहाजा जनता की भावना की अनदेखी कर किया गया कोई भी समझौता सफल नहीं हो सकता। लिहाजा इसके हल के लिए जरूरी है कि पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न दल-संगठन, बुद्धिजीवी आदि को भी इस प्रक्रिया में शामिल किया जाए। सीमा विवाद के हल के लिए दो राज्य और केंद्र सरकार के बीच त्रिपक्षीय वार्ता शुरू होने से पहले यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि कौन-सा राज्य क्या चाहता है और समझौता करने के लिए किस हद तक जाने को तैयार है। जन भावना की अनदेखी तो कोई भी सरकार नहीं कर सकती, चाहे वह केंद्र में बैठी सरकार हो अथवा राज्य सरकारें।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूर्वोत्तर को अष्टलक्ष्मी तक कह चुके हैं। लेकिन पूर्वोत्तर का विकास यहां की शांति में निहित है। अब समय आ गया है कि पूर्वोत्तर राज्यों के बीच के सीमा विवाद को और न टाला जाए, आपस में मिल-जुलकर सर्वसम्मति से सीमा विवाद का हल निकले। ऐसे कदम उठाने से ही पूर्वोत्तर के राज्यों के बीच की मित्रता प्रगाढ़ होगी, समस्याएं भी कम होगी और इसी के बीच से बहेगी विकास की बयार।

असम-मिजोरम की सुलगती सीमा

पूर्वोत्तर के मुख्यमंत्रियों के साथ अंतर्राज्यिक सीमा विवाद पर चर्चा करने के लिए दो दिवसीय दौरे पर आए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के वापस दिल्ली लौटते ही असम-मिजोरम सीमावर्ती लैलापुर में जो हिंसक घटना हुई, वह अप्रत्याशित, बर्बर, अमानवीय और हृदयविदारक थी। किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि मिजोरम की पुलिस अपने ही पड़ोसी सहकर्मी भाइयों पर लाइट मशीनगन से गोलियों की बौछार कर देगी। मिजोरम पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी की इस घटना में असम पुलिस के छह जवानों तथा एक आम नागरिक की मौत हो गई, जबकि कछार के पुलिस अधीक्षक, सुरक्षा बल समेत 60 से अधिक लोग घायल हो गए। इसके अलावा सरकारी वाहनों पर हमलों के साथ कई घर भी फूंक दिए गए। वैसे तो पूर्वोत्तर राज्यों के बीच का सीमा विवाद इनके स्थापनाकाल से ही है, मगर पहली बार इस प्रकार की हिंसक घटना देखने को मिली, जब एक राज्य की पुलिस अपने ही पड़ोसी राज्य की पुलिस के साथ दुश्मनों जैसा बर्ताव कर रही थी।

उस दिन लैलापुर में तैनात असम पुलिस के जवानों ने भी यदि जवाबी कार्रवाई करते हुए अपनी बंदूकों का मुंह खोल दिया होता तो स्थिति और भी अधिक भयावह, विस्फोटक तथा काबू से बाहर वाली हो सकती थी। 26 जुलाई को उस दिन मौके पर तैनात असम पुलिस के अधिकारी-जवानों ने जो संयम का परिचय दिया, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। हथियारबंद होने के बावजूद अपने हमलावर पर जवाबी हमला न करने की हिम्मत एक बहादूर

जवान ही दिखा सकता है। उस दिन यदि असम पुलिस के एक भी जवान ने अगर गोली चला दी होती तो सीमा पर न जाने कितने लोगों के शव पड़े होते, कितने लोग घायल हुए होते।

इस घटना को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने भी जो संयम और समझदारी दिखाई है, उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। उनके बयान में भी स्पष्टता और परिपक्वता झलक रही थी। अब जबकि विरोधी दलों का धर्म ही सरकार के हर कार्य का विरोध करना और हर घटना को उसकी नाकामी बताना है तो असम के विरोधी दल-संगठनों ने भी असम-मिजोरम सीमा पर हुई हिंसा के लिए राज्य और केंद्र सरकार, विशेषकर डॉ. शर्मा को जिम्मेदार ठहराया। लेकिन डॉ. शर्मा ने इस बात को बहुत ही स्पष्ट तरीके से कहा कि यह विवाद दो राजनीतिक पार्टियों के नहीं दो राज्यों की सीमाओं से जुड़ा विवाद है। भारतीय संविधान में अंतर्राज्यिक सीमा तय करने का अधिकार केंद्र सरकार को है, लिहाजा केंद्र सरकार असम-मिजोरम के बीच जो भी सीमा रेखा तय करेगी असम को वह मंजूर होगा। साथ-साथ उन्होंने दो टूक शब्दों में यह भी कह दिया कि असम अपनी एक इंच जमीन भी किसी को नहीं देगा और अपने हर हाल में भू-भाग की रक्षा करेगा। जहां तक केंद्र सरकार का सवाल है तो उसे आगे आकर पूर्वोत्तर राज्यों के बीच के सीमा विवाद को सुलझाना ही होगा। वृहत्तर असम के सात राज्यों में विभाजन होने के साथ ही सीमा विवाद भी शुरू हो गया था मगर, केंद्र सरकार की उदासीनता की वजह से यह मुद्दा टलता गया। अब स्थिति बदल गई है और इस विवाद को अधिक दिनों तक टाला भी नहीं जा सकता। आज असम को दक्षिण-पूर्व एशिया का मुख्य द्वार बनाने की बात कही जा रही है। केंद्र सरकार भी पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष ध्यान दे रही है। श्री शाह का पिछले दिनों का दौरा भी इसी बात को इंगित करता है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में बहुत दिनों के बाद शांति का माहौल है। सभी राज्यों की सरकारों के बीच आपसी समझदारी और सामंजस्य भी दिख रहा है। ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार को चाहिए कि वह पूर्वोत्तर के सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, विभिन्न दल-संगठन, बुद्धिजीवी, इतिहासविद् आदि को लेकर बैठे और पूर्वोत्तर के राज्यों के बीच के सीमा विवाद को हल करने का प्रयास करें।

संकल्प लें, स्वयं को सभ्य और अनुशासनप्रिय नागरिक बनने का

किसी भी महानगर की स्वच्छता और साफ-सफाई वहां के निवासियों की सभ्यता और अनुशासन की परिचायक होती है। सरकार महानगर के सौंदर्यीकरण, स्वच्छता और नागरिक सुविधाओं के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च तो कर सकती है, मगर सरकार की ऐसी कोशिशों की सफलता नागरिकों पर भी निर्भर करती है। राज्य सरकार ने पिछले दिनों महानगर के कई इलाकों में अत्याधुनिक फुटब्रिज बनवाए। इस फ्लाईओवरों में स्वचालित सीढ़ियों से लेकर लिफ्ट और दिव्यांगों के लिए ह्वीलचेयर-रैंप का भी प्रबंध किया गया है। प्रकाश में चमचमाते फुटब्रिज की सार्थकता और सफलता तभी है, जब महानगरवासी इसका उपयोग करे और इन्हें साफ-सुथरा रखे। हम जब पूर्वोत्तर का मुख्य द्वार कहे जाने वाले

गुवाहाटी की बात करते हैं तो पिछले कई सालों में इस महानगर का अच्छा-खासा विकास हुआ है। जगह-जगह फुटब्रिज, फ्लाईओवर, गुवाहाटी-उत्तर गुवाहाटी के बीच की रोप-वे सेवा स्थानीय लोगों से लेकर पर्यटक तक सभी को आकर्षित करती है। अब तो विद्युतचालित रेल सेवा भी प्रारंभ होने जा रही है।

अब महानगरवासियों को भी अपनी जागरुकता का परिचय देना होगा। पिछले दिनों फैंसी बाजार में एक नजारा देखने को मिला। पुलिसिया वाहन में सवार एक पुलिसकर्मी सड़क किनारे खड़े किए गए वाहनों को पुरानी जेल परिसर में बने पार्किंग स्थल में खड़े करने की गुहार लगा रहा था, मगर कोई उसकी सुनने तक को तैयार नहीं था। फुटब्रिज छोड़ सड़क के बीच में लगे डिवाइडर को लांघकर सड़क पार करते लोग भी अक्सर दिख जाते हैं। अपनी जान को हथेली पर रखकर रेल गेट पर खड़ी रेल के नीचे से होकर गुजरने वाले लोगों को भी हमने कभी न कभी तो देखा ही होगा। लाख टके का सवाल है, नागरिकों का ऐसा व्यवहार कब तक सहन किया जाए। नो पार्किंग क्षेत्र में अपनी चमचमाते वाहन को खड़ा करने वाले पढ़े-लिखे को किस श्रेणी में रखना है, अब यह तय करने का समय आ गया है। सरकारी संपत्ति को गंदा करना या उसे जानबूझकर क्षतिग्रस्त करना बहस का एक अलग मुद्दा हो सकता है, लेकिन नागरिकों के किए सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं का उपलब्ध न करना अथवा सरकार द्वारा तय नियमों का पालन न करने वाले को क्या एक सभ्य शहरी कहा जा सकता है। महानगर के फुटब्रिज के आसपास खड़े किए गए वाहनों के जमावड़े को रोज देखा जा सकता है। बीच सड़क पर बने डिवाइडर पर पान खाकर थूकने के बदनुमा धब्बे बताते हैं कि हमारे समाज के सभी लोग आज भी सुसंस्कृत नागरिक नहीं बन पाए हैं। सड़क के किनारे खड़े किए गए वाहनों के कारण ही महानगर में वाहनों के जाम की स्थिति पैदा होती है। अब समय आ गया है कि गुवाहाटी नगर निगम अथवा अन्य संबंधित विभाग के अधिकारी ऐसे लोगों से पूरी सख्ती के साथ निपटे। अपने वाहनों को सड़कों के किनारे खड़ा करने की जिनको आदत लग चुकी है, उनके खिलाफ समय रहते कार्रवाई नहीं की गई तो आने वाले दिनों में स्थिति और भी गंभीर हो सकती

है।

गुवाहाटी नगर निगम ने महानगर के सौंदर्यबर्द्धन और साफ-सफाई के लिए कई प्रभावशाली कदम उठाए हैं और इसका असर अब दिखने भी लगा है। भरलुमुख नदी की सफाई का काम और नालियों की खुदाई का काम युद्ध स्तर पर चल रहा है। गुवाहाटी विकास मंत्री अशोक सिंहल अपने अधिकारियों के साथ दिन-रात इस काम में लगे हैं। मगर, ऐसे सारे प्रयासों पर पानी फेरने के लिए पानी पीकर नाले में प्लास्टिक की बोतल फेंकने वाला एक व्यक्ति ही काफी है। ऐसे लोगों द्वारा नालियों में फेंके गए प्लास्टिक के बैग और बोतलों के कारण नाले चार दिनों में ही बंद हो जाते हैं। महानगर की जल निकासी व्यवस्था ठप हो जाती है और जिसके फलस्वरूप महानगर में कृत्रिम बाढ़ अथवा जलजमाव की स्थिति पैदा हो जाती है। सरकार की ओर से भरलु नदी की सफाई भी कराई गई और नालों की खुदाई भी, इसके बाद भी समस्या जस की तस रहती है तो बजाए सिर्फ सरकार को जिम्मेदार ठहराने के, उन लोगों को भी चिन्हित करना होगा, जो जानबूझकर नालियों में प्लास्टिक का कचरा फेंकते हैं। दूसरे की छोड़िए, चलिए हम स्वयं एक सभ्य और अनुशासनप्रिय नागरिक बनने का संकल्प लेते हैं।

जनहित जनसेवार्थ असम पुलिस

जनता-पुलिस के बीच के संबंध हमेशा से ही विचारणीय विषय रहा है। देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ असम का भी आम आदमी पुलिस से डरता है और उसके निकट जाने पर संकोच करता है। पुलिस का एक अधिकारी अथवा जवान किसी के घर चला जाए तो आसपास के लोगों में कानाफुसी शुरू हो जाती है, चाहे वह पुलिसवाला अपने मित्र से औपचारिक रूप से मुलाकात करने ही क्यों न आया हो। पुलिस को लेकर अलग-अलग कहावतें भी प्रचलित है। जिसमें से एक यह भी है कि पुलिस वाले से दोस्ती हो या दुश्मनी, अच्छी नहीं होती। पुलिस हमारे समाज का ही एक हिस्सा है और हमारे समाज से ही आती है। पुलिसवाले हमारे ही भाई-बंधु हैं। जैसे डॉक्टर, वकील, प्रशासनिक अधिकारी अपने पेशे के माध्यम से समाज की सेवा करते हैं, वैसे ही एक पुलिसवाला भी दिन-रात, गर्मी-ठंड, तूफान-बरसात, गुंडे-बदमाशों से लड़ते हुए समाज की सेवा करता है। फिर समाज के लोग पुलिस से डरते क्यों हैं, उनकी नजरों में पुलिस के प्रति वह सम्मान, वह आदर क्यों नहीं दिखता, जो डॉक्टर, वकील, प्रशासनिक अधिकारियों के प्रति होता है। ऐसे सवालों के जवाब ढूंढ़ने की कवायद बहुत पहले से ही चल रही है।

पिछले दिनों मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की अपील पर राज्य के सभी थानों के प्रभारियों को लेकर की गई बैठक को इस दिशा में बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस बैठक में डॉ. शर्मा ने राज्य की पुलिस व्यवस्था से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि असामाजिक तत्वों से अपनी जान बचाकर भाग रही युवती के जेहन में शरणस्थली के रूप

में स्थानीय थाने अथवा पुलिस चौकी का ख्याल आना चाहिए। उसके मन में यह विश्वास होना चाहिए कि एक बार पुलिस थाने अथवा चौकी में पहुंचने के बाद वह अपने घर से भी अधिक सुरक्षित है। मुख्यमंत्री के उद्‌बोधन को सुन यह समझा जा सकता है कि वह असम पुलिस के बारे में पूरी तरह से अध्ययन करके आए थे। उन्हें पुलिस की कमजोरी, कमी और समस्या सभी के बारे में जानकारी दी। इसीलिए अपने संबोधन में उन्होंने ऐसे सभी पहलुओं को छुआ। उन्होंने पुलिस थाना परिसर में ही पुलिस अधिकारियों के आवास बनाने की बात कही तो काम में सरलता और तेजी लाने के लिए कंप्यूटर लगाने, हर एक थाने को वाहन और प्रति माह ढाई लाख रुपए देने का भी वादा किया। अपने संबोधन में उन्होंने दुधनै, कार्बी आंग्लांग पुलिस के काम की प्रशंसा की तो यह सवाल भी पूछा कि एक पुलिस वाले को शराब पीना क्यों जरूरी है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारा राज्य विकास की गति पर सरपट दौड़ रहा है। इसे और अधिक गति देकर यदि असम को देश के श्रेष्ठ पांच राज्यों की सूची में शामिल करना है तो हमें अपनी कानून-व्यवस्था और शांति शृंखला पर और अधिक ध्यान देना ही होगा। असम पुलिस को और अधिक मजबूत, साधन संपन्न बनाने की जरूरत है। इसके साथ ही हमारी पुलिस के हौसले बुलंदियों पर रहे, इसके लिए हमारी सरकार को भी निरंतर प्रयास करने होंगे। छह महीने के अंतराल पर पुलिस प्रभारियों की बैठक बुलाना और मुठभेड़ में जरूरत पड़ने पर भाग रहे अपराधियों के पैरों पर गोली मारने का समर्थन कर मुख्यमंत्री ने यह संकेत दे दिया है कि वे कानून के दायरे में रहकर काम करने वाले हर एक पुलिस अधिकारी-जवान के साथ खड़े हैं।

अब गेंद असम पुलिस के पाले में हैं। राज्य में उग्रवाद समस्या लगभग खत्म हो चुकी है, इसके लिए असम पुलिस को देश भर में सराहा जाता है। कोविड-19 महामारी के दौरान लोगों ने असम पुलिस का मानवीय चेहरा भी देख लिया। अब असम पुलिस को एक नया चेहरा देने की तैयारी हो रही है। हमारी असम पुलिस का एक ऐसा चेहरा हो, जिसे देखकर अपराधी को डर लगे और आम जनता के मन में सुरक्षा का भाव जगे ताकि सभी को लगे असम पुलिस तैयार है 'जनहित जनसेवार्थ' के लिए।

नए स्वरूप में असम पुलिस

किसी भी राज्य अथवा शहर की कानून और शांति व्यवस्था बनाए रखने में वहां की पुलिस की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। कड़ाके की ठंडी रात हो या मूसलाधार बारिस हम अपने घरों में इसलिए चैन की नींद सो पाते हैं, क्योंकि हमारे पुलिस अधिकारी- पुलिस के जवान जाग रहे होते हैं, गश्त पर होते हैं। चिलचिलाती धूप में महानगर के किसी चौराहे पर खड़े यातायात पुलिसकर्मी के वाहनों को नियंत्रित करने के फलस्वरूप सड़क दुर्घटनाएं कम होती है और वाहन चालक-राहगीर सुरक्षित अपने घरों को पहुंच पाते हैं। नागरिकों को अनुशासन में रखने की बात हो अथवा नशा मुक्त समाज बनाने की, पुलिस का नाम सबसे पहले आता है। राज्य को अपराध मुक्त रखने में पुलिस की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। कोई भी समाज शराब, जुआ, चोरी, लूट जैसी व्याधियों से तभी मुक्त हो सकता है, जब वहां की पुलिस चौकन्नी हो। समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पण और जिम्मेदारी का भाव ही पुलिस को सबसे अधिक सम्मानित और दायित्वशील बनाता है। हमारी असम पुलिस का जब भी जिक्र आता है, सभी का सीना मारे गर्व के चौड़ा हो जाता है। मुख्यमंत्री के रूप में डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के राज्य का शासनभार संभालने के बाद से असम पुलिस में दिख रही सक्रियता पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। कोरोना की पहली लहर के दौरान राज्य में लगाए गए लॉकडाउन के दौरान भी असम पुलिस का एक ऐसा मानवीय चेहरा सभी के सामने आया था, जिसे इससे पहले किसी ने नहीं देखा। अपने दायित्वबोध से ऊपर उठकर असम पुलिस ने कोविड पीड़ित को दवा पहुंचाने से लेकर जरूरतमंद तक सभी प्रकार की मदद पहुंचाने का काम किया। वह भी उस स्थिति में जब असम पुलिस के परिवार भी कोरोना की वजह से उत्पन्न स्थिति के कारण परेशान थे।

नई-नई चुनौतियों का सामना करना और उन पर पार पाना असम पुलिस का स्वभाव है। हमारे राज्य में हर साल बाढ़ आती है। जब कोई शहर अथवा गांव बाढ़ के पानी में जलमग्न होते हैं तो वहां के असामाजिक तत्व सबसे पहले सक्रिय होते हैं। ऐसे में हमारे पुलिस के अधिकारी-जवान जहां एक ओर शरणार्थी शिविरों में शरण लिए हुए बाढ़ पीड़ितों को मदद पहुंचा रहे होते हैं, वहीं दूसरी और उनके जलमग्न घरों को सुरक्षा देने का भी काम करते हैं।

समाज के युवाओं को नशे से दूर रखना और समाज को नशीली वस्तुओं का काला धंधा करने वालों से बचाकर रखना असम पुलिस के लिए हमेशा से ही एक गंभीर चुनौती रही है। लेकिन पिछले डेढ़ महीने से असम पुलिस ने ड्राग्स माफिया के खिलाफ जिस प्रकार से तबड़तोड़ कार्रवाइयां की है, वह हैरतअंगेज है। असम पुलिस ने इस अवधि में न सिर्फ सैकड़ों करोड़ का ड्रग्स बरामद किया, बल्कि इस काले धंधे में शामिल कई अपराधियों को सलाखों के पीछे पहुंचाने का भी काम किया। कार्बी आंग्लोंग जिले के डिलाई थाने में होमगार्ड के रूप में तैनात बरसिंग बे की कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी इन ड्रग्स माफिया के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान को और अधिक महत्वपूर्ण बना देती है। श्री बे ने एक यात्रीवाही बस की तलाशी के दौरान उसके इंजन में छिपाकर रखा हुआ तीन किलोग्राम ड्रग्स बरामद किया, जिसकी कीमत 12 करोड़ रुपए आंकी गई। तलाशी के दौरान बस चालक ने उनको रुपयों से भरा एक पैकेट देने की भी पेशकश की ताकि वह बरामद ड्रग्स को छोड़ दे, लेकिन उस होमगार्ड ने लाखों रूपए के प्रलोभन को ठुकराते हुए ड्रग्स को जब्त कर लिया। करोड़ों रुपए की इस ड्रग्स बरामदगी के मात्र एक दिन बाद असम पुलिस महानिदेशक भास्कर ज्योति महंत ने न सिर्फ श्री बे को एक लाख रुपए का पुरस्कार प्रदान किया, बल्कि उसकी कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी को भी सलाम किया। असम पुलिस के होमगार्ड के इमानदारी की चर्चा जब आम हुई तो मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने बरसिंग बे को असम पुलिस में कांस्टेबल के पद का नियुक्ति का पत्र सौंप कर उसकी ईमानदारी को पुरस्कृत किया। असम पुलिस का प्रेरणादायक, अनुकरणीय और आकर्षक स्वरूप हम सभी के सामने है, ऐसे में हमारी पुलिस को एक सैलूट तो बनता है।

जन आंदोलन बनें टीकाकरण अभियान

देश के अन्य हिस्सों के साथ-साथ असम भी कोविड-19 की दूसरी लहर के संक्रमण से उबर रहा है। डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने बतौर मुख्यमंत्री राज्य की सत्ता संभालते ही कोविड की दुसरी लहर से निपटने की तैयरियों को और अधिक तेज कर दिया। अबकी बार अपना पदभार संभालते ही नव-नियुक्त स्वास्थ्य मंत्री केशव महंत कोविड की दूसरी लहर से निपटने में जुट गए। इस बार विशेष बात यह देखने को मिली कि सरकार एक ओर जहां कोविड को काबू करने में लगी थी, वहीं दूसरी ओर राज्यवासियों को कोविड का टीका दिलाने में भी लगी थी। इस बीच मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा ने जब राज्यवासियों से टीकाकरण अभियान को जन आंदोलन बनाने की अपील की तो इसके बड़े ही सकारात्मक नतीजे देखने को मिले। टीकाकरण अभियान को गति प्रदान करने के लिए व्यक्ति-संगठन-संस्थानों ने खुले मन से मुख्यमंत्री राहत कोष में आर्थिक मदद प्रदान की। मुख्यमंत्री ने भी यह बात स्पष्ट कर दी थी कि जनता द्वारा दान स्वरूप दी गई पाई-पाई को टीकाकरण के काम में खर्च किया जाएगा। व्यक्ति-संगठनों ने एक रुपए से लेकर लाखों रूपए तक का चंदा दिया, जिसे मुख्यमंत्री ने बड़े ही आदर भाव से स्वीकार किया। टीकाकरण अभियान में जनता जिस प्रकार से अपनी भागीदारी दी वह न सिर्फ अभूतपूर्व है, बल्कि अनुकरणीय भी है। पहले तो विपक्षी दलों ने सरकार की इस अपील पर ढेरों सवाल खड़े किए थे। विपक्ष ने यहां तक पूछ डाला कि टीकाकरण के लिए क्या सरकार के पास पैसों की कमी है। लेकिन जब मुख्यमंत्री ने अपनी दलीलों को विधानसभा के पटल पर रखा तो विपक्ष ने भी इस मामले में सरकार का पूर्ण सहयोग करने का

आश्वासन दिया। संभवत: असम का यह पहला अभियान है, जिसमें सरकार, विपक्ष, व्यक्ति, संगठन, संस्थान, विद्यार्थी-शिक्षक सभी शामिल हैं।

कोई भी अभियान तब तक जन आंदोलन का स्वरूप नहीं ले सकता, जब तक उसमें आमजनता की सक्रिय भागीदारी न हो। तय समय में राज्य के हर एक नागरिक का टीकाकरण सिर्फ सरकार के बूते संभव नहीं है। हमारे देश में इससे पहले भी पोलियो, हैपाटाइटिस, एड्स आदि के टीकाकरण अभियान चलाए गए और हम सभी को पता है ये अभियान कितने लंबे चले थे। मगर कोविड-19 संक्रमण से बचने के लिए हमारे पास टीकाकरण के अलावा अन्य कोई दूसरा चिकित्सकीय उपाय नहीं है। इसके अलावा हमें एक समय सीमा के अंदर अनुशासित तरीके से राज्य के सभी लोगों को टीका भी लगाना है। गैर सरकारी समाजसेवी, धार्मिक संगठनों का टीकाकरण अभियान में शामिल होना भी एक सुखद पहल है। ऐसे गैर सरकारी समाजसेवी संगठनों की मदद से सचमुच ही टीकाकरण अभियान को एक जन आंदोलन में तब्दील किया जा सकता है। मोतियाबिंद की शल्य चिकित्सा हो या रक्त संग्रह अथवा नेत्र दान, इस प्रकार के समाजसेवी कार्यों में समाजसेवी संगठनों की सराहनीय भूमिका रही है। राज्य सरकार ने टीकाकरण अभियान में समाजसेवी संगठनों को अपना सहयोगी बनाने का निर्णय लेकर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया है। इन संगठनों की राज्य के हर छोटे-बड़े गांव-शहरों में अपनी-अपनी इकाइयां है और टीकाकरण केंद्र के संचालन के लिए जो न्यूनतम धनराशि की जरूरत पड़ती है, अपने खास-खास लोगों से चंदा कर उस धनराशि को जुटाना भी इन संगठनों के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसे सभी संगठनों के साथ मिलकर सरकार को टीकाकरण का एक मैगा प्लान तैयार करना चाहिए। इन संगठनों की विभिन्न इकाइयों के सहयोग से तय समय में राज्य के सभी लोगों का टीकाकरण कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। ऐसा हो सकता है। सरकार, संगठन और समाजसेवी सभी एकजुट होकर काम करेंगे तभी कोविड को हराने के लिए चलाया जा रहा टीकाकरण अभियान जन अभियान में बदलेगा। इसकी शुरूआत भी हो चुकी है। अब यह टीके की उपलब्धता पर निर्भर है कि सरकार का टीकाकरण अभियान कब जन आंदोलन का रूप ले पाता है।

आने वाली पीढ़ी का अधिकार है शांतिमय असम

नव-निर्वाचित मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की अपील पर अल्फा (स्वाधीन) के मुख्य सेनाध्यक्ष परेश बरुवा द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड के कर्मचारी रितुल सइकिया को सम्मान सहित रिहा कर देने की घटना शांतिमय असम के इतिहास की एक नई इबारत लिखने जा रही है। जानकारों का मानना है कि सरकार और अल्फा द्वारा प्रदर्शित मंशा आगे चलकर दोनों पक्षों के बीच बातचीत का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। सरकार और अल्फा के बीच बातचीत का सिलसिला सही तरीके से आगे बढ़ता है तो यह शांति समझौते की नींव साबित हो सकता है। लेकिन सरकार और अल्फा दोनों ही इस दिशा में अपने कदम फूंक-फूंककर रखने की सोच रहा है। डॉ. शर्मा की अपील पर रितुल को रिहा करने के बाद परेश बरुवा ने टीवी चैनल को फोन पर दिए गए अपने टेलिफोनिक साक्षात्कार में कहा था कि कोई यदि उनसे विनम्रता पूर्वक अपील करते हैं तो उस पर अमल करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन इसके विपरीत सरकार यदि अल्फा के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करती है तो अल्फा भी इसका जवाब देने को तैयार है।

परेश बरुवा ने नव-निर्वाचित मुख्यमंत्री को भद्र, वाक्पटू, काबिल और स्पष्टवादी मुख्यमंत्री बताया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने जिन भद्र और विनयशील शब्दों में उनसे रितुल को रिहा करने की अपील की, उससे वे इतने अभिभूत हुए कि उनकी अपील पर अपनी प्रतिक्रिया देने में आधे घंटे का भी वक्त नहीं लगाया। जिस दिन मुख्यमंत्री ने अपने संवाददाता सम्मेलन में परेश बरुवा से रितुल को रिहा करने की अपील की थी। परेश बरुवा ने आधे घंटे बाद ही टीवी चैनलों को फोन कर बता दिया था कि वे जल्द से जल्द रितुल

को रिहा करने जा रहे हैं। उन्होंने इसके लिए सौ घंटे की समय सीमा तय की थी, लेकिन अपनी घोषणा के 34 घंटे बाद ही रितुल को सम्मान सहित रिहा कर दिया। उनके इस निर्णय का, इस कदम का सभी ने स्वागत किया और इसे शांति की एक नई शुरुआत की संज्ञा दी। वैसे तो अल्फा के स्थापनाकाल से ही सरकार बातचीत के माध्यम से समस्या का समाधान करने की अपील करती आ रही थी। इसको लेकर कई बार कोशिशें भी हुई, मगर समस्या का समाधान नहीं निकल पाया। बातचीत में अल्फा असम के स्वाधीनता के मुद्दे को भी शामिल करना चाहती थी, मगर सरकार भी संविधान द्वारा खिंची गई लकीर में कैद थी। अल्फा के अलग होकर कई शीर्ष विद्रोही नेताओं ने सरकार के साथ शांति वार्ता प्रारंभ की लेकिन आज तक उसके कोई नतीजे नहीं निकले हैं।

लेकिन अब स्थिति में सुखद बदलाव देखने को मिल रहा है। दोनों पक्ष यदि बिना किसी प्रकार की पूर्व शर्तों के शांति वार्ता में बैठना चाहे तो उसके लिए माहौल तैयार करने के लिए यह वक्त बेहद अनुकुल माना जा रहा है। पंद्रहवीं विधानसभा सत्र के दूसरे दिन अपने अभिभाषण का पाठ करते हुए राज्यपाल प्रोफेसर जगदीश मुखी का अल्फा द्वारा रितुल सइकिया की रिहाई को स्वागत योग्य कदम करार बताना और तीन महीने के लिए अल्फा की एकतरफा संघर्ष विराम की घोषणा को सकारात्मक बताना सरकार की मंशा को प्रकट करता है।

पंद्रहवीं असम विधानसभा के प्रथम सत्र के अंतिम दिन राज्यपाल के अभिभाषण पर हुई चर्चा के जवाब में गृह विभाग का भी जिम्मा संभाल रहे मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा ने इससे एक कदम और आगे बढ़ते हुए हुए परेश बरुवा को शांति वार्ता में शामिल होने की अपील तक कर डाली। उन्होंने कहा कि उनकी एक अपील पर अल्फा (आई) ने रितुल सइकिया को अपने चंगुल से रिहा कर जो सकारात्मकता दिखाई, उसके लिए वे परेश बरुवा को धन्यवाद देते हैं। उन्होंने कहा कि शांति का असम, हिंसा रहित असम नई पीढ़ी का अधिकार है। इसके लिए सरकार और अल्फा दोनों को ही आगे आना होगा। क्योंकि शांतिमय असम हमारे आने वाली पीढ़ी का अधिकार है और उसे उसका अधिकार मिलना ही चाहिए।

राज्य के15वें मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा

डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने सोमवार को श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में राज्य के 15वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। रविवार को भाजपा की विधायनी दल की बैठक में उनको सर्वसम्मति से नेता चुन लिया गया। असम की राजनीति में संभवत: यह पहला मौका था जब निवर्तमान मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने मुख्यमंत्री पद के लिए उनके नाम का प्रस्ताव किया और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष रंजीत कुमार दास और नंदिता गारलोसा ने उसका समर्थन किया। इस चयन प्रक्रिया में उस वक्त चार चांद लग गए, जब भाजपा के सहयोगी दल अगप और यूपीपीएल ने भी डॉ. शर्मा के नाम पर अपनी सहमति की मोहर लगा दी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रिपुन बोरा, बीपीए प्रमुख हाग्रामा मोहिलारी तथा एयूडीएफ प्रमुख मौलाना बदरुद्दीन अजमल को व्यक्तिगत तौर पर फोन कर अपने शपथ समारोह में विशेष रूप से आमंत्रित कर डॉ. शर्मा सभी विरोधी दलों को साथ लेकर चलने के संकेत देने में कामयाब रहे। इसमें कोई राय नहीं है कि बतौर मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा के समक्ष अनेको चुनौतियां है। सबसे पहली चुनौती तो कोविड-19 की दूसरी लहर के बढ़ते संक्रमण से पार पाना है। इसके अलावा चुनावी वादों को पूरा करने के लिए एक विश्वनीय शुरुआत करना भी उनके लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है। अपनी चुनावी सभाओं में उन्होंने युवाओं को बाइक देने के साथ ही महिलाओं को ऋण से मुक्ति दिलाने का वादा किया था। यह बातें कहने-सुनने में जितनी साधारण लगती है, इन पर अमल करना उतना ही मुश्किल हो सकता है। कहना न होगा, नए मुख्यमंत्री के समक्ष चुनौतियों की सूची कम छोटी नहीं है, मगर चुनौतियों से लड़ना और

उनसे पार पाना डॉ. शर्मा की फितरत में शामिल रहा है।

आसू की विचारधारा के साथ छात्र राजनीति में कदम रखने वाले डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कांग्रेस के दिग्गज नेता माने जाने वाले स्व. हितेश्वर सइकिया का हाथ पकड़कर वर्ष 1994 में कांग्रेस में शामिल हुए। वर्ष 1996 में वे जालुकबाड़ी विधानसभा से कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़े लेकिन हार गए। वर्ष 2001 में उन्होंने जालुकबाड़ी विधानसभा क्षेत्र से पहली बार विधानसभा का चुनाव जीता और तरुण गोगोई के मंत्रिमंडल में शामिल हुए। उन्होंने वर्ष 2006 और वर्ष 2011 के विधानसभा के चुनावों में जीत हासिल की और दोनों ही बार में तरुण गोगोई के मंत्रिमंडल में कई महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री पद पर काबिज हुए। बाद में वर्ष 2014 में स्व. तरुण गोगोई के मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर वे वर्ष 2015 में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। 'अपने लिए लक्ष्य तय करना और जब तक लक्ष्य हासिल नहीं हो जाता तब तक प्रयास करते रहना' उनकी आदत है। राज्यवासियों ने देखा है पिछले साल कोविड-19 महामारी से लड़ रहे सभी का हौसला बढ़ाने के लिए वे अस्पताल से लेकर श्मशान-कब्रिस्तान, बस अड्डे से लेकर हवाईअड्डे तक दिन हो या रात हरदम उपस्थित रहे। पीपीई किट पहनकर कोविड अस्पाल में भर्ती कोविड पीड़ित मरीजों की आईसीयू में जाकर सुध लेने वाले डॉ. शर्मा संभवत: देश के पहले व अकेला स्वास्थ्य मंत्री थे।

अपने पिछले कार्यकाल में स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्त, लोक निर्माण, गुवाहाटी विकास आदि विभागों के मंत्री के रूप में उन्होंने अपनी जो बेजोड़ सेवाएं प्रदान की है, उससे राज्यवासियों को यह उम्मीद हो चली है कि वे 15वें मुख्यमंत्री के रूप में राज्य के सबसे कामयाब मुख्यमंत्री बन सकते हैं। अबकी बार चुनावी सभाओं में उनको देखने-सुनने के लिए उमड़ी भीड़ को देखकर ही उनकी लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता है। राज्य के युवाओं में 'मामा' के रूप में लोकप्रिय डॉ. शर्मा के एक इशारे पर कुछ भी कर गुजरने वाले लोग बाहर ही नहीं उनके मंत्रिमंडल में भी शामिल हैं। इतना प्रबल जनसमर्थन, मंत्रिमंडल के इतने समर्पित साथियों के दम पर इतना तो विश्वास किया ही जा सकता है कि वे किसी भी चुनौती से निपटने में सक्षम हैं।

दवाई, कड़ाई नहीं समझदारी से ही रुकेगा कोरोना का तांडव

कोरोना महामारी की दूसरी लहर के तांडव से राज्यवासी भयभीत और सरकार चिंतित है। कोरोना की भयावहता को अब आंकड़ों के माध्यम से नहीं आंका जा सकता। अस्पतालों से लेकर श्मशानघाट तक कतारें देखी जा सकती है। मृतकों की संख्या में प्रतिदिन दिखाई देने वाली अविस्मरणीय बढ़ोतरी ने सत्ताधीशों की ललाट की सिलवटों को और अधिक गहरा कर दिया है। कल तक राज्यवासियों को हिम्मत बंधाने वाले स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा भी मानते हैं कि राज्य में कोरोना महामारी की स्थिति गंभीर है। मरीजों की संख्या बढ़ने का सिलसिला इसी तरह से चलता रहा तो अस्पतालों में बेड की कमी पड़ने लगेगी। मौजूदा स्थिति से निपटने के लिए राज्य सरकार जिस पैमाने पर जतन कर रही है, आमजनता उतनी ही लापरवाह नजर आ रही है। इस बात को

जितनी जल्द समझ लिया, उतना ही बेहतर होगा कि दवाई और कड़ाई से नहीं जनता की समझदारी से ही कोरोना के तांडव नृत्य को रोका जा सकता है।

स्वास्थ्य मंत्री की लाख अपील और राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बावजूद आमजनता में कोरोना को लेकर पहले जैसा खौफ नजर नहीं आता। इस वजह से राज्यवासी लापरवाह भी हो गए हैं। इसका उदाहरण सार्वजनिक स्थानों पर बिना मास्क लगाए घूम रहे लोगों को देखकर लगाया जाता है। जिन्होंने मास्क लगाया होता है, उनमें से अधिकांश लोग सिर्फ औपचारिकता निभाने के लिए ही मास्क का उपयोग करते हैं। उनका मास्क कभी थुड्डी पर तो कभी नाक के नीचे नजर आता है। जनता की यह लापरवाही न सिर्फ स्वयं उसके लिए, बल्कि उसके परिवार और पूरे राज्य के लिए भारी पड़ रही है। ऐसा नहीं है कि लोगों को कोरोना की भयावहता और इसके बचाव के लिए किए जाने वाले उपायों की जानकारी नहीं है। कोरोना की पहली लहर के दौरान इस बारे में जनता को भलीभांति जागरूक कर दिया गया था और तब इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिले थे। मगर, कोरोना की दूसरी लहर के दौरान वैसी जन-जागरूकता देखने को नहीं मिल रही है। संकट की इस घड़ी में सार्वजनिक स्थानों पर मास्क न पहनने वालों पर यदि जुर्माना लगाना पड़े तो लापरवाही की इससे बड़ी बात क्या हो सकती है। पुलिसकर्मी लोगों को मास्क पहनने, सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए समझा रहे हैं। उन पर कड़ाई भी कर रहे हैं, लेकिन लोग है कि मानने को तैयार नहीं है। बोहाग बिहू, असम विधानसभा चुनाव सब कुछ अच्छे से हो गया। लोगों ने बड़े ही संयम के साथ चुनावी प्रक्रिया में हिस्सा लिया। अब लोगों को चाहिए कि वह यथासंभव अपने घरों में बंद रहे और बिना वजह सार्वजनिक स्थानों पर न निकले।

राज्य सरकार बार-बार इशारे में यह बात बताने की कोशिश कर रही है कि लॉकडाउन अंतिम विकल्प हो सकता है। सरकार को मजबूरन यदि लॉकडाउन लगाना पड़ा तो दैनिक मजदूरी करने वाले, गरीबों को इसका खामियाजा उठाना पड़ेगा। राज्य को लॉकडाउन जैसी स्थिति से न गुजरना पड़े, इसलिए चलिए पूरी समझदारी के साथ कोरोना की दूसरी लहर से निपटने का संकल्प लेते हैं।

डरें नहीं, हिम्मत से करें कोरोना का मुकाबला

कोरोना की दूसरी लहर के संक्रमण को लेकर देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ असमवासी भी भयभीत हैं। संक्रमितों की बढ़ती संख्या पर लगाम लगाने के लिए न केवल शिक्षण संस्थानों को बंद कर दिया गया है, बल्कि राज्य भर में रात्रिकालीन कर्फ्यू तक लगा दिया गया है। कह सकते हैं, अबकी बार जनता डरी हुई है, मगर बजाए डर के सहम जाने के लिए सभी को कोरोना से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए खुद को तैयार करना होगा। मानव जाति के समक्ष इस प्रकार की यह कोई पहली चुनौती नहीं है। इससे पहले भी हमारा देश महामारी की विभिषिका को झेल चुका है। कोरोना की दूसरी लहर से उत्पन्न स्थिति का मुकाबला करने के लिए हमें पूरे साहस के साथ तैयार रहना होगा। इस संकटकाल में हम दो-चार बातों पर अमल कर महामारी के खतरे और मन के वहम-भय को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

कोरोना के बढ़ते मामलों के साथ-साथ समाज में अफवाहों ने भी जोर पकड़ लिया है। विभिन्न प्रकार की अफवाहें और अध-कचरा ज्ञान दिन-रात चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर भ्रमण करता रहता है। हमें बस इतना करना कि हम सिर्फ और सिर्फ आधिकारिक तौर पर कही गई बातों पर विश्वास करें। हमारे राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा अथवा स्वास्थ्य विभाग की बातों पर यकीन करें। इन दिनों बाजार में एक अफवाह जोरों पर चल रही है कि राज्य में ऑक्सीजन की किल्लत है, जबकि हमारे स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा सार्वजनिक रूप से कई बार यह बात कह चुके हैं कि राज्य में जरूरत से कई गुणा अधिक ऑक्सीजन है। उनके बताए अनुसार जीएमसीएच में पहले 13

आईसीयू बेड हुआ करते थे, जिनकी संख्या बढ़ाकर अब 92 कर दी गई है। इसके अलावा यहां बेडों की संख्या में भी इजाफा किया गया है। इस प्रकार न सिर्फ गुवाहाटी बल्कि राज्य भर की स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक उन्नत किया जा रहा है। सरकार अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रही है कि कोरोना का कहर काबू में रहे। निजी चिकित्सा संस्थान भी कोरोना के खिलाफ इस लड़ाई में सरकार का कंधा से कंधा मिलाकर साथ दे रही है।

इस बात को समझने की आवश्यकता है कि बिना जनता की भागीदारी के कोरोना पर फतह नहीं पाई जा सकती। पिछली बार भी देश की जनता ने ही कोरोना को हराया था। तब न तो हमारे पास पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं थी, न इलाज था और न ही टीका। बावजूद इसके भारतवासियों ने अपने अदम्य साहस और प्रबल इच्छा शक्ति के दम पर कोरोना महामारी से लड़ाई लड़ी और जीत भी हासिल की। आज हमारे पास टीके, इलाज और स्वास्थ्य सुविधाओं से लेकर सब कुछ है। सबसे बड़ी बात हमारे पास पिछले साल का अनुभव है कि हमने किस प्रकार कोरोना को हराया था। आज हमें उसी जोश के साथ आगे आना होगा। हमें सिर्फ इतना सा करना है कि स्वास्थ्य विभाग जो दिशा-निर्देश जारी करता है, हम उन पर अक्षरश: अमल करें। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा जो कहते हैं, हम बजाय अफवाहों में फंसने के उनकी कही बातों पर विश्वास करें। जिला प्रशासन और संबंधित विभाग द्वारा समय-समय पर लगाई गई पाबंदियों पर अमल करें। हम यदि इतना सा भी कर लेते हैं तो कोरोना के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई में यह हमारी सबसे बड़ी भागीदारी होगी। एक बात और इस बार भी बहुत से समाजसेवी संगठन, संवेदनशील युवा कोरोना पीड़ित परिवारों की मदद के लिए आगे आ रहे हैं। कोई पीड़ित परिवार के सदस्यों के घर दो वक्त का खाना पहुंचा रहा है तो कोई संगठन मददगारों के ग्रुप बनाकर जरूरतमंदों तक पहुंचने की कोशिशों में लगा है ताकि ऐसे परिवारों की कैसी भी मदद की जाए। आप भी ऐसे संगठन अथवा युवाओं के साथ जुड़कर अपने सामाजिक सरोकार और संवेदनाओं का परिचय दे सकते हैं। याद रखें, संकट रोज-रोज नहीं आता और न ही किसी की मदद करने का अवसर। यह मौका चुके नहीं-मानव जाति की मदद करें, मानवता की सेवा करें।

कोरोना की दूसरी लहर की चपेट में असम

देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ असम भी कोरोना की दूसरी लहर की चपेट में है। वैसे तो वर्ष 2021 के विधानसभा का मतदान और बोहागी बिहू का पर्व बिना किसी प्रकार के व्यवधान के पूरा हो गया हो गया है। लेकिन अब कोरोना की दूसरी लहर का आतंक राज्यवासियों को डराने लगा है। एक ओर राज्यवासी इसको लेकर भयभीत हैं तो वहीं दूसरी ओर इससे बचने के लिए जरूरी कदम उठाने को तैयार नहीं दिखते। कामरूप महानगर जिला प्रशासन ने सार्वजनिक स्थानों पर सभी से मास्क पहनने की अपील करते हुए उक्त नियम का उल्लंघन करने पर 500 से एक हजार रुपए तक का जुर्माना वसूलने का आदेश जारी किया है। सरकारी आदेश को मनवाने के लिए जुर्माना वसूलने का आदेश किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मनाक बात है। लेकिन जनता यदि सरकारी आदेश पर अमल करने को तैयार न हो तो जुर्माना वसूली जैसे कदम उठाने के अलावा अन्य कोई चारा भी नहीं बचता। यह तो वही बात हुई कि एक-दूसरे से चिपक कर, बिना मास्क पहने चार लोग चर्चा कर रहे हों कि असम में कोरोना बड़ी तेजी से क्यों फैल रहा है। कोरोना को लेकर सतर्कता ही नहीं सावधानी की भी जरूरत है। 19 मार्च को असम में कोरोना के कुल 1367 नए मामले सामने आया, आंकड़ा यह बताता है कि हमारे राज्य में भी कोरोना गंभीर स्थिति पर पहुंचने लगा है। इनमें से एक अकेले गुवाहाटी महानगर जिले में ही

482 नए मामले दर्ज किए गए हैं। 19 मार्च तक राज्य में कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या बढ़कर 6,635 हो जाना, बहुत चिंताजनक है। सोचिए जरा जिन कोविड केयर सेंटर को बंद कर दिया गया था, अब फिर से ऐसे सेंटर बनाए जा रहे हैं। कई चिकित्सा संस्थानों को कोविड हॉस्पिटल बनाया गया है। यानि की पिछले साल जैसी विकट स्थिति एक बार फिर हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही है।

राज्य को कोरोना की दूसरी लहर से बचाने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए, हमें बजाए इस सवाल पर चर्चा करने के इस बात पर चिंतन करना चाहिए कि खुद को और अपने परिवार को कोरोना से बचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए। सबसे जरूरी बात तो यह है कि हम स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अक्षरश: पालन करें। सार्वजनिक स्थानों पर मास्क पहनकर जाएं और सामाजिक दूरी को बनाए रखें और हां बार-बार अपने हाथ साबुन से धोना न भूलें। और सबसे जरूरी बात यदि आप 45 साल से अधिक उम्र के हैं तो सरकारी और निजी चिकित्सा संस्थानों में दिए जा रहे कोरोना टीके की दो खुराक जरूर लें। अब तो 1 मई से 18 साल से अधिक उम्र के लोगों को भी कोरोना के टीके लगाए जाएंगे। कोरोना का टीका लगवाकर हम कुछ हद तक इस महामारी से बच सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि टीका लिए व्यक्ति को अगर कोरोना होता भी है तो व्यक्ति के समक्ष जानलेवा स्थिति पैदा नहीं होती।

कोरोना की पहली लहर के दौरान हम बहुत सी बातों से अनजान थे। तब न तो कोरोना का कोई समुचित इलाज था, न चिकित्सा सुविधाएं और न ही टीका। अब एक साल में स्थिति बदली है। आज कोविड का इलाज भी है। चिकित्सा सुविधाएं भी पहले से व्यापक और बेहतर है और सबसे बड़ी बात अब कोरोना से बचने के लिए टीका भी है। केंद्र व राज्य सरकार अपना काम कर रही है। अब हमें भी अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए आगे आना है। राज्य को कोरोना की दूसरी लहर के कहर से बचाने के लिए हमें वह सारे जतन करने होगें, जिसके लिए प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग हमें दिशा-निर्देश देता है। ऐसा कर हम न सिर्फ एक जागरूक नागरिक होने का फर्ज निभाएंगे, बल्कि अपने समाज-परिवार के जिम्मेदार सदस्य भी कहलाएंगे।

जनप्रतिनिधि, जवाबदेही और जिम्मेदारी

किसी देश के लोकतंत्र की सफलता और सार्थकता इस बात में निहित होती है कि वहां की जनता द्वारा चुने गए जनप्रतिनिधि कैसे हैं, भारत जैसे विशाल देश में जनता संसद में जाकर अपनी आवाज नहीं उठा सकती। अपनी समस्याओं को नहीं रख सकती। अपने इसी काम के लिए वह मतदान के लिए जनप्रतिनिधि का चुनाव करती है। ये जनप्रतिनिधिगण संसद अथवा विधानसभाओं में जाकर अपने क्षेत्र की, देश की जनता की आवाज उठाते हैं। सोचिए जरा यदि यही जनप्रतिनिधि संसद अथवा विधानसभा का बहिष्कार करने लगे। संसद की कार्रवाही से अनुपस्थित रहने लगे तो फिर जनता की आवाज को सरकार तक कौन पहुंचाएगा। संसद अथवा विधानसभा की कार्रवाही को बाधित करने जैसी घटनाएं हमारे देश में दशकों से चली आ रही है। सरकारें बदल जाती है, मगर यह परिपाटी नहीं बदलती। कल जो सत्ता में थे वे आज संसद को नहीं चलने दे रहे हैं, आज जो सत्ता में है, उन्होंने विपक्ष में रहते संसद को नहीं चलने दी थी। संसद को संचालित करने और माननीय सभी का खर्च उठाने के नाम पर देश के खजाने से हजारों करोड़ रुपए खर्च किए जाते हैं। चमचमाती कार, कड़ी सुरक्षा व्यवस्था, तरह-तरह के भत्ते, रेलवे-हवाई जहाज की नि:शुल्क यात्राएं और न जाने क्या-क्या इन्हें दिया जाता है वह भी सिर्फ इस काम के लिए कि इनको अपने क्षेत्र की जनता की आवाज को संसद में उठाना है। अपने क्षेत्र की समस्याओं को सदन-पटल पर रखना है। इतना कुछ हासिल करने के बाद भी देश के संसद अथवा विधायक सदन की कार्यवाही में भाग नहीं लेते अथवा कार्यवाही का बहिष्कार करते हैं तो ऐसे जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही क्यों तय नहीं की जानी चाहिए। ऐसे सांसद-विधायकों के खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं की जानी चाहिए।

हमारे देश में तो स्कूल में कम हाजिरी वाले बच्चे को परीक्षा में नहीं बैठने दिया जाता। काम पर आने वाला कर्मचारी यदि नौकरी पर न आए तो उसकी भी तनख्वाह काट ली जाती है तो फिर सदन में अनुपस्थित रहने वाले अथवा

सदन का बहिष्कार करने वाले जनप्रतिनिधियों के खिलाफ ऐसी कार्रवाई क्यों नहीं की जाए। यह अजीब-सी बात है जब किसी प्राकृतिक आपदा अथवा संकट की घड़ी में हमारे जनप्रतिनिधियों को हमारे साथ होना चाहिए तब बहुत से जनप्रतिनिधि बजाए जनता के साथ रहने के दिल्ली में डेरा डाले रहते हैं और जब जनता की आवाज उठाने के लिए इनको सदन में रहना चाहिए तो ये विरोध-प्रदर्शन के नाम पर सदन में भी गैर हाजिर रहते हैं। ऐसी बात नहीं है कि विरोधी पक्ष के सांसद अथवा विधायकों को सरकार की किसी नीति अथवा किसी सरकारी कानूनों का विरोध-प्रदर्शन नहीं करना चाहिए, लेकिन इसके लिए लोकसभा-राज्यसभा अथवा विधानसभा के सत्र का बहिष्कार विपक्ष का मुख्य हथियार नहीं होना चाहिए। इसके लिए सदन से बाहर धरना-प्रदर्शन, अनशन जैसे कार्यक्रम भी हाथों में लिए जा सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यह साबित कर चुके हैं कि अनशन जैसे कार्यक्रम में सरकार और सत्ता को झुकाने की कितनी ताकत होती है।

लोकसभा अथवा राज्य सभा जैसे सदनों के महत्व को कमतर नहीं आंका जाना चाहिए। इन सदनों में देश के लिए कानून बनते हैं, विकास योजनाएं बनती है और देश से जुड़े राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर चर्चाएं होती है। ऐसे में यदि कोई सांसद अथवा राजनीतिक पार्टी सदन की कार्रवाही को बाधित करता है, सदन को चलने नहीं देता। सदन के अंदर तोड़फोड़ करता है। सदन के आसन की मर्यादा का हनन करता है। अध्यक्ष सहित पूरे सदन की गरिमा को ठेस पहुंचाता है तो वैसे सांसद अथवा पार्टी के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाही की जानी चाहिए। सदन की भावना के प्रकटीकरण को देश की भावना का प्रकटीकरण माना जाता है और जनप्रतिनिधियों का आचरण देश की जनता के आचरण को प्रतिविबिंत करता है। ऐसे में देश-विदेश के लोग टीवी अथवा अन्य डिजिटल प्लेटफार्म पर सदन में हो रहे हो-हल्ला अथवा हुड़दंग का प्रसारण देखते हैं तो वह लोग जरूर व्यथित होते होंगे। अब वक्त आ गया है कि हमारे जनप्रतिनिधियों को भी देश के प्रति जवाबदेह बनाया जाए। सदन में जनप्रतिनिधि की उपस्थिति और भागीदारी का रिकॉर्ड रखा जाए और उसे चुनाव पूर्व सार्वजनिक किया जाए ताकि देश के मतदाताओं को यह बात समझ में आ सके कि आखिरकार उसके जनप्रतिनिधि सदन में जाकर करते क्या हैं।

असम के महापुरुषों के बारे में देश-दुनिया को बताएगा कौन

देश के अन्य हिस्सों के साथ-साथ असम में भी अनेक महापुरुष, कलाकार, कवि-साहित्यकारों ने जन्म लिया है। मगर, देश-दुनिया के लोग ऐसे लोगों के बारे में बहुत कम ही जानते हैं। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि देश-दुनिया को असम के महापुरुषों के बारे में बताएगा कौन। असमिया भाषा के अत्यंत प्रसिद्ध कवि, नाटककार, सुगायक, नर्तक, समाज संगठक तथा हिंदू समाज सुधारक श्रीमंत शंकरदेव का जन्म 550 साल पूर्व वर्ष 1449 में हुआ था। असमिया भाषा के प्रसिद्ध कवि एवं उनके शिष्य माधवदेव का जन्म भी 15वीं सदी के अंत में हुआ था। सिखों के प्रथम गुरु नानक देव और बंगाल के वैष्णव धर्म प्रचारक चैतन्य महाप्रभु भी श्रीमंत शंकरदेव के समय के धर्म प्रचारक थे। उम्र के हिसाब से यदि देखा जाए तो श्रीमंत शंकरदेव गुरु नानक देव चैतन्य महाप्रभु से बड़े थे। लेकिन गुरु नानक देव और चैतन्य महाप्रभु के बारे में देश-दुनिया के लोग जितना जानते हैं, उतना श्रीमंत शंकरदेव के बारे में नहीं जानते। भारतीय फिल्म जगत में दिलचस्पी रखने वाले लोगों को सत्यजीत रे अथवा ऋषिकेश मुखर्जी के बारे में जितनी जानकारी है, गौरीपुर राजघराने के राजकुमार तथा 'देवदास' फिल्म निर्माता प्रमोथेश बरुवा के बारे में उतनी जानकारी नहीं है। असम के बाहर ऐसे कितने लोग होंगे, जिनको रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला या प्रसिद्ध साहित्यकार एवं संस्कृतिकर्मी कलागुरु विष्णु राभा के बारे में पूरी जानकारी होगी। 'लोक संस्कृति आंदोलन' के पक्षधर विष्णु राभा का शास्त्रीय एवं लोक संस्कृति पर विशेष ध्यान रहता था, इस बात से तो

बहुत से असमवासी भी अनजान हैं। ऐसे लोगों की सूची में साहित्यरथी रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा से लेकर डॉ. भूपेन हजारिका, मामोनी रायसम गोस्वामी तक शामिल है। असमवासियों के मन में हमेशा यह सवाल बना रहेगा कि देश के स्वाधीनता आंदोलन में शहादत देने वाले असम के वीर सेनानियों को स्वाधीनता आंदोलन के पन्नों में वह जगह क्यों नहीं मिली, जिसका वह हकदार थे। असम से बाहर कितने लोग असम की बीरबाला कनकलता बरुवा के बारे जानते होंगे, जिसने मात्र 17 साल की उम्र में अंग्रेजों द्वारा चलाई गई गोली को अपने सीने पर झेला, मगर तिरंगे को जमीन पर गिरने नहीं दिया। शहीद मुकुंद काकती जैसी ऐसी बहुत सी शख्सियतें हैं, जिन्हें न तो विश्वपटल पर पहचान मिली और न ही इतिहास के पन्नों में जगह।

आज के दिन असमवासियों के समक्ष यह सबसे बड़ा सवाल है कि आखिरकार देश-दुनिया को हमारे महापुरुष, कलाकार, साहित्यकार, शहीदों के बारे में बताएगा कौन। यह भी साफ है कि यह काम करने के लिए बाहर से तो कोई व्यक्ति आएगा नहीं। असमवासी होने के नाते यह हमारी जिम्मेदारी भी है और कर्तव्य भी कि हम अपने बूते इस काम को अंजाम दें। राज्य सरकार भी यदि इस काम में सहयोग करती है तो यह सोने में सुहागे वाली बात होगी। वैसे भी सांस्कृतिक निदेशालय की ओर से दिए जाने वाले राष्ट्रीय स्तर के श्रीमंत शंकरदेव पुरस्कार को इसी आलोक में देखा जाना चाहिए। इसके अलावा राज्य सरकार ने आईदेउ संदिकै, शहीद कुशल कुंवर, इंदिरा मिरी, बीरबाला कनकलता के नाम पर अलग-अलग योजनाएं प्रारंभ की है। इसे हम एक अच्छी शुरुआत के तौर पर ले सकते हैं। मगर, इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने हाल में आयोजित एक कार्यक्रम में गुरुजनों के दर्शन तथा सृजन को विश्व के मानव जगत तक पहुंचाने के लिए 'श्रीमंत शंकरदेव अभियान' शुरू किए जाने संबंधी घोषणा की थी। उन्होंने बहुप्रतिभा के धनी श्रीमंत शंकरदेव को विश्व-मंच पर स्थापित नहीं कर पाने को असमिया जाति की एक बड़ी कमजोरी बताया था। अब समय आ गया है कि हम अपनी इस कमजोरी को दूर कर विश्व को अपने महापुरुषों से परिचित कराएं।

वर्ष 2020 : निराशा के बीच कुछ सफलताएं

देखते ही देखते वर्ष 2020 विदाई की दहलीज पर पहुंच गया। पांच दिन बाद पूरे विश्व के लोग उसी हर्षोल्लास के साथ नए साल के आगमन का उत्सव मना रहे होंगे, जितने उत्साह से लोगों ने ठीक एक साल पहले वर्ष 2020 का स्वागत किया था। तब देश भर में नागरिकता संशोधन कानून को लेकर धरना-प्रदर्शन का दौर जारी था। धरना-प्रदर्शन के प्रभाव से असम सहित पूर्वोत्तर के अन्य राज्य भी नहीं बच पाए थे। वैसे माहौल में लोगों ने वर्ष 2020 का स्वागत इस उम्मीद के साथ किया था कि नया साल नई आशा, नई उम्मीद लेकर आएगा। यह मानवीय प्रवृति है कि वह सुखद भविष्य की कल्पना कर वर्तमान के कड़वे घूंट भी पी लेता है। सभी ने वर्ष 2020 का स्वागत भी कुछ ऐसी ही भावना के साथ किया था। मगर, साल के दो महीने भी नहीं गुजरे थे कि विश्वपटल पर कोविड-19 की चर्चा होने लगी। अन्य देशों के साथ-साथ कोविड-19 ने भारत में भी दस्तक दी और देखते ही देखते असम भी पहुंच गया। कोविड के कहर से बचने के लिए देश भर में लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। कई चरणों तक चले लॉकडाउन के बावजूद हमारा देश-हमारा राज्य भी कोविड की चपेट में आने से नहीं बच पाया। लॉकडाउन की वजह से देश के लोगों के समक्ष एक ऐसी स्थिति पैदा हो गई, जो न तो पहले कभी देखी गई और न ही सुनी गई। दैनिक मजदूर-किसान, ठेला-रिक्शाचालक, व्यवसायी-उद्योगपति, नौकरीपेशा-गृहिणी लॉकडाउन की सभी पर मार पड़ी। लाखों की संख्या में लोगों का अपनी गांव की ओर पलायन का नजारा भी पहली बार देश के सामने था। कुल मिलाकर चारों ओर घोर निराशा का माहौल था। कहीं भी कोई उम्मीद की

किरण नजर नहीं आ रही थी। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस उद्घोष ने लोगों में संजीवनी का काम किया कि हमें इस आपदा को संभावनाओं में बदलना होगा और लोकल के लिए वोकल होना होगा। उनके इस दृढ़ मनोभाव का असर भी हुआ। लॉकडाउन के दौरान देश भर में बड़ी तेजी से निर्माणकार्य किए गए। ऐसी तेजी का ही नतीजा था कि गणेशगुड़ी फ्लाईओवर का संयोगी मार्ग भी तय समय से पहले बनकर तैयार हो गया। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सफलताएं देखने को मिली। वर्ष 2020 के निराशामय माहौल में हासिल कुछ सफलताएं हमारी अंधेरी रात में चमकते सितारों से कम नहीं है। रात को चमकते सितारे भले ही हमें आगे का रास्ता नहीं दिखा सकते, मगर घनघोर अंधेरे में रोशनी के होने का अहसास जरूर दिखाते हैं। लॉकडाउन का सबसे सकारात्मक असर तो गुवाहाटी के विकास पर ही देखने को मिला। जीएस रोड जैसे अति व्यस्त सड़क के अलावा महानगर के अन्य कई मार्गों पर फुटब्रिज का काम युद्धस्तर पर होता नजर आया। मालीगांव में फ्लाईओवर की आधारशिला स्थापित की गई तो ब्रह्मपुत्र पर रोपवे सेवा का शुभारंभ कर गुवाहाटी को उत्तर गुवाहाटी के साथ जोड़ने का भी काम हुआ। सिर्फ यही नहीं भरलुमुख के पास ब्रह्मपुत्र पर कई लेन वाले उस पुल निर्माण का कार्य भी प्रारंभ कर दिया जो गुवाहाटी और उत्तर गुवाहाटी को जोड़ने का काम करेगी। हम सभी ने गुवाहाटी के सौंदर्यीकरण के काम को भी तेजी से पूरा होते हुए देखा है। चमचमाती सड़कें, जगमग करते रास्ते, तरह-तरह की चित्रकारी में रंगी दिवारें, सभी किसी सफलता से कम थोड़े है। सिर्फ गुवाहाटी ही क्यों जोरहाट, बरपेटा रोड जैसे शहरों में भी निर्माणकार्य जोर-शोर से जारी है। निर्माणकार्य के साथ-साथ राज्य के कृषि क्षेत्र में भी जबर्दस्त बदलाव देखने को मिल रहा है। लॉकडाउन के कारण जो लोग अपने गांव चले गए थे, वे घर पर हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रहे। उन्होंने अपना पुस्तैनी का कृषि कार्य प्रारंभ किया। इसी का नतीजा है कि आज बाजार में अन्य कृषि उत्पादों के साथ-साथ साग-सब्जियों की भी बाढ़ सी आई हुई है। कोरोना का संकट अभी भी पूरी तरह से टला नहीं है। लिहाजा हमें आपदा को अवसर में और निराशा को सफलता में बदलने के लिए तैयार रहना होगा।

नए साल का पैगाम : जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं

कोविड-19 महामारी के लिए वर्ष 2020 को विश्व भर में विशेष रूप से याद किया जाएगा। कोविड-19 महामारी ने एक ही झटके में पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया। अभी भी 2020 के खत्म होने में पखवाड़ा भर बचा है और विश्ववासी कोविड-19 के आतंक से मुक्त नहीं हो पाए हैं। विश्व के अन्य देशों के साथ-साथ हमारे देश की स्थिति भी लगभग वैसी ही है। भले ही असम में कोविड-19 का कहर कुछ कम हुआ है, मगर दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान जैसे राज्य आज भी कोविड-19 के आतंक तले अपने दिन गुजार रहे हैं। आरोग्य सेतु पर 16 दिसंबर की शाम उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार देश भर में कोरोना के 3,32,000 से अधिक सक्रिय मामले हैं, जहां तक असम की बात है तो यहां 2,10,401 लोग कोरोना का इलाज करावा स्वस्थ्य होकर अपने घर लौट चुके हैं। असम के विभिन्न अस्पतालों में कोरोना के 3540 मरीजों का इलाज चल रहा है। कोरोना के कारण अभी तक राज्य के 1004 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है।

ऐसी स्थिति में देश के सभी लोग चाहते हैं कि वर्ष 2020 के बाकी दिन ठीक-ठाक गुजर जाए ताकि नए साल का स्वागत नई योजना, नए संकल्प और नई ऊर्जा के साथ किया जाए। राज्य सरकार ने भी पहली जनवरी से स्कूल खोलने की घोषणा कर जनता को यह संदेश देने का प्रयास किया है कि राज्य कोरोना के आतंक से मुक्त हो चुका है। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा भी कह चुके हैं कि राज्य से कोरोना की पहली लहर गुजर चुकी है। बीटीसी

चुनावों के दौरान कई बार कोरोना संबंधी दिशा-निर्देशों का उल्लंघन होते देखा गया, मगर इस वजह से महामारी जैसे लक्षण देखने को नहीं मिले। इस बीच कोरोना संक्रमण पर काबू पाने के लिए बनाए जाने वाले टीके की अग्रगति संबंधी खबरों से भी जनता का हौसला बढ़ा है। जनता को यह लगने लगा है कि आने वाला साल न केवल बेहतर होगा, बल्कि काफी हद तक कोरोना-आतंक से मुक्त भी होगा। देश से निराशा का माहौल बड़ी तेजी से विलुप्त हो रहा है और सभी को नए साल का आगमन आशाओं से परिपूर्ण नजर आ रहा है। कहते हैं, जब सोच सकारात्मक हो तो परिस्थितियां भी उस हिसाब से बदलने लगती है। मानव स्वभाव पर यह बात तब भी लागू होती है, जब उसके विचार नकारात्मक होते हैं तो परिस्थितियां भी नकारात्मक होने लगती है। कोरोना को लेकर लोगों के मन में अब पहले जैसा डर-भय नहीं रह गया है। बदलते समय में कुछ लोग कोविड-19 महामारी को लेकर लापरवाह हुए हैं तो बहुत से लोगों ने मास्क पहनने, सामाजिक दूरी बनाए रखने और बार-बार साबुन से हाथ धोने की आदत को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लिया है। आजकल लोग घर से बाहर निकलते वक्त अपने मोबाइल फोन के साथ-साथ अपना मास्क लेना भी नहीं भूलते। यदि मास्क लेना भूल भी जाते हैं तो मास्क लेने के लिए आधे रास्ते से ही वापस घर लौट आते हैं। बहुत से लोग तो अपने बैग में अतिरिक्त मास्क भी रखने लगे हैं ताकि समय पर उन मास्क का स्वयं अथवा किसी जरूरतमंद के लिए उपयोग किया जा सके। यह एक अच्छी आदत है। मास्क के पहनने से हम और भी बहुत सी बीमारी अथवा संक्रमण से बच सकते हैं। महानगर की प्रदूषित हवा नाक-मुंह के द्वारा ही हमारे शरीर के अंदर पहुंचती है और हमें बीमार बना देती है।

नए साल को लेकर सभी के मन में संकल्प के साथ-साथ भारी उत्साह भी है। मगर, यह सोच भी समझदारी भरी नहीं है कि नए साल में कोविड-19 महामारी पूरी तरह खत्म ही हो जाएगी। ऐसे में हमें 'जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं' के सिद्धांत पर चलना ही होगा। इस सिद्धांत को यदि हम नए साल का संदेश समझकर आगे बढ़ें तो यह हम सभी के लिए नए साल की शानदार शुरूआत हो सकती है।

किसान आंदोलन : आमने-सामने है किसान और सरकार

मोदी सरकार द्वारा लोकसभा के मानसून सत्र में किसानों के लिए पेश किए गए तीन बिल (विधेयक) पारित होने और राष्ट्रपति की मुहर लगने के बाद जब से कृषि कानून बने हैं तब से देश में किसानों का आंदोलन जारी है। जहां एक ओर केंद्र सरकार इन तीनों कानूनों को देश के किसानों के हित में बता रही है, वहीं दूसरी ओर किसान संगठनों का कहना है कि इन कानूनों से किसानों को नुकसान और निजी खरीददार तथा कॉरपोरेट घरानों को फायदा होगा। देश के कृषि विशेषज्ञ इन कानून को किसानों के लिए फायदेमंद बताते हैं। उनका कहना है कि इन कानून के लागू होने से किसानों की आय बढ़ेगी, बाजार से बिचौलिये दूर होंगे और किसानों को उनकी फसल का उचित भाव मिल सकेगा। किसानों को चिंता इस बात को लेकर भी है कि आने वाले दिनों में उनकी फसल की खरीद बंद हो जाएगी, जबकि राज्य सरकारों को चिंता है कि किसान मंडियों के बाहर फसल बेचेंगे, जिससे उनका राजस्व घटेगा। इन सारे सवालों और चिंताओं को लेकर हमारे किसान कड़ाके की ठंड की परवाह किए बिना पिछले एक पखवाड़े से देश की राजधानी दिल्ली की सीमा पर आंदोलनरत हैं। किसानों की मांग है कि इन तीनों कानूनों को वापस लिया जाए, जबकि सरकार उनकी सारी शंकाओं को दूर करने के साथ-साथ उनकी वाजिब मांगों को भी इन कानूनों में शामिल करना चाहती है। सरकार और किसान नेताओं के बीच अब तक कई दौर की बात हो चुकी है, लेकिन अभी भी नतीजा नहीं निकल पाया है। किसान संगठनों का कहना है कि उनका विरोध सरकार से नहीं, कृषि कानूनों के खिलाफ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि कृषि कानून को लेकर देश में भ्रम फैलाया जा रहा है, जबकि उनकी सरकार गंगा जल जैसी पवित्र नीयत से काम कर रही है।

केंद्र सरकार द्वारा लाए गए तीनों कानूनों के तहत अब देश के किसान उनकी मनचाही जगह पर अपनी फसल बेच सकेंगे। सिर्फ यही नहीं किसान बिना किसी रुकावट के दूसरे राज्यों में भी फसल बेच और खरीद सकेंगे। इसका मतलब हुआ कि अब कृषि उपज मंडी समिति (एपीएमसी) के दायरे से बाहर भी फसलों की खरीद-बिक्री संभव है और साथ ही साथ फसल की बिक्री पर कोई टैक्स नहीं लगेगा। इसके अलावा देशभर में कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग को लेकर व्यवस्था बनाने का प्रस्ताव है। फसल के खराब होने पर उसके नुकसान की भरपाई किसानों को नहीं बल्कि कॉन्ट्रैक्ट करने वाले पक्ष या कंपनियों को करनी होगी। इससे किसानों की आय बढ़ेगी और बिचौलिया राज खत्म होगा। इस तरह अन्य एक कानून में खाद्य तेल, तिलहन, दाल, प्याज और आलू जैसे कृषि उत्पादों पर से स्टॉक लिमिट हटा दी गई है। देश के किसान इन तीनों कानूनों को वापस लिए जाने की मांग पर अड़े हैं और वे इससे कम किसी भी समझौते को मानने को तैयार नहीं दिख रहे हैं। किसानों की दलील है कि ये कानून किसानों के हित में नहीं है और कृषि के निजीकरण को बढ़ावा देने वाले हैं।

किसान संगठन कृषि कानूनों के अलावा बिजली बिल 2020 को लेकर भी विरोध कर रहे हैं। केंद्र सरकार के बिजली कानून 2003 की जगह लाए गए बिजली (संशोधित) बिल 2020 का विरोध किया जा रहा है। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि इस बिल के जरिए बिजली वितरण प्रणाली का निजीकरण किया जा रहा है। इस बिल से किसानों की सब्सिडी या फ्री बिजली सप्लाई की सुविधा खत्म हो जाएगी। अन्य एक मांग उस प्रावधान को लेकर है, जिसके तहत खेती का अवशेष जलाने पर किसान को 5 साल की जेल और 1 करोड़ रुपए तक का जुर्माना हो सकता है। किसान संगठन पंजाब में पराली जलाने के आरोप में गिरफ्तार किए गए किसानों को छोड़े जाने की भी मांग कर रहे हैं। कुल मिलाकर सरकार जिन कानूनों को किसान के लिए हितकारी बता रही है, उन्हीं कानून को लेकर किसानों के मन में बहुत से सवाल और शंकाएं हैं। ऐसे में जहां सरकार को चाहिए कि वह किसानों की सारी शंकाओं का समाधान करे, वहीं किसान भाइयों को बिना किसी के बहकावे में पूरे धीरज और समझ के साथ आगे बढ़ाना चाहिए।

कोरोनाकाल के बदलते मौसम में सतर्कता पहली शर्त

प्रकाश-पर्व के साथ ही इस साल की त्योहारों की शृंखला खत्म हो गई है। अब सभी को ठंड का इंतजार है। ऐसा पहले कभी देखने को नहीं मिला कि दिसंबर के महीने में भी गुवाहाटी का अधिकतम तापमान करीब 30 डिग्री और न्यूतनम 15 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहा हो। कोविड-19 महामारी के संक्रमणकाल में मौसम का यह ठहरा सा मिजाज चिंता और सवाल पैदा करता है। जब भी ऋतु बदलती है तो इसका सीधा प्रभाव इंसानों पर भी पड़ता है। बदलते मौसम में सर्दी, जुकाम, बुखार आदि होना आम बात है। मगर, कोविड-19 महामारी ने कल तक आम समझी जाने वाली इन बीमारियों को भी गंभीर बना दिया है। बदलते मौसम का सबसे अधिक असर बुजुर्ग और बच्चों पर पड़ता है। कोविड-19 का भी यही स्वभाव है, 10 साल से कम के बच्चे और 60 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों पर उसका सर्वाधिक असर देखने को मिलता है। यह बात सही है कि देश के अन्य कई राज्यों में जहां कोरोना पीड़ितों की संख्या में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है, वहीं असम में यह संख्या घट रही है। पहली दिसंबर की रात 11.45 बजे प्राप्त आंकड़ों के अनुसार हमारे राज्य में कोरोना के सिर्फ 3,486 ही सक्रिय मामले थे। कोरोनाकाल में उक्त दिन तक

हमारे यहां कुल 2,12,998 मामले दर्ज किए गए, जिनमें से 2,08,528 मरीज ठीक होकर अपने घर भी चले गए। ये आंकड़े हमारी उपलब्धियों का बखान तो करते हैं, मगर इनमें 'जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं' का भी संदेश छिपा है।

त्योहारों का मौसम गुजर चुका है और ठंड दस्तक देने ही वाली है, ऐसे में कभी-कभी लोग अनुशासन को ताक पर रख देते हैं। ठंड के मौसम में सोशल डिस्टेंसिंग का भी पूरा ध्यान नहीं रहता। सार्वजनिक वाहनों में भी एक-दूसरे यात्री के साथ चिपककर बैठना अच्छा लगता है। ठंडे पानी से बार-बार हाथ धोना भी नहीं सुहाता और मास्क पहनना भी अच्छा नहीं लगता। ऐसे में सभी अतिरिक्त सतर्कता और सुरक्षा बरतें तो यह एक अनुकरणीय कदम हो सकता है। वैसे ठंड के मौसम में शॉल, मफलर और बंदर-टोपी भी मौसम की मार से बचने के साथ ही कोरोना के खिलाफ कारगर हथियार साबित हो सकते हैं। शॉल, मफलर और बंदर-टोपी जैसे गर्म कपड़ों से हम अपने मुंह सहित पूरे शरीर को अच्छी तरह से ढंक कर रख सकते हैं। यह बात बताने-समझाने की जरूरत नहीं है कि धीरज के टूटने पर कभी-कभी अच्छे तैराक भी नदी के किनारे पर आकर डूब जाते हैं। असम से कोविड-19 की विदाई की बेला में हमें अपना धीरज नहीं खोना है और कोविड का मुकाबला उसी चुस्ती, सावधानी और सतर्कता के साथ करना है, जैसा की हम करते आए हैं। इस साल हमने सिर्फ खोया है। किसी का व्यापार बंद हो गया तो किसी की नौकरी चली गई, किसी का रोजगार छिन गया तो किसी को अपने परिवार का पेट पालने के लिए ठेला बेचना पड़ा। अब हमें इस स्थिति को बदलना है। नए साल के आगमन को अब एक महीना भी बाकी नहीं रह गया है। इस महीने भर में हमें खुद को स्वस्थ्य और तंदरूस्त रखना है ताकि अगले साल हम अपने सपनों को साकार करने में अपनी पूरी ताकत और ऊर्जा झोंक सकें। वर्ष 2020 में हमने जो गंवाया है, वर्ष 2021 में हमें उससे दोगुना हासिल करना है। यह तभी होगा जब हम स्वस्थ्य रहेंगे, निरोगी रहेंगे। आइए, हम सभी वर्ष 2020 के साथ-साथ कोविड-19 महामारी को भी राज्य से हमेशा-हमेशा के लिए अलविदा कहने का संकल्प लेते हैं।

वोकल फॉर लोकल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई पहल 'वोकल फॉर लोकल' में न सिर्फ दूरदृष्टि दिखती है, बल्कि भारत का आर्थिक विकास भी निहित है। श्री मोदी की इस पहल से भारतीय कुटीर उद्योग में नए सिरे से जान फूंकी जा सकती है। दीपावली के मौके पर इसके सुखद परिणाम भी दिखाई दिए। देशवासियों ने लोकल अथवा भारतीय कुम्हारों द्वारा बनाए गए दिए खरीदने में विशेष दिलचस्पी दिखाई और चीन से आयातित पटाखे-रंगोली आदि से लगभग किनारा ही कर लिया। इसी का नतीजा था कि इस बार तामिलनाडु के शिवाकाशी के पटाखों की लोगों ने पूरे उत्साह के साथ खरीददारी की। इसे एक शुरुआत के तौर पर देखा जाना चाहिए। हम सभी की यह कोशिश होनी चाहिए कि यथासंभव हम स्थानीय स्तर पर बनी वस्तुओं का भी उपयोग करें। इससे न सिर्फ हमारे पैसों का देश से बाहर जाना कम होगा, बल्कि स्थानीय स्तर पर उद्योग-रोजगार भी बढ़ेंगे। पिछले कुछ सालों से चीन जैसे देशों ने मानों भारतीय बाजारों पर अपना पूरा कब्जा ही जमा लिया है। होली के रंग-अबीर, पिचकारी से लेकर दीपावली के पटाखे, लाइटिंग और लक्ष्मी-गणेशजी की मूर्तियां तक चीन से आती हैं। इस स्थिति को और हर बात पर दूसरे देश का मुंह ताकने की आदत को बदलने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री के वोकल फॉर लोकल के संदेश में यही भावना निहित है कि जब हमारे कुम्हार भाई दिये और कलाकार लक्ष्मी-गणेश की सुंदर-सुंदर मूर्तियां बना सकते हैं तो हम दूसरे देश से मंगवाई गई ऐसी वस्तुएं क्यों खरीदें। पिछले दिनों राष्ट्रीय मीडिया में असम के धुबड़ी जिले के आसारीकांदी गांव में बनने वाले टेराकोटा शैली के दिये तथा अन्य सजावटी सामग्री की चर्चा हुई। बहुत कम लोगों को पता होगा कि आसारीकांदी का टेराकोटा शिल्प उद्योग एक प्राचीन उद्योग है, मगर इससे जुड़े शिल्पकारों की आज तक किसी ने सुध नहीं ली। जिस कला को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया जा सकता था, आजादी के इतने साल गुजर जाने के बाद भी वह अपने उचित मुकाम नहीं पहुंच पाई। सिल्क नगरी सुवालकुची के बुनकरों का हाल किसी से भी छिपा नहीं है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने असम की बुनकर महिलाओं की प्रशंसा की थी, मगर इनकी आर्थिक खस्ताहाली के कारण हस्तकरघों की आवाजें मंद पड़ने लगी है। ऐसे बहुत से स्थानीय उद्योग हैं, जिनको अब तक स्थापित हो जाना चाहिए था। सार्थेबाड़ी के कांसा-पीतल उद्योग को भी स्थानीय उद्योग की श्रेणी में रखा जा सकता है। सरकार की उदासीनता और निष्क्रियता के कारण हमारे देश का कुटीर उद्योग आहिस्ता-आहिस्ता बंदी के कगार तक पहुंच गया। उद्योग में बरकत न होने के कारण युवा पीढ़ी अपने परंपरागत काम को छोड़कर अन्य धंधे में लग गए। स्थानीय उद्योग बंद होने लगे तो इसका सीधा असर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ा। अब सरकार को भी यह समझ में आने लगा है कि बिना ग्रामीण भारत को आर्थिक रूप से सशक्त किए, बिना वोकल फॉर लोकल के संदेश को चरितार्थ किए आत्मनिर्भरशील भारत की बुनियाद को मजबूत नहीं बनाया जा सकता। इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री ने पिछले दिनों एक कार्यक्रम में देश के सभी साधु-संत, श्रीमंत-महंत, महात्मा-प्रवचनकारों से आग्रह किया कि वे अपनी धर्म सभाओं के माध्यम से अपने भक्त-अनुयायियों में वोकल फार लोकल का संदेश जरूर फैलाएं। देश के जन-जन की सामूहिक भागीदारी और सक्रिय प्रयास से ही इस पहल को आगे बढ़ाया जा सकता है। प्रधानमंत्री की इस पहल को एक आंदोलन का रूप देने और भारत को एक आत्मनिर्भरशील राष्ट्र बनाने के लिए हम सभी को इसके साथ जुड़ना होगा।

मेरी गुवाहाटी, हमारी गुवाहाटी

पूर्वोत्तर का मुख्य द्वार कही जाने वाली, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर गुवाहाटी सदियों से आकर्षण का केंद्र रही है। कामरूप हो या प्राग्ज्योतिषपुर इस क्षेत्र के महत्व पर धार्मिक ग्रंथों में विस्तार से लिखा गया है। पर्यटकों को गुवाहाटी आज भी आकर्षित करती है। प्रकृति ने जहां गुवाहाटी को महाबाहु ब्रह्मपुत्र के अलावा नीलाचल पहाड़, झरने, तालाब सब कुछ दिए हैं, वहीं इस महानगर को सजाने-संवारने में राज्य सरकार ने भी कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। शाम के बाद पूरी गुवाहाटी किसी नई-नवेली दुल्हन की तरह जगमगाने लगती है। गुवाहाटी को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि केंद्र सरकार असम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कितनी गंभीर और तत्पर है। गुवाहाटी में इन दिनों फ्लाईओवर, रोड डिवाइडर निर्माण एवं सौंदर्यीकरण का काम जोरों पर है। महानगर का मान बढ़ता रहे और सुंदरता बनी रहे इसके लिए सरकार के साथ-साथ आम नागरिकों का भी कर्तव्य बनता है। किसी भी महानगर के साफ-सफाई को वहां के लोगों के स्वभाव और सामाजिक जीवन के स्तर के साथ जोड़कर देखा जाता है। इस मामले में गुवाहाटीवासियों की जो छवि उभरकर सामने आती है वह थोड़ी निराश करने वाली है। हमारे यहां पुल

की रैलिंग हो अथवा रोड के बीच सफेद-काले रंग से रंगा डिवाइडर उस पर पान और गुटका खाकर थूकने से बने धब्बे जरूर दिख जाएंगे। जहां-तहां थूकने की आदत को शिष्ट नहीं माना जाता। अभी हाल ही में जनता के लिए खोले गए गणेशगुड़ी फ्लाईओवर की रैलिंग पर थूके जाने के कारण इसकी सुंदरता दागदार हो गई है। जब कोई अपने घर में यहां-वहां नहीं थूकता तो फिर सार्वजनिक स्थान अथवा निर्माण पर थूकने की आदत को बदला जाना चाहिए। इसके लिए न तो सरकार कुछ खास कर सकती है और न ही सामाजिक संस्थाएं। महानगर को साफ-सुथरा रखने का संकल्प हम स्वयं को लेना होगा। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हर एक व्यक्ति की समाज के प्रति कुछ जिम्मेदारियां होती है और अपने शहर, अपने गांव को साफ-सुथरा रखना भी इस जिम्मेदारी में शामिल है। साफ-सफाई को लेकर हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी विशेषतौर पर जागरूक रहे हैं। सार्वजनिक स्थानों पर अपने हाथों से झाड़ू लगाकर प्रधानमंत्री देशवासियों को यह संदेश दे चुके हैं कि मानव सभ्यता में साफ-सफाई का कितना महत्व है। गुवाहाटीवासियों में पहले की तुलना में साफ-सफाई के प्रति जागरूकता बढ़ी है, लेकिन इसे आदत में बदलने के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना जरूरी है। लोग सार्वजनिक स्थलों पर अथवा सरकारी-गैर सरकारी कार्यालयों की दीवारों पर न थूके, इसके लिए सरकार की ओर से पहले भी कई प्रकार के कदम उठाए गए हैं। दीवारों पर सुंदर-सुंदर चित्र बनाना, सरकार की ऐसी ही एक पहल का नतीजा है। हमने देखा है बड़े-बड़े भवनों की सीढ़ियों के किनारे कहीं-कहीं धार्मिक चित्र लगे होते हैं, इसका भी मुख्य उदेश्य लोगों की थूकने की आदत को बदलना है। साफ-सफाई को हम परिवार व समाज के अनुशासन के रूप में भी देख सकते हैं। घर के मुखिया को जब सफाई पसंद होगा तो वह अपने बच्चों में भी वैसी ही आदत विकसित कर पाएगा। साथ-साथ इस बिंदू पर भी ध्यान दिए जाने की जरूरत है कि जैसी हमारी आदत होगी, हमारे बच्चे उसका अनुकरण भी कर सकते हैं। देश का आदर्श नागरिक और शिष्ट शहरी बनने के लिए जरूरी है कि हम अपनी और अपने परिवार के सदस्यों में इस प्रकार की आदतें विकसित करें, जो दूसरों के लिए भी अनुकरणीय हो।

असम-मिजोरम सीमा विवाद

वृहत्तर असम को सात राज्यों में विभाजित किए जाने के बाद से ही असम तथा इसके पड़ोसी राज्यों में अंतर्राज्यिक सीमा को लेकर विवाद जारी है। मालूम हो कि पूर्वोत्तर राज्यों में सिक्किम को छोड़ मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और नगालैंड की सीमाएं असम से मिलती हैं। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, भूटान और बांग्लादेश की सीमाएं भी असम से मिलती है, मगर असम के साथ पश्चिम बंगाल अथवा बांग्लादेश-भूटान के साथ किसी प्रकार का सीमा विवाद सुनने-देखने को नहीं मिला। असम के साथ उसके पड़ोसी राज्यों के बीच सीमा को लेकर विवाद कभी-कभी मारपीट और हिंसक गतिविधियों तक का रूप ले लेता है। हाल ही में असम-मिजोरम के बीच हुए सीमा विवाद ने एक बार फिर इस सवाल को ताजा कर दिया है कि दशकों बीत जाने के बाद भी पूर्वोत्तर के पड़ोसी राज्यों के बीच के सीमा विवाद को क्यों जिंदा रखा गया है और क्या ऐसे विवादों का निपटारा नहीं किया जा सकता।

असम और मिजोरम के बीच हाल का तनाव इस कदर बढ़ गया था कि बाद में केंद्र सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा। दोनों राज्यों के बीच सीमा विवाद को लेकर भड़की हिंसा में कई लोग घायल हो गए थे। जानकार बताते हैं कि असम और मिजोरम के बीच की सीमा निर्धारित नहीं है। असम-मिजोरम के हालिया विवाद की वजह एक कोविड-19 कैंप को बताया जाता है। कछार जिले के लैलापुर में मिजोरम के सरकारी अधिकारियों ने कोरोना जांच के लिए एक कैंप बनाया ताकि राज्य में प्रवेश करने से पहले लोगों का कोविड-19 टेस्ट किया जा सके। यह कैंप असम क्षेत्र के 1.5 किमी अंदर बनाया गया था। असम ने मिजोरम द्वारा बिना इजाजत टेस्टिंग सेंटर बनाने का विरोध किया। इसी के चलते दोनों राज्यों की सीमा पर हिंसक झड़प हुई जिसमें कई लोग घायल हो गए। वहीं मिजोरम पुलिस का दावा है कि असम के स्थानीय लोगों ने पत्थर फेंके जिसके बाद मिजोरम के लोगों ने भी जवाबी कार्रवाई की।

वैसे तो मिजोरम को पूर्वोत्तर का सबसे शांतिप्रिय राज्य कहा जाता था, मगर धीरे-धीरे यह राज्य भी अन्य राज्यों के स्वभाव में ढलने लगा है। असम और इसके पड़ोसी राज्यों के बीच इस प्रकार का सीमा विवाद न तो यहां की संस्कृति-परंपराओं के अनुकुल है और न ही यहां की शांतिप्रिय लोगों के स्वभाव के अनुरूप। वैसे भी दो राज्यों के बीच का सीमा विवाद दो सरकारों के बीच का मुद्दा होता है, मगर इससे दोनों राज्यों की आमजनता ही प्रभावित होती है। लिहाजा इस प्रकार के विवाद को बिना विलंब किए सुलझा लिया जाना चाहिए। इसमें केंद्र सरकार भी अपनी प्रभावी भूमिका निभा सकती है। दो राज्यों के बीच के सीमा विवाद के अलग-अलग कारण हो सकते हैं। इस प्रकार के सीमा विवाद का निपटारा भी संभव है, जब दोनों राज्यों की सरकार, बुद्धिजीवी, नागरिक संगठन आदि मसले को सुलझाने की नीयत के साथ वार्ता की मेज पर बैठे। इस काम में केंद्र सरकार दोनों राज्यों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभा सकता है। हमें यह बात समझनी चाहिए कि किसी भी विवाद के निपटारे में जितनी देर होगी, वह विवाद उतना ही जटिल होता जाएगा। ऐसे में समझदारी इसी में है कि असम और इसके पड़ोसी राज्यों के बीच के सभी विवादों को आपस में ही मिल-बैठकर सुलझा लिया जाए।

कोविड-19 के साए तले दुर्गा पूजा

दुर्गा पूजा अर्थात् शारदीय उत्सव प्रारंभ होने को अब सप्ताह भर ही शेष रह गया है। यह पहला मौका है, जब हम कोविड-19 महामारी के आतंक के साए तले दुर्गा पूजा मनाने जा रहे हैं। एक तरह से यदि कहा जाए तो दुर्गा पूजा की एक रस्मअदायगी भर करनी है। कहीं भी, किसी के भी मन में पूजा को लेकर उत्साह का भाव नहीं है। चारों ओर एक निराशा का माहौल है। बाजार में भीड़ तो है लेकिन दुकानों में खरीददार नहीं हैं। लोगों में नए कपड़े खरीदने अथवा पूजा की अन्य खरीददारी करने का कोई चाव ही नहीं रह गया है। सभी चाहते हैं कि कोरोनाकाल में जैसे अन्य त्योहार गुजरे, वैसे ही इस साल की दुर्गा पूजा भी गुजर जाए। पूजा-पंडाल में प्रतिमा स्थापन के आठ दिन भी नहीं रह गए हैं, मगर बजाए हर्षोल्लास के चारों ओर उदासी की ही चादर तनी नजर आ रही है। वैसे निराशा के भंवर में भी आशा के दामन को थामे रखना मनुष्य की फितरत होती है। देवी दुर्गा भी हमारे लिए एक उम्मीद भरा सबेरा लेकर धरा पर अवतरण कर रही है। हम इस बात पर सकून की सांस ले सकते हैं कि कोविड-19 महामारी का संक्रमण क्रमश: कम होने लगा है। जहां एक ओर कोरोना से संक्रमित होने वाले लोगों की संख्या दिन-ब-दिन कम हो रही है, वहीं दूसरी ओर संक्रमण से ठीक होने वालों की संख्या भी क्रमश: बढ़ रही है। विगत 12 अक्टूबर की रात 11.45 बजे तक असम में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या घटकर 28,897 ही रह गई थी, जबकि पहले अक्टूबर को ऐसे मरीजों की संख्या 34 हजार से अधिक थी। संक्रमित मरीजों की कम होती संख्या जहां

एक ओर हमें सकून दिलाते हैं, वहीं दूसरी ओर इस बात का भी अहसास कराते हैं कि कोविड-19 को लेकर सतर्कता और जागरूकता की इस वक्त सर्वाधिक जरूरत है। हमारी तनिक सी भी लापरवाही कोविड-19 के रोकथाम के लिए किए जा रहे प्रयासों पर पानी फेर सकती है।

हमें इस साल दुर्गा पूजा भी बड़ी सादगी से मनानी है। हमारी चार दिन की लापरवाही कहीं आगे चलकर हमारे लिए मुसीबत न बन जाए, इसके लिए राज्य सरकार ने भी मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) लागू किए हैं। भले ही यह एसओपी पूजा समिति और प्रशासन के लिए हो, लेकिन इसमें आम आदमी की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें रात 10 बजे पूजा पंडाल और रात 9 बजे तक रेस्टूरेंट आदि बंद करने की बात भी शामिल है। हमें देवी दर्शन के लिए निकलते समय यह प्रण लेना होगा कि जैसे भी हम रात 10 बजे से पहले-पहले देवी दर्शन कर पूजा पंडाल से निकल जाएंगे और रात का खाना रेस्टूरेंट में 9 बजे से पहले ही खा लेंगे। यह बात भी ध्यान देने वाली है कि सरकार ने एसओपी भले ही पूजा समितियों और जिला-पुलिस प्रशासन के लिए जारी की हो, मगर उसके केंद्र बिंदु हम ही हैं। हमारी जरा-सी लापरवाही अथवा नियमों की अनदेखी सरकार की तमाम कोशिशों को बेनतीजा कर सकती है। पूजा के चार दिन भीड़-भाड़ वाली जगह अथवा पूजा पंडालों में न जाकर हम खुद और अपने परिवार को कोविड-19 के खतरे से बचा सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा भी कह चुके हैं कि पूजा के चार दिन संयम बरतकर कोविड-19 के खतरे को और अधिक कम किया जा सकता है। दुर्गा पूजा हर साल आती है, हर साल आएगी। लेकिन इस साल हम सभी के सामने अपने परिवार से लेकर दुनिया जहान तक को कोविड-19 महामारी से बचाने की चुनौती है, ऐसे में हम सभी को संभलकर चलना ही होगा। राज्य सरकार ने इसके लिए एसओपी जारी कर अपने कर्तव्य का निर्वाहन कर दिया है, अब हमारी बारी है। हमें यह बात हर पल याद रखनी है, मास्क पहनकर, सामाजिक दूरी बनाए रखकर, बार-बार साबुन से हाथ धोकर और कोरोना के तनिक से भी लक्षण दिखाई पड़ने पर चिकित्सकों की सलाह लेकर हम कोविड-19 महामारी को पराजित कर सकते हैं।

सवालों के घेरे में बालीवुड

बालीवुड इन दिनों गंभीर सवालों के घेरे में है। अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की रहस्यमय मौत से शुरू हुआ विवाद ड्रग्स तक पहुंच गया है। वैसे भी बालीवुड पर समय-समय पर तरह-तरह के आरोप लगते रहे हैं। कभी बालीवुड में दाउद जैसे माफियाओं का पैसा लगे होने का आरोप लगा तो कभी फिल्मी अभिनेता-अभिनेत्रियों तक के नाम माफिया गिरोह के साथ जोड़े गए। इश्क और मोहब्बत और जोड़ी नंबर वन फिल्म की नायिका और बिग बॉस-2 में भाग लेने वाली बालीवुड अभिनेत्री मोनिका बेदी का नाम अभी भी लोगों के जेहन में ताजा है। मुंबई बम धमाकों में शामिल होने के कारण मुंबई की आर्थर रोड जेल में उम्रकैद की सजा काट रहे माफिया डान तथा गैगस्टर अबू सलेम अब्दुल कयूम अंसारी उर्फ अबु सालेम के साथ मोनिका बेदी की संलिप्तता जग जाहिर है। इस बार बालीवुड के कई नामी-गिरामी अभिनेत्रियों पर लगे ड्रग्स सेवन करने जैसे आरोपों ने मुंबइया फिल्म उद्योग की बुनियाद को हिलाकर रख दिया है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत से जुड़े मामले की जांच के दौरान हुए एक से बढ़कर एक चौकाने वाले खुलासों ने पूरे देश को चिंता में डाल दिया। सुशांत सिंह राजपूत की मौत को लेकर किस तरह की राजनीति की जा रही है। मैं इस पर नहीं जाना चाहता, क्योंकि मेरा आज का लेख बालीवुड के ड्रग्स कनेक्शन पर है। स्व. नर्गिस-सुनील दत्त के बेटे संजय दत्त को भी वर्ष 1982 में अवैध ड्रग्स रखने के आरोप में 5 महीने की जेल की सजा हुई थी। तब उन पर भी ड्रग्स लेने के आरोप लगे थे। पाठकों को जीनत अमान की 'हरे कृष्ण-हरे राम' फिल्म याद होगी, जिसके बाद जीनत अमान को दम मारो गर्ल्स के नाम से पुकारा

जाने लगा था। बालीवुड जगत शुरू से ही भारतीय युवा वर्ग के प्रेरणा का श्रोत रहा है। बालीवुड के अभिनेता-अभिनेत्रियों के कपड़ों की डिजाइन हो अथवा उनकी खानपान की आदत, हमारे युवा उसकी कापी करने में तनिक भी देर नहीं लगाते। ऐसे में बालीवुड की कुछ हस्तियों पर ड्रग्स के सेवन करने का आरोप लगना सचमुच गंभीर बात है। एक ओर जहां देश को नशा मुक्त बनाने के लिए केंद्र सरकार विज्ञापन-प्रचार के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च कर रही है, वहीं दूसरी ओर बालीवुड से जुड़े कुछ लोगों द्वारा ड्रग्स की पार्टियां आयोजित की जा रही है। हत्या-आत्महत्या के सवाल को सुलझाने के लिए शुरू की गई सुशांत सिंह राजपूत से जुड़ी जांच में सीबीआई के बाद नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) की इंट्री से यह बात स्पष्ट हो गया है कि यह मामला सिर्फ हत्या अथवा आत्महत्या तक ही सीमित नहीं है। सुशांत की प्रेमिका रिया चक्रवर्ती द्वारा जांच एजेंसियों के समक्ष किए गए खुलासों के बाद न सिर्फ वह अपने भाई शौविक चक्रवर्ती के साथ जेल में बंद है। अब तक नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के अधिकारियों के समक्ष बालीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोन, श्रद्धा कपूर, सारा अली खान, राकुलप्रीत आदि की पेशगी हो चुकी है। मामले की तह तक जाने के लिए संबंधित अधिकारी इन सभी अभिनेत्रियों से कई-कई घंटे की पूछताछ कर चुके हैं। इनके मोबाइल फोन जांच एजेंसियों के पास जब्त पड़े हैं, जिनको खंगालकर अन्य अपराधियों तक पहुंचने की कवायद जारी है। जांच एजेंसी ने अभी भी इन सभी को क्लीन चीट नहीं दी है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत से जुड़े जांच के नतीजे क्या निकलते हैं, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा, लेकिन ड्रग्स और बालीवुड के संबंधों की जांच बहुत जल्द खत्म होती नहीं दिखती। वैसे यह भी स्पष्ट कर देना लाजमी है कि बालीवुड के कालकार सहित अधिकांश लोग अनुशासन प्रिय, संयमी, मेहनती हैं। इन्हीं के दम पर बालीवुड की बुनियाद टिकी है, मगर दो-चार मछलियां अगर पूरे तलाब को ही गंदा करने लगे, ताजे सेव की टोकरी में चार सड़े सेव भी पड़े हों तो वैसी गंदी मछली अथवा सड़े सेव का क्या करना चाहिए, यह बालीवुड को ही तय करना है। यह जरूरी है कि बालीवुड में उम्दा से उम्दा कलाकार हो, लेकिन यह उससे भी जरूरी है कि बालीवुड नशे की गिरफ्त से आजाद रहे।

कोविड-19 के कहर से परेशान बच्चे-बुजुर्ग

दुनिया के अन्य देशों के साथ-साथ हमारे देश में भी पिछले छह महीने से कोविड-19 का कहर जारी है। महामारी का यह रौद्र रूप कब जाकर शांत होगा, कहना मुश्किल है। कोरोना प्रतिरोधक टीके के आविष्कार का पूरे विश्व को इंतजार है। वैज्ञानिक और जानकारों का मानना है कि ऐसे टीके के द्वारा ही इस महामारी पर काबू पाना संभव है। कोरोना ने सब को प्रभावित किया है। व्यापारी, उद्योगपति, नौकरीपेशा, दैनिक मजदूर, गृहिणी, विद्यार्थी सभी वर्ग के लोग इसके कारण परेशान हैं। इस सूची में मासूम बच्चे और वयोवृद्ध वरिष्ठ नागरिक भी शामिल हैं। जहां एक ओर मासूम बच्चों को कोविड-19 महामारी के बारे में कुछ भी नहीं पता, वहीं दूसरी ओर वे अवकाशप्राप्त जीवन जी रहे वरिष्ठ नागरिक हैं, जो अपना बाकी का बचा जीवन शांति के साथ जीना चाहते हैं। इस महामारी ने ऐसे नागरिकों के ठहरे हुए जीवन में कंकड़ मारकर उसमें उथल-पुथल पैदा कर दी है।

वैसे यदि देखा जाए तो कोविड-19 महामारी के सबसे क्रूर शिकार ये बच्चे ही हैं। इस वैश्विक बीमारी ने इन बच्चों का बचपन, नटखटपन, खेलना-कूदना, स्कूल जाकर शरारत करना सब कुछ छिन लिया है। कोविड-19 के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए मार्च महीने के तीसरे सप्ताह से ही बच्चों के स्कूल, खेलने कूदने के सार्वजनिक स्थान, पार्क आदि सब कुछ बंद हैं। ऐसे में घरों में कैद ये बच्चे करें भी तो क्या करें। स्वास्थ्य विभाग द्वारा बच्चों और बुजुर्गों को घर में ही रहने की सलाह जारी किए जाने के बाद माता-पिता भी

मारे डर के अपने बच्चों को घर से बाहर नहीं निकलने देते। इस स्थिति में मासूम बच्चों की दिनचर्या दो अथवा तीन कमरों के फ्लैट में सिमटकर रह गई है। क्रिकेट खेलने अथवा दौड़-धूप करने वाले बच्चों के मनोरंजन के साधन अब टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल गेम्स में ही सिमटकर रह गए हैं। इन सब के बीच ऑनलाइन क्लासेज बच्चों को पढ़ाई और किताबों से जोड़े तो रखती है, मगर स्कूली दिनचर्या का विकल्प नहीं दे पाती। ऐसी स्थिति में बच्चों के आचार-व्यवहार, खानपान में भी बदलाव नजर आने लगा है। मोबाइल की स्क्रीन पर घंटों आंखें गड़ाए रखना अथवा टीवी के सामने लगातार बैठे रहना बच्चों के आदतों में बदलाव की वजह बनता जा रहा है। आने वाले दिनों में बाल मनोवैज्ञानिक ही इस बात को सुनिश्चित कर पाएंगे कि कोविड-19 महामारी ने बच्चों के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को प्रभावित किया है। मगर मौजूदा स्थिति ने अभिभावक-माता-पिता सभी को चिंतित कर रखा है। ऑनलाइन क्लासेज की वजह से बच्चों की पढ़ाई की निरंतरता जरूर बनी हुई है लेकिन ऑनलाइन पढ़ाई से संबंधित लाभ-हानि को लेकर अभिभावकों के मन में अनेकों सवाल हैं। विशेषकर उस वर्ग के अभिभावकों में जिनका कंप्यूटर-कीबोर्ड के साथ कोई खास रिश्ता नहीं है।

बच्चों के साथ-साथ समाज के वरिष्ठ नागरिकों की दैनिक जीवनचर्या को कोविड-19 महामारी ने बुरी तरह से प्रभावित किया है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए प्रात: भ्रमण के लिए निकलने से लेकर सार्वजनिक स्थानों तक नहीं जाने की सलाह जारी की गई है। मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा-गिरजाघर सब बंद पड़े हैं। घर के बच्चे टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल में लगे हैं। युवा अपने काम में व्यस्त है। घर का मुखिया कोरोना के कारण उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने में लगा हो तो ऐसे में घर के बड़े-बुजुर्गों से कौन गपियाए-बतियाए। 70 वर्ष की उम्र पार कर चुके घर के बुजुर्गों के पास जाने-बैठने में तो घरवाले भी घबराते हैं कि कहीं उनको संक्रमण न हो जाए। एक ही वाक्य में कहा जाए तो बच्चे और बुजुर्ग कोरोना के कहर से सबसे अधिक परेशान हैं और हमारे पास धीरज के साथ सामान्य दिन लौट आने का इंतजार करने के अलावा अन्य कोई चारा नहीं है।

त्योहार से अधिक सुरक्षा जरूरी है

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। कहावत है, हमारे देश में 12 महीने में 13 त्योहार आते हैं। वैसे भी विश्व भर में भारतीयों की पहचान त्योहार-उत्सव प्रेमी के रूप में की जाती है। हमारे किसी भी त्योहार को ले लें, उसमें कोई न कोई संदेश जरूर निहित होता है। दुर्गा पूजा अर्थात बुराई पर अच्छाई की जीत, दीपावली यानि अंधेरे पर प्रकाश की विजय, ईद आपसी प्रेम और भाईचारे का पैगाम, कृष्ण जन्माष्टमी धरा पर भगवान के अवतरण का संदेश और भी न जाने क्या-क्या। मगर पिछले कई महीनों से जारी कोरोना महामारी के प्रकोप ने हमारे त्योहारों को भी प्रभावित किया है। पिछले पांच महीनों में न जाने कितने ही त्योहार बिना किसी प्रकार के हर्षोल्लास के बड़ी ही खामोशी से गुजर गए। न तो जन्माष्टमी पर कान्हा के जन्म का बधाई गान हुआ और न ही ईद पर मस्जिद व ईदगाह मैदानों में सामुदायिक नमाज ही अता की गई। बोहाग बिहू का स्वागत भी न हो सका और न ही विदाई। यह हम भारतीयों के स्वभाव की खुबसूरती ही है कि हम स्थिति के अनुसार अपनी भावना, चाहे वह हमारे धर्म, रीति-रिवाजों से ही जुड़ी क्यों न हो, ढाल लेते हैं। रक्षाबंधन के साथ ही हमारे देश में त्योहारों का मौसम शुरू हो जाता है। यह तो हम सभी को पता है कि अब से शुरू हुआ त्योहारों का सिलसिला अगले साल की अप्रैल तक चलेगा। मगर, यह किसी को नहीं मालूम हो कि कोरोना महामारी के कहर और आतंक का अंत कब तक होगा। यह भी कहा जा रहा है कि कोविड-19 निरोधी टीके के बाजार में आते-आते हो सकता है यह साल गुजर जाएगा। हम सभी के सामने त्योहार को मनाने

के साथ-साथ खुद को, परिवार-समाज को महामारी से बचाने की भी चुनौती है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि हमारी पहली प्राथमिकता सभी की सुरक्षा ही होगी। शारदीय दुर्गा पूजा को अब करीब डेढ़ महीने ही शेष रह गए हैं। कोरोना के कहर के बीच दुर्गा पूजा का कोलाहल कहीं नजर नहीं आता। क्लब-संगठन में पूजा पंडाल बनने का काम शुरू नहीं हुआ है और मूर्तिकार भी हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। बाजार की तो पूरी रौनक ही गायब हो गई है। व्यापारी-खरीददार दोनों ही मायूस हैं। व्यापारियों ने अभी तक पूजा के लिए नए माल का ऑर्डर ही नहीं दिया है। देश के वस्त्र उद्योग की हालत भी वैसे ही खराब है। कोरोना के डर से कामगारों के अपने गांव चले जाने के बाद वे अभी तक अपने कर्मस्थान पर नहीं लौटे हैं। कपड़ा उद्योग बंद सा पड़ा है, ऐसे में कोई कपड़ा व्यापारी पूजा के माल का ऑर्डर देना भी चाहे तो कोई भी वस्त्र निर्माता कंपनी उसका ऑर्डर तक लेने के लिए तैयार नहीं है। ऊपर से लॉकडाउन के कारण लोगों का रोजगार, काम-धंधा सब कुछ चौपट हो गया है। अपने परिवार को दो वक्त की रोटी खिलाने की चिंता में भारतीय लोगों को दुर्गा पूजा अथवा अन्य त्योहार के मौके पर विशेष खरीददारी करने की सुध तक नहीं है।

इस बात पर भी विचार-विमर्श का दौर जारी है कि क्या इस बार सिर्फ कलश पूजन कर शारदीय दुर्गा पूजा की विधि को संपन्न नहीं किया जा सकता। कोरोना को हराने के लिए यदि हमारे दुर्गा पूजा के हर्षोल्लास की भी कुर्बानी देनी पड़े तो भारतीय जनमानस इसके लिए तैयार दिखता है। सिर्फ दुर्गा पूजा ही क्यों उसके बाद दीपावली, छठ पूजा जैसे भी त्योहार हमारे दरवाजे पर दस्तक देंगे। ऐसे में एक बार फिर हमें अपनी जिम्मेदारी तय करनी ही होगी।

वैसे भी त्योहार तो हर साल आएंगे। एक बार बस कोरोना से निपट लें, बाद में सारे त्योहार, पर्व, उत्सव की खुशियां हमारे दरवाजे पर होगी। आज कोरोना महामारी के कारण देश-दुनिया जिस संकटकाल से गुजर रही है, हमें अपनी समझदारी व जागरूकता दिखानी ही होगी। यह बात समझने और समझाने की है कि त्योहारों की खुशियों से कहीं अधिक विश्ववासियों की सुरक्षा जरूरी है।

भारतीय वायु सेना का स्वाभिमान है राफेल

फ्रांस से करीब 7000 किलोमीटर की दूरी तय कर पांच राफेल लड़ाकू विमानों ने 29 जुलाई, 2020 को जब अंबाला स्थित भारतीय वायुसेना हवाई अड्डे पर लैंडिंग की तो न सिर्फ भारतीय वायु सेना की ताकत में कई गुणा इजाफा हुआ, बल्कि देश के हर एक नागरिक का सीना भी गर्व से चौड़ा हो गया। निशाने में अचूक और दुश्मनों को पलभर में खाक करने वाले 5 मल्टी-रोल फाइटर जेट राफेल लड़ाकू विमान का हर भारतीयों को वर्षों से इंतजार था। राफेल का महत्व इस बात से भी समझा जा सकता है कि यह न सिर्फ पिछले लोकसभा चुनावों में प्रचार का एक मुद्दा बना, बल्कि राफेल को लेकर देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट में लंबी लड़ाई लड़ी गई। रक्षा विशेषज्ञों की मानें तो राफेल केभारत की सरजमीं पर उतरने के बाद भारतीय वायु सेना की चीन और पाकिस्तान पर बड़ी बढ़त हासिल हो गई है। देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस मौके पर कहा कि भारत की क्षेत्रीय अखंडता पर बुरी नजर रखने की चाहत वालों को अब राफेल के आ जाने से चिंता होनी चाहिए। उनका सीधा इशारा चीन और पाकिस्तान की ओर था। उन्होंने कहा, इस लड़ाकू विमान की फ्लाइंग परफॉर्मेंस बहुत ही अच्छी है और इसके हथियार, रडार और दूसरे सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर क्षमताएं इसे दुनिया में सर्वश्रेष्ठ की कतार में खड़ी करती हैं। भारत में इसका आगमन हमारे देश पर किसी भी आने वाले खतरे को नाकाम करने के लिए भारतीय वायु सेना को और ज्यादा ताकतवर बनाएगा।

भारतीय वायुसेना के पास फिलहाल इस टक्कर का अपने आप में यह अकेला विमान है। 5 मल्टी रोल फाइटर जेट राफेल एकसाथ कई लक्ष्यों पर निशाना लगा सकता है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, राफेल पाकिस्तान के एफ-16 और चीन के जे-20 के मुकाबले काफी क्षमतावान है। भारतीय वायुसेना

को इस विमान के कारण बड़ी ताकत मिलेगी। राफेल लड़ाकुओं के भारत पहुंच जाने से चीन की चिंताएं और अधिक बढ़ गई हैं। इतने दिन वह अपने जे-20 युद्ध विमानों को पांचवीं पीढ़ी की बताकर इतरा रहा था, मगर 4.5 पीढ़ी के राफेल को चीन के जे-20 से भी अधिक अत्याधुनिक और कई मामलों में आगे बताया जाता है। इतने दिन चीन भारत को डराने की कोशिश में लगा था, जबकि सच्चाई तो यह है कि वह खुद भारत से डरा-सहमा सा है। इसीलिए अपनी सामरिक स्थिति को मजबूत करने के लिए उसने रूस को उसके एस-400 डिफेंस सिस्टम खरीदने का प्रस्ताव दिया था, मगर हाल ही में रूस ने चीन के उक्त प्रस्ताव को ठुकरा दिया। रक्षा विशेषज्ञों की यदि मानें तो राफेल लड़ाकुओं को भारत-चीन की अंतर्राष्ट्रीय सीमा लद्दाख में तैनात किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर चीन और पाकिस्तान सीमा से करीब 200 किलोमीटर दूर स्थित अंबाला एयर बेस पर जैसे ही राफेल ने अपनी दहाड़ मारी, पाकिस्तान जैसे देश के होश गुम होना स्वभाविक है। भारत के पास राफेल का होना, उसकी चिंताओं में इजाफा करता है। रक्षा विशेषज्ञ कहते हैं कि भारत के पास पहले से ही राफेल होता तो बालाकोट अथवा उरी की सर्जिकल स्ट्राइक के समय हमें पाकिस्तान की सीमा में घुसने की जरूरत ही नहीं पड़ती। हम अपने ही देश की सीमा में बैठकर राफेल की मदद से पाकिस्तान के दांतों तले पसीना ला सकते थे। वैसे तो भारतीय सैन्य शक्ति में इजाफा किसी भी देश के लिए चिंता का विषय नहीं होना चाहिए। जबरन किसी भी देश की भूमि पर कब्जा करना अथवा किसी देश पर पहले हमला करना न तो भारतीय संस्कृति है और न ही भारतीय नीति। लेकिन कोई भी देश यदि भारत की एक इंच जमीन पर भी अपनी नजर डालता है तो भारत को यह मंजूर नहीं है। भारत की सैन्य शक्ति किसी से दुश्मनी करने के लिए नहीं, दुश्मन को उसकी नापाक हरकतों से रोकने के लिए है। वैसे भी हमारे देश के प्रधानमंत्री पहले ही कह चुके हैं, भारत न तो किसी देश के साथ नजर झुकाकर बात करेगा, न ही नजर उठाकर बात करेगा। भारत जब भी किसी से बात करेगा नजर से नजर मिलाकर बात करेगा। राफेल का भारतीय वायु सेना में शामिल किए जाने को प्रधानमंत्री की इसी भावना के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए।

'का'- कोविड-19, लॉकडाउन और जीएस रोड

जीएस रोड अर्थात् गुवाहाटी-शिलोंग रोड को महानगर की 'जीवन रेखा' भी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। पलटन बाजार से निकलने वाली यह सड़क सीधी उलुबाड़ी, भंगागढ़, दिसपुर, छह माइल होते हुए शिलोंग तक का सफर कराती है। यह सड़क पिछले साल दिसंबर में हुए नागरिकता संशोधन बिल विरोधी आंदोलन से लेकर कोविड-19 महामारी को फैलने से रोकने के लिए चरणबद्ध तरीके से लगाए गए लॉकडाउन और उसके प्रभाव की भुक्तभोगी रही है। असमवासी उस मंजर को भूले नहीं होंगे, जब नागरिकता संशोधन बिल को पारित किए जाने के विरोध में पूरा जीएस रोड दहक उठा था और आज लॉकडाउन की वजह से वाहनों की आवाहजाही पर पाबंदी लगाए जाने के फलस्वरूप पूरा जीएस रोड महक रहा है, खिला-खिला नजर आ रहा है। जीएस रोड के डिवाइडर पर लगाए गए पौधे रंग-बिरंग फूलों से भरे पड़े हैं। कोई अगर भंगागढ़ फ्लाईओवर पर खड़ा होकर दिसपुर की ओर निगाह फेरे तो वह जीएस रोड के बीच खिले फूलों की रंगत देखकर मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता।

नागरिकता संशोधन विधेयक के विरोध में आंदोलन करने सड़कों पर उतरे लोगों में से कुछ लोगों ने जीएस रोड की जो दुर्गति की थी, उसका स्मरण करने मात्र से समूची देह में सिरहन दौड़ जाती है। ऐसे कुछ आंदोलनकारी के गुस्से के शिकार सबसे पहले सड़क के बीचों-बीच लगे छोटे-छोटे पौधे ही हुए थे। उनको निशाना बनना और मटियामेट कर देना आसान जो था। ऐसे कुछ आंदोलनकारी सड़क के बीचों-बीच लगाए गए पौधों को जब पूरी तरह से नष्ट कर चुके थे, जीएस रोड के तीनों फ्लाईओवर पर रखे फूलों के गमलों की तोड़फोड़ कर चुके थे, उसके बाद ही उन्होंने अन्य सरकारी संपत्तियों को निशाना बनाया था। मात्र दो दिन में ही जीएस रोड की शक्ल इस कदर बदरंग हो गई

थी, उसे पहचानना ही मुश्किल हो गया था। राज्य सरकार के लिए भी जीएस रोड हमेशा ही महत्वपूर्ण रही है, इसीलिए सरकार ने अपने रात-दिन एक कर बड़ी तेजी से जीएस रोड की शक्ल सुधार दी और वह पहले की ही तरह चमकदार-दमकदार नजर आने लगी। जीएस रोड के साथ तब भगवान की सबसे शानदार रचना कहे जाने वाले सभ्य इंसानों में से कुछ सिरफिरों ने इस प्रकार का ही व्यवहार किया था।

नागरिकता संशोधन विरोधी आंदोलन की आंच अभी पूरी तरह से ठंडी भी नहीं पड़ी थी कि इस साल 30 जनवरी को हमारे यहां केरल में कोविड-19 का पहला मामला दर्ज किया गया। बाद में यह महामारी फैलती ही चली गई, नतीजा यह निकला कि असम सहित देश भर में 25 मार्च से पहले लॉकडाउन की घोषणा की गई और बाद में चरणबद्ध तरीके से यह लॉकडाउन बढ़ता ही चला गया। इस वजह से जहां एक ओर जीएस रोड वाहनों के रेलम-पेल, वाहनों के धुएं से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण से मुक्त हो गई, वहीं कुछ दिनों के लिए उसका ऐसे लोगों से भी पिंड छुट गया, जो चलते-चलते पान-खैनी की पीक अथवा बीच सड़क पर थूक दिया करते थे। यह लॉकडाउन भले ही आमआदमी और असम सरकार के लिए भारी नुकसानदेह साबित हो रहा है, लेकिन जीएस रोड की नजर से देखें तो इस लॉकडाउन की अवधि में समूचा जीएस रोड ही हरियाली से हराभरा और फूलों से रंग-बिरंगा नजर आने लगा है। इन दो घटनाओं में हम मानवीय विनाश और प्रकृति के सृजन को देख सकते हैं। जीएस रोड के दोनों ओर की सजावट और रात की आलोकसज्जा को भी हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। सड़क के बीचों-बीच लगे खंभों पर किसी अमरबेल की तरह लिपटी रंग-बिरंगी लाइटों की लड़ियां और जलती-बूझती लाइटें यहां के दुकानदार-प्रतिष्ठान प्रमुखों की सुरुचि को दर्शाता है। जैसा की मैंने पहले ही कहा, यह सड़क राज्य सरकार के लिए भी बहुत महत्व रखती है। देश-विदेश से जब भी कोई सरकारी मेहमान बनकर असम आता है तो उसका इस सड़क से होकर गुजरना लाजिमी है। जीएस रोड को सभी से प्यार है, यह सभी का स्वागत दिल खोलकर करती है। इस उम्मीद के साथ कि वह आगे भी महानगर की जीवन रेखा बनी रहेगी।

लॉकडाउन : गुवाहाटी महानगर पुलिस तुझे सलाम

लॉकडाउन के दौरान भले ही आमजनता अपने घरों में बंद हो, मगर अत्यावश्यकीय सेवाओं में लगे लोगों को आज भी अपनी व्यस्त दिनचर्या से अपने परिजनों के लिए चार पल का वक्त निकालने की फुर्सत नहीं है। ऐसे लोगों के लिए कोरोना संक्रमण का भय हो अथवा उत्सव-पर्व कोई मायने नहीं रखता। अत्यावश्यकीय सेवाओं में लगे सभी को जैसे भी हो अपना कर्तव्य का पालन करना ही होगा। अभी हाल में हमने टीवी पर उन चिकित्सा कर्मियों के छोटे-छोटे बच्चों के उदास चेहरों को भी देखा था, जिनकी नर्स मां अपना घरबार छोड़ कोरोना संक्रमण के मरीजों की देखभाल में लगी हुई है। इसी चश्मे से जब हम गुवाहाटी महानगर पुलिस की कर्तव्य परायणता को देखते हैं तो दिल गदगद हो उठता है। संभवत: यह पहला मौका है, जब गुवाहाटी अपने एक हाथ से लॉकडाउन के कारण भूखों मर रहे लोगों को खिचड़ी खिला रही है तो दूसरे हाथ में डंडा लेकर लॉकडाउन तोड़ने वालों की पिटाई भी कर रही है। इतने दिन तक आमलोगों के मन में पुलिस को लेकर जो धारणाएं थीं, लॉकडाउन ने उसे पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। लॉकडाउन के समय पुलिस कर्मियों ने न सिर्फ दीन-दुखियों की सेवा की, बल्कि लॉकडाउन के कारण घर में बंद भूख से मर रहे लोगों तक खाद्य वस्तुओं से भरे पैकेट भी पहुंचाए। कई किलोमीटर पैदल चलकर गंभीर बीमारी से पीड़ित किसी मरीज के लिए दवा का प्रबंध करने वाले पुलिस कर्मी का यह रूप किसी 'देवदूत' के चेहरे से अलग थोड़े ही हो सकता है। लॉकडाउन में किसी दिव्यांग की मदद करना, अपने पॉकेट से पैसे खर्च कर भूखे को भोजन करने जैसे महान सेवा कार्यों ने पुलिस की छवि को उज्ज्वलतम बना दिया है। कुल मिलाकर अब तक पुलिस और आमजनता के बीच के संबंधों में जो दरार थी, उस दरार को कोरोना महामारी ने पूरी तरह से भर दिया है। इस नजरिए से यदि देखा जाए तो कोरोना अच्छा है।

लॉकडाउन के दौरान सोशल प्लेटफॉर्म और मीडिया में भी पुलिस को लेकर तरह-तरह की बातें लिखी गई। पुलिस द्वारा बरती गई सख्ती पर विशेष रूप से लिखा गया-दिखाया गया। लॉकडाउन का नियम तोड़ने वालों को पिटती पुलिस, बिना पास के वाहन लेकर सड़कों पर निकले लोगों से जुर्माना वसूलती पुलिस, सार्वजनिक स्थान पर मास्क न पहनने अथवा थूकने वाले से उठक-बैठक कराती पुलिस जैसे दृश्य बार-बार दिखाए गए, लेकिन आमजनता इस बार पूरी तरह से पुलिस के पक्ष में खड़ी नजर आई। यही कारण है कि पुलिस द्वारा बरती गई इस सख्ती के बावजूद लोगों ने पुलिसकर्मियों का सम्मान किया, अभिनंदन किया। ऐसा सिर्फ गुवाहाटी में हुआ ऐसा भी नहीं है। देश भर के विभिन्न शहरों में पुलिस कर्मियों का कुछ इस तरह से ही मान-सम्मान होता दिखा। लॉकडाउन के दौरान पुलिस द्वारा दिखाई गई सख्ती अथवा सक्रियता किसके भले के लिए थी, किसे कोरोना के संक्रमण से बचाने के लिए थी। ऐसे सवाल हम सभी को अपने आप से पूछने चाहिए।

लॉकडाउन के समय ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों के लिए यह सब करना इतना भी आसान नहीं था। जो लोग सरकारी नियमों को तोड़ने में अपनी शान समझते हैं। ऐसे पढ़े-लिखे झूठा रौब झाड़ने वालों से भी पुलिस को निपटना पड़ा। जानते नहीं मैं कौन हूं, आप मुझे नहीं जानते जैसे सवालों का संभवत: ड्यूटी पर तैनात हर एक पुलिसकर्मी को सामना करना पड़ा होगा। लॉकडाउन को छोड़ भी दें तो सोचें जरा आम समय में कड़कड़ाती ठंडी रात हो या बदन को झुलसा देने वाली दोपहरी सड़क के बीचों बीच खड़ा यातायात पुलिस का एक सिपाही किसकी सेवा के लिए होता है। एक वाहन चालक को सही दिशा दिखाना, गलत तरीके से वाहन चलाने वालों को रोक कर उन्हें ऐसा करने से रोकने की कोशिश के पीछे वाहन चालकों की जान की हिफाजत करने का ही तो भाव होता है। फिर भी लोग पुलिस को न तो मान देना चाहते हैं न ही उसकी खाकी वर्दी का सम्मान करना चाहते हैं। लॉकडाउन जैसे गंभीर संकटकाल में भी लाख मुसीबतों को झेलते हुए गुवाहाटी महानगर पुलिस के शीर्ष अधिकारी से लेकर कांस्टेबल तक अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहे। ऐसे लोगों को दिल की गहराई से सलाम करने का तो मन करता ही है।

लॉकडाउन क्या कोरोना संक्रमण का एक मात्र हल है

गुवाहाटी में पिछले 28 जून से जारी 14 दिवसीय लॉकडाउन के बीच यह सवाल उठना वाजिब है कि क्या लॉकडाउन ही कोरोना संक्रमण का एक मात्र हल है। इस पूर्ण लॉकडाउन के बाद से कोरोना संक्रमण के मामलों में जिस गति से वृद्धि हुई है, वह डरा देने वाली है। 24 जून से अब तक गुवाहाटी में कोरोना संक्रमण के 4900 से अधिक मामले दर्ज किए गए हैं। हालांकि स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने यह भी कहा है कि 12 जुलाई के बाद से ऐसे मामलों में कमी आने लगेगी। डॉ. शर्मा की बात पर इसलिए भी विश्वास किया जा सकता है, क्योंकि उन्होंने राज्य में फैल रहे कोरोना को लेकर अभी तक जो भी कहा है, वह सच ही साबित हुआ है। कोरोना के साथ चल रही जंग में दिन-रात सेनापति की तरह लगे रहने वाले स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा के सामने राज्य की स्थिति बिल्कुल पानी की तरह साफ है। पिछले एक सप्ताह में दो बातें स्पष्ट होकर उभरी है, पहली सिर्फ लॉकडाउन के दम पर कोरोना से पार नहीं पाया जा सकता और दूसरी गुवाहाटी में कोरोना के सामाजिक संक्रमण की रफ्तार और तेज हो गई है। मरीजों में ऐसे हजारों लोग शामिल हैं, जिनका कोई यात्रा विवरण नहीं है। स्वास्थ्य मंत्री तो यहां तक कह चुके हैं कि गुवाहाटी औपचारिक रूप से महामारी के दौर में प्रवेश कर चुकी है।

इतनी भयावह स्थिति में हम न तो एक मात्र सरकार के भरोसे बैठ सकते हैं और न ही लॉकडाउन के। सरकार अथवा लॉकडाउन हमको कोरोना से बचने की शत-प्रतिशत गारंटी नहीं दे सकता। इससे बचने के लिए हमें सिर्फ इतना सा करना है कि बहुत जरूरी न हो तो हम घर से बाहर अपने कदम भी न रखें। हम गुवाहाटीवासियों ने बस इतना सा कर लिया, कुछ दिन घरों में ही रह लिया

तो समझिए कोरोना को जीत लिया। आज के दिन जब दुकानें बंद हैं, बाजार बंद हैं, स्कूल-कॉलेज, कार्यालय, सार्वजनिक परिवहन आदि सब बंद हैं तो फिर लोगों को घरों से बाहर निकलने की जरूरत ही क्या है। फिर भी लोग घर से निकल रहे हैं। लॉकडाउन के पहले सप्ताह में महानगर पुलिस ने ऐसे 500 से अधिक वाहनों को जब्त किया है, जिनके चालक सरकारी नियमों की खुले आम धज्जियां उड़ा रहे थे। कानून का माखौल उड़ाने वाले ऐसे लोगों को पुलिस ने इसी दौरान करीब ढाई लाख रुपए का जुर्माना भी वसूला। इसके बावजूद कुछ लोग सुधरने को तैयार नहीं दिखते।

कल्पना कीजिए कल को यदि डॉ. शर्मा को कोरोना संक्रमण हो जाए तो पूरी व्यवस्था को कौन संभालेगा, डॉक्टर तथा अन्य चिकित्साकर्मी भी यदि कोरोना की चपेट में आने लगे तो अन्य लोगों का इलाज कौन करेगा। हम नागरिकों को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए कोरोना के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक सैनिक का रोल निभाना है और डॉ. शर्मा के पीछे खड़ा रहना है। पिछले सोमवार को जब लॉकडाउन में तनिक सी ढील दी गई, तब गुवाहाटी के बाजारों का हाल हम सभी ने देखा है। बाजारों में जिस तरह से लोगों की भीड़ उमड़ी, उसमें सोशल डिस्टेंसिंग सहित स्वास्थ्य विभाग के तमाम दिशा-निर्देश स्वाहा हो गए। किसी को भी अपनी और अपने परिवार के सदस्यों की जिंदगी के साथ इस प्रकार से खिलवाड़ करने की अनुमति कैसे दी जा सकती है। बाजार में लोगों की भीड़ जमा न हो और सभी आराम से अपनी रोजमर्रा की जरूरी वस्तुएं खरीद सके, इसके लिए दो दिन की ढील को बढ़ाकर पांच दिन कर दिया गया, फिर भी लोगों ने समझदारी नहीं दिखाई। लोगों की इस नासमझी के बाद से तो लॉकडाउन में दी गई ढिलाई पर ही सवाल उठने लगे हैं कि क्या इस प्रकार से कोरोना से जंग लड़ी जा सकती है। महानगर में रहने वाले अधिकांश लोग ही समझदार और पढ़े-लिखे हैं, ऐसे लोग ही जब सोशल डिस्टेंसिंग को मजाक बनाने लगे, मास्क पहनने से परहेज करने लगे तो फिर कम पढ़े-लिखे लोगों से हम क्या उम्मीद कर सकते हैं। चलिए सारी बीती बातें बिसारकर हम कोरोना की लड़ाई के सैनिक बनें और एक नागरिक के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभाने की शपथ लें।

गुवाहाटी का लॉकडाउन अच्छा है

मरीज की बीमारी को ठीक करने के लिए कभी-कभी कड़वी दवा अथवा शल्य चिकित्सा भी करनी पड़ती है। भले ही यह प्रक्रिया मरीज के मुंह का जायका खराब करने वाली अथवा शरीर के चीर-फाड़ जैसी हो, लेकिन अंतत: मरीज के स्वास्थ्य लाभ के लिए ही होती है। 23 जून की मध्य रात्रि से जारी गुवाहाटी के 11 वार्डों के पूर्ण लॉकडाउन को इसी दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। गुवाहाटी का लॉकडाउन अच्छा और महानगरवासियों के भले के लिए ही है। महानगर में बड़ी तेजी से फैल रहे कोरोना संक्रमण के मामलों पर अंकुश लगाने के लिए गुवाहाटी के सबसे अधिक कोरोना प्रभावित इलाकों का लॉकडाउन ही संभवत: अंतिम विकल्प रह गया था। साल के शुरू से ही कोरोना के संक्रमण ने पूरे विश्व में कोहराम मचा रखा है। इस कोहराम के बीच देश में शुरू हुए अनलॉक-1.0 से पहले तक असम में कोरोना का संक्रमण पूरी तरह

से काबू में ही था। 1 जून तक राज्य में कोरोना संक्रमण के कुल 1463 मामले दर्ज किए गए, जिनमें से 277 मरीज ठीक होकर अपने घर जा चुके थे और 1186 मरीज इलाजरत थे। यह स्थिति तब थी, जब बाहरी राज्यों में फंसे पड़े असमवासियों की अपनी गृह वापसी शुरू हो चुकी थी। लोग ट्रेन, बस और विमानों के जरिए अपने घर लौटने लगे थे। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा, स्वास्थ्य राज्य मंत्री पीयूष हजारिका तथा उनकी टीम के लोगों ने स्वयं रेल स्टेशन, बस अड्डे तथा हवाई अड्डे पर जाकर बाहरी राज्यों से वापस अपने घर लौटने वाले असमवासियों का न सिर्फ स्वागत किया, बल्कि उनके आगे की सफर की भी व्यवस्था की। स्वास्थ्य विभाग के इतना कुछ करने के बाद भी स्थिति हाथ से निकलती दिख रही है। बाहरी राज्यों से आए लोगों में ऐसे लोग भी बड़ी संख्या में थे, जो अपने साथ कोरोना का संक्रमण भी लेकर आए थे। देखते ही देखते गोलाघाट, होजाई जैसे जिले कोरोना के हॉटस्पॉट बन गए। सरकार ने बाहर से आए लोगों को क्वारंटाइन सेंटरों में रखने की व्यवस्था की, लोगों के खाने-पीने का प्रबंध किया तो वहां भी कुछ लोग अव्यवस्था फैलाने में लग गए। कुछ एक ने क्वारंटाइन सेंटर से भागने तक का प्रयास किया। इस तरह से देखा गया कि सरकार ने कोरोना संक्रमण को जितनी गंभीरता के साथ लिया। कुछ लोगों ने इसे उतनी गंभीरता के साथ नहीं लिया और यही लोग मौजूदा स्थिति का कारण बने।

यह बात सभी को पता है कि एक कमजोर कड़ी मजबूत से मजबूत जंजीर को तोड़ सकती है। हमारे स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा बार-बार लोगों को समझाते रहे कि सोशल डिस्टेंसिंग बनाकर रखें, मास्क पहनें, बार-बार हाथ धोएं। ऐसा करके ही हम कोरोना से पार पा सकते हैं, मगर सभी ने उनकी नसीहत नहीं मानी। अनलॉक होने पर बड़ी संख्या में लोग जरूरी काम से और बिना वजह भी घरों से निकले। बाजार में भीड़ जमा होने लगी। बहुतों ने सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान नहीं रखा। लोगों ने मास्क पहने भी तो ठीक तरीके से नहीं पहने। बाजार गुलजार होने लगे। बाहरी राज्यों से आने वाले ट्रकों की कतारें फैंसीबाजार जैसे प्रमुख व्यवसायिक केंद्र अथवा पार्किंग प्लेस पर दिखने लगी।

इसका नतीजा यह निकला कि गुवाहाटी में ही कोरोना संक्रमण के मामले

बड़े तेजी से फैलने लगे। एक अध्ययन के दौरान यह बात भी सामने आई कि बाहरी राज्यों से ट्रक लेकर आने वाले ट्रक चालक और खलासी भी कोरोना कैरियर्स का काम कर रहे हैं। इसके लिए जिला प्रशासन ने बड़े पैमाने पर संदिग्ध लोगों के लिए कोरोना जांच अभियान भी चलाया। स्वास्थ मंत्री ने 15 दिनों के अंदर 50 हजार लोगों की जांच किए जाने की भी घोषणा की। लेकिन कोरोना संक्रमण के मामले क्रमशः बढ़ते ही गए। अभी चार दिन पहले ही डॉ. शर्मा ने राज्यवासियों को कहा था कि हम यदि सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं करते हैं, मास्क नहीं लगाते हैं तो इस महीने के अंत तक गुवाहाटी की स्थिति भयावह हो सकती है। गुवाहाटी को अगर दिल्ली, मुंबई और चेन्नई जैसा बनने से रोकना है तो हम सभी को स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस संदर्भ में जारी दिशा-निर्देशों का पालन करना ही होगा। इसके अलावा महानगर का बुद्धिजीवी वर्ग भी लगातार यह मांग करता आ रहा था कि कोरोना शृंखला (चेन) को तोड़ने के लिए महानगर में लॉकडाउन लगाया जाना चाहिए। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए महानगर के वैसे वार्डों में लॉकडाउन लगाया गया है, जिस क्षेत्र से कोरोना संक्रमण के अधिक मामले सामने आए हैं। लिहाजा जनता को सरकार द्वारा लिए गए गुवाहाटी लॉकडाउन के फैसले का स्वागत किया जाना चाहिए।

कोरोना के संग रहकर ही बनना होगा अत्मनिर्भर

देश-दुनिया में कोरोना वायरस के संक्रमण का कहर जारी है। वैसे भी अभी तक इस वायरस से निपटने के लिए न तो किसी प्रकार के टीके का आविष्कार हुआ है और न ही दवा का। कोरोना का अंत कब होगा, इसका चरमकाल कब आएगा इसको लेकर अलग-अलग राय व्यक्त की जा रही है। हम यह भी कह सकते हैं कि इन दिनों कोरोना पर ज्ञान बांटने वाले विशेषज्ञों की बाढ़ आई हुई है। इन सभी बातों में एक बात यकीन योग्य है कि कोरोना बहुत दिनों तक हमारे साथ, हमारे आसपास ही रहने वाला है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एड्स, एचआईवी पॉजिटिव जैसी बीमारियों के वायरस हमारे आसपास होते हैं। ऐसे में हमें कोरोना की आशंका को सामने रखकर अपना जीवनयापन करना होगा।

ऐसा तो हो नहीं सकता कि हम कोरोना संक्रमण के भय से अपने आपको और अपने परिवार को एक कमरे में कैदकर के बैठ जाएं। हमें रोजी-रोटी, रोजगार, व्यापार-नौकरी, दुकानदारी-फैक्टरी जाने के लिए बाहर निकलना होगा तो हमारे बच्चों को पढ़ाई-लिखाई आदि के लिए। रही हमारे घर की महिलाओं की बात तो उन्हें वैसे भी सौ काम के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता है। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते लंबे समय तक यह भी संभव नहीं है कि हम अपने सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रमों को पूरी तरह से बंद कर दें। अपने परिजन-रिश्तेदार, ईष्ट-मित्रों से मिलना छोड़ दें। हमें संबंध भी निभाने होंगे और एक-दूसरे के घर पर आना-जाना भी करना होगा। लॉकडाउन-आनलॉक के नाम पर हमारा देश अधिक दिनों तक अपने कर्म-पथ से दूर नहीं रह सकता। इसीलिए हमें कोरोना की आशंका के बीच कामयाबी की संभावनाओं को ढूंढना होगा। हमें घर से बाहर निकलना होगा, लेकिन बार-बार बताई जा रही, समझाई जा रही सावधानियों के साथ।

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी हमें कोरोनाकाल का उपयोग खुद को आत्मनिर्भर बनाने के लिए करने की सलाह दी है। इस संकट की घड़ी में जब सरकार मदद-सहयोग करने के लिए हमारे साथ खड़ी है तो हमें श्री मोदी की इस सलाह को गंभीरता से लेना चाहिए। आलू-चिप्स बेचने के नाम पर विदेशी कंपनियां हमारे देश से हर साल हजारों करोड़ रुपए की कमाई कर अपने देश ले जाती है। इस क्रम में हम अमरीकन आलू-चिप्स निर्माता कंपनी ले'ज का भी जिक्र कर सकते हैं। क्या इस बात पर विचार किया जा सकता है कि हमारे देश में भी 'लिज्जत पापड़' अथवा 'बीकानेरी भुजिया' की तर्ज पर कुटीर उद्योग अथवा सहकारिता समितियों के माध्यम से आलू चिप्स बनाने को प्रोत्साहित किया जाए। ऐसे घरेलू उद्योग को बढ़ावा देकर महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी उल्लेखनीय सफलता हासिल की जा सकती है। वैसे भी आज के दिन हमारे देश में महिला-पुरुष के बीच कोई भेदभाव नहीं रह गया है। सभी क्षेत्रों में महिला-पुरुष दोनों ही कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जब सरकार मदद करने को तैयार है। रोजगार के लिए जरूरी धनराशि हमें ऋण के लिए उपलब्ध कराने तथा अन्य सभी प्रकार के संसाधन

देने को तैयार है तो हम स्वयं को और देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आगे क्यों नहीं बढ़ सकते। वैसे जनता में यह शंका आम है कि सरकारी योजना और प्रधानमंत्री की घोषणाओं का जमीनी स्तर पर सटीक तरह से कार्यान्वयन नहीं होता। प्रधानमंत्री कहते हैं कि बैंकों में सभी का बचत खाता होना चाहिए, मगर बैंक वाले गरीब-अनपढ़ मजदूर को खाता खुलाने के नाम पर इतने चक्कर लगवाते हैं कि वह बेचारा बचत खाता खोलने का ख्याल ही अपने दिमाग से निकाल देता है। इस स्थिति को बदलना होगा और इसके लिए सरकार और संबंधित विभागों को ही आगे आना होगा। जनता को यह विश्वास तो होना ही चाहिए कि उनके प्रधानमंत्री जो घोषणाएं करते हैं अथवा कहते हैं उन पर जमीनी स्तर भी अमल होता है। आत्मनिर्भरता वह कुंजी है, जिससे सफलता के दरवाजे को खोला जा सकता है। हमारे सामने रोजगार और उद्योग से ऐसे बहुत से रास्ते खुले पड़े हैं, जो हमें और हमारे देश को विकास की ओर ले जा सकते हैं। हम यदि इतना कुछ नहीं कर सकते तो मात्र इतना सा तो कर ही सकते हैं कि रोजमर्रा की कोई भी वस्तु खरीदने से पहले यह देख लें कि उस पर 'मेड इन इंडिया' लिखा है या नहीं। हम यदि संकल्प ले लें कि यथासंभव हम हमारे देश में निर्मित वस्तुओं का भी उपयोग करेंगे तो हमारा यह छोटा सा संकल्प देश को आत्मनिर्भरशील बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकता है।

कोरोना से बचाव, अपनी सावधानी अपने हाथ

कोरोना वायरस के संक्रमण से सिर्फ हम ही नहीं पूरा विश्व परेशान है। इससे निपटने के लिए हमारे देश में चरणबद्ध तरीके से 68 दिनों का लॉकडाउन रहा। इसके बाद विगत 1 जून से आनलॉक प्रारंभ हुआ, फिलहाल हम आनलॉक के दूसरे फेस से गुजर रहे हैं। 8 जून से शुरू हुए आनलॉक के दूसरे फेस में धार्मिक स्थल, होटल-रेस्टूरेंट, शापिंग मॉल आदि खोल दिए गए। इस पूरी प्रक्रिया को देश की स्थिति को सामान्य करने की दिशा में एक कवायद के तौर पर देखा जा सकता है। मगर अनलॉक के बाद जो सबसे चिंताजनक पहलु उभरकर सामने आया, वह था देश में कोरोना संक्रमण के मामले में अचानक से आई तेजी, इस सूची में शामिल होने से असम भी नहीं बच पाया। पहली जून को हमारे देश में कोरोना संक्रमण मरीजों की कुल संख्या 1,90,535 दर्ज की गई, जबकि इस दिन तक देश भर में कुल 5,394 लोगों की कोरोना की वजह से मौत हुई। पहली जून तक हमारे राज्य में भी कोरोना संक्रमण के कुल 1483 मामले दर्ज किए गए। इसके बाद मामलों की बढ़ोतरी ने जो रफ्तार पकड़ी, उसने एक बार पूरे देश को चिंता में डाल दिया। महाराष्ट्र, तमिलनाडू, दिल्ली, गुजरात जैसे राज्यों में तो कोरोना की रफ्तार कम होने का नाम ही नहीं ले रही है। एक ओर देश को सामान्य स्थिति में ले जाने की कोशिशें हो रही है, वहीं दूसरी ओर कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों ने देश के स्वास्थ्य जगत के सामने गंभीर स्थिति पैदा कर दी है।

हमारी केंद्र और राज्य सरकार कोरोना संक्रमण के कारण उत्पन्न स्थिति से लगातार बिना रुके, बिना थके लड़ रही है। इसके लिए जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विश्व भर में प्रशंसा हो रही है, वहीं असम के मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा और उनकी टीम की राज्यवासी

दिल खोलकर तारीफ कर रहे हैं। इसके बावजूद देश की मौजूदा स्थिति में सुधार लाने की जरूरत है। देश को इस स्थिति से निकालने के लिए हम नागरिकों को आगे आकर अपनी भूमिका निभानी होगी। इस बात की सभी को जानकारी है कि अभी तक न तो कोरोना संक्रमण रोकने का कोई टीका बना है और न ही किसी दवा का आविष्कार हुआ है। ऐसे में हमारी जागरूकता और सतर्कता ही हमें और देश को इस महामारी के फैलाव से बचा सकती है। सबसे पहली जरूरत तो यह है कि हम इस बीमारी से बचने के लिए सुझाए गए सारे उपायों का अक्षरश: पालन करें। मसलन बिना मास्क पहने घर से बाहर न निकलें, बार-बार साबुन से हाथ धोएं, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें, भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचें आदि। ये सब जतन कर हम स्वयं को और अपने परिवार को कोरोना संक्रमण से बचा सकते हैं। हमें सिर्फ यहीं नहीं रुकना है, अपने पड़ोसी, मुहल्लेवालों को भी बचाव के उक्त सभी कदम उठाने को प्रेरित करना है। हमारी यह बदली आदत ही हमें और हमारे देश को कोरोना संक्रमण से मुक्ति दिला सकती है। इसके लिए जरूरी है कि कोरोना से बचने वाले सारे उपायों को हम अपनी रोजमर्रा की आदतों में शामिल कर लें। हमलोगों में से ऐसे बहुत कम लोग होंगे जो बाजार के लिए निकलते वक्त अपना मोबाइल अथवा पर्स घर पर छोड़ देते हैं। कभी-कभी घर पर छूट भी जाए तो याद आने पर हम आधे रास्ते से ही वापस घर आकर अपना मोबाइल अथवा पर्स ले लेते हैं। मास्क पहनने के मामले में भी हमें यही आदत अपनानी होगी। भले ही सरकार ने शॉपिंग मॉल और धार्मिक स्थल खोल दिए हों, हमें यह सोचना है कि क्या हम बिना शॉपिंग मॉल गए और कुछ दिन गुजार सकते हैं अथवा क्या हम अपने घर में रहकर भी पूजा-अर्चना नहीं कर सकते। कोरोना से बचाव के लिए हमें जो सावधानियां अपनानी है, वह हमारे ही हाथ में है। सरकार तथा स्वास्थ्य विशेषज्ञ हमें सिर्फ कोरोना संक्रमण से बचाव के उपाय ही बता सकते हैं। हमें न सिर्फ इन उपायों को अपनी दैनिकचर्या में उतारना है, बल्कि अन्य सभी को भी इन उपायों पर अमल करने के लिए प्रेरित करना है। याद रहे, कोरोना की यह लड़ाई सिर्फ सरकार अथवा स्वास्थ्य विभाग की ही नहीं है। यह हम सभी की लड़ाई है और इसे हम सभी को एकजुट होकर ही लड़ना पड़ेगा।

असम के स्वास्थ्य जगत को सलाम

पूरी दुनिया कोरोना महामारी के संकट से जूझ रही है। एक अकेले हमारे ही देश में कोरोना संक्रमण मरीजों की संख्या दो लाख का आंकड़ा पार कर चुकी है। देखा जाए तो यह आंकड़ा आमलोगों के लिए न सिर्फ भयावह, बल्कि चिंताजनक तस्वीर पेश करता है। मगर इस आंकड़े के पीछे एक उम्मीदजनक बात भी छिपी है कि हमारे देश में कोरोना संक्रमण से ठीक होने वालों की संख्या एक लाख से अधिक अथवा कुल मरीज के लगभग 50 प्रतिशत है। भारतीय चिकित्सा जगत की इस उपलब्धि को कमतर नहीं आंका जा सकता। यह हमारे देश के डॉक्टर, नर्स तथा अन्य चिकित्सा कर्मियों की जी-जोड़ मेहनत का ही नतीजा है कि हमारे देश में कोरोना से होने वाली मृत्यु दर अन्य कई विकसित देशों से बहुत कम है। हमारे देश ने न सिर्फ संकट का समाधान खोजने का काम किया है, बल्कि कोरोना जैसे महामारी काल को भी अवसर में बदलने का काम किया है। यह सभी को पता है कि इस साल जनवरी में जब कोरोना ने हमारे देश में कदम रखा, तब भारत में एक भी पीपीई किट नहीं बनती थी और एन-95 मास्क का देश में नाममात्र ही उत्पादन होता था, लेकिन आज हमारे देश में ही हर रोज 2 लाख पीपीई किट और 2 लाख एन-95 मास्क बनाए जा रहे हैं। यह उपलब्धि आत्मनिर्भरता हमें सुख और संतोष देने के साथ-साथ सशक्त भी बनाती है। कोरोना संक्रमण से निपटने के लिए बहुत ही कम समय में पूरे देश में जो चिकित्सीय आधारभूत ढांचा खड़ा किया गया, वह आश्चर्य चकित कर देते वाला है।

वैश्विक स्तर पर लड़ी जा रही कोरोना की इस जंग में असम भी अपने देश के साथ कदमताल मिलाते हुए पहली पंक्ति में खड़ा नजर आ रहा है। इसके लिए असम के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिंमत विश्व शर्मा, राज्य स्वास्थ्य मंत्री पीयूष हजारिका और उनकी पूरी टीम की जितनी भी तारीफ की जाए, कम है। असम में कोरोना संक्रमण पीड़ितों का आंकड़ा भले ही 1600 पार कर चुका है, मगर इस महामारी से मरने वालों की संख्या पिछले कई दिनों से चार पर ही अटकी पड़ी है। इसका भी पूरा श्रेय डॉ. शर्मा और उनकी टीम को दिया जाना चाहिए।

असम के संदर्भ में यह बात भी बतानी जरूरी है कि यहां पाए गए कोरोना के कुल मामलों में से करीब 90 प्रतिशत मामलों का इतिहास बाहरी राज्यों से जुड़ा हुआ है। असम के स्वास्थ्य मंत्री पिछले कई महीनों से कोरोना महामारी को संभालने में अपने दिन-रात एक किए हुए हैं, वह भी तब जब राज्य का वित्त, शिक्षा, लोक निर्माण जैसे महत्वपूर्ण विभागों का जिम्मा भी उनके ही पास है। यह उनकी असीम क्षमता का ही नतीजा है कि उन्होंने कोरोना के बहाने अपने किसी भी विभाग के कामकाज की गति को मंद नहीं पड़ने दिया है। सुबह से देर रात गए तक बारिश में भींगते हुए उनको यहां से वहां तक दौड़ते हुए देखा जा सकता है। बाहरी राज्यों से आने वालों की खबर लेने के लिए गुवाहाटी रेलवे स्टेशन से लेकर लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे तक और कोरोना संक्रमण से मुक्त मरीजों को घर के लिए विदा करने के लिए ग्वालपाड़ा से लेकर जोरहाट तक दौड़ते डॉ. हिमंत विश्व शर्मा को सभी ने देखा है। राज्य में यह पहला मौका है, जब इलाज के लिए बात-बात पर बाहरी राज्यों की दौड़ लगाने वाले असम वासियों के दिल में अपने ही राज्य की स्वास्थ्य सेवा के प्रति एक विश्वास का संचार हुआ है। राज्यवासियों के मन में इस बात को लेकर कोई संशय नहीं रह गया है कि राज्य की स्वास्थ्य सेवा में भारी बदलाव आया है और यहां की स्वास्थ्य सेवा पहले की अपेक्षा काफी उन्नत हुई है। असम की स्वास्थ्य सेवा ने जहां एक ओर आमजनता के मन में सोए विश्वास को जगाया है, वहीं दूसरी ओर यह भी संदेश दिया है कि एक राजनेता अगर चाहे तो विकट से विकट स्थिति को भी अपने पक्ष में कर सकता है। असम आरोग्य निधि में जनता की ओर से दिए गए सौ करोड़ रुपए से अधिक का चंदा भी इसी बात को रेखांकित करता है कि एक सच्चे, मेहनती, ईमानदार व्यक्ति जब कुछ करने का बीड़ा उठाता है तो न उसे अपार लोगों का समर्थन हासिल होता है, बल्कि पैसों की कमी भी आड़े नहीं आती। ऐसी स्थिति में हम नागरिकों का भी फर्ज है कि अपने स्वास्थ्य मंत्री के साथ खड़े हों। एक नागरिक के तौर पर हमें सैनेटाइजेशन करते रहना है, मास्क पहनना है और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना है। हमने यदि इतना सा कर लिया तो समझिए कोरोना के खिलाफ जारी जंग भी हमने जीत ली। हां एक बात और असम के स्वास्थ्य जगत को सलाम, इतना तो बनता है।

बढ़ता कोरोना, परेशान सरकार

दुनिया में कोरोना का कहर रुकने का नाम नहीं ले रहा है। सरकार की लाख कोशिशों के बावजूद हमारे देश में बढ़ते कोरोना मरीजों का आंकड़ा चिंताजनक बात है। कोरोना पीड़ितों की संख्या डेढ़ लाख के ऊपर पहुंच जाने से हमारा देश भी इस महामारी से सबसे अधिक प्रभावित 10 देशों की सूची में शामिल हो गया है। दुनिया भर में कोविड-19 के करीब 58 लाख मामले सामने आ चुके हैं। अमरीका इससे सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। इसके बाद क्रमशः ब्राजील, रूस, ब्रिटेन, स्पेन, इटली, फ्रांस, जर्मनी और तुर्की का स्थान है। हमारे देश की बात करें तो एक अकेले महाराष्ट्र में कोरोना पीड़ितों का आंकड़ा 50 हजार पार कर चुका है, इसमें मुंबई के 30 हजार से अधिक कोरोना पीड़ित भी शामिल हैं। महाराष्ट्र, विशेषकर मुंबई में कोरोना के बढ़ते मामलों में कहीं न कहीं सरकार की बेबसी भी नजर आती है। देश को कोरोना महामारी से बचाने के लिए सरकार और देशवासियों की अभूतपूर्व भूमिका रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लॉकडाउन के चार चरणों में देशवासियों से जो भी अपील की, सभी ने उसका अक्षरशः पालन किया। देखा जाए तो लॉकडाउन-3.0 तक स्थिति नियंत्रण में नजर आ रही थी, लेकिन लॉकडाउन-4.0 में जैसे भी परिवहन व्यवस्था को खोलने का एलान हुआ, कोरोना के मामलों में अचानक उछाल आ गया। देश में जहां-तहां फंसे प्रवासी मजदूरों में जैसे भी हो अपने घर जाने की बेचैनी थी, तो राज्य व केंद्र सरकारों की भी अलग ही मजबुरियां थी। प्रवासी मजदूरों को उनके घर भेजने के लिए विशेष रेल व बसें भी चलाई गईं। लाखों मजदूरों को उनके घर भेज भी दिया गया, मगर ये सारे प्रयास नाकाफी साबित हुए। आज भी देश के राजमार्गों पर पैदल अथवा साइकिल से अपने घरों को लौटते मजदूरों के झुंड को देखा जा सकता है।

पिछले कई दिनों से बाहरी राज्यों से असम में भी लोगों के आने का सिलसिला जारी है। हवाई मार्ग और रेल मार्ग खोल दिए जाने के फलस्वरूप प्रवासी असमिया लोगों के असम आगमन की संख्या में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। इसके साथ-साथ असम में कोरोना पीड़ितों की संख्या में भी बेतहाशा वृद्धि देखने को मिल रही है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने भी पिछले दिनों कहा कि असम अब कोरोना से सुरक्षित नहीं रहा है। डॉ. शर्मा ने प्रवासी असमवासियों से कुछ दिनों के अंतराल पर असम आने का अनुरोध करते हुए कहा कि इससे उनको यहां के क्वारंटाइन केंद्र में गुणवत्ता वाली सुविधाएं मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि बाहरी राज्यों से लोगों की भीड़ यदि इसी तरह से असम में प्रवेश करती रही तो सारी सरकारी व्यवस्थाएं ध्वस्त हो सकती है। राज्य भर में अलग-अलग जिलों में बनाए गए क्वारंटाइन केंद्रों में लोगों के ठहरने-रुकने का सिलसिला जारी है। इसके अलावा सरकार की ओर से सामर्थ लोगों के लिए अपने खर्चे पर होटलों में 'होम क्वारंटाइन' की व्यवस्था की गई है। देखा जाए तो कोरोना से दो-दो हाथ करने में केंद्र सरकार हो अथवा राज्य सरकार कोई भी कसर नहीं छोड़ रही है। मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल के नेतृत्व में स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा और प्रदेश स्वास्थ्य मंत्री पीयूष हजारिका किसी देवदूत की तरह जनता की जो सेवा कर रहे हैं, ऐसा इससे पहले शायद ही कभी देखने को मिला हो। किसी भी समस्या को लेकर सरकार इतनी गंभीर हो तो जनता को भी उतनी ही गंभीरता दिखनी चाहिए। कोई राष्ट्रीय योजना हो अथवा देश की कोई समस्या बिना जनभागीदारी के उसे सफल नहीं बनाया जा सकता। हमारे देश में पोलियो, हैजा, चेचक आदि महामारी पर तब जाकर अंकुश लगा, जब सरकार के साथ जनता ने भी समझदारी दिखाई। कोरोना से निपटने के लिए भी हम सभी को ऐसी ही समझदारी दिखानी होगी। बिना काम के घर से बाहर कदम भी नहीं रखना है। घर से बाहर निकले तो मास्क पहनना है, बार-बार हाथ धोने हैं और सबसे बड़ी बात सोशल डिस्टेंसिंग का भी पालन करना है। कोरोना से निपटने के लिए अभी तक कोई दवा अथवा टीके का आविष्कार नहीं हुआ है, ऐसे में हमारी सावधानियां ही हैं, जो हमें इस महामारी से बचा सकती है।

लॉकडाउन-4.0 का संदेश, अपनी आदतें बदलें-आत्मसंयमी बनें

पूरे विश्व के साथ-साथ भारत भी कोरोना महामारी से खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है। हमारे देश में भले ही कोरोना पीड़ितों की संख्या एक लाख के आंकड़े को पार गई हो, लेकिन कोरोना संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए उठाए गए भारत के कदमों की विश्व भर में प्रशंसा हो रही है। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता और समय पर लिए गए सही फैसलों का ही परिणाम है कि हमारे देश में न सिर्फ कोरोना से मरने वालों की संख्या चार प्रतिशत से भी कम है, बल्कि कोरोना के मामले बढ़ने की रफ्तार भी अन्य देशों के मुकाबले काफी धीमी है। कोरोना संक्रमण के फैलाव को रोकने के लिए हमारे देश में चरणबद्ध तरीके से लॉकडाउन की शृंखला जारी है। विगत 18 मई से लॉकडाउन-4.0 शुरू हो गया है, जो आगामी 31 मई को खत्म होगा। देखा जाए तो भारत में दुनिया का सबसे बड़ा लॉकडाउन चल रहा है। 31 मई को जब लॉकडाउन-4.0 पूरा होगा, उस दिन लॉकडाउन की शृंखला को प्रारंभ हुए 68 दिन हो चुके होंगे। देश की 135 करोड़ की आबादी करीब दो महीनों से बंदिशों में हैं। देखा जाए तो दुनिया के किसी भी देश में इतनी बड़ी आबादी के साथ इतने दिनों तक चलने वाला यह सबसे बड़ा लॉकडाउन है।

हमारे देश में घोषित लॉकडाउन की शृंखला देशवासियों के लिए नए-नए संदेश, नई-नई पाबंदियां लेकर आई। लॉकडाउन-4.0 में हम पर कोई नई पाबंदी नहीं लगाई, बल्कि कई प्रकार की पाबंदियों में ढील ही दी गई है। इसका मतलब यह समझना चाहिए कि अब हमें आत्मसंयमी बनना है। खुद को

अनुशासन में रखना है और कोरोना संक्रमण से बचने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने जो-जो उपाय बताए हैं, इन पर अमल करना है। सामाजिक दूरी बनाए रखना, मास्क पहनना, बिना जरूरी कार्य घर से बाहर न निकलना, हाथ को बार-बार धोना, जहां-तहां न थूकना जैसे कार्य लोगों को कानून का डर दिखाकर अथवा डंडे के जोर से नहीं करवाए जा सकते। इन सब बातों को हमें अपनी आदतों में शामिल करना होगा। हमारे प्रधानमंत्री ने दो बातें स्पष्ट कर दी है कि जब तक कोरोना का टीका नहीं निकल जाता, दुनिया को कोरोना के साथ ही चलना होगा और दूसरी बात कोरोना से बचाव के उपाय हम सभी को स्वयं ही करने होंगे। मुझे याद है एड्स बीमारी के अस्तित्व में आने से पहले सभी सैलून में दाढ़ी बनाने के लिए अधिकतर बिना ब्लेडवाले उस्तरे का इस्तेमाल किया जाता था। मगर, एड्स के अस्तित्व में आते ही सैलून से बिना ब्लेडवाला उस्तरा गायब हो गया और आज जब किसी को दाढ़ी बनानी होती है तो उस्तरे में नई ब्लैड लगाकर उसे अच्छी तरह से डिटॉल से बीजाणु मुक्त करने के बाद ही दाढ़ी बनाई जाती है। यह बदलाव सरकारी प्रयासों से नहीं अथवा कानून के डर से नहीं बल्कि हमारी सोच और आदत के कारण से आया।

लॉकडाउन-4.0 का भी हमारे लिए यही संदेश है कि अपनी आदतें बदलें, आत्मसंयमी बनने और ऐसा कुछ भी न करें जो कोरोना संक्रमण को फैलने में मदद करता हो। लॉकडाउन-4.0 में यह भी संकेत है कि कोरोना की रोकथाम के लिए पिछले करीब दो महीने में सरकार को जो भी कदम उठाने थे उठा लिए। इसके लिए देश भर में जिस प्रकार का चिकित्सकीय आधारभूत ढांचा खड़ा करना था वह कर लिया। पीपीई किट्स, मास्क, पर्याप्त वेंटिलेटर्स का भी प्रबंध कर लिया। यदि कोई कोरोना संक्रमण से पीड़ित होता है तो सरकार उसके इलाज के लिए पूरी तरह से तैयार है। अब हम देशवासियों को इसके लिए तैयार होना है कि कुछ भी हो जाए, हमें कोरोना संक्रमण के हमले का शिकार नहीं बनना है। इसके लिए जितने भी जतन जरूरी है, किए जाने चाहिए। एक ओर सरकार द्वारा की गई व्यापक तैयारियां और दूसरी ओर हमारी मुस्तैदी कोरोना को करारी हार का मजा चखाने के लिए पर्याप्त है, दुनिया के सामने हमें बस यही साबित करना है।

आत्मनिर्भरता के दम पर 21वीं सदी भारत की होगी

कोरोना महामारी को भारत के लिए एक अवसर बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 12 मई के राष्ट्र के नाम संबोधन में कहा कि आत्मनिर्भरता के दम पर 21वीं सदी भारत की होगी। उन्होंने यह भी कहा, कोरोना के संक्रमण से लड़ने के लिए किए गए जारी लॉकडाउन की शृंखला अभी खत्म नहीं होने वाली है। लॉकडाउन-4.0 की घोषणा भी होगी, जो पूरी तरह से नए रंग-रूप और नियमों वाला होगा। 12 मई की रात 8 बजे दिए गए प्रधानमंत्री के 34 मिनट के संबोधन पर गौर करें तो हमें उसमें कई महत्वपूर्ण बातें नजर आती है। देश के सभी तबके के नागरिकों को आत्मबल और विश्वास प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री ने जो संबोधन दिया, उसके एक-एक शब्द और वाक्य आत्मविश्वास से परिपूर्ण था।

पहली बात तो यह है कि कोरोना बहुत जल्द ही हमारी जिंदगी से बाहर निकलने वाला नहीं है। यह लंबे समय तक हमारे जीवन का हिस्सा रहेगा, इस बात को स्वीकार करते हुए हमें अपनी आदत और दिनचर्या में बदलाव कर लेना चाहिए। यह बदलाव जितनी जल्दी होंगे, हमारे लिए उतना ही अच्छा है। श्री मोदी वैसे भी पहले से ही साफ-सफाई और स्वच्छता को लेकर अभियान चलाए हुए हैं, लेकिन कोरोना ने साफ-सफाई और स्वच्छता की जरूरत को और अधिक बढ़ा दिया है। सार्वजनिक स्थानों पर जहां-तहां थूकना कोरोना को निमंत्रण देने जैसा हो सकता है, यह बात अब किसी से भी छिपी नहीं है। सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेंसिंग) को जितनी जल्दी हो सके, हमें अपनी आदत में शामिल कर लेना चाहिए, क्योंकि यही दो बातें हैं जो हमें कोरोना संक्रमण के खतरे से कोसो दूर रख सकती है।

उन्होंने कोरोना महामारी को भारत जैसे देश के लिए एक गंभीर चुनौती के साथ-साथ सुनहरा अवसर भी बताया। उन्होंने कहा कि लोकल उत्पादन पर अधिक ध्यान देते हुए हमें भारत को आत्मनिर्भर बनाना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि वैश्विकरण के युग में आए इस संकट को स्थानीय यानी लोकल पर निर्भरता के कारण काफी हद तक नियंत्रित किया जा सका है। लोकल को वोकल के दम पर 'ग्लोबल' बनाया जा सकता है। इसके लिए बस नजरिए को बदलने की जरूरत है। वैसे भी कोरोना काल में यह बात साफ हो गई है कि संकट की घड़ी में पड़ोसी का सहयोग नहीं अपना ही सामर्थ काम आता है। लेकिन भारत का सामर्थ और आत्मबल ऐसा होना चाहिए, जिसमें अन्य जरूरतमंद के सहयोग करने की भावना निहित हो। जब देश में कोरोना संकट शुरू हुआ, तब भारत में एक भी पीपीई किट नहीं बनती थी और एन-95 मास्क का देश में नाममात्र ही उत्पादन होता था, लेकिन आज हमारे देश में ही हर रोज 2 लाख पीपीई किट और 2 लाख एन-95 मास्क बनाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता हमें सुख और संतोष देने के साथ-साथ सशक्त भी बनाती है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यमों, कुटीर उद्योगों, किसानों आदि के लिए 20 लाख करोड़ रुपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा कर न सिर्फ पूरे विश्व को चकित कर दिया, बल्कि देशवासियों को भी यह संदेश देने का काम किया है कि सरकार का खजाना खाली नहीं है। जनता यदि आत्मनिर्भरता के मार्ग पर दो कदम चलती है तो सरकार भी उसके साथ चार कदम चलने को तैयार है। लॉकडाउन से प्रभावित भारतीय अर्थव्यवस्था को उबारने और किसान, मजदूर, मध्यम वर्ग के लोग समेत समाज के सभी प्रभावित वर्गों और क्षेत्रों को राहत देने के लिए यह विशेष आर्थिक पैकैज भारत के जनकल्याणकारी होने का जीता-जागता दृष्टांत है। हमारे प्रधानमंत्री ने हमारा मार्गदर्शन कर दिया है, सरकार हमारी सभी प्रकार से सहयोग करने को तैयार है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम भारत को आत्मनिर्भर बनाने और 21वीं सदी को भारत की सदी बनाने के लिए अपना पहला कदम कब उठाते हैं।

जनता के द्वारा, जनता की खातिर, जनता का लॉकडाउन

कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिए तीसरे चरण के लॉकडाउन-3.0 का दौर जारी है। पहले और दूसरे चरण के लॉकडाउन को कामयाब बनाकर देश की जनता ने विश्ववासियों को यह बता दिया है कि 'भारत में जनता के द्वारा, जनता की खातिर, जनता का लॉकडाउन चल रहा है'। हम कह सकते हैं भारत जैसा लोकतांत्रिक देश ही विश्व के समक्ष यह सूत्र प्रस्तुत कर सकता है। इस सूत्र का सार ही यही है कि कोरोना से सरकार नहीं जनता ही लड़ाई लड़ सकती है। इस लड़ाई में जीत इस बात पर निर्भर करती है कि जनता को यह लगे कि यह लड़ाई उनकी है और उनके कल्याण के लिए ही लड़ी जा रही है। भारतवासियों ने इस सूत्र को स्थापित कर दिखाया है। विश्व के बड़े-बड़े विकासशील देश जब कोरोना जैसी महामारी के आगे बेबस नजर आ रहे हैं, वैसे में भारत पूरी सफलता के साथ इस महामारी का मुकाबला करने में लगा है। ऐसा तभी संभव हो पा रहा है कि देश का विरोधी पक्ष, विभिन्न इकाइयां और विशेषकर जनता सरकार के साथ खड़ी है। 130 करोड़ की आबादी वाले भारत जैसे विशाल देश की संपूर्ण गतिविधियों को इतने दिनों तक पूरी तरह से बंद कर देना, जनता को घरों तक ही सीमित कर देना, कतई संभव नहीं होता अगर देश की जनता सरकार का साथ नहीं देती। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की जनता के साथ सीधी बातचीत की, सभी राजनीतिक दलों के नेता, दिग्गज व्यक्तियों और सभी राज्य सरकारों से एकाधिक बार बातचीत की और सभी की सहमति के साथ सारे निर्णय लिए। देश की 130 करोड़ जनता

को साथ लेकर चलने की नीति के कारण न सिर्फ श्री मोदी विश्व भर में लोकप्रियता के क्षितिज पर सबसे ऊंचे हैं, बल्कि कोरोना के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई के सफल योद्धा साबित हो रहे हैं। इस लड़ाई में देशवासियों की सक्रिय भागीदारी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हालात की गंभीरता को समझते हुए देशवासियों ने नवरात्रा, गणगौर, रमजान, शब-ए-बारात, ईस्टर, महावीर जयंती, हनुमान जयंती आदि पर्वों को भी बजाए सार्वजनिक रूप से मनाने के अपने घरों में रहकर ही औपचारिक रूप से ही मनाया। सिर्फ यही नहीं कोरोना के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए सरकार ने देश की जनता से जब भी, जो भी अपील की, जनता ने उस पर बिना कोई सवाल उठाए अक्षरश: उसका पालन किया। यह होती है सरकारी लड़ाई में जनता की भागीदारी।

कोरोनाकाल में भारतवासियों ने विश्ववासियों को यह भी संदेश देने का काम किया है कि इस देश का हर एक व्यक्ति वीर योद्धा है। बाहर से होने वाले हमलों से बचाने के लिए देश की सीमाओं पर जहां हमारे वीर जवान तैनात हैं, वहीं कोरोना जैसे शत्रु को पराजित करने के लिए देश की 130 करोड़ आबादी पूरी तरह से तैयार व मुस्तैद है। कोरोना की जंग के लिए प्रधानमंत्री केयर फंड, मुख्यमंत्री राहत कोष अथवा असम आरोग्य निधि में छोटे-छोटे बच्चों द्वारा अपने गुल्लक में जमा पैसों को दान स्वरूप देना इस बात को दर्शाता है कि कोरोना जंग के मैदान में जनता की भागीदारी कितनी व्यापक और प्रभावशाली है। असमिया में एक कहावत है 'राइजे नख जोकारिले, नोई बोय' अर्थात जनता अगर नाखून भी हिला दे तो नदी बह सकती है। कोरोना की लड़ाई में यह असमिया कहावत शत-प्रतिशत सही साबित हो रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर भारत की जनता द्वारा कोरोना के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई जीत के अंतिम मुकाम पर है। ऐसी स्थिति में देशवासियों को अपना हौसला, हिम्मत और वीर योद्धा जैसी मनोभावन को जगाए रखना है। इस लेख का समापन एक लोकप्रिय गीत की लाइनों के साथ करना चाहूंगा 'होंगे कामयाब, होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन, मन में है विश्वास पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन।'

लॉकडाउन : असम पुलिस को एक सैलूट तो बनता है

कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिए जारी दूसरे चरण के लॉकडाउन ने असम पुलिस की मानवीय सूरत को सभी के सामने ला दिया है। विगत 24 मार्च से लगातार जारी लॉकडाउन के दौरान जहां एक ओर असम पुलिस ने जनता को कानून व्यवस्था बनाए रखने और लॉकडाउन के दिशा-निर्देशों पर सख्ती से पालने को प्रेरित किया है, वहीं दूसरी ओर जरूरतमंदों के लिए भोजन, दवा-एंबुलेंस आदि का समुचित प्रबंधन कर मानव सेवा का अनुपम उदहारण भी प्रस्तुत किया है। असम पुलिस के अधिकारियों ने न सिर्फ विभिन्न समाजसेवी संगठनों से जरूरतमंदों की मदद करने की अपील की, बल्कि उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर इस सेवा कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी भी निभाई।

इस लॉकडाउन के दौरान असम पुलिस द्वारा किए गए कृत्यों से उसकी छवि में जो सुधार हुआ है, उसकी आभा से समूचा पुलिस महकमा कई दशकों तक आलौकित होता रहेगा, ऐसा मेरा मानना है। इस लॉकडाउन के दौरान ही बोहाग बिहू का पर्व भी आया। मगर, असम पुलिस के अधिकारी-जवान अपने घर-परिवार को छोड़कर अपने कर्तव्य-पथ पर डटे रहे। एक बच्चे द्वारा अपने पुलिसकर्मी पिता से बार-बार घर आने की जिद करने वाला वीडियो जब सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, तब देखने वाले सभी की आंखें भींग गई होगी। पुलिस महकमे में ऐसे सैकड़ों हजारों जवान-अधिकारी होंगे, जो आज पूरी निष्ठा के साथ मानवता के समक्ष संकट बनकर आए कोरोना वायरस से लड़ने के लिए फ्रंट फूट पर डटे हुए हैं। ऐसे पुलिसकर्मियों की हम जितनी भी प्रशंसा करें, जितना भी अभिनंदन करें कम है। दशकों बाद ऐसा हुआ है, जब राज्य के विभिन्न हिस्सों में आमजनता द्वारा पुलिस के अधिकारी-जवानों को सम्मानित किया जा रहा है, उनको फुलाम गामोछा पहनाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी देशवासियों से 22 मार्च की शाम ठीक पांच बजे अपने घर के दरवाजे पर, खिड़की

के पास या बालकनी में खड़े होकर पांच मिनट तक ताली बजाकर, थाली बजाकर जिनके प्रति धन्यवाद अर्पित करने की बात कही थी, उनमें पुलिसकर्मी भी शामिल थे।

लॉकडाउन के दौरान असम पुलिस ने एक बार फिर साबित कर दिया कि उनके लिए समाजसेवा और उनकी ड्यूटी के आगे कोई भी नहीं है। जरूरत पड़ने पर वे अपनी बीबी-बच्चों व घर-परिवार को भी कुछ समय के लिए दरकिनार कर सकते हैं। कहना न होगा असम पुलिस की इस मानवसेवा की आभा मंडल से पूरा असमिया समाज गौरवान्वित हुआ है। असम पुलिस हमारे ही समाज का एक अभिन्न अंग है, लिहाजा समाज का कोई भी अंग जब प्रशंसनीय कार्य करता है, तो उसके कार्य से पूरा समाज प्रफुल्लित होता है। असम पुलिस की यह आभायुक्त छवि आने वाली पीढ़ी के नवजवानों को भी पुलिस सेवा क्षेत्र में जाने को प्रेरित करेगी, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए।

लॉकडाउन के दौरान असम पुलिस का एक और नया चेहरा भी देखने को मिला। लॉकडाउन के नियम तोड़ने वाले वाहन चालकों पर सिर्फ जुर्माना ही नहीं लगाया गया, उनके वाहन को जब्त ही नहीं किया गया, बल्कि युवा वाहन चालकों को बीच सड़क पर मुर्गा भी बनाया गया, उनसे उठक-बैठक भी कराई गई। ऐसा करने के पीछे पुलिस का उद्देश्य लॉकडाउन के दौरान मटरगस्ती करने के लिए निकले लोगों को सामाजिक रूप से दंडित करना भी था ताकि उनको सामाजिक जिम्मेदारी और कोरोना वायरस की गंभीरता का अहसास कराया जा सके। पुलिस की इतनी कड़ाई के बावजूद किसी ने भी यह आरोप नहीं लगाया कि वह जरूरी काम से घर से बाहर निकला था और पुलिस ने उसके साथ सख्ती की है। यानि की सड़कों पर तैनात असम पुलिस के जवानों ने सख्ती के नाम पर किसी भी जरूरतमंद आम नागरिक को परेशान नहीं किया। इससे दो कदम आगे बढ़कर असम पुलिस महानगर के वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक हेल्प नंबर जारी करने जा रही है, जिस पर फोन कर वरिष्ठ नागरिक न सिर्फ पुलिस के माध्यम से अपनी दवाएं आदि मंगवा सकेंगे, बल्कि आपातकालीन स्थिति में उनकी मदद से जरूरत के स्थान पर आ-जा भी सकेंगे। ऐसे में असम पुलिस के लिए दिल की गहराइयों से एक सैलूट तो बनता ही है।

सामने से नेतृत्व दे सकने वाला ही असली जनप्रतिनिधि

कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिए आज समूचे विश्व में अभियान जारी है। आपसी दुश्मनी भुलकर विभिन्न देशों ने एकजुट होकर कोरोना के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया है। क्योंकि यह मानव जाति के लिए 'महासंकट' का समय है। मानव जाति जीवित रहने के इस संग्राम में सभी देश हर संभव प्रयासों में लगे हुए हैं। सभी देशों का एक ही लक्ष्य है, जैसे भी हो कोरोना से मुक्ति पाने के लिए प्रतिशोधक दवाई अथवा टीका बनाना। अमरीका सहित विश्व के बड़े-बड़े देश के वैज्ञानिक रात-दिन इसी काम में लगे हुए हैं।

हमारे देश भारत में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह अभियान चल रहा है। देश के विभिन्न राज्यों में कोरोना प्रतिरोध की पहल की जा रही है पर सबसे अधिक चर्चा असम को लेकर हो रही है। असम में एक सप्ताह पहले तक कोविड-19 से पीड़ित एक भी व्यक्ति नहीं था, मगर बाद में कुछ

लोगों की नासमझी और अदूरदर्शिता के चलते यहां भी कोरोना पीड़ितों की संख्या दहाई अर्थात 28 हो गई। देश जब गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है, वैसे में असम को लेकर उसके स्वास्थ्य विभाग की पहल तथा सतर्कता के कारण देश में चर्चा हो रही है। इस वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने जो अभूतपूर्व पहल की है, वह नि:संदेह प्रशंसनीय है। इस मामले में स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा और विभागीय राज्य मंत्री पीयूष हजारिका की सक्रियता एवं प्रयासों की जितनी भी तारीफ की जाए कम है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री के रूप में डॉ. शर्मा जिस प्रकार से अपने रात-दिन एक किए हुए हैं, वह देश के अन्य राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों के लिए प्रेरक और अनुकरणीय हो सकता है। कोरोना से मुकाबला करने के लिए पिछले एक महीने से डॉ. शर्मा ने जिस तरह से स्वयं को नियोजित कर रखा है, यह उनके मनोबल, साहस और परिस्थिति को नियंत्रण कर सकने के गुणों को साबित करता है। आपदा की इस घड़ी में अपने जीवन को तुच्छ मान कर दिन-रात लगातार काम करते रहना, राज्यवासियों को साहस व मनोबल प्रदान करता है। राज्यवासियों के कोरोना वायरस को लेकर आशंकित होने के समय स्वास्थ्य मंत्री लोगों के मन से इन आशंकाओं को दूर करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। इस मामले में वे अपने अधिकारी-कर्मचारियों पर जिम्मेदारी सौंप कर ही नहीं बैठ गए हैं, बल्कि हर एक गतिविधियों पर खुद भी नजर गड़ाए हुए हैं। पीड़ितों का हालचाल पूछने से लेकर खाद्य आपूर्ति सही ढंग से की गई या नहीं वहां तक नजर रख रहे हैं। जिस समय दिल्ली के निजामुद्दीन के धार्मिक कार्यक्रम से राज्य में लौटे लोगों द्वारा कोरोना संक्रमण के फैलने की विशेष रूप से चर्चा हो रही है, उस समय भी वे मामले को सुंदर ढंग से लोगों को समझा-बुझाकर इधर-उधर छिपे तब्लिगियों को आगे निकल आकर अपना इलाज करने की अपील कर रहे हैं। धार्मिक उन्माद छोड़ स्वस्थ होने के लिए तीन करोड़ जनता की सुरक्षा के लिए सहयोग करने की अपील कर रहे हैं। उनके बारी-बारी से अपील किए जाने के बावजूद कुछ लोग सकारात्मकता दिखा रहे हैं तो कुछ अब भी छुपे हुए हैं। ऐसे में राज्यवासी सोचने पर मजबूर हो गए हैं कि स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा और राज्य मंत्री हजारिका के ऊपर ही सरकार की सारी जिम्मेदारियों का बोझ है। आपदा

की घड़ी में साहसिक निर्णय, युद्धक्षेत्र में सामने से नेतृत्व देने और जनता को साहस दिला सकनेवाला ही असली नेता होता है। कथनी और करनी में अंतर न रख दिन-रात एक कर राज्य के इस छोर से उस छोर तक का भ्रमण कर फिर शाम को मौजूदा परिस्थितियों से अवगत करना आदि केवल स्वास्थ्य मंत्री डॉ. शर्मा के लिए ही संभव हुआ है। कभी अगर चिकित्सक से बात कर रहे हैं, तो कभी नर्स का मनोबल बढ़ाने का काम कर रहे हैं। स्वास्थ्यकर्मियों की भी समान रूप से टोह ले रहे हैं। इसके साथ ही जनता के अभाव और शिकायतों को भी ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं। जनता को तत्काल सूचनाएं भी उपलब्ध करा रहे हैं। उनका साहस, रफ्तार और मनोबल देख राज्यवासियों का भी मनोबल बढ़ा है। साहस के साथ जीने के रास्ते का पता चल रहा है। उनकी आलोचना करनेवाले भी आज खुले मन से उनकी और उनकी कार्यक्षमता की प्रशंसा कर रहे हैं।

दूसरी ओर हमारे मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल भी दिन-रात एक कर बराक-ब्रह्मपुत्र का दौरा कर चिकित्सालयों की सुविधा आदि की जानकारियां ले रहे हैं। सिर्फ यही नहीं वे संबंधित चिकित्सालयों के चिकित्सक, नर्स, चिकित्साकर्मियों का भी मनोबल बढ़ा रहे हैं। गुवाहाटी विकास विभाग के मंत्री सिद्धार्थ भट्टाचार्य भी निरंतर कामरूप (ग्रामीण) और कामरूप (महानगर) दोनों जिलों में सैनिटाइज करने और खाद्य सामग्रियों के वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका का पालन कर रहे हैं। ऐसे नेताओं को ही लोग पसंद करते हैं। सिर्फ जनप्रतिनिधि होना ही जरूरी नहीं होता आपदा की हर घड़ी में राज्यवासियों के साथ खड़े रहना, लोगों को साहस देना और परिस्थितियों का सामने से नेतृत्व देनेवाला ही असली नेता होता है। वह चाहे किसी भी दल का क्यों न हो।

जल ही जीवन है

ब्रह्मपुत्र के किनारे स्थित गुवाहाटी एक ओर जहां गर्मी के दिनों में पानी की किल्लत से जूझता है तो वहीं दूसरी ओर बरसात के दिनों में कृत्रिम बाढ़ और जलजमाव की परेशानियों से दो-चार होता नजर आता है। महाबाहु ब्रह्मपुत्र के तट पर स्थित प्यासे गुवाहाटी की स्थिति हमें बताती है कि हम जल संरक्षण को लेकर कितने गैर जिम्मेदार और असंवेदनशील हैं। यह स्थिति सिर्फ गुवाहाटी की ही नहीं है। देश-दुनिया में ऐसे बहुत से शहर-महानगर हैं, जो बड़ी-बड़ी नदियों के किनारे बसे हैं, लेकिन पानी की कमी और इससे जुड़ी विभिन्न समस्याओं से लड़ रहे हैं। पानी के जलस्तर में पहले की तुलना में कमी आई है। हमारे देश के गुजरात, राजस्थान जैसे राज्यों के कई इलाकों में तो आदमी को दो घड़े पानी के लिए चिलचिलाती धूप में मीलों का सफर तय करना पड़ता है। इस बात को दोहराने की जरूरत नहीं है कि देश-दुनिया को इस संकट की

स्थिति से बाहर निकालने के लिए पानी का संरक्षण एवं बचाव दोनों ही जरूरी है।

हमारे देश में जल संरक्षण और लोगों के घरों तक स्वच्छ पानी पहुंचाने की दिशा में सरकार द्वारा महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। मोदी सरकार 2.0 के पहले बजट में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश में 'हर घर नल और हर घर जल' पहुंचाने की बात कही थी। देश में पानी की सुरक्षा और सभी देशवासियों को साफ पेयजल उपलब्ध कराने को मोदी सरकार ने अपनी पहली प्राथमिकता में रखा है। इस दिशा में सरकार ने एक बड़ा कदम उठाते हुए जल शक्ति मंत्रालय का भी गठन किया है, यह मंत्रालय जल संसाधनों और जल आपूर्ति के प्रबंधन को एकीकृत और व्यापक तरीके से देखेगा। इसके अलावा नदी जोड़ो परियोजना के माध्यम से भारतीय नदियों को जलाशयों और नहरों के माध्यम से आपस में जोड़ने की योजना पर भी काम चल रहा है। इससे देश के कुछ हिस्सों में लगातार बाढ़ या पानी की कमी की समस्या को दूर किया जा सकेगा। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने हाल ही में कहा कि नदी जोड़ो परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए देश के सभी राज्यों को आपसी सहयोग करने की जरूरत है। नदियों को आपस में जोड़ने का विचार 161 साल पुराना है। 1858 में ब्रिटिश सैन्य इंजीनियर ऑर्थर थॉमस कॉटन ने बड़ी नदियों के बीच नहर जोड़ का प्रस्ताव दिया था। यह सारी कवायद लोगों तक पानी पहुंचाने को लेकर है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर दुनिया भर में हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है। विश्व जल दिवस की अंतर्राष्ट्रीय पहल रियो डि जेनेरियो में वर्ष 1992 में पर्यावरण तथा विकास के विषय पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीईडी) में की गई थी, इसके बाद सबसे पहले साल 1993 में 22 मार्च को पूरे विश्व में जल दिवस के मौके पर जल के संरक्षण और रख-रखाव पर जागरूकता फैलाने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और तब से यह सिलसिला जारी है। विश्व जल दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य, जल बचाने का संकल्प करने, पानी के महत्व को जानने और पानी के संरक्षण के विषय में समय रहते सचेत रहना है। प्रत्येक वर्ष विश्व जल दिवस मनाने

के लिए एक अलग थीम होती है। इस साल की थीम 'जल और जलवायु परिवर्तन' रखी गई है।

आंकड़ों के मुताबिक विश्व के 150 करोड़ लोगों को पीने का शुद्ध पानी नसीब नहीं होता। वैसे तो हमारी धरती के 70 प्रतिशत से ज्यादा भाग में सिर्फ जल ही पाया जाता है। लेकिन यह पानी पीने योग्य नहीं है। तेजी से हो रहे शहरीकरण के लिए भी अधिक सक्षम जल प्रबंधन और बढ़िया पेयजल और सैनिटेशन का होना पहली शर्त है, लेकिन मुख्यत: शहरों के सामने ही यह एक गंभीर समस्या के रूप में खड़ी नजर आती है। तेजी से होता शहरीकरण और शहरों की बढ़ती आबादी के कारण उत्पन्न पानी की बढ़ती मांग ने अनेकों समस्याएं पैदा कर दी है। जिन लोगों के पास पानी की समस्या से निपटने के लिए कारगर उपाय नहीं है उनके लिए मुसीबतें हर समय मुंह खोले खड़ी हैं। कभी बीमारियों का संकट तो कभी जल का अकाल, एक शहरी को आने वाले समय में ऐसी तमाम समस्याओं से रूबरू होना पड़ सकता है। ऐसा नहीं है कि पानी की समस्या से हम जीत नहीं सकते। अगर सही ढंग से पानी का सरंक्षण किया जाए और जितना हो सके पानी को बर्बाद करने से रोका जाए तो इस समस्या का समाधान बेहद आसान हो जाएगा। लेकिन इसके लिए जागरूकता की जरूरत है। एक ऐसी जागरूकता की जिसमें दुनिया के हर इंसान पानी को बचाना अपना धर्म समझें।

कोरोना वायरस

चीन के वुहान से फैला कोरोना वायरस पूरी दुनिया में आतंक का पर्याय बना हुआ है। आज से पहले संभवत: किसी भी वायरस ने दुनिया में इस कदर आतंक नहीं फैलाया है कि पूरे शहर-शहर को जनशून्य करना पड़ा हो। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विगत 11 मार्च को कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। चिकित्सा विशेषज्ञ बताते हैं कि कोरोना वायरस महामारी है, जो गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस 2 (SARS-CoV-2) के कारण होता है। अभी तक लगभग 130 देशों में कोविड-19 के 1,56,000 से अधिक मामले सामने आए हैं। कोरोना वायरस के कारण 5,800 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई है, जबकि लगभग 75,000 लोग ठीक भी हो गए हैं। मुख्यत: चीन, यूरोप ईरान, दक्षिण कोरिया और अमरीका में इस वायरस का सबसे अधिक प्रकोप देखने को मिल रहा है।

हमारा देश भारत भी इस वायरस की चपेट में आने से बच नहीं पाया है। देश भर में अभी तक कोरोना वायरस से प्रभावित 108 मरीजों की शिनाख्त की गई है, इनमें से 11 मरीज ठीक हो गए हैं। हमारे देश में अभी तक दो मरीज की मृत्यु भी हो चुकी है। जिसमें पहला मामला कर्नाटक के कलबुर्गी में दर्ज किया गया, जहां मोहम्मद हुसैन सिद्दीकी नामक 76 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई थी। सिद्दीकी हाल ही में धार्मिक यात्रा कर सऊदी अरब से लौटा था। दूसरा मामला दिल्ली का है। जहां कोरोना वायरस से संक्रमित 69 साल की बुजुर्ग महिला की मौत हो गई। कोरोना वायरस के आगमन के साथ-साथ हमारे देश में इससे निपटने की तैयारियां युद्ध स्तर पर शुरू कर दी गई थी। यही कारण है कि 130 करोड़ की आबादी वाले देश में कोरोना वायरस अपना कहर नहीं बरपा पाया है। देश के सभी हवाईअड्डों पर बाहरी देशों से आने वाले यात्रियों व उड़ानों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। विशेष आज्ञा प्राप्त विदेशी अधिकारियों को ही हमारे देश में प्रवेश करने की अनुमति दी गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी गुजरात यात्रा के अलावा बांग्लादेश के दौरे को भी टाल दिया है। कई

राज्यों में बाहरी देशों स्कूल-कॉलेज, सिनेमाहाल जैसे सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को बंद कर दिया गया है और रेलवे, मेट्रो एवं बस स्टेशन सभी की लगातार सफाई के साथ ही उन्हें सैनेटाइजेशन करने का काम भी किया जा रहा है। इस महामारी से बचने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य विभाग ने देशवासियों को कई दिशा-निर्देश जारी किए हैं। दिशा-निर्देश की इस सूची में सार्वजनिक स्थानों पर कम से कम जमा होना, लोगों से हाथ मिलने से परहेज करना, हैंडवॉशिंग, अन्य लोगों से दूरी बनाए रखना (विशेषकर जो अस्वस्थ हैं), खांसते अथवा छींकते समय मुंह पर रुमाल अथवा अपनी बांह रखना, बार-बार आंख, मुंह, नाक स्पर्श न करना आदि शामिल है। देशवाशियों द्वारा इन दिशा-निर्देश पर अमल किए जाने के फलस्वरूप हमारे देश में कोरोना वायरस का प्रकोप नियंत्रण में है।

असम अभी भी कोरोना वायरस के प्रभाव से पूरी तरह से अछूता है। अभी तक हमारे राज्य में कोरोना वायरस का एक भी मामला सामने नहीं आया है। इसके बावजूद हमारे स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा और उनके स्वास्थ्य विभाग की पूरी टीम किसी भी संभावित स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार है। राज्य के सभी हवाई अड्डों पर बाहर से आने वाले यात्रियों की स्क्रिनिंग की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को निरीक्षण में रखने केलिए गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज, असम मेडिकल कॉलेज, डिब्रूगढ़ तथा जिला सदर अस्तपालों में आइसोलेटेड वार्ड (अलगाव कक्ष) खोले गए हैं। कोरोना वायरस के संक्रमण को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने आगामी 31 मार्च तक किसी भी सार्वजनिक सभा अथवा समारोह में भाग नहीं लेने की घोषणा की है। इसके अलावा असम के मुख्य सचिव कुमार संजय कृष्ण ने 16 से 29 मार्च तक राज्य के सभी सरकारी-गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थान, जिम, सिनेमा हॉल बंद की घोषणा की है। इस अवधि में बोर्ड परीक्षाओं को छोड़कर 29 मार्च तक होने वाली सभी अन्य परीक्षाएं भी रद्द की गई हैं। सरकार की ओर से राज्यवासियों से भी इस दिशा में पूरी तरह सजग रहने और स्वच्छता तथा अन्य स्वास्थ्य परामर्शों पर ध्यान देने का अनुरोध किया गया है। सरकार ने कहा है कि महज सावधानी से ही इस भयावह बीमारी पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

दंगों की आग : सरकारी संपत्ति का नाश

हमारे देश के संविधान ने सभी नागरिकों को अपने विचार व्यक्त करने, किसी भी बात पर अपनी असहमति जताने अथवा आंदोलन करने का अधिकार दिया है। जनता की आवाज को लोकतंत्र की बुनियाद भी कहा जा सकता है, क्योंकि किसी भी देश का लोकतंत्र वहां की जनता के कंधों पर ही टिका होता है। लोकतांत्रिक देश में जन आंदोलन होना आम बात है। हमारे देश में भी स्वाधीनता के बाद कई आंदोलन हुए हैं। जेपी आंदोलन, असम आंदोलन, अन्ना आंदोलन जैसे आंदोलन को आंदोलनकारियों की प्रेरणा का श्रोत माना जाता है। चाहे सत्ता पक्ष हो अथवा विपक्ष जन-आंदोलन से किसी को भी इंकार नहीं है। लेकिन, आंदोलन के नाम पर दंगे और दंगों के नाम पर सरकारी संपत्ति को नष्ट किए जाने जैसी घटनाओं को स्वीकार नहीं किया जा सकता। अक्सर देखने को मिलता है कि आंदोलनकारियों के बीच कुछ उपद्रवी अथवा दंगाई भी घुस जाते हैं। ऐसे असामाजिक तत्व न सिर्फ सरकारी संपत्ति बल्कि सार्वजनिक व निजी संपत्ति को लूटने अथवा आग के हवाले करने से बाज नहीं आते। दंगाइयों द्वारा देशवासियों के टैक्स के पैसों से खरीदी गई किसी बस को आग के हवाले करने अथवा किसी निरीह सब्जी वाले की रेवड़ी को लूट लिए जाने जैसी घटना का कोई कैसे समर्थन कर सकता है।

हमारे देश में आज आंदोलन के नाम पर सरकारी संपत्ति को नष्ट कर देने की घटनाएं आम हो गई है। अभी हाल ही में नागरिकता संशोधन विरोधी कानून के विरोध में देश भर में आंदोलन का दौर चला, यह दौर आज भी जारी है। इस आंदोलन का कोई समर्थक हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता। मगर, नागरिकता संशोधन विरोधी कानून के विरोध के नाम पर असम, उत्तर प्रदेश,

दिल्ली जैसे राज्यों में जिस तरह से दंगे भड़काए गए और सरकार-सार्वजनिक-निजी संपत्तियों को आग के हवाले किया गया, वह चिंताजनक बात है। जैसे भी हो आंदोलन के नाम पर राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के सिलसिले को रोकना ही होगा। अभी दिल्ली में आंदोलन के नाम पर हुई हिंसा में कितने भारी जानमाल का नुकसान हुआ यह पूरे देश को पता है।

सरकारी संपत्ति का नुकसान पहुंचाने वाले दंगाइयों के खिलाफ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने जो सख्ती दिखाई है, उसकी जितनी भी तारीफ की जाए कम है। योगी ने दो टूक शब्दों में कहा कि जो भी सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाएगा, इसकी भरपाई भी उसी व्यक्ति से की जाएगी। जरूरत पड़ी तो उस व्यक्ति की संपत्ति को जब्त कर सरकारी संपत्ति के नुकसान की भरपाई की जाएगी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने सिर्फ घोषणा ही नहीं की, इस पर अमल भी किया। उत्तर प्रदेश प्रशासन ने सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले दंगाइयों की पहचान कर उनसे नुकसान की राशि वसूलने की प्रक्रिया भी प्रारंभ कर दी है। यह व्यवस्था पूरे देश में होनी चाहिए, इसके लिए जरूरी हो तो नए कानून बनाए जाएं, मगर सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले को किसी भी मूल्य पर बख्शा नहीं जाना चाहिए।

ध्वंस और हत्या कभी भी प्रतिवाद की भाषा नहीं हो सकती। देश आज विकास की राह पर अग्रसर है। विदेशी-बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने कार्यालय, कारखाने, उद्योग आदि लगा रही है। अरबों डालर का विदेशी निवेश भारत में आ रहा है। ऐसे सभी संस्थानों की जानमाल के हिफाजत की जिम्मेदारी केंद्र सरकार के कंधों पर है। हम अपने देश के दामन पर दंगों के बदनुमा दाग नहीं देख सकते। इस बात को कोई भी समझ सकता है, दंगों के लिए यदि कोई देश बदनाम होता है तो उसका सीधा असर उस देश के उद्योग-वाणिज्य और विदेशी निवेश पर पड़ता है। केंद्र सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि आंदोलन के नाम पर किसी भी प्रकार का दंगा न भड़क पाए, इसके लिए सभी जरूरी कदम उठाए जाने चाहिए। दिल्ली के दंगों से सीख लेकर आगे भविष्य की रूपरेखा तय करने का वक्त आ गया है। हम सभी गांठ बांध लें कि भारत को हरगिज दंगों का देश नहीं बनने देना है।

असम का मानचेस्टर और साहित्य सभा

असम का मानचेस्टर कहे जाने वाले 'सुवालकुची' और असम साहित्य सभा भले ही स्थान और संगठन का सूचक हो, लेकिन दोनों में एक समानता है। सुवालकुची में बुनकर महिलाएं पारंपरिक वस्त्र बुनती हैं और असम साहित्य सभा असमिया कला-साहित्य को आगे बढ़ाने में लगी है। सुवालकुची में हस्तकरघा की मदद से बुने गए एडी-मूंगा के वस्त्रों की विश्व भर में एक विशेष पहचान है। वैसे भी असम की महिलाएं बुनाई कार्य में पारंगत होती हैं। आज भी गांवों के असमिया परिवार में ढेकी (धान कूटने का पारंपरिक यंत्र) और तांतसाल (हस्तकरघा) का होना अनिर्वाय माना जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी एक बार कहा था कि असम की महिलाएं अपने करघे पर धागों की मदद से सपने बुनती हैं। इसी सुवालकुची में एक बार फिर असम साहित्य सभा का 75वां द्वि-वार्षिक अधिवेशन आगामी 31 जनवरी, 2020 से होने जा रहा है। 5 फरवरी तक चलने वाले इस अधिवेशन में साहित्य से जुड़े विभिन्न आयाम और विधाओं पर चर्चा की जाएगी। वर्ष 1917 में स्थापित असम साहित्य सभा अपनी स्थापना के 103वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। सुवालकुची में इससे पहले 1979 में भी असम साहित्य सभा का अधिवेशन हुआ था। 41 साल के बाद सुवालकुची में फिर से अधिवेशन आयोजित किए जाने से यह बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि सुवालकुची के निवासियों में भाषा-साहित्य के प्रति विशेष अनुराग रहा है। सुवालकुची और असम साहित्य सभा दोनों ही देश-दुनिया में लोकप्रिय है। जब भी असमिया साहित्य की बात आती है तो हमारे जेहन में एक मात्र असम साहित्य सभा का ही नाम उभरकर सामने आता है, ठीक इसी तरह असमिया सिल्क, एडी-मूंगा के वस्त्रों की चर्चा हो तो वह बिना सुवालकुची के पूरी नहीं होती।

देश के अन्य किसी राज्य में संभवत: ऐसा गांव और ऐसा संगठन देखने को नहीं मिलेगा। एक ओर जहां वस्त्र शिल्प को बढ़ावा देने के लिए पीढ़ी-

दर पीढ़ी लोग लगे हुए हैं, वहीं दूसरी ओर एक संगठन एक शताब्दी से अधिक समय से असमिया भाषा जननी की सेवा करने में लगा है। असम साहित्य सभा के प्रति असमवासियों के मन में कितना सम्मान, कितना प्रेम है, यह जानने-समझने के लिए जीवन में कम से कम एक बार असम साहित्य सभा के अधिवेशन में जरूर जाना चाहिए। असम साहित्य सभा की स्थापना असमिया साहित्य एवं संस्कृति के विकास के लिए की गई थी। इस समय असम तथा देश के अन्य राज्यों में साहित्य सभा की एक हजार से भी अधिक शाखाएं हैं। बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी होगी कि असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा असम साहित्य सभा की प्रणेता संस्था थी, जिसकी स्थापना 25 अगस्त, 1888 में हुई थी। इसके प्रथम महासचिव शिवराम शर्मा बरदलै थे। इस संस्था के निर्माण का उद्देश्य असमिया भाषा एवं साहित्य की उन्नति के लिए प्रयत्न करना था। इसी संस्था के प्रयासों के फलस्वरूप उस समय की असमिया बोली अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हो पायी। बाद में यही भाषा उन्नति साधिनी सभा साहित्य सभा की जनक बनी। असम साहित्य सभा का इतिहास न सिर्फ कई दशकों पुराना है, बल्कि गरिमामयी भी रहा है। साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. परमानंद राजवंशी और महासचिव पदुम राजखोवा साहित्य सभा के इतिहास और परंपराओं के वाहक रहे हैं। इन दोनों के कार्यकाल में असम साहित्य सभा को देश की परिधि से बाहर निकालकर विश्व-पटल तक पहुंचाने की कोशिश की गई। इस कड़ी में पिछले साल बांग्लादेश की राजधानी ढाका में भारतरत्न सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका की आठवीं पुण्यतिथि मनाई गई। बांग्लादेश के पथिकृत फाउंडेशन और बांग्लादेश शिल्पकला अकादमी के सहयोग से विगत 5 नवंबर से ढाका में डॉ. भूपेन हजारिका की आठवीं पुण्यतिथि पर मनाए गए तीन दिवसीय कार्यक्रम में बड़ी संख्या में वहां के कलाकार-गणमान्य लोगों ने भाग लिया। इसके अलावा सिंगापुर में भी पिछले साल की 28 जुलाई को साहित्य सभा की शाखा का गठन किया गया। असम साहित्य सभा के भविष्य की योजना और कार्य पद्धति को लेकर सुवालकुची के अधिवेशन में निश्चय ही विस्तार से चर्चा होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। लिहाजा समस्त असमवासियों को इस अधिवेशन का गवाह जरूर बनना चाहिए।

परिपक्व होता लोकतंत्र

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को श्रेष्ठ कहा गया है। लोकतंत्र का अर्थ होता है जनता के कल्याण के लिए, जनता के द्वारा जनता की सरकार। इस प्रकार की शासन व्यवस्था में प्रजा ही राजा होता है। हमारे देश में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की 71वीं वर्षगांठ पूरा देश 26 जनवरी, 2020 को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाएगा। देश में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को कायम हुए 70 साल पूरे हो गए। कहने को तो हमारे साथ ही आजाद हुए पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी लोकतंत्र है, मगर फर्क साफ-साफ नजर आता है। हमारे देश के लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का न सिर्फ पूरे विश्व में सम्मान है, बल्कि आकर्षण भी है। पिछले साल 18 अप्रैल को उप चुनाव आयुक्त संदीप सक्सेना ने हमारे देश के मतदाताओं की संख्या 90.94 करोड़ बताई थी। वर्ष 2019 में हुए लोकसभा चुनावों में देश के कुल 67.11 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग कर लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया के माध्यम से सरकार चुनने का काम किया था। करीब 60 करोड़ मतदाताओं द्वारा चुनाव प्रक्रिया के माध्यम से एक निर्विवाद सरकार का चुनाव पूरे विश्व के लिए अचरज और शोध का विषय बना हुआ है।

आज के दिन इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि हमारे देश के नागरिक न सिर्फ लोकतंत्र के बारे में जानते-समझते हैं, बल्कि इस शासन व्यवस्था को कायम रखने के लिए दृढ़ संकल्प भी हैं। पिछली 20 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित 'रामनाथ गोयनका एक्सलेंस इन जर्नलिज्म' पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी कहा था 'लोकतंत्र तभी सार्थक है, जब नागरिक अच्छी तरह से जानकार हो।' यह हमारे देश की खुबसूरती है कि अधिक अथवा कम पढ़े-लिखे लोग भी लोकतंत्र की अहमियत को जानते समझते हैं। इन दिनों देश भर में नागरिकता कानून, एनपीआर और एनआरसी को लेकर आंदोलन चल रहा है। दिल्ली के शाहीन बाग में भी

हजारों महिलाओं ने अपना घरबार-कामकाज छोड़कर आंदोलन किया। शुरुआती दिनों की बात छोड़ दें तो इस आंदोलन में कहीं भी हिंसा-तोड़फोड़ आदि नहीं दिखती। आंदोलनकारियों की बातों में, नारों में और कथन में देश के लोकतंत्र, देश के संविधान के प्रति चिंता झलकती है। देश भर के आंदोलनकारी के मुंह से एक ही बात सुनी जा रही है कि वह लोग देश के लोकतंत्र, देश के संविधान को बचाने के लिए सड़कों पर उतरे हैं। कहा तो यह भी जा रहा है कि इस आंदोलन को सीधे-सीधे किसी भी राजनीतिक दल का समर्थन अथवा सहयोग प्राप्त नहीं है। देश में चल रहे इस आंदोलन को जनता की लोकतंत्र के प्रति चिंताओं के रूप में भी देखा जा सकता है। यानि की 70 साल बाद यह कहा जा सकता है कि हमारे देश की जनता देश के लोकतंत्र को न सिर्फ जानने-समझने लगी है, बल्कि इसको बनाए रखने के लिए संवेदनशील भी है। हमारे देश के लोकतंत्र की गरिमा को ऐसे भी समझा जा सकता है कि जिस नागरिकता संशोधन विधेयक को देश की दोनों सदनें पारित कर चुकी है। राष्ट्रपति जिस पर हस्ताक्षर कर चुके हैं और यह कानून देश भर में लागू भी हो चुका है। उसके बाद जनता अपने ही द्वारा चुनी गई सरकार के खिलाफ सड़कों पर है। जनता की मांग है कि सरकार नागरिकता कानून, एनपीआर और एनआरसी पर उसके साथ बात करें। ऐसा सिर्फ एक स्वस्थ्य लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में ही मुमकिन है, जब जनता अपने ही शासक को कह रही हो कि पहले हमसे बात करो। यह पहला मौका नहीं है, जब देश की जनता ने भारतीय लोकतंत्र की सार्थकता और महत्व को साबित किया है। जेपी मूवमेंट, अन्ना आंदोलन, असम आंदोलन ऐसे आंदोलन थे, जो लोकतांत्रिक तरीके से लड़े गए और सरकार को झुकाने में कामयाब भी रहे। हम देश में कम होते सशस्त्र संगठनों की संख्या को भी लोकतंत्र की सफलता कह सकते हैं। असम में कभी आतंक का पर्याय रहे अल्फा, एनडीएफबी, केएलओ जैसे सशस्त्रवादी संगठन इन दिनों शांति प्रक्रिया में शामिल होकर लोकतांत्रिक तरीके से केंद्र व राज्य सरकार के साथ वार्ता की मेज पर है। देश के कई नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति लौटने लगी है। यह सारी बातें तभी संभव हो पाई है, क्योंकि हम हमारे देश के लोकतंत्र को समझने लगे हैं या यूं कह लें हमारे देश का लोकतंत्र परिपक्व हो गया है।

तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स और असमवासियों की खेल भावना

महानगर और इसके निकटवर्ती इलाकों में स्थित अलग-अलग स्टेडियम सभी में तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2020 अपनी पूरी रवानगी पर है। विगत 10 जनवरी से शुरू हुए इस खेल समारोह का समापन आगामी 22 जनवरी को होगा। इस खेल समारोह में सभी 36 राज्य एवं संघ शासित प्रदेश के 6531 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। ये सभी खिलाड़ी अलग-अलग 20 प्रकार के खेलों के विभिन्न वर्गों में अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो इस आयोजन में 10 हजार से अधिक खिलाड़ी, अधिकारी, स्वयंसेवक, सुरक्षाकर्मी आदि सक्रिय रूप से शामिल हैं। इस खेल समारोह में हरियाणा ने सर्वाधिक 682 खिलाड़ी मैदान में उतारे हैं, जबकि मेजबान असम 660 खिलाड़ियों के साथ इस सूची में दूसरे स्थान पर है। विदित हो कि पुणे में हुए द्वितीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स में कुल 5925 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। इस हिसाब से इस खेल समारोह को देश का अब तक का सबसे बड़ा खेल आयोजन कहा जा रहा है। असमवासियों ने इस खेल समारोह में उत्साह और सक्रियता के साथ भाग लेकर एक बार फिर अपनी खेल भावना का परिचय दिया है। विगत 5 जनवरी को भी बरसापाड़ा स्थित असम क्रिकेट संघ के स्टेडियम में भारत और श्रीलंका के बीच आयोजित टी-20 क्रिकेट मैच के बरसात के कारण रद्द हो जाने के समय भी असमवासियों ने ऐसी ही शानदार खेल भावना का प्रदर्शन किया था। खेल शुरू होने की उम्मीद में क्रिकेट प्रेमी घंटों स्टेडियम की दर्शक दीर्घा में बैठे रहे, बरसात के कारण मैच के रद्द होने की घोषणा के बाद निराश दर्शक चूपचाप अपने घरों को लौट गए, बिना किसी प्रकार की नाराजगी जताए अथवा हो-हल्ला किए। असम के खेल प्रेमियों की इस भावना की जितनी भी तारीफ की जाए कम है।

खेल आयोजन को लेकर असमवासियों का संयम और समर्थन इसलिए

भी काबिले तारीफ है, क्योंकि राज्य की पूरी जनता केमन में केंद्र व राज्य सरकार केप्रति गुस्सा भरा पड़ा है। नागरिकता संशोधन कानून 'का' केविरोध में लगातार कई दिनों तक गुवाहाटी सहित राज्य केअन्य हिस्सों में हिंसा का जो तांडव चला, उसे पूरे देश ने देखा था। इस वजह से बरसापाड़ा स्टेडियम में असम और झारखंड के बीच चल रहे रणजी मैच तक को रद्द करना पड़ा था। हिंसा केइस तांडव केठीक एक महीने बाद तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स का सफल उद्घाटन कर असमवासियों ने देश-दुनिया को यह बता दिया कि उनकेलिए खेल अपनी जगह है और सरकार से शिकायतें-नाराजगी अपनी जगह। यह असम केजातीय संगठनों की सूझबूझ और जनता के संयम का ही नतीजा है कि राज्य की बेकाबू हुई स्थिति को इस लायक बना लिया गया कि तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स जैसा देश का सबसे बड़ा खेल आयोजन सफलतापूर्वक हो रहा है।

तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स केसफल आयोजन केलिए राज्य सरकार विशेषकर मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल की भी तारीफ करनी होगी। राज्य सरकार केसंबंधित विभाग केअधिकारियों ने इस आयोजन को सफल बनाने में अपनी एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया। वित्त मंत्री डा. हिमंत विश्व शर्मा ने भी इस आयोजन केलिए पैसों की कमी को आड़े नहीं आने देने का वादा किया था और उन्होंने अपना वादा निभाया भी। केंद्र सरकार ने भी इस आयोजन को एक चुनौती केरूप में लिया और राज्य सरकार को मुंहमांगी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। खेल एवं युवा विभाग केकेंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र) किरेन रिजिजु इसके लिए निरंतर मुख्यमंत्री और संबंधित अधिकारियों के संपर्क में रहे।

देश केअन्य राज्यों व संघ शासित प्रदेशों केखिलाड़ी-अधिकारी सभी ने देखा कि आयोजन को सफल बनाने केलिए पानी की तरह पैसा बहाया गया। उन्होंने इस बात को स्वीकार भी किया है कि गुवाहाटी में तृतीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स का आयोजन न सिर्फ भव्य व शानदार रहा, बल्कि अब तक का सबसे सफल आयोजन भी रहा है। पहली बार असम आए जम्मू केपाटोली केबीएसएफ सिनियर सेकेंड्री स्कूल की 10वीं कक्षा केछात्र रजत सिंह चीब भी गुवाहाटी में आयोजकों द्वारा उपलब्ध कराई गई रहने-खाने की सुविधाओं से खुश होकर कहा यहां की व्यवस्था बहुत शानदार है।

विवादों के घेरे में है देश का सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान जेएनयू

देश का सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान कहे जाने वाला जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय अर्थात् जेएनयू इन दिनों विवादों के घेरे में है। 6 जनवरी, 2020 की शाम जेएनयू परिसर में कुछ नाकाबपोश आपराधिक तत्वों द्वारा जिस तरह से छात्र एवं शिक्षकों की पिटाई की गई, इस घटना की जितने भी कड़े शब्दों में निंदा की जाए कम है। मारपीट की इस घटना में 35 से अधिक छात्र घायल हुए हैं। किसी भी शिक्षण संस्थान के परिसर में इस प्रकार की घटना न सिर्फ विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था पर बल्कि राज्य की पुलिस व कानून व्यवस्था पर भी एक सवालिया निशान लगाती है। इस घटना के बाद बजाए अपराधियों को गिरफ्तर करने के एक-दूसरे पर आरोप लगाने अथवा राजनीतिक

रोटियां सेंकेने पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। दो खेमें में बंटे जेएनयू के छात्रों का गुट इस घटना के लिए एनएसयूआई तो दूसरा खेमा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। इन सबके बीच विभिन्न राजनीतिक दल के नेता भी अपनी-अपनी रोटियां सेंकेने में जुट गए हैं। जेएनयू छात्र संघ अपनी फीस वापसी सहित विभिन्न मांगों को लेकर पहले से आंदोलनरत है। जेएनयू छात्र संघ के इस आंदोलन को भी रविवार को हुई पिटाई की घटना के लिए जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। हिंसा और उसके बाद की राजनीति पर मानव संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि शिक्षण संस्थानों का काम छात्रों को शिक्षा देना है। इनका राजनीतिक हितों के लिए इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। जबकि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि उपद्रवी तत्वों को सरकारी पक्ष की ओर से प्रोत्साहन मिलने की बात कही गई। कांग्रेस नेता पी चिदंबरम और रणदीप सुरजेवाला ने इस घटना के लिए सीधे-सीधे भाजपा पर निशाना साधते हुए घटना की न्यायिक जांच की मांग की। वहीं, सरकार ने भी दो टूक शब्दों में कह दिया है कि देश के विश्वविद्यालयों को राजनीति का अड्डा नहीं बनने दिया जाएगा।

नई दिल्ली के दक्षिणी भाग में स्थित केंद्रीय विश्वविद्यालय जेएनयू मानविकी, समाज विज्ञान, विज्ञान, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन आदि विषयों में उच्च स्तर की शिक्षा और शोध कार्य में लगा देश के अग्रणी संस्थानों में से है। वर्ष 1969 में स्थापित जेएनयू को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएसीसी) ने जुलाई 2012 में किए गए सर्वे में जेएनयू को देश का सबसे अच्छा विश्वविद्यालय माना था। एनएसीसी अपने सर्वे में विश्वविद्यालय को 4 में से 3.9 ग्रेड दिए थे, जो कि देश में किसी भी शैक्षिक संस्थान को प्रदत उच्चतम ग्रेड थे। वैसे भी यह शिक्षण संस्थान नए-नए विचार एवं सार्थक बहस के लिए जाना जाता है। इस शिक्षण संस्थान ने देश को अनेकों उच्चाधिकारी, राजनीतिज्ञ, नेता, कलाकार आदि दिए हैं। विश्व के शैक्षणिक जगत में जेएनयू का नाम पूरे सम्मान के साथ लिया जाता है। जेएनयू की प्रगतिशील परंपरा और शैक्षिक माहौल को बनाए रखने के लिए यहां के छात्र संघ की भूमिका को सबसे अहम माना जाता है। यहां के कई छात्र संघ सदस्यों ने बाद के दिनों में भारतीय राजनीति और सामाजिक आंदोलनों में अहम भूमिका निभाई है, इनमें प्रकाश करात,

सीताराम येचुरी, डीपी त्रिपाठी, आनंद कुमार, चंद्रशेखर प्रसाद, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, विदेश मंत्री एस जयशंकर आदि प्रमुख हैं।

जेएनयू वैसे तो पिछले कई सालों से ही विवादों के केंद्र और सवालों के घेरे में रहा है। आरोप यह भी लगे कि जेएनयू में देश विरोधी विचार और गतिविधियों को हवा दी जाती है। जेएनयू की फिजाओं में कभी भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशा अल्लाह-इंशा अल्लाह, अफजल हम शर्मिंदा हैं, तेरे कातिल जिंदा हैं, भारत की बर्बादी तक, जंग लड़ेंगे, जंग लड़ेंगे, कितने अफजल मारोगे, हर घर से अफजल निकलेगा अथवा लड़कर लेंगे आजादी जैसे नारे भी गूंजा करते थे। यह शिक्षण संस्थान आज भी आरोपों के भंवर से स्वयं को आजाद नहीं करा पा रहा है। लेकिन इस बात को भी नहीं भुलाया जा सकता कि जेएनयू देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में शुमार रहा है। यहां से उठने वाली किसी भी आवाज पर बहस, वाद-विवाद तो किया जा सकता है, लेकिन उस आवाज को दबाया अथवा नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जेएनयू के कुलपति एम जगदीश कुमार ने भी कहा कि जेएनयू अपने डिबेट और डिस्कशन के लिए जाना जाता है। रविवार को जो हुआ वह सभी के लिए पीड़ादायी था और अब सभी का प्राथमिक उद्देश्य सामान्य स्थिति बहाल करना होना चाहिए। इसके लिए छात्र, सरकार, प्रशासन सभी को मिलजुलकर प्रयास करने होंगे।

21वीं शताब्दी के नए दशक के कुछ संकल्प

21वीं शताब्दी का नया दशक हमारे जीवन में दस्तक दे रहा है। हमारे पास ढेर सारी योजनाएं-सपने हैं तो चुनौतियां भी कम नहीं है। वैसे भी चुनौतियों से निरंतर लड़ते हुए लक्ष्य पर विजय प्राप्त करना हर एक इंसान का उद्देश्य होना चाहिए। हमारी जिम्मेदारियों को यदि स्वयं, परिवार समाज और देश में बांटा लिया जाए तो हम अपने लक्ष्य को स्पष्ट देख सकेंगे। एक आदर्श व्यक्ति विकास की नींव होता है, पहली इकाई होता है। विकास चाहे परिवार हो अथवा समाज का हो या फिर देश का बिना व्यक्ति के इसकी परिकल्पना करना भी आधारहीन है। नए साल में कई संकल्प लेकर हम एक शानदार साल की शुरुआत कर सकते हैं। यह बात किसी से भी छिपी नहीं है कि हमारा देश गुटका-पान मसाला जैसी

लत की वजह से उत्पन्न होने वाली कैंसर जैसी गंभीर समस्या से लड़ रहा है। यह एक छोटा सा उदहारण है, जो बताता है कि कैसे आपकी एक बुरी लत देश के स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि गुटका-पान मसाला का सेवन कर कैंसर की संभावना को काफी हद तक कम किया जा रहा है। असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में कैंसर के बढ़ते प्रकोप को तांबूल-पान, गुटका-पान मसला के अत्याधिक सेवन के साथ जोड़कर देखा जा रहा है। इसके अलावा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग करना बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं का कारण बनता जा रहा है। देश में जिस गति से मोबाइल फोन का उपयोग बढ़ा है, उसी गति से मोबाइल फोन के उपयोग के कारण सड़क दुर्घटनाओं की संख्या भी बढ़ रही है। सड़क हादसों की समीक्षा करने वाली और आंकड़ों का विश्लेषण करने वाली संस्थाओं का मानना है कि दोपहिया अथवा चौपहिया वाहन चलाते वक्त मोबाइल फोन का उपयोग करने के कारण सड़क दुर्घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि देखने को मिल रही है। नए साल पर हम गुटका-पान मसाला और वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग न करने का संकल्प लेकर स्वयं के प्रति जिम्मेदार बन सकते हैं।

यह बात किसी से भी छिपी नहीं है कि पारिवारिक सदस्यों के बीच धूम्रपान करने से सदस्यों में भी कैंसर होने की संभावना बढ़ जाती है, इसके अलावा शराब का सेवन परिणाम फलस्वरूप परिवार में गरीबी, अशांति और कलह की घटनाएं आम परिवारों से अधिक देखने को मिलती है। सिगरेट और शराब के सेवन से परिवार के नवजात और किशोर बच्चों पर सर्वाधिक असर देखने को मिला है। आधुनिकता होते हमारे समाज की महिलाओं में भी शराब-सिगरेट सेवन का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। ऐसी लत व्यक्ति ही नहीं परिवार के लिए भी नुकसानदेह साबित होती है।

मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा गया है। मनुष्य और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। जैसा मनुष्य होगा, समाज का स्वरूप भी वैसा ही होगा। 21वीं शताब्दी के नए दशक वाले साल में खड़े हम सभी को तय करना होगा कि हम अपने बच्चों को कैसा समाज देना चाहते हैं। प्लास्टिक युक्त, कचरे से भरा, प्रदूषित हवा, पानी, वातावरण वाला समाज अथवा एक साफ-सुथरा और स्वस्थ्य समाज।

यदि हमारा सपना अपने समाज को साफ-सुथरा, प्रदूषण मुक्त बनाना है तो इसके लिए बाहरी लोक से दूसरा कोई व्यक्ति नहीं आएगा, हम सभी को ही मिलकर प्रयास करने होंगे। इसके लिए कोई पहाड़ तोड़ने जैसे काम नहीं करने हैं। बस साफ-सफाई, स्वच्छता और प्रदूषण मुक्त माहौल बनाने के लिए राज्य सरकार, कामरूप महानगर जिला प्रशासन और गुवाहाटी नगर निगम द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की योजनाओं में सक्रिय रूप से शामिल मात्र होना है। हमें बस यह सुनिश्चित करना है कि घर में उत्पन्न होने वाला कचरा प्रशासन द्वारा तय स्थान पर डाला जाए, प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर लगाम लगाया जाए और महानगर को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान में शरीक हुआ जाए।

राज्य और राष्ट्र के प्रति हमारी जो जिम्मेदारियां हैं, उससे मुंह नहीं चुराया जा सकता। राज्य और राष्ट्र की संपत्ति की हिफाजत करना हमारी सबसे पहली जिम्मेदारी है। राज्य-राष्ट्र के विकास में हर एक नागरिक की भागीदारी सुनिश्चित होनी ही चाहिए। इंडिया और असम हमारा है, उनका ध्यान हम नहीं रखेंगे तो दूसरा कौन रखेगा। हम ऐसा कर सकते हैं। बस नए साल में संकल्प लेने और उन पर अमल करने मात्र का सवाल है।

एनआरसी, 'का' और एनपीआर

वर्ष 2019 का आखिरी महीना न सिर्फ असम बल्कि पूरे देश के लिए भारी उथल-पुथल वाला रहा। नागरिकता संशोधन विधेयक (कैब) के लोकसभा व राज्यसभा में पारित होने के बाद 12 दिसंबर को इस पर राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षर किए जाने के बाद से ही यह विधेयक नागरिकता संशोधन कानून (का) बन गया। वैसे तो राज्य में कैब विरोधी आग पहले से ही भड़की हुई थी, मगर इसका कानून बनना आग में घी डालने जैसा साबित हुआ। 'का' के विरोध में भड़की हिंसा की आग ने गुवाहाटी सहित पूरे राज्य भर में क्या-क्या कहर ढाया, यह किसी से भी छिपा नहीं है। इसके बाद यह हिंसा की आग दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से होते हुए उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल सहित देश के कई राज्यों में फैल गई। यह आंदोलन तब और भी धारदार हो गया, जब 'का' को राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर अर्थात एनआरसी से जोड़कर इसे मुसलमानों के खिलाफ बताया गया। जहां एक ओर सत्ता पक्ष 'का' को लेकर देशवासियों की भ्रांतियों को दूर करने में नाकाम रहे, वहीं दूसरी ओर विभिन्न राजनीतिक दलों ने ऐसी भ्रांतियों को और अधिक भड़काने का काम किया। इन्हीं के बीच राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) भी आकर इसमें जुड़ गया। देश की जनता को समझ में ही नहीं आ रहा था कि आखिरकार एनआरसी, 'का' और एनपीआर में फर्क क्या है। इन सारे विवादों के बीच गृह मंत्री अमित शाह ने साफ किया कि एनपीआर और एनआरसी अलग-अलग है । दोनों की प्रक्रिया अगल-अलग है और दोनों का एक-दूसरे से कोई संबंध नहीं है। शाह ने यह भी स्पष्ट किया कि एनपीआर में किसी का नाम छूट भी जाए तो भी उसकी नागरिकता रद्द नहीं की जाएगी क्योंकि यह एनआरसी की प्रक्रिया नहीं है। वहीं सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि एनपीआर में कोई भी प्रमाण, कोई दस्तावेज और बायोमीट्रिक की आवश्यकता नहीं होगी।

एनपीआर और एनआरसी में अंतर यह है कि एनआरसी के पीछे जहां देश

में रह रहे अवैध नागरिकों की पहचान करना है, वहीं एनपीआर में छह महीने या उससे अधिक समय से स्थानीय क्षेत्र में रहने वाले किसी भी निवासी को आवश्यक रूप से पंजीकरण करना होता है। यहां यह भी स्पष्ट कर देना जरूरी है कि एनआरसी अद्यतन का कार्य देश भर में सिर्फ असम में ही किया गया है। वह भी उच्चतम न्यायालय की निगरानी में। असम में एनआरसी अद्यतन का काम इसलिए करना पड़ा, क्योंकि 14 अगस्त, 1985 को प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी और अखिल असम छात्र संघ के बीच हुए असम समझौते में एनआरसी अद्यतन कराने की मांग भी शामिल थी। इसके बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दोनों सदनों के अलावा टीवी चैनलों पर भी कई बार कहा कि सरकार देश भर में एनआरसी लागू कराने जा रही है और एक भी घुसपैठिए को देश में रहने नहीं दिया जाएगा। इन सब के बीच नागरिकता संशोधन कानून ने देश के अल्पसंख्यकों को और अधिक गलतफहमी में डाल दिया। इस कानून में यह व्यवस्था की गई है कि वर्ष 2014 की 31 दिसंबर के पहले धार्मिक प्रताड़ना के कारण पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी एवं ईसाई को भारत की नागरिकता प्रदान की जाएगी। इस कानून में भारतीय नागरिकता प्रदान करने के लिए जरूरी 11 वर्ष तक भारत में रहने की शर्त में भी ढील देते हुए इस अवधि को केवल 5 वर्ष तक भारत में रहने की शर्त के रूप में बदल दिया गया है। इस पूरे प्रकरण में यह स्थिति सामने आई कि एक ओर तो गृह मंत्री अवैध घुसपैठियों को देश से बाहर निकालने की बात कह रहे थे, वहीं दूसरी ओर 'का' पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी एवं ईसाई को भारत की नागरिकता प्रदान की बात कह रहा था। ऐसे में अल्पसंख्यकों को लगा कि एनआरसी के नाम पर पहले तो उनको नागरिकता साबित करने को कहा जाएगा, नागरिकता साबित न कर पाने की सुरत में उसे घुसपैठिया बताकर देश से बाहर निकाल दिया जाएगा, जबकि ऐसे ही नागरिकता साबित नहीं कर पाने वाले हिंदू को शरणार्थी बताकर देश की नागरिकता दे दी जाएगी। इस पूरे विषयक्रम को लेकर जनता में भ्रांतियां होना स्वभाविक है, लिहाजा सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह पूरी बातों को स्पष्टता के साथ प्रस्तुत कर देशवासियों की भ्रांतियों को दूर करने के लिए जरूरी कदम उठाए।

किसने लगाई गुवाहाटी को आग

नागरिकता संशोधन कानून (का) के विरोध के नाम पर गुवाहाटी में 10 दिसंबर, 2019 को वाहनों के शीशे तोड़ने और बीच सड़क पर टायर जलाने के साथ जो सिलसिला शुरू हुआ वह भीषण आगजनी और भारी तोड़फोड़ तक पहुंच गया। स्थिति बड़ी तेजी के साथ इस कदर बिगड़ी की 11 दिसंबर को महानगर में न सिर्फ बेमियादी कर्फ्यू लगा दिया गया, बल्कि इसे सेना के हवाले भी कर दिया। स्थिति और न बिगड़े, इसे ध्यान में रखकर राज्य सरकार ने जिले के 10 जिलों में इंटरनेट सेवा भी बंद कर दी। बावजूद इसके 10 दिसंबर को भी गुवाहाटी गुस्साई भीड़ द्वारा जगह-जगह लगाई गई आग से जलता रहा। भीड़ के गुस्से का सबसे अधिक असर जीएस रोड पर देखा गया। भीड़ ने जमकर तोड़फोड़ की और सड़क किनारे जो भी वस्तु मिली, उसे बीच सड़क पर लाकर जला दिया। पहले दो दिन तो लगा जैसे महानगर की कानून व्यवस्था पूरी तरह से नियंत्रण से बाहर जा चुकी है। बाद में आहिस्ता-आहिस्ता स्थिति शांत तो हुई, मगर 'का' को लेकर आमलोगों का गुस्सा अभी भी शांत नहीं हुआ है।

इस पूरे प्रकरण के बीच यह सवाल पूरी गंभीरता के साथ सामने आया कि आखिरकार गुवाहाटी को आग लगाई किसने। राज्य सरकार इस घटनाक्रम में विपक्षी दलों की साजिश और किसी तीसरी शक्ति का हाथ बता रही है, वहीं दूसरी ओर अखिल असम छात्र संघ जैसे प्रभावशाली छात्र संगठन के नेता ऐसी हिंसक घटनाओं में उनके नेता-सदस्यों के शामिल होने की बात से इनकार करते हैं। वैसे भी आसू जैसे संगठनों का आंदोलन को अहिंसक तरीके से संचालित

करने का पुराना इतिहास रहा है। छह वर्षीय ऐतिहासिक असम आंदोलन भी अहिंसा की बुनियाद और महात्मा गांधी को प्रेरणा पुरुष मानकर ही लड़ा गया था। इसके अलावा 10 दिसंबर का आंदोलन आसू द्वारा आहूत नहीं था। उस दिन महानगर के नामचीन महाविद्यालय- विश्वविद्यालय के विद्यार्थी स्वत: ही सड़कों पर निकल आए थे। असम जातीयतावादी युवा छात्र परिषद (अजायुछाप) ने भी अपने आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए कभी भी हिंसा का सहारा नहीं लिया। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि आखिरकार वह लोग कौन थे, जिन्होंने देखते ही देखते गुवाहाटी को आग के हवाले कर दिया। 'का' के विरोध के नाम पर हुई आगजनी-हिंसा को देखते हुए आसू को भी घोषणा करनी पड़ी कि शाम के 5 बजे के बाद वह किसी भी प्रकार का आंदोलन नहीं करेगा, वरना आसू-अजायुछाप के आह्वान पर शाम के बाद मशाल जुलूस निकाला जाना तो आम बात है। दिसंबर के दूसरे सप्ताह में उत्पन्न स्थिति ने न सिर्फ सरकार बल्कि संगठनों के समक्ष भी कई सवाल खड़े कर दिए हैं। 'का' विरोधी आंदोलन को हिंसक रूप देने में यदि सचमुच ही तीसरी शक्ति का हाथ था तो यह बात हम सभी के लिए चिंताजनक होनी चाहिए। क्योंकि वह तीसरी शक्ति इसके बाद होने वाले हर एक जन आंदोलन को हिंसक स्वरूप देने की कोशिश करेगी। इसके लिए सरकार और संगठन दोनों को ही और अधिक सचेत होने की जरूरत है। वैसे तो पक्ष-विपक्ष द्वारा किसी भी घटना में एक-दूसरे को संलिप्त बताना आम बात है, लेकिन गुवाहाटी में पिछले सप्ताह जो घटा वह आम बात नहीं है। गुवाहाटी को जलाने की साजिश के पीछे किसी राजनीतिक दल का हाथ है या नहीं यह बात भी सबूतों के साथ स्पष्ट की जानी चाहिए। उसके बाद आम जनता उस राजनीतिक दल का क्या हश्र करती है, यह उस पर ही छोड़ दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही हमारे संगठनों को भी इस बात की सतर्कता बरतनी पड़ेगी कि कोई तीसरी शक्ति संगठन में घुसपैठ कर उनके आंदोलन को हिंसक न बना दें। लेकिन सबसे पहला कदम सरकार को उठाना होगा। सबसे पहले तो सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि गुवाहाटी को जलाने के लिए जिम्मेदार उस तीसरी शक्ति को सबूतों के साथ न सिर्फ जनता के सामने लाए, बल्कि उसके करतूत की सजा भी सुनिश्चित करे।

प्रदूषित दिल्ली, प्रदूषित गुवाहाटी का पानी

प्रदूषण एक बार फिर गंभीर समस्या और बहस के मुद्दे के रूप में हमारे सामने है। जहां एक ओर दिल्ली में प्रदूषण खतरनाक स्तर पहुंच गया है, वहीं दूसरी ओर गुवाहाटी का पानी भी इतना प्रदूषित हो चुका है कि पीने लायक नहीं रह गया है। अभी हाल में केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के अध्ययन के अनुसार देश के अन्य कई राज्यों की राजधानियों के साथ-साथ गुवाहाटी के पानी का कोई भी नमूना भारतीय मानक (आईएस) पर खरा नहीं उतरता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हमारे देश की प्रदूषित हवा-पानी अब गंभीर समस्या के रूप में हमारे सामने है। इस मसले पर देश के संसद में चर्चा हुई, लेकिन उस चर्चा में समस्या का हल निकालने से अधिक राजनीतिक छिंटाकशी अधिक देखने को मिली है।

प्रदूषण के कारण दिल्ली की चिंताजनक स्थिति हम सभी के सामने है। प्रदूषण के कारण वातावरण इतना धुंधला हो गया है कि दिन में भी वाहनों को उसकी हेड लाइट जलाकर चलना पड़ता है। वाहनों की रफ्तार भी इस कारण धीमी रखनी पड़ती है कि कुछ सौ मीटर की दूरी का वाहन दिखाई नहीं देता। दिल्ली की केजरीवाल सरकार इसके लिए जहां एक ओर पड़ोसी राज्य हरियाणा और पंजाब को जिम्मेदार ठहराती है, वहीं दिल्ली भाजपा-कांग्रेस के नेता दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को प्रदूषण की समस्या का हल निकालने में नाकाबिल बताते हैं। यह बात सही है कि हरियाणा और पंजाब में फसल कटने के बाद बड़े पैमाने पर पराली जलाई जाती है, जिससे उत्पन्न होने वाला काला धुआं पूरी दिल्ली को इस कदर ढंक देता है कि चांद-सूरज तक ठीक से दर्शन नहीं होते। दरअसल पराली धान की फसल के कटने बाद बचा बाकी हिस्सा

होता है जिसकी जड़ें धरती में होती हैं। किसान धान पकने के बाद फसल का ऊपरी हिस्सा काट लेते हैं क्योंकि वही काम का होता है बाकी अवशेष होते हैं, जो किसान के लिए बेकार होते हैं, उन्हें अगली फसल बोने के लिए खेत खाली करने होते हैं तो सूखी पराली को आग लगा दी जाती है। पराली ज्यादा होने की वजह यह भी है कि किसान अपना समय बचाने के लिए आजकल मशीनों से धान की कटाई करवाते हैं। मशीनें धान का सिर्फ उपरी हिस्सा काटती हैं और और नीचे का हिस्सा भी पहले से ज्यादा बचता है। यही है चर्चा का विषय बना वह अवशेष जिसे हरियाणा-पंजाब में पराली कहा जाता है। किसान अगर धान को मजदूरों से या स्वयं काटे तो खेतों में पराली नहीं के बराबर बचती है। बाद में किसान इस पराली को चारे के रूप में इस्तेमाल करते हैं। दरअसल धान की फसल कटने के बाद किसान खेतों में गेहूं की बुआई करते हैं, जिस कारण उन्हें खेत खाली करने की जल्दी होती है। इसी वजह से किसान खेतों में पड़ी पराली को आग लगा देते हैं। लेकिन सच्चाई यह भी है कि दिल्ली और इसके आसपास की औद्योगिक इकाइयों से लगातार निकलने वाला धुआं भी इस प्रदूषण के लिए कम जिम्मेदार नहीं है।

समस्या चाहे दिल्ली के प्रदूषण की हो अथवा गुवाहाटी के पीने योग्य पानी की। इसकी जड़ में हम-आप ही हैं। हमारे स्वयं के द्वारा फैलाए जा रहे प्रदूषण के लिए हम सरकार, भगवान और प्रकृति किसी को भी जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। दिल्ली की सड़कों पर रोज दौड़ने वाले लाखों वाहन भी प्रदूषण फैलाने के लिए पंजाब-हरियाणा के किसानों से कम जिम्मेदार नहीं है। अपने वाहन से निकलते काले और जहरीले धुएं के कारण हम संबंधित विभाग के अधिकारियों को जुर्माना देने को तो तैयार हैं, लेकिन वाहन की उस गड़बड़ी को ठीक नहीं कराना चाहते, जिसकी वजह से जहरीला धुआं निकलता है। हमें दूसरों को कोसने के बजाए अपनी आदतों में सुधार करना होगा। दिन में कम से कम एक बार तो हमें यह बात जरूर सोचनी चाहिए कि प्रदूषण कम करने और दुनिया को हरा-भरा बनाने की दिशा में हम क्या कर रहे हैं, हम क्या कर सकते हैं। इन्हीं सवालों के गर्भ में प्रदूषण का हल भी छिपा है और आपके आदर्श भारतीय नागरिक होने का रहस्य भी।

नलबाड़ी-माजुली का रासोत्सव

असम को यदि पर्व-त्योहार, मेला-उत्सव का घर कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अंबुवासी मेला, अशोकाष्टमी मेला और रास महोत्सव संभवत: असम में ही मनाया जाता है। अंबुवासी मेला जहां कामाख्या धाम में आयोजित किया जाता है, वहीं राज्य के बीच होकर गुजरने वाली ब्रह्मपुत्र नद के किनारे रामनवमी से एक दिन पूर्व अशोकाष्टमी मेला होता है, जिसमें राज्यवासी ब्रह्मपुत्र के पावन जल में स्नान करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि मातृ हत्या के दोषी ब्रह्मपुत्र का पानी सिर्फ अशोकाष्टमी के दिन ही पवित्र रहता है। अन्य दिन ब्रह्मपुत्र में स्नान करने से कोई पुण्य हासिल नहीं होता, ऐसा धार्मिक पुस्तकों में कहा गया है। इसी कड़ी में रास उत्सव भी है, जो राज्य के विभिन्न हिस्सों में कई-कई दिनों तक मनाया जाता है। इनमें नलबाड़ी, पलाशबाड़ी और माजुली के रास महोत्सव की राज्य भर में प्रसिद्धि प्राप्त है। अब सवाल यह उठता है कि क्या हम इन मेलों को विश्व पटल तक नहीं ले जा सकते। आज बरसाने की लठमार होली हो, जयपुर का तीज उत्सव हो, अजमेर शरीफ का पुष्कर मेला अथवा कुंभ मेला। इन सभी मेलों में देश के विभिन्न हिस्सों के अलावा विदेशों से भी श्रद्धालुगण आते हैं, लेकिन ऐसा हमारे रास महोत्सव को लेकर नहीं है। यह बात सही है कि पिछले कई सालों से अंबुवासी मेले को एक राष्ट्रीय मेले का स्वरूप देने की कोशिशें की जा रही है और हम देख रहे हैं कि वे कोशिशें अब रंग भी लाने लगी है। अशोकाष्टमी मेला अथवा रास महोत्सव को लेकर इसी प्रकार की कोशिशें होनी चाहिए।

इस बात से किसी को भी इंकार नहीं है कि देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए असम एक आकर्षक विचरण भूमि साबित हो सकती है। यह बात भी सच है कि असम में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए अभी तक कोई खास कोशिशें नहीं की गई है। यही कारण है कि पर्यटकों के लिए असम में सब कुछ होने के बावजूद यह राज्य आज भी पूरी तरह से उपेक्षित पड़ा है। असम के गर्भ में प्राकृतिक संपदा, नदी-झील, झरने-तलाब, पहाड़-घाटियां, हरियाली-घने जंगल, ऐतिहासिक कीर्तिचिन्ह और न जाने कितना कुछ छिपा है, जो पर्यटकों के लिए स्वर्ग जैसा सुखकारी हो सकता है, मगर यह सारा सौंदर्य अनदेखा ही पड़ा है। यह मानना पड़ेगा कि असम पर्यटन विकास निगम पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए पहले की तुलना में अधिक गंभीर हुआ है। इससे पर्यटन क्षेत्र में संभावनाएं भी बढ़ी है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना जरूरी है। सूचना और संचार माध्यम में क्रांतिकारी बदलाव आने के बाद अब विश्व के इस छोर से उस छोर पर बैठे लोगों तक पहुंचना बहुत ही आसान हो गया है। अंगुली हिलाते ही आपकी बात हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति के कंप्यूटर तक पहुंच जाती है। ऐसे में असम के पर्यटन क्षेत्र को बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए हमें प्रयुक्ति और तकनीक का सहारा लेना चाहिए। मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने अभी हाल में ही अपने सभाकक्ष में आयोजित एक कार्यक्रम में वीडियो कांफ्रेंस के जरिए www.majuliraas.in वेब साइट का उद्घाटन किया। इस वेब साइट पर रास उत्सव से जुड़ी तमाम जानकारियों को शामिल किया गया है। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वेब साइट के माध्यम से देश-विदेश के लोग माजुली में मनाए जाने वाले रास उत्सव के बारे में भी पूरी तरह से जान-समझ सकेंगे। ऐसे मेलों के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने से राज्य के कुटीर उद्योग को भी फलने-फुलने का मौका मिलेगा। मेले में आने वाले पर्यटक असम की पारंपरिक वस्तुएं यादगार के तौर पर अथवा अपने परिजन-मित्रों को उपहार देने के लिए जरूर खरीदेगा और इसका सीधा फायदा राज्य के कुटीर उद्योग को मिलेगा। इसके अलावा राज्य के होटल, रेस्टूरेंट, यातायात आदि क्षेत्र में भी विकास देखा जा सकता है। असम में पर्यटन से जुड़ी अपार संभावनाएं हैं, बस जरूरत है एक सार्थक शुरूआत की।

निर्मल ब्रह्मपुत्र

ब्रह्मपुत्र को असम की जीवन-रेखा कहा जाता है, इसके किनारे न जाने कितने ही संस्कृति-संस्कार पले-बढ़े हैं। बिना ब्रह्मपुत्र के हम असम के सामाजिक-आर्थिक जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। असम सहित पूर्वोत्तर का इतिहास और साहित्य ब्रह्मपुत्र के बखान से भरा पड़ा है। आज इस ब्रह्मपुत्र की निर्मलता और स्वच्छता दांव पर है और वह भी हमारे ही कारण। सुनने में यह बात अटपटी सी लगती है। किसी को झूठ भी लगे। अभी त्योहारों का मौसम बीतने ही वाला है। छठ पूजा और गोपाष्टमी मेले के बाद कुछ दिनों के लिए त्योहारों की शृंखला में विराम लग जाएगा। इन त्योहारों के दौरान हमने अपने घर-मोहल्लों को तो बहुत चमकाया-दमकाया, मगर महाबाहु ब्रह्मपुत्र के साथ हमने क्या किया। इस बिंदू पर तनिक ठहरकर सोचने की जरूरत है। प्रतिमा विर्सजन के नाम पर हमने न सिर्फ ब्रह्मपुत्र के किनारे पर गंदगी फैलाई, बल्कि इसकी जलराशि में न जाने कितनी ही मात्रा में घातक रसायन भी प्रवाहित किए। यह रसायन प्रतिमाओं पर लगे रंगों में मिले हुए थे। यह तो हुई त्योहारों की बात, हम आए दिन भी ब्रह्मपुत्र को प्रदूषित और गंदा करते रहते हैं। हमारी इस आदत के सामने ब्रह्मपुत्र दुखी और सारे सरकारी प्रयास विफल नजर आते हैं। लाख कोशिशें और हजारों करोड़ों रुपए खर्च के करने के बाद भी सरकार ब्रह्मपुत्र को साफ-सुथरा और निर्मल बनाए नहीं रख सकती, जब तक जनता अपनी

जिम्मेदारियों को न समझे।

हिमालय के उत्तर में तिब्बत के पुरंग जिले में स्थित मानसरोवर झील के निकट से निकलने वाली ब्रह्मपुत्र असम के डिब्रूगढ़, तेजपुर, गुवाहाटी, ग्वालपाड़ा, धुबड़ी सहित कई बड़े और महत्वपूर्ण शहर-नगरों के किनारे से होकर गुजरती है। तिब्बत से निकलने वाली यह नदी असम तथा बांग्लादेश से होकर बहते हुए सुंदरबन डेल्टा का निर्माण करते हुए बंगाल की खाड़ी में जाकर मिल जाती है। तिब्बत के पुरंग जिले में इसे यरलुंग त्संगपो कहा जाता है। तिब्बत में बहते हुए यह नदी भारत के अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है। असम इसे ब्रह्मपुत्र और फिर बांग्लादेश में प्रवेश करने पर इसे जमुना कहा जाता है। पद्मा (गंगा) से संगम के बाद इनकी संयुक्त धारा को मेघना कहा जाता है। पहाड़ों की उंचाई को तेजी से छोड़ यह असम के मैदानों में दाखिल होती है, जहां इसे दिहांग नाम से जाना जाता है। असम में ब्रह्मपुत्र काफी चौड़ी हो जाती है और कहीं-कहीं तो इसकी चौड़ाई 10 किलोमीटर तक है। डिब्रूगढ़ तथा लखीमपुर जिले के बीच यह दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है। असम में ही नदी की दोनों शाखाएं मिल कर मजुली द्वीप बनाती है, जो दुनिया का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है। असम में इसको प्राय: ब्रह्मपुत्र नाम से ही बुलाते हैं, पर बोड़ो जनजाति के लोग इसे भुल्लम-बुथुर भी कहते हैं, जिसका अर्थ है- कल-कल की आवाज निकालना। लगभग 2900 किलोमीटर लंबी ब्रह्मपुत्र का अस्तित्व आज हमलोगों की लापरवाही और उदासीनता के कारण खतरे में हैं। ब्रह्मपुत्र नद के किनारे बसे सभी शहर-नगरों का कचरा आखिरकार इसी ब्रह्मपुत्र में गिराया जाता है। एक-दो दिन ही नहीं पूरे साल दर साल। ऐसी स्थिति में असम की जीवन रेखा कही जाने वाली ब्रह्मपुत्र के पानी की निर्मलता और स्वच्छता कितनी बची रह गई होगी, इसका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते। अपने घर और मोहल्लों की सफाई करने के बाद हम संकल्प लेते हैं कि अब से हम घर और मोहल्ले को साफ-सुथरा रखेंगे और किसी भी हालत में इसे गंदा नहीं होने देंगे। क्या इस साल हम ब्रह्मपुत्र को साफ-सुथरा और निर्मल रखने का संकल्प नहीं ले सकते। हमारी जीवन रेखा को बचाए रखने के लिए हमें संकल्पित होना ही होगा, ऐसा करके ही हम ब्रह्मपुत्र की निर्मलता को बनाए रख सकते हैं।

अमरीका के ह्यूस्टन में हाउडी मोदी

अमरीका के टेक्सास प्रांत का ह्यूस्टर शहर का 22 सितंबर, 2019 प्रवासी भारतीयों के नाम रहा। ह्यूस्टन के एनआरसी स्टेडियम में आयोजित 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम में 50 हजार से अधिक प्रवासी भारतीयों की भीड़ ने अमरीका को अपनी देश भक्ति और ताकत का अहसास कराया। ऐसा भी नहीं है कि स्टेडियम में सिर्फ प्रवासी भारतीय ही थे। हाउडी मोदी के मंच पर अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सहित अमरीका के विभिन्न भागों से आए दोनों अमरीकी संसद के 20 से अधिक सदस्यों ने अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज कराई। ह्यूस्टन के मेयर सिल्वेस्टर टर्नर और टेक्सास से सीनेटर जॉन कारनिन ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया। दोनों ने भारतीय समुदाय के लोगों के अमरीका के विकास में योगदान की सराहना की और देशों के लोकतांत्रिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में समानता को रेखांकित किया। अमरीका के इतिहास में यह पहला मौका है, जब किसी विदेशी राजनेता के सम्मान में इतनी भारी भीड़ जुटी हो, इससे पहले पोप के स्वागत में ही ऐसी भीड़ जुटी थी। एक वह भी समय था, जब भारतीय प्रधानमंत्री को अमरीकी राष्ट्रपति से मिलने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ता था, मगर अब स्थिति पूरी तरह से बदल गई है। ट्रंप सहित अमरीकी सरकार के सांसद भी दर्शक दीर्घा में बैठकर मोदी का भाषण सुनते हैं।

इसका नजारा हाउडी मोदी कार्यक्रम में भी देखने को मिला। काले रंग की चेक वाली जैकेट, हल्के पीले कुर्ते एवं सफेद पाजामे में जैसे ही श्री मोदी मंच पर पहुंचे तो सभी अमरीकी सांसदों ने खड़े होकर तालियों से उनका स्वागत किया। मेयर ने श्री मोदी को सम्मान स्वरूप ह्यूस्टन शहर की चाबी सौंपी। मैरीलैंड के सांसद स्टेनी होयर ने श्री मोदी का औपचारिक स्वागत किया। इस मौके पर राष्ट्रपति ट्रंप ने मोदी की जमकर तारीफ की और स्वयं को भारत का सबसे अच्छा दोस्त बताया। श्री मोदी ने इस मंच का उपयोग आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे पाकिस्तान को दो टूक जवाब देने और अमरीका के साथ भारत के बढ़ते रिश्तों को रेखांकित करने के लिए किया। प्रधानमंत्री मोदी ने अमरीकी

राष्ट्रपति की मौजूदगी में पाकिस्तान को आतंकवाद का गढ़ करार देते हुए कहा कि 9/11 हो या मुंबई में 26/11 हो, उसके साजिशकर्ता कहां पाए जाते हैं? ये वो लोग हैं, जो अशांति चाहते हैं। आतंक के समर्थक हैं और उसे पालते-पोसते हैं। उनकी पहचान सिर्फ आप नहीं पूरी दुनिया अच्छी तरह जानती है। मोदी ने कहा, अब समय आ गया है, जब आतंकवाद और उसे बढ़ावा देने वालों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ी जाए। वहीं ट्रंप ने कहा कि हम कट्टरपंथी इस्लामिक आतंकवाद से निर्दोष लोगों की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ट्रंप ने पाकिस्तान का नाम लिए बगैर उसे कड़े शब्दों में चेतावनी दी। उन्होंने अपने भाषण में सीमा सुरक्षा का जिक्र करते हुए कहा कि हम दोनों ही देशों के लिए अपनी सीमाओं की सुरक्षा करना बेहद जरूरी है। इसके लिए हम दोनों मिलकर कदम उठाएंगे। ट्रंप के इस बयान को पाकिस्तान द्वारा भारतीय सीमा में आतंकी घुसपैठ कराने की कोशिशों के जवाब के तौर पर देखा जा रहा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जब तक भारत नहीं कहता, वे कश्मीर के मसले में नहीं पड़ेंगे।

हाउडी मोदी कार्यक्रम ने मोदी को जहां अमरीका का रॉकस्टार बना दिया है, वहीं दूसरी और पाकिस्तान विश्व बिरादरी में पूरी तरह से अलग-थलग नजर आ रहा है। मोदी ने जब जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाए जाने का जिक्र करते हुए जब इसको लेकर पाक द्वारा किए जा रहे विरोध पर तंज कसा तो पूरा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। उन्होंने कहा कि विश्व के सबसे पुराने लोकतंत्र अमरीका और सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की उपस्थिति इस समारोह को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। इस कार्यक्रम से पूर्व श्री मोदी ने ह्यूस्टन में प्रवासी कश्मीरी पंडित, बोहरा मुसलमान और पंजाबी समुदाय के लोगों से अलग-अलग मुलाकात कर उनके साथ विचारों का आदान-प्रदान कर विश्व बिरादरी को यह संदेश देने की कोशिश की कि वे 'सबका साथ-सबका विकास' में विश्वास रखते हैं। हाउडी मोदी कार्यक्रम शुरू होने के पहले से पूरा ह्यूस्टन शहर भारतीयता के रंग में रंगा नजर आया। स्टेडियम के बाहर जगह-जगह लहराता तिरंगा और भारत माता की जय के गूंजते नारे यह संदेश दे रहे थे कि आने वाला कल हमारा है, हमारे भारत का है।

चंद्रयान-2

हमारा चंद्रयान-2 भले ही चांद को चूमने से तनिक भर के लिए चूक गया हो, लेकिन न सिर्फ देश बल्कि पूरे विश्व भर में भारतीय वैज्ञानिकों की सराहना की जा रही है। इसे भारतीय विज्ञान और वैज्ञानिक के जीत के तौर पर भी देखा जा रहा है। चंद्रयान-2 अभियान को 90 से 95 प्रतिशत सफल माना जा रहा है। चंद्रयान-2 का आर्बिटर (कक्षयान) ठीक ही काम कर रहा है, जबकि इसका लैंडर विक्रम 6 सितंबर (शुक्रवार) की रात करीब 1:52 बजे चंद्रमा से करीब 2.1 किमी की दूरी पर अपने इच्छित पथ से भटक गया और अंतरिक्ष यान के साथ जमीनी नियंत्रण ने संचार खो दिया। उसके बाद से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिक लगातार विक्रम से संपर्क साधने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन 10 सितंबर की सुबह तक विक्रम से संपर्क स्थापित नहीं हो पाया था। इस संदर्भ में इसरो अध्यक्ष के. सिवन ने कहा, विक्रम लैंडर चंद्रमा की सतह से 2.1 किलोमीटर की ऊंचाई तक सामान्य तरीके से नीचे उतरा, इसके बाद लैंडर का धरती से संपर्क टूट गया। इसके 24 घंटे बाद डॉ. सिवन ने यह भी घोषणा की कि लैंडर को चंद्रमा की सतह पर ऑर्बिटर की मदद से देखा गया है। विक्रम से संपर्क स्थापित न होने की वजह से लैंडर में लगा पहियेदार रोवर 'प्रज्ञान' न तो चंद्र सतह पर चल पाया और और न ही उस जगह का रासायनिक विश्लेषण कर पाया। इस तरह से कहा जा सकता है कि इसरो को चंद्रयान-2 अभियान में शत-प्रतिशत सफलता नहीं मिली।

इसके बावजूद इसरो के वैज्ञानिकों की विश्व भर में सराहना की जा रही है। कोई एक गलती किसी की ढेर सारी उपलब्धियों को नहीं छिपा सकती। अंतरिक्ष जगत में भारत की सशक्त उपस्थिति से कोई इंकार नहीं कर सकता। अपने चंद्रयान-1 के सफल अभियान के बाद भारत ने ही दुनिया को बताया था कि चांद पर पानी है। मंगलयान का सफल प्रक्षेपण हमारी सफलता की और एक कड़ी है। 2014 की 24 सितंबर को मंगल पर पहुंचने के साथ ही भारत

विश्व में अपने प्रथम प्रयास में ही सफल होने वाला पहला देश तथा सोवियत रूस, नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बाद दुनिया का चौथा देश बन गया है। इसके अतिरिक्त ये मंगल पर भेजा गया सबसे सस्ता मिशन भी था। इस तरह से भारत एशिया का भी ऐसा करने वाला पहला देश बन गया, क्योंकि इससे पहले चीन और जापान अपने मंगल अभियान में असफल रहे थे। इसीलिए चंद्रयान-2 पर विश्व भर के वैज्ञानिकों की नजरें टिकी हुई थी।

शनिवार सुबह आठ बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसरो मुख्यालय में वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा, आपलोग मां भारती का सिर ऊंचा करने के लिए पूरा जीवन खपा देते हैं। अपने सपनों को समाहित कर देते हैं। प्रधानमंत्री इसरो प्रमुख के. सिवन को गले लगा लिया और देर तक ढाढ़स बंधाते रहे। इस दौरान मोदी भी भावुक दिखे। उनकी आंखें नम थीं।

सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर ने लिखा 'केवल संपर्क टूटा है, संकल्प नहीं, हौसले अब भी बुलंद हैं। मुझे विश्वास है की सफलता अवश्य मिलेगी। भूटान के प्रधानमंत्री लोताय शेरिंग ने ट्वीट कर कहा है, 'हमलोग को आज भारत और वहां के वैज्ञानिकों पर गर्व है।' चंद्रयान-2 को आखिरी मिनट में चुनौतियां मिलीं लेकिन ऐतिहासिक रूप से मेहनत और साहस एक साथ दिखे।

नासा ने ट्वीट किया, 'अंतरिक्ष जटिल है। हम चंद्रयान 2 मिशन के तहत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने की इसरो की कोशिश की सराहना करते हैं। हम हमारी सौर प्रणाली पर मिलकर खोज करने के भविष्य के अवसरों को लेकर उत्साहित हैं। अमेरिका ने इसे भारत के लिए एक बड़ा कदम बताया। अमरीका के दक्षिण और मध्य एशिया के लिए कार्यवाहक सहायक सचिव एलाइस जी वेल्स ने कहा, 'हम इसरो को चंद्रयान 2 पर उनके अविश्वसनीय प्रयासों के लिए बधाई देते हैं। हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत अपनी अंतरिक्ष आकांक्षाओं को हासिल करेगा। उन्होंने यह ट्वीट नासा के उस पोस्ट के साथ किया। इस प्रकार विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के प्रमुखों द्वारा चंद्रयान-2 की प्रशंसा की गई। इसरो के वैज्ञानिक अभी भी विक्रम से संपर्क साधने की कोशिशों में लगे हुए हैं। सभी को उम्मीद है कि चंद्रयान-2 पूरी तरह से कामयाब होगा। ऐसी ही उम्मीद मुझे भी है।

एनआरसी

उच्चतम न्यायालय के दिशा-निर्देश पर विगत 31 अगस्त को राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) की अंतिम सूची जारी कर दी गई। इस सूची में 3,11,21,004 लोग शामिल होने के योग्य पाए गए, यानि की इन सभी नागरिकों को भारतीय नागरिक मान लिया गया है। इसी बिना पर असम सरकार भी कह सकती है कि एनआरसी अद्यतन प्रक्रिया शुरू होने से पूर्व तक असम की कुल आबादी 3 करोड़ 11 लाख 21 हजार 4 थी। वहीं दूसरी ओर 19 लाख 6 हजार 657 लोगों के नाम इस सूची में शामिल नहीं किए अर्थात् इतने लोग अपनी नागरिकता साबित करने से संबंधित जरूरी दस्तावेज जमा नहीं करा पाए। अब इन लोगों को विदेशी पहचान न्यायाधिकरण में दावा ठोंक कर स्वयं को भारतीय नागरिक साबित करना होगा और इसके लिए सरकार की ओर से 120 दिनों का समय दिया गया है। कहा जा सकता है कि एनआरसी की अंतिम सूची का प्रकाशन होते ही असम आंदोलन के बाद वर्ष 1985 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और अखिल असम छात्र संघ के बीच हुए असम समझौते में दर्ज एक मांग भी पूरी हो गई। लेकिन एनआरसी का मामला अभी भी सुलझता नजर नहीं आ रहा है। केंद्र सरकार, राज्य सरकार से लेकर आसू सहित विभिन्न संगठनों ने उच्चतम न्यायालय के प्रति तो अपना विश्वास व्यक्त किया है, लेकिन अंतिम सूची में शामिल नहीं किए गए नामों की संख्या को लेकर असंतोष जताया है। आसू अध्यक्ष दीपांक कुमार नाथ ने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार के नेताओं द्वारा समय-समय पर असम में विदेशी नागरिकों की संख्या से संबंधित जो आंकड़े विधानसभा अथवा लोकसभा के पटल पर पेश किए गए, एनआरसी की अंतिम सूची में शामिल होने से छूट गए लोगों का आंकड़ा उसके करीब भी नहीं पहुंचता। राज्य सरकार ने दो टूक शब्दों में कहा कि भारतीय लोगों के नाम एनआरसी से बाहर रह गए हैं, जबकि बड़ी संख्या में बांग्लादेशी नागरिक अपने नाम एनआरसी में दर्ज कराने में सफल हुए हैं। कांग्रेसी नेता तथा पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई एनआरसी को रद्दी का टुकड़ा बता रहे हैं। अलग-अलग संगठन

इस मामले को एक बार फिर उच्चतम न्यायालय में ले जाने की बात कह गए हैं। इन सभी के बीच नागरिकता कानून संशोधन विरोधी मंच ने एनआरसी की अंतिम सूची का स्वागत करते हुए उम्मीद जताते हुए कहा कि अद्यतन प्रक्रिया में यदि कोई खामियां रह गई हैं तो उन्हें उच्चतम न्यायालय के माध्यम से दूर किया जा सकता है। कुल मिलाकर असम में जारी की गई एनआरसी की अंतिम सूची को लेकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, बिहार के मुख्यमंत्री नितिश कुमार से लेकर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान और ऑल इंडिया मुस्लिम के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी तक के बयान आ रहे हैं। इस सूची के प्रकाशन के बाद सबसे बड़ा सवाल यह है कि सूची से बाहर रह गए 9 लाख 6 हजार 657 लोगों का अब क्या होगा। सरकार ने बार-बार यह स्पष्ट किया है कि ऐसे लोगों को न तो गिरफ्तार किया जाएगा और न ही उनके अधिकारों में किसी भी प्रकार की कटौती की जाएगी। राज्य सरकार ने यह भी कहा है कि गरीब भारतीय नागरिकों को विदेशी पहचान न्यायाधिकरण में अपना दावा पेश करने के लिए जरूरी कानूनी सहायता प्रदान की जाएगी। इसके अलावा जाति, धर्म, मजहब के दायरे से ऊपर उठकर एकाधिक गैर सरकारी समाजसेवी संगठनों ने भी जरूरतमंदों को नि:शुल्क कानूनी मदद उपलब्ध कराने का भरोसा दिया है।

इस बीच संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष शरणार्थी (रिफ्यूजी) अधिकारी ने भारत से यह सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है कि असम में राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) से बाहर किये जाने के बाद कोई भी व्यक्ति राष्ट्र विहीन न हो। शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त फिलिपो ग्रेंडी ने जिनेवा में एक बयान जारी कर अपनी चिंता जाहिर की। इसके जवाब में विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि एनआरसी से बाहर रहे लोग 'राष्ट्र विहीन' नहीं हैं और वे कानून के तहत मौजूद सभी विकल्पों का इस्तेमाल कर लेने तक अपने अधिकारों का पूर्व की तरह उपयोग करते रहेंगे। मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कुमार के अनुसार जिन लोगों के नाम अंतिम सूची में नहीं हैं, उन्हें हिरासत में नहीं लिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि यह सूची बाहर किए गए व्यक्ति को 'राष्ट्र विहीन' नहीं बनाती है और वे पहले से प्राप्त किसी भी अधिकार से वंचित नहीं रहेंगे।

अनुच्छेद 370

विपक्ष के भारी शोर-शराबे के बीच गृह मंत्री अमित शाह ने विगत 5 अगस्त को जब राज्यसभा में जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जे के प्रावधान वाले संविधान के अनुच्छेद 370 तथा अनुच्छेद 35 (ए) को समाप्त करने का संकल्प पेश किया तो न सिर्फ देश बल्कि पूरे विश्व भर में सनसनी फैल गई। श्री शाह ने इसके साथ ही जब जम्मू कश्मीर को दो भाग में बांट कर उसके दोनों हिस्सों को केंद्र शासित प्रदेश बनाने के प्रावधान वाले 'जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधेयक' भी पेश किया तो विपक्ष हैरान रह गया। जम्मू-कश्मीर की राजनीति पर पैनी नजर रखने वाले किसी भी राजनीतिज्ञ ने सोचा भी नहीं था कि केंद्र सरकार ऐसा कदम उठाने की सोच भी रही है। सरकार ने पूरी रणनीति को इतने गुपचुप तरीके से अंजाम दिया कि किसी को भनक तक नहीं लगी। राज्यसभा और लोकसभा में इस विधेयक के दो तिहाई बहुमत से पारित हो जाने के बाद जहां एक ओर

कश्मीर घाटी में तनाव है, वहीं दूसरी ओर पड़ोसी देश पाकिस्तान के हुक्मरान खासे परेशान दिख रहे हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इस मसले को लेकर अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद तक में गुहार लगा चुके हैं। अब पाकिस्तान इस मुद्दे को अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में ले जाने की धमकी दे रहा है। इस बारे में भारत का रूख बिल्कुल साफ है कि यह भारत-पाक का द्विपक्षीय मसला है और इसमें किसी भी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता उसे स्वाकार्य नहीं है। भारत ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि पाकिस्तान के साथ तब तक वार्ता नहीं हो सकती, जब तक वह सीमा पार से आतंक फैलाना बंद न कर दे और दूसरी बात वार्ता यदि होती है तो सिर्फ शिमला समझौते के आधार पर ही होगी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इससे भी दो कदम आगे बढ़कर कहा कि पाकिस्तान के साथ यदि कश्मीर मुद्दे पर बातचीत होती है तो वह सिर्फ पाकिस्तान प्रशासित पाकिस्तान (पीओके) पर आधारित होगी। बात-बात पर स्वयं को परमाणु बम संपन्न देश बताने की गीदड़ भभकी देने वाले पाकिस्तान को इस बार भारतीय रक्षा मंत्री ने करारा जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि वैसे तो 'परमाणु बम का पहले इस्तेमाल नहीं' भारत की पुरानी रक्षा नीति रही है, लेकिन बदलते हालात को देखते हुए इस नीति में बदलाव भी किए जा सकते हैं।

राज्यसभा में कांग्रेसी नेता गुलाम नबी आजाद ने सरकार के इस कदम का पुरजोर विरोध किया। उन्होंने कहा भाजपा वालों ने वोट के चक्कर में कश्मीर के टुकड़े कर दिए और यह दिन देश के लिए 'काला दिन' है। इसके जवाब में श्री शाह ने कहा कि हुर्रियत, आईएसआई, घुसपैठिए इन सब लोगों ने कश्मीर के युवाओं को गुमराह किया है। 1990 से लेकर 2018 तक 41,894 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है। आर्टिकल 370 के कारण ही घाटी में आतंकवाद जन्मा, बढ़ा, पनपा और चरम सीमा पर पहुंचा। उन्होंने कहा जो लोग कश्मीर के युवाओं को उकसाते हैं उनके बेटे-बेटियां लंदन, अमेरिका में पढ़ाई करते हैं, मगर घाटी के युवा को आज भी अनपढ़ रखने, उनका विकास न करने के लिए आर्टिकल 370 बहुत बड़ी बाधक है। इसके बाद जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन बिल राज्यसभा में दो तिहाई बहुमत से पारित हो गया। बिल के समर्थन में 125 वोट और विरोध में 61 वोट पड़े।

इसके एक दिन बाद अर्थात 6 अगस्त को केंद्रीय गृह मंत्री ने लोकसभा में इसे पेश किया। सदन में चर्चा के बाद वोटिंग हुई और जम्मू-कश्मीर राज्य पुनर्गठन विधेयक लोकसभा में भी पास हो गया। इसके पक्ष में 351 वोट पड़े जबकि विपक्ष में 72 वोट पड़े। इससे पहले लोकसभा में इस बिल पर दिनभर चर्चा हुई। कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि कश्मीर मामला संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में लंबित है, इसलिए यह अंदरुनी मसला कैसे हो सकता है। गृहमंत्री ने कहा कश्मीर मसला यूएन ले जाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू थे। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 तथा अनुच्छेद 35 (ए) को समाप्त हो जाने के बाद भी वहां के हालात अभी भी सामान्य नहीं है। लद्दाख के नागरिक, कश्मीरी पंडित और घाटी के अधिकाशं निवासी सरकार के इस फैसले से खुश नजर आते हैं, जबकि बहुत से लोग इस सरकारी फैसले को अपने अस्तित्व, अस्मिता और पहचान से जोड़कर देखते हैं। हुर्रियत, पीडीपी, नेशनल कांफ्रेंस जैसे दलों ने केंद्र सरकार के इस फैसले का घोर विरोध किया है। कश्मीरी अल्पसंख्यक विशेषकर मुसलमानों का मानना है कि इतना बड़ा कदम उठाने से पूर्व उनको भी विश्वास में लिया जाना चाहिए था। जम्मू-कश्मीर के सभी लोगों को देश के साथ जोड़कर रखने की जिम्मेदारी अब सरकार पर है और देखना यह होगा कि सरकार मौजूदा हालात से किस प्रकार निपटती है।

'एक राष्ट्र- एक लाइसेंस' व्यवस्था लागू हो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पहले शासनकाल से प्रशासनिक सुधार का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह उनके दूसरे शासनकाल में आज भी जारी है। मोदी सरकार द्वारा किए जा रहे प्रशासनिक सुधारों का देश के आम नागरिकों द्वारा स्वागत किया जा रहा है, मगर इन सुधार प्रक्रिया के दौरान लोगों को विशेषकर उद्योगपति-उद्यमी, व्यापारी-दुकानदार वर्ग को होने वाली असुविधा-परेशानियों पर भी सरकार को ध्यान देना चाहिए। 8 नवंबर, 2016 की मध्यरात्रि से सरकार द्वारा की गई नोटबंदी के कारण आमजनता को कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ी, यह किसी से भी छिपा नहीं है। बैंक और एटीएम के सामने लगी लंबी-लंबी कतारें और हैरान-परेशान लोगों की झलक आज भी देशवासियों के जेहन में ताजा है। इसके बावजूद देशवासियों ने मोदी सरकार पर अपना भरोसा कायम रखा और यह सोचकर सारे गमों को भूला दिया कि-चलो देश के लिए आगे कुछ अच्छा होगा। इस नोटबंदी से देश ने क्या खोया-क्या पाया, इसकी समीक्षा हमारे अर्थशास्त्रियों को करनी है। लेकिन ऊपरी तौर पर यह तो कहा ही जा सकता है कि इस नोटबंदी से देश के उद्योगपति और व्यापारियों को अनेकों मुसीबतें उठानी पड़ी।

पिछले दिनों 'एक राष्ट्र एक चुनाव' की भी बात सुनाई दी। राष्ट्रीय चुनाव आयोग ऐसी संभावनाओं पर विचार कर रहा है। सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी की दलील है कि देश भर में लोकसभा और विधानसभा के एक साथ चुनाव कराए जाने पर न सिर्फ देश के पैसे बचेंगे, बल्कि विकास को भी रफ्तार मिलेगी।

भाजपा की दलील है कि अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग समय पर विधानसभा के चुनाव होने केकारण अलग-अलग चुनाव आचार संहिता लगानी पड़ती है और इस वजह से संबंधित राज्य में सरकारी विकास की गतिविधियां ठप्प पड़ जाती है। इसके अलावा विधानसभा चुनाव प्रचार के नाम पर भी पार्टी-उम्मीदवार और सरकार के हजारों करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। सरकार चाहती है कि देश में यदि एक ही समय पर लोकसभा-विधानसभा के चुनाव हों तो चुनाव आचार संहिता लगाने से लेकर पार्टी-उम्मीदवार और सरकार के प्रचार-प्रसार पर होने वाले लाखों करोड़ों रुपए का खर्च भी बच जाएगा। इस मुद्दे पर विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ विचार-विमर्श जारी है।

अब सवाल उठता है कि क्या इसी तर्ज पर देश भर में एक लाइसेंस व्यवस्था लागू नहीं की जा सकती। यदि ऐसा होता है तो यह न सिर्फ देश के विकास के लिए एक सार्थक कदम होगा, बल्कि उद्योगपति-व्यापारियों की मुसीबतों को कम करने और अफसरशाही को खत्म करने वाला कदम साबित हो सकता है। जब सभी प्रकार के कर को 'जीएसटी' कर व्यवस्था में समाहित किया जा सकता है तो फिर विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा जारी किए जाने वाले अलग-अलग लाइसेंस को एक ही लाइसेंस में समाहित क्यों नहीं किया जा सकता। बेहतर हो कि एकल खिड़की व्यवस्था के माध्यम से आवेदनकर्ता एक ही फार्म में सभी प्रकार की जानकारी दे और उचित जांच करने के बाद संबंधित विभाग उसे संयुक्त रूप से एक लाइसेंस प्रदान करे। इससे देश के व्यापार-वाणिज्य, उद्योग-धंधे में गजब का उछाल आ सकता है। तय समय में देश को यदि विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था वाला देश बनाना है तो सरकार को लीक से हटकर इसके उपाय भी सोचने पड़ेंगे। पुरानी लकीर को पीटकर नया इतिहास नहीं बनाया जा सकता। सरकार को चाहिए कि इस मसले पर विचार-विमर्श का एक सिलसिला शुरू करें। विचार-विमर्श की इस शृंखला में उद्योगपति-उद्यमी, व्यापारी, दुकानदार, संबंधित सरकारी विभाग के प्रतिनिधि, राज्य सरकारें, नगर निगम, निकाय आदि को शामिल किया जा सकता है। इस विचार-विमर्श से जो रास्ता निकलेगा, मुझे विश्वास है वह रास्ता 'एक राष्ट्र- एक लाइसेंस' व्यवस्था से होकर गुजरेगा।

तीन तलाक बिल

विवादों और लंबी बहस के बीच तीन तलाक बिल (मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण 2019) आखिरकार 30 जुलाई, 2019 को राज्य सभा से भी पारित हो ही गया। इसके ठीक दो दिन बाद एक अगस्त को राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद द्वारा दोनों संसदों में पारित तीन तलाक विधेयक को अपनी मंजूरी देने के बाद अब यह एक कानून बन चुका है। इस कानून में अपनी पत्नी को तीन तलाक के जरिए छोड़ने वाले मुस्लिम पुरुष को तीन साल तक की सजा हो सकती है। सरकार की दलील है कि इस कानून के बनने से मुस्लिम पुरुषों में तीन साल तक सजा भुगतने का डर पैदा होगा, जिससे तीन तलाक की घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सकेगा। राज्य सभा में तीन तलाक बिल के पास होने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर कहा, '' पूरे देश के लिए आज एक ऐतिहासिक दिन है। आज करोड़ों मुस्लिम माताओं-बहनों की जीत हुई है और उन्हें सम्मान से जीने का हक मिला है। सदियों से तीन तलाक की कुप्रथा से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं को आज न्याय मिला है। इस ऐतिहासिक मौके पर मैं सभी सांसदों का आभार व्यक्त करता हूं।'' वैसे भी विभिन्न राजनीतिक दलों में तीन तलाक बिल को लेकर शुरू से ही मतभेद थे। इसके अलावा इस्लामी धर्मगुरु और मुस्लिम महिलाएं भी इसको लेकर आमने-सामने थीं। इस्लामी धर्म गुरु सरकार के इस फैसले को जहां उनके धार्मिक मामले में सरकारी दखलअंदाजी बता रहे थे, वहीं दूसरी ओर मुस्लिम महिलाएं इसे अपने स्वाभिमान, सशक्तिकरण और स्वाधीनता से जोड़कर देख रही थी। राज्यसभा में कांग्रेस के नेता गुलाम नबी आजाद ने इस विधेयक को लेकर सरकार की मंशा पर सवाल उठाते हुए इसे मुस्लिमों के घरों को बर्बाद करने की साजिश बताया। उन्होंने कहा सबसे अच्छा है कि मुसलमानों के घरों में घर के चिराग से आग लगाओ। घर भी जल जाएगा और किसी को आपत्ति भी नहीं

होगी।

वहीं राज्य सभा में इस विधेयक पर हो रही चर्चा पर जवाब देते हुए देश के कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि यह विधेयक मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाने के मकसद से लाया गया है और इस मुद्दे को राजनीतिक चश्मे या वोट बैंक की राजनीति के नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह मानवता का सवाल है। यह महिलाओं को न्याय दिलाने के मकसद से एवं उनकी गरिमा तथा अधिकारिता सुनिश्चित करने के लिए पेश किया गया है और इससे लैंगिक गरिमा एवं समानता भी सुनिश्चित होगी। राज्य सभा में इस पर चार घंटे से अधिक समय तक चली बहस के दौरान अधिकतर विपक्षी पार्टियां इस विधेयक के विरोध में खड़ी नजर आईं। कांग्रेस सहित अन्नाद्रमुक, वाईएसआर कांग्रेस, सपा ने भी तीन तलाक संबंधी विधेयक को सेलेक्ट कमेटी में भेजे जाने की मांग की। वहीं चर्चा में भाग लेते हुए एनडीए के घटक जेडीयू ने भी इसका विरोध किया। जेडीयू के वशिष्ठ नारायण सिंह ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि वह न तो विधेयक के समर्थन में बोलेंगे और न ही इसमें साथ देंगे। इसके बाद जेडीयू सदस्यों ने विधेयक का विरोध करते हुए सदन से बहिर्गमन कर लिया। चर्चा के दौरान विपक्षी दलों के इस विधेयक के खिलाफ खड़े होने और सरकार के पास बहुमत नहीं होने की वजह से सरकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती इस विधेयक को राज्य सभा में पास कराने की थी। दिलचस्प है कि मोदी सरकार के इस बिल से विपक्ष सहमत नहीं था, फिर भी वह इसके पास होने से रोकने में नाकाम रहा। बात जब विधेयक पर मतदान की आई तो इस पर विपक्ष राज्यसभा में बंटा हुआ नजर आया और विधेयक 99-84 वोट से पास हो गया। इसे मोदी सरकार के शानदार फ्लोर मैनेजमेंट के तौर पर देखा जा रहा है। अब सरकार के पास सबसे बड़ी चुनौती सामने मुस्लिम महिलाओं के जीवनस्तर को सुधारने की होगी। राज्यसभा में चर्चा के दौरान बहुत से सवाल अनुत्तरित रह गए, जिनमें यह सवाल भी शामिल थे कि शौहर को यदि तीन साल की सजा हो गई तो उसकी बीबी-बच्चों का गुजारा कैसे चलेगा और सजा काटकर आए शौहर के साथ उसकी बीबी का संबंध क्या आगे भी बना रहेगा। इन सवालों के जवाब सरकार को खोजने भी होंगे और देश को देने भी होंगे।

एक अपील, संपन्न लोग सरकारी सब्सिडी छोड़ें

देश के अमीर वर्ग के लोग यदि सरकार की ओर से दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की सब्सिडी लेना छोड़ दें तो देश के करोड़ों गरीबों का भला हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह सोच भले ही अभी तक आंदोलन का रूप नहीं ले सकी है, मगर देशवासियों को इस पर चिंतन-मनन करने पर जरूर प्रेरित किया है। आपको याद होगा प्रधानमंत्री ने देश के धनी परिवारों से एलपीजी गैस पर दी जाने वाली सरकारी सब्सिडी को छोड़ने की अपील की थी। इसके सुखद परिणाम भी देखने को मिले हैं, प्रधानमंत्री की अपील को गंभीरता से लेते हुए करोड़ों एलपीजी गैस उपभोक्ता स्वेच्छा से सरकारी सब्सिडी छोड़ चुके हैं। धनी एवं संपन्न परिवारों से रसोई गैस सब्सिडी छोड़ने का सीधा फायदा उन गरीब महिलाओं को मिला, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी गीली लकड़ी के धुएं में खाना पकाने में गुजार दी। प्रधानमंत्री की इस अपील का असर होते देख सरकार 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना' लेकर आई, ताकि देश के गरीब परिवारों की महिलाओं के चेहरों पर खुशी लाई जा सके। केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2016 की 1 मई को इस योजना का शुभारंभ किया गया। यह योजना पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सहयोग से चलाई जा रही है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 2020 तक आठ करोड़ गरीब परिवारों को नि:शुल्क गैस कनेक्शन देने का लक्ष्य तय किया गया है। इस योजना की सफलता में यह बात उभरकर सामने आई कि आप जब जनकल्याण के लिए अपना हक छोड़ते हैं तो उसका फायदा जरूरतमंद तक जरूर पहुंचता है। आज देश के धनी वर्ग द्वारा सरकार द्वारा प्रदत्त सब्सिडी छोड़ने का ही नतीजा है कि करोड़ों गरीबों की रसोई में एलपीजी गैस वाले चुल्हे जल रहे हैं।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की अपार सफलता के बाद इस बात की भी

चर्चा होने लगी है कि क्यों न देश का धनी वर्ग अन्य सभी प्रकार की सब्सिडी लेना भी छोड़ दें। रेलवे मंत्रालय देश के वरिष्ठ नागरिकों के अलावा मंत्री-सांसद जैसे विशिष्ट-अति विशिष्ट नागरिकों को रियायती दरों पर टिकट-पास आदि जारी करता है। देश के सक्षम नागरिक यदि रेलवे विभाग द्वारा दी जाने वाली ऐसी सब्सिडी युक्त सुविधाएं लेने से इनकार कर दे तो इसका सीधा फायदा गरीब रेल यात्रियों तक पहुंचाया जा सकता है। दरअसल अपने हक अथवा प्राप्य को छोड़ने के लिए कोई किसी को भी बाध्य नहीं कर सकता। यह तो स्वेच्छा से की जाने वाली एक प्रकार की समाजसेवा है। यह बात सभी जानते हैं कि हमारे देश के मंत्री, सांसद-विधायकों को आकर्षक वेतन के अलावा ढेर सारी सरकारी सुविधाएं उपलब्ध है। इन सुविधाओं के नाम पर हजारों-करोड़ों रुपए खर्च किए जाते हैं। टैक्स के रूप में मिली देश की जनता की गाढ़े पसीने की कमाई को कितनी बेहतर तरीके से खर्च किया जाए, इस पर चिंतन करने का वक्त आ गया है। संसद की कैंटीन हमेशा ही चर्चाओं में रहती है। हिंद वेब न्यूज पोर्टल 'आजतक' पर पिछले साल की 22 जून को उपलब्ध एक समाचार के अनुसार संसद की कैंटीन में कॉफी 5 रुपए, चिकन करी 50 रुपए, फिश करी 40 रुपए और शाकाहारी थाली 35 रुपए में उपलब्ध है। लेकिन ये सस्ता खाना आम आदमी के लिए नहीं है, सिर्फ चुनिंदा लोगों केलिए ही है। संसद की कैंटीन में ब्रेड एंड बटर 6 रुपए, चपाती 2 रुपए, चिकन कटलेट प्लेट 41 रुपए, चिकन तंदूरी 60 रुपए, डोसा प्लेन 12 रुपए, हैदराबादी चिकन बिरयानी 65 रुपए, मटन करी 45 रुपए, उबले चावल 7 रुपए और सूप 14 रुपए की दर पर मिलता है। इसके अलावा सांसदों को हवाई यात्रा से लेकर रेल के भी पास मिलते हैं। मैं यह नहीं कहता कि सभी मंत्री- सांसदों को ऐसी सरकारी सुविधाओं का लाभ नहीं लेना चाहिए, मगर यदि सक्षम सांसद स्वेच्छा से ऐसी सरकारी सुविधाएं लेने से इनकार करता है तो इससे जनता में एक अच्छा पैगाम जाएगा। वैसे भी देश की जनता यह भी जानती है कि योग्यता के कारण एक ही परिवार के सदस्यों को रहने के लिए नई दिल्ली में अलग-अलग बंगले आवंटित है। वह लोग चाहे तो सभी सदस्य एक ही सरकारी बंगले में रह सकते हैं। इस तरह से बचे पैसों को देश की गरीब जनता की भलाई के लिए खर्च किया जा सकता है।

असम की भीषण बाढ़

देश के अन्य कई हिस्सों के साथ-साथ असम भी भीषण बाढ़ की चपेट में है। एक-आध जिले को छोड़ लगभग पूरा राज्य ही बाढ़ की विभीषिका को झेल रहा है। सरकार की ओर से 15 जुलाई, 2019 को जारी आंकड़ों के अनुसार राज्य के कुल 33 में से 30 जिलों के 4157 गांव बाढ़ की चपेट में है और इस कारण 14 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है। असम राज्य आपदा प्रबंधन की रिपोर्ट के अनुसार कुल 42,86,421 लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। बाढ़ प्रभावित जिलों की सूची में धेमाजी, लखीमपुर, बिश्वनाथ, शोणितपुर, दरंग, बाक्सा, बरपेटा, नलबाड़ी, चिरांग, उदालगुड़ी, बंगाईगांव, कोकराझाड़, दक्षिण शालमारा, ग्वालपाड़ा, कामरूप, कामरूप(नगर), मोरीगांव, होजाई, नगांव, गोलाघाट, माजुली, जोरहाट, शिवसागर, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, कछार, पश्चिम कार्बी आंग्लोंग, हैलाकांदी, करीमगंज और धुबड़ी शामिल हैं। इसके अलावा काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान भी बाढ़ की चपेट में है। उद्यान में बाढ़ का पानी घुस जाने से करीब एक दर्जन वन्यप्राणी की डूबने से मौत हो गई है। उद्यान का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा इस समय बाढ़ से डूबा हुआ है। वैसे तो बाढ़ और भूस्खलन असम के लिए कोई नई बात नहीं है। असम में हर साल बाढ़ आती है, जिसकी वजह से जान-माल के अलावा खेती-फसल का भारी नुकसान भी होता है। लेकिन इस बार जैसी भीषण बाढ़ पिछले कई सालों में नहीं आई। बाढ़ की भीषणता को देखते हुए अब तक हुए जानमाल के नुकसान का ऊपरी तौर पर आंकलन किया जाए तो यह अन्य सालों की अपेक्षा कम नजर आता है। माना जा रहा है कि राज्य सरकार द्वारा बाढ़ से निपटने के लिए की गई पूर्व तैयारियों के कारण इस बार बाढ़ में कम जानमाल का नुकसान हुआ। वैसे भी बाढ़ से हुए नुकसान का सही आंकलन लगाने के लिए हमें अभी और कई दिन का इंतजार करना होगा। बाढ़ से पहले ही राज्य सरकार ने काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में जगह-जगह ऊंचें टीलों का निर्माण कराया था, जिसके कारण जैसे ही बाढ़ का पानी उद्यान में घुसा, उद्यान के वन्यप्राणी इन टीलों पर चढ़ गए। इस कारण

बहुत से वन्यप्राणियों की जान बच गई। इसके अलावा बाढ़ प्रभावितों की मदद के लिए भी सरकार ने पहले से ही तैयारियां कर रखी थी। इसके लिए असम राज्य आपदा प्रबंधन बल और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन बल की टीमों को पहले से ही तैयार रखा गया था। सिर्फ यही बाढ़ का बचाव व राहत अभियान पैसों की कमी के कारण प्रभावित न हो, इसके लिए राज्य सरकार ने पहले से ही पर्याप्त धनराशि का प्रबंध कर लिया था। इसके अलावा बाढ़ से निपटने के लिए केंद्र सरकार की ओर से भी राज्य सरकार को बाढ़ से निपटने और बाढ़ पीड़ित लोगों की मदद के लिए त्वरित रूप से 251.55 करोड़ रुपए जारी किए गए। इस तरह से देखा जाए तो राज्य में आई भीषण बाढ़ के बावजूद पूरी स्थिति राज्य सरकार के नियंत्रण में है। राज्य सरकार के पास पैसों से लेकर संसाधन तक किसी भी चीज की कोई कमी नहीं है। ऊपर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह द्वारा मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल से फोन पर बाढ़ की स्थिति की जानकारी लेना यह साबित करता है कि असम की बाढ़ को लेकर केंद्र सरकार भी पूरी तरह से गंभीर है।

अब आज के और बाढ़ से बाद के हालातों से निपटने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। बाढ़ के बाद राज्य में किस तरह के हालात पैदा होने वाले हैं, इसका अंदाजा सभी को है। राहत शिविरों में ठहरे लाखों बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री की व्यवस्था करने से लेकर उनको उनके घरों तक पहुंचाना, बाढ़ से क्षतिग्रस्त पुल, सड़क, सरकारी भवन, स्कूल, बांध आदि की मरम्मत करना सरकार की अगली चुनौतियां होंगी। इन सब के बीच सबसे अच्छी बात यह है कि राज्यवासी और राज्य के विभिन्न समाजसेवी संगठन इन बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आने को आतुर हैं। समाजसेवी संगठनों द्वारा प्रदत्त राहत सामग्री जरूरतमंद बाढ़ पीड़ितों तक पहुंचे, इसके लिए जिला प्रशासन को अभी से तत्पर होना होगा। किस इलाके में किस वस्तु की कमी है, इसका भी आंकलन समय रहते कर लिए जाने की जरूरत है। कुल मिलाकर एक ओर जहां राज्य भीषण बाढ़ की चपेट में है, वहीं दूसरी और इस संकट की घड़ी से दो-दो हाथ करने के भी मूड में नजर आते हैं। सरकारी मशीनरी, जनता की मदद और समाजसेवी संगठनों की सक्रियता से इस साल आई बाढ़ से भी निपटा जा सकता है।

कैसे होगा खेल प्रतिभाओं का विकास

मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल का सपना गुवाहाटी को खेलों की राष्ट्रीय राजधानी बनाने की है। इस दिशा में किए जा रहे प्रयास भी अब नजर आने लगे हैं। इसी का नतीजा है कि अब यहां आए दिन राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहता है। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस असम क्रिकेट संघ का नव-निर्मित स्टेडियम सरकार की नीयत को स्पष्ट करता है कि वह वाकई में खेल को लेकर गंभीर है। सोनोवाल सरकार द्वारा खेल नीति बनाकर उसके माध्यम से राज्य के खिलाड़ियों को आर्थिक सहयोग देने के अलावा प्रोत्साहित करना भी प्रशंसनीय है। कुल मिलाकर देखा जाए तो राज्य में अब खेल का माहौल बनने लगा है। वैसे तो राज्य में खेल का माहौल वर्ष 2007 में गुवाहाटी में हुए 33वें राष्ट्रीय खेल के दौरान ही बनने लगा था। उग्रवादी संगठन अल्फा की लाख धमकियों के बावजूद तब की तरुण गोगोई सरकार ने राष्ट्रीय खेलों का सफल आयोजन करवाकर ही दम लिया। 33वें राष्ट्रीय खेलों को हम राज्य में खेल के विकास की नींव भी कह सकते हैं। उसी दौरान गुवाहाटी के सरुसजाई में इंदिरा गांधी एथलेटिक स्टेडियम के अलावा अन्य कई स्टेडियमों का भी निर्माण कराया गया। इंदिरा गांधी एथलेटिक स्टेडियम में दर्शकों के बैठने की क्षमता करीब 30 हजार बताई जाती है। वर्ष 2017 की 8 अक्टूबर से खेले गए अंडर-17 फीफा फुटबॉल मैच को असम के खेल जगत के लिए मील का पत्थर कहा जा सकता है। यहां सरुसजाई स्थित इंदिरा गांधी स्टेडियम में कुल नौ मैच खेले गए थे। गुवाहाटी जैसे शहर में फीफा के मैच आयोजित कराना

राज्य सरकार के लिए भी आसान काम नहीं था, लेकिन सर्वानंद सोनोवाल सरकार ने हर हाल में फीफा के मैच आयोजित कराने की ठान रखी थी। इसके लिए स्टेडियम में नए निर्माण से लेकर कई बड़े बदलाव तक करने पड़े। इसी तरह से राज्य में खेल केविकास की जमीन तैयार व पुख्ता होने लगी। इसकेबाद जैसे ही सरकार ने गुवाहाटी को खेल की राष्ट्रीय राजधानी बनाने की घोषणा की पूरे माहौल में बदलाव दिखने लगा। धिंग जैसे छोटे से गांव से हिमा दास जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की धावक का उभरकर सामने आना, यह साबित करता है कि असम में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। राज्य केगांवों में आज भी ढेर सारी प्रतिभाएं छिपी हुई हैं। इन सभी प्रतिभाओं का विकास करकेही गुवाहाटी को खेल की राष्ट्रीय राजधानी बनाया जा सकता है। इन ग्रामीण प्रतिभाओं का विकास तभी संभव है, जब गांवों में खेलों की न्यूनतम सुविधाएं हो। वैसे तो असम के लगभग सभी गांवों में मैदान है, लेकिन उन गांवों को खेल मैदान के रूप में विकसित किए जाने की जरूरत है। कभी-कभी प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को उनके घर की कमजोर आर्थिक स्थिति उनको आगे बढ़ने से रोक देती है। इस कारण से कभी-कभी तो प्रतिभा परवान चढ़ने से पहले ही दम तोड़ देती है। सरकार को इन प्रतिभाओं पर विशेष ध्यान देना होगा। ग्रामीण असम की खेल प्रतिभाएं जब गुवाहाटी आकर पल्लवित होगी तभी गुवाहाटी को खेल की राजधानी बनाने का उद्देश्य पूरा होगा। खेल की राजधानी का उद्देश्य सिर्फ राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। लिहाजा ग्रामीण असम की खेल प्रतिभाओं को उचित संरक्षण, प्रशिक्षण और मंच उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी सरकार को उठानी ही होगी। लेकिन इतना बड़ा काम पूरा करना एक अकेले सरकार के बूते की बात नहीं है। इस कार्य में बहुर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय कंपनियों से भी आर्थिक सहयोग लिया जाता है। आजकल कारपोरेट समाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) कोष के माध्यम से ही खेल और खिलाड़ियों को बढ़ावा देने का चलन चल निकला है। इसके अलावा विभिन्न खेल संगठन, क्लब आदि भी सरकार की इस सोच को आगे बढ़ाने में सहयोग कर सकते हैं। इससे भी बड़ी बात यह सोचने की है कि किसी खिलाड़ी को आगे बढ़ाने में आप और हम कैसे मददगार हो सकते हैं।

रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला और तामुलबाड़ी चाय बागान

आज की युवा पीढ़ी को डिब्रूगढ़ जिले के तामुलबाड़ी चाय बागान के ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व के बारे में शायद ही कोई जानकारी होगी। यदि नहीं है तो इसके लिए हमारी युवा पीढ़ी नहीं, हम जिम्मेदार हैं कि हमने उन तक यह जानकारी नहीं पहुंचाई कि इसी चाय बागान में वर्ष 1903 की 17 जून को रूपकुंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाला का जन्म हुआ था। तामुलबाड़ी चाय बागान में ही असमिया साहित्य के उस महान हस्ताक्षर का जीवन सफर प्रारंभ हुआ, जिन्होंने आगे चलकर असमिया साहित्य, कला, संस्कृति क्षेत्र को विश्व पटल पर स्थापित करने का काम किया। युवा पीढ़ी को पुनः इस चाय बागान के प्रति आकर्षित करने के लिए तामुलबाड़ी टी कंपनी प्राइवेट लिमिटेड ने विगत 17 जून को एक कार्यक्रम का आयोजन कर रूपकुंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाला की आवक्ष मूर्ति का अनावरण किया। कहने को यह एक साधारण है मगर यह मूर्ति असमिया साहित्य और संस्कृति से जुड़े एक युवा के लिए आकर्षण का केंद्र भी बन सकती है। चाय बागान प्रबंधन द्वारा उठाए गए इस कदम की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि इतने सालों से उपेक्षित पड़े इस चाय बागान को एक पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने में राज्य सरकार और पर्यटक विभाग समुचित कदम उठाएगा। यह बात बड़े ही अफसोस के साथ कहनी पड़ती है कि हमारे साहित्यकार, स्वतंत्रता सेनानी जैसे महान पुरुषों की स्मृति को संजोकर रखने में हम नाकाम साबित हुए हैं। ओडिसा के संबलपुर स्थित रसराज लखीनाथ बेजबरुवा के निवासस्थल के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए असम और ओडिसा सरकार से अनुनय-विनय करनी पड़ रही है। लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै के पुराने मकान को कब का ढहा दिया गया और रूपकुंवर का इतिहास भी युवा पीढ़ी भूलने के कगार पर है।

जिस दिन रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला की आवक्ष मूर्ति का अनावरण

किया गया, उस दिन रूपकुंवर की तीनों बेटियां जयश्री चालिहा, सत्यश्री दास और ज्ञानश्री पाठक भी उक्त कार्यक्रम में उपस्थित थीं। इतिहास के पन्ने पलटने से पता चलता है कि वर्ष 1868 में हरिविलास अग्रवाला ने डिब्रूगढ़ के तामुलबाड़ी में चाय बागान की स्थापना की थी। बाद में वित्तीय समस्याओं के चलते जब उन्होंने इस चाय बागान को बेचने का निर्णय लिया तो चंद्रप्रकाश अग्रवाला ने उनको रोका और चाय बागान का संचालन करने के लिए वे कलकत्ता से तामुलबाड़ी आ गए। थोड़े दिन बाद भाई की मदद करने के लिए तेजपुर से परमानंद अग्रवाला भी तामुलबाड़ी आ गए। यहीं ज्योति प्रसाद का जन्म हुआ। बाद में वे अपनी पत्नी किरणमयी और ज्योति प्रसाद को लेकर तेजपुर लौट गए। बाद में वे फिर डिब्रूगढ़ आए और ज्योतिप्रसाद का दाखिला डिब्रूगढ़ बालक सरकारी हाईस्कूल में कराया। बाद में उन्होंने तेजपुर से मैट्रिक की परीक्षा पास की। पढ़ाई के दौरान ही उनका झुकाव असमिया साहित्य-संस्कृति के प्रति हो गया था। बाद में वे तामुलबाड़ी चाय बागान के साथ भी जुड़ गए। चाय बागान के मुख्य संचालक के तौर पर उन्होंने चाय मजदूरों के स्वास्थ्य और उनके बच्चों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया। चाय बागान में चाय मजदूरों के बच्चों की पढ़ाई के लिए स्कूल खोला गया। ज्योतिप्रसाद स्वयं चाय बागान के मजदूर और उनके बच्चों की होमियोपैथी चिकित्सा किया करते थे। रूपकुंवर के निधन के बाद उनके परिवार के सदस्यों ने चाय बागान को एक व्यवसायी के हाथों बेच दिया और इस तरह थोड़े ही दिनों बाद तामुलबाड़ी चाय बागान पूरी तरह से उपेक्षित हो गया। संरक्षण के अभाव में तामुलबाड़ी चाय बागान में स्थित ज्योतिप्रसाद अग्रवाला का ऐतिहासिक निवासस्थल भी खंडहर में तब्दील होने लगा। ऐसे में चाय बागान से जुड़े कई विशिष्ट व्यक्ति सामने आए और उन्होंने 'ज्योति तीर्थ सांस्कृतिक प्रकल्प' के माध्यम से न सिर्फ ज्योतिप्रसाद के निवास का पुनर्निर्माण कराया, बल्कि उनकी यादों से जुड़ी अन्य सामग्री, स्थान आदि के संरक्षण में भी जुटे हैं। इस महान कार्य में देवी प्रसाद बगड़ोदिया के अलावा सुनील और सुमित नामक अन्य दो व्यक्ति की भूमिका उल्लेखनीय है। मालूम हो कि तामुलबाड़ी चाय बागान के निदेशक श्री बगड़ोदिया रूपकुंवर पर कई पुस्तकें लिखने के अलावा उनकी रचनावली का भी अनुवाद कर चुके हैं।

अंबुवासी मेला

शक्तिपीठ कामाख्या में प्रति वर्ष लगने वाले अंबुवासी मेले का स्वरूप आहिस्ता-आहिस्ता राष्ट्रव्यापी होता जा रहा है। इससे पहले कुंभ के मेले में ही लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ जुटा करती थी लेकिन पिछले कई सालों से अंबुवासी मेले में भी जुटने वाली भीड़ भी दहाई लाख में जुटने लगी है। वर्ष 2018 में करीब 20 लाख श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी थी और इस साल 25 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के जुटने की बात कही जा रही है। अंबुवासी मेले को सफल बनाने के लिए मेला परिचालन समिति, कामरूप महानगर जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, पर्यटन विभाग के अलावा राज्य सरकार के तमाम संबंधित विभाग पिछले कई महीनों से काम में जुटे हुए हैं। राज्य सरकार की कोशिश अंबुवासी मेले को इस बार के कुंभ जैसा स्वरूप देने की है। जहां साधु-संन्यासी और श्रद्धालुओं के लिए ठहरने-रुकने-खाने से लेकर सुरक्षा और साफ-सफाई की उत्तम व्यवस्था हो। इन्हीं सब बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए मेले के परिसर को नीलाचल पहाड़ के सीमित दायरे से निकालकर बड़ा कर दिया गया है। मेले का उद्घाटन कामाख्या मंदिर परिसर में नहीं, बल्कि 21 जून की शाम सोनाराम फील्ड में मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल के कर-कमलों द्वारा किया जाएगा। मेले को आकर्षक और राष्ट्र व्यापी बनाने के लिए इस मौके पर बालीवुड के प्रख्यात गायक कैलाश खेर को देवी वंदना प्रस्तुत करने के लिए और दिव्य ज्योति संस्थान की साध्वी अदिति भारती 22 से 28 जून की अपराह्न 3 बजे देवी भागवत कथा का रसास्वादन कराने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित कर बुलाया गया है। मेले में जनाकर्षण और श्रद्धालुओं की सुविधाओं को सर्वोच्च तवज्जो दी गई है। बाहर

से आने वाले श्रद्धालुओं के रहने-खाने की व्यवस्था पहाड़ी से स्थानांतरित कर नीचे की गई है। नीचे फैंसीबाजार के पुराने जेल परिसर, पांडू रेल स्टेशन, बोरीपाड़ा हाईस्कूल खेल मैदान और नाहरबाड़ी में चार अस्थायी शिविर बनाए गए हैं। पिछले साल की तुलना में इस साल शिविरों की संख्या कम की गई है, मगर इनमें ठहरने वाले यात्रियों की संख्या पिछले साल के मुकाबले कई गुणा अधिक होगी। फैंसीबाजार के पुराने जेल परिसर में बने शिविर में 20 से 25 हजार श्रद्धालुओं के ठहरने-खाने की व्यवस्था है। इन सभी शिविरों में साफ-सफाई, स्वच्छता, शौचालय, पेयजल आदि की उत्तम व्यवस्था की गई है। इससे पहले जगह-जगह अन्न क्षेत्र खोल दिए जाने की वजह से अफरा-तफरी पैदा हो जाया करती थी लेकिन इस बार जहां-तहां अन्न क्षेत्र खोलने अथवा खाद्य सामग्री वितरण करने की अनुमति नहीं दी गई है। जिला उपायुक्त की अनुमति के अनुसार तय स्थान पर ही अन्न क्षेत्र लगाए गए हैं। पहले बाहरी राज्यों से आने वाले श्रद्धालुगण 5-7 दिनों के लिए कामाख्या धाम तक ही सिमटकर रह जाते थे। इनको न तो नीलाचल पहाड़ के चारों ओर बिखरे पड़े सौंदर्य को देखने का मौका मिलता था और न ही गुवाहाटी के अन्य धार्मिक-ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल के भ्रमण की सुविधा मिलती थी। इस साल वयोवृद्ध, दिव्यांग, बीमार आदि श्रद्धालुओं को छोड़ अन्य सभी श्रद्धालुओं से आग्रह किया गया है कि वे मां कामाख्या मंदिर तक नीचे से पैदल चलकर जाए। इसके लिए मुख्य मार्ग को छोड़ अन्य तीन और मार्ग विकसित किए गए हैं। इन चारों मार्ग पर श्रद्धालुओं के सुस्ताने से लेकर पेयजल, भजन-कीर्तन सहित सभी प्रकार के प्रबंध किए गए हैं। इस साल अंबुवासी मेले को लेकर बंगाल, बिहार, गुजरात, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश में बड़े पैमाने पर प्रचार अभियान चलाया गया था। इसके लिए रेडियो-टेलीविजन, स्थानीय टीवी चैनलों के अलावा विज्ञापन एजेंसियों की सेवाएं ली गई ताकि अधिक से अधिक श्रद्धालुओं को आकर्षित किया जा सके। इस बात में कोई संदेह नहीं कि अंबुवासी मेले के प्रचार-प्रसार और ब्रांडिंग को लेकर राज्य सरकार तथा अन्य संबंधित विभाग पहले से अधिक संवेदनशील हुए हैं। इससे राज्य में आने वाले पर्यटकों की संख्या में इजाफे की उम्मीद तो की ही जा सकती है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भारत का उपहार

'वसुधैव कुटुम्बकम्' सनातन धर्म का मूल संस्कार तथा विचारधारा रही है। यह वाक्य महा उपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिपिबद्ध है। इसका अर्थ होता है 'धरती ही परिवार है' (वसुधा एवं कुटुम्बकम्)। यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है। भारतीय चिंतन में पूरे विश्व के कल्याण और प्राणियों में सद्भावना की कामना की गई है। 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' विश्व को सिर्फ भारत का उपहार ही नहीं है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का प्रकटीकरण भी है। देश-दुनिया में हर साल 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। यह दिन वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से इसकी पहल की थी। जिसके बाद 21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया गया। वर्ष 2014 की 11 दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र में 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। प्रधानमंत्री मोदी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया। वर्ष 2015 की 21 जून को पहली बार विश्व भर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर देश का मुख्य कार्यक्रम रांची के प्रभात तारा मैदान में आयोजित होगा, जिसमें स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शामिल होंगे।

वैसे भी योग-ध्यान भारतीय आध्यात्म का अंग रहे हैं। भारतीय साधक

व मनीषों ने हिमालय की कंदराओं में जाकर योग साधना की है। योग को निरोगी शरीर और स्वस्थ्य जीवन की कुंजी भी कहा जा सकता है। विज्ञान में यह बातें साबित हो चुकी हैं कि कई प्रकार की बीमारियां योग करने वालों के पास तक नहीं फटकती। हमारे देश में योग को आगे बढ़ाने में बाबा रामदेव और श्रीश्री रविशंकर भी उल्लेखनीय भूमिका रहे हैं। बाबा रामदेव ने तो देश भर में योग शिविरों का आयोजन कर भारत की इस प्राचीन विद्या को घर-घर पहुंचा दिया था। योग के महत्व पर बल देते हुए श्रीश्री रविशंकर ने कहा कि योग आप को फिर से एक बच्चे की तरह बना देता है, जहां योग और वेदांत है, वहां कोई कमी, अशुद्धता, अज्ञानता और अन्याय नहीं है। हमें हर किसी के दरवाजे तक योग को ले जाकर दुनिया को दुखों से मुक्त कराने की आवश्यकता है। हमारे देश भारत में योग का इतिहास लगभग 5000 साल पुराना है। मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्म के रूप में लोग प्राचीन काल से ही इसका अभ्यास करते आ रहे हैं। योग की उत्पत्ति सर्वप्रथम भारत में ही हुई, इसके बाद यह दुनिया के अन्य देशों में लोकप्रिय हुआ। प्राचीन काल में यहां लोग मस्तिष्क की शांति के लिए ध्यान करते थे। योग की उत्पत्ति भगवान शिव से हुई है, जिन्हें 'आदि योगी' के नाम से भी जाना जाता है। भगवान शिव को दुनिया भर के योगियों का गुरू माना जाता है। इसके बाद ऋषि-मुनियों ने योग को लोकप्रिय बनाया और योग ने दुनिया भर में ख्याति अर्जित की। आज सूर्य नमस्कार (Sun Salutation), अनुलोम-विलोम सहित कई योगासन एवं ध्यान का अभ्यास तन को स्वस्थ रखने एवं मस्तिष्क को शांत रखने के लिए किया जाता है। ज्ञान और योग द्वारा मन और शरीर के बीच के संतुलन को साधा जा सकता है, जबकि श्रीश्री रविशंकर बताते हैं कि योग और ध्यान के द्वारा व्यक्ति अपनी सांसों पर नियंत्रण रख सकता है। यहां यह भी स्पष्ट करना जरूरी है कि ध्यान का संबंध जहां लोगों के मन से होता है, वहीं योग द्वारा शरीर को साधकर निरोगी काया में तब्दील किया जाता है। वैसे तो योग हम भारतीयों के लिए प्रचीन परंपरा है, मगर योग को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा मिल जाने से इसका महत्व बहुत बढ़ गया है। योग का जो लाभ पहले जहां भारत जैसे देशों तक ही सिमटा हुआ था, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के शुरू होने से अब यह पूरे विश्व समुदाय तक पहुंचने लगा है।

कमजोर विपक्ष, कमजोर लोकतंत्र

लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रचंड बहुमत वाली सरकार का जितना महत्व है, ताकतवर विपक्ष का भी उतना ही महत्व है। कमजोर विपक्ष के दम पर एक सफल और मजबूत लोकतंत्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह विपक्ष ही है, जो सत्ताधारी दल को सत्ता के मद में चूर होने और तानाशाह होने से रोकता है। विपक्ष न सिर्फ सरकार को उसकी जिम्मेदारियों का भान कराता है, बल्कि सरकार को जन-कल्याण के मार्ग पर चलने में सहयोग भी प्रदान करता है। हमारे देश में ऐसे-ऐसे विपक्षी नेता हुए, जिनके नाम आज भी सम्मानपूर्वक लिए जाते हैं। इस कड़ी में अटल बिहारी वाजपेयी, चद्रशेखर, लालू प्रसाद यादव, प्रमोद महाजन, सुषमा स्वराज, शरद यादव, सीताराम येचुरी जैसे अनेक नामों को गिनवाया जा सकता है। बताते हैं कि पहले सदन में जानकार विपक्षी नेता को जीताकर लाने के लिए सत्ताधारी दल द्वारा उसके खिलाफ कमजोर प्रत्याशी खड़ा किया जाता था। अब स्थिति बदलती जा रही है कि संख्या की दृष्टि से यदि देखा जाए तो नरेंद्र मोदी के पहले पांच साल के शासनकाल में विपक्ष कमजोर रहा, दूसरे शासनकाल में भी विपक्ष कमजोर नजर आता है। पिछली बार के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को कुल 44 सीटें मिलने के कारण उसे लोकसभा में विपक्ष के नेता का भी दर्जा नहीं मिल पाया। विपक्ष का नेता बनने के लिए लोकसभा में कम से कम 55 सीटें चाहिए। इस बार भी कांग्रेस को 52 अर्थात् जरूरत की संख्या से 3 सीटें कम मिली है। ऐसी स्थिति में लोकसभा में सत्ताधारी

दल अर्थात भाजपा नीत एनडीए का दबदबा देखने को मिल सकता है। सत्रहवीं लोकसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने 303 सीटों पर जीत हासिल की और अपने पूर्ण बहुमत बनाए रखा और भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने 353 सीटें जीतीं। कांग्रेस पार्टी ने 52 सीटें जीतीं और कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन ने 92 सीटें जीतीं। अन्य दलों और उनके गठबंधन ने भारतीय संसद में 97 सीटें जीतीं। इस बार के चुनावों में भाजपा के प्रति लोगों में जबर्दस्त उत्साह देखा गया। देश की स्वतंत्रता के बाद यह केवल दूसरी बार है जब मतदाताओं ने एक ही पार्टी को लगातार दूसरी बार, पहले से अधिक बहुमत से विजयी बनाया हो। भाजपा ने एक दर्जन प्रमुख और बड़े राज्यों में 50 प्रतिशत से भी अधिक मत प्राप्त किए।

यदि पूरे देश की बात करें तो भाजपा का मत-प्रतिशत 41 प्रतिशत हो गया जो सन 2014 के31 प्रतिशत से 10 प्रतिशत अधिक है। इन चुनावों में कांग्रेस के अध्यक्ष राहुल गांधी, अपने अमेठी से चुनाव हार गए। उन्हें भाजपा की स्मृति इरानी ने लगभग 50 हजार मतों से हराया। इन चुनावों में कांग्रेस के नौ पूर्व मुख्यमंत्रियों समेत ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे कई दिग्गजों को हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस को 18 राज्यों में एक भी सीट नहीं मिली, जबकि बिहार में लालू यादव का राष्ट्रीय जनता दल एक भी सीट पर जीत हासिल नहीं कर पाया। इस चुनाव में भारतीय राजनीति से वंशवाद के नाश के भी संकेत मिल रहे हैं। गांधी परिवार, सिंधिया परिवार, मुलायम परिवार, लालू परिवार, चौधरी चरण सिंह परिवार, हुड्डा परिवार, चौटाला परिवार, देवगौड़ा परिवार आदि को इस चुनाव में भारी धक्का लगा है।

कुल 545 सीटों वाली लोकसभा में पूरे विपक्ष के खाते में 200 सीटें भी नहीं है। यह स्थिति सत्ताधारी दल को लोकतंत्र के सिद्धांत से डिगा भी सकती है। लोकसभा में संतुलन बना रहे, इसकी पूरी जिम्मेदारी अब सत्ताधारी गठबंधन पर आ टिकी है। सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि विपक्ष को अपनी बातों को कहने, सदन पटल पर रखने का पूरा मौका मिले। ऐसा न हो कि विपक्ष की आवाज सत्ताधारियों की ऊंची आवाज में गूम होकर रह जाए। यदि ऐसा हुआ तो इससे लोकतंत्र कमजोर ही होगा।

प्रचंड जनमत

लोकतंत्र में वैसे भी जनमत का महत्व सर्वाधिक होता है, लेकिन बात यदि 130 करोड़ की आबादी वाले भारतीय लोकतंत्र के जनमत की हो तो पूरे विश्व की निगाहें इस पर आकर टिक जाती है। 17वीं लोकसभा के चुनाव देश-दुनिया के लिए कई मायने में ऐतिहासिक कहे जाएंगे। 11 अप्रैल से 19 मई, 2019 तक सात चरणों में हुए लोकसभा के चुनावों में करीब 90 करोड़ अर्थात् देश के कुल मतदाताओं के 67 फीसदी से अधिक मतदाताओं ने उत्साहपूर्ण तरीके से हिस्सा लिया। मतदात के दौरान जहां उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में मतदाता 46 डिग्री सेल्सियस धूप में भी लंबी-लंबी कतारों में खड़े नजर आए, वहीं पश्चिम बंगाल के मतदाताओं ने मतदान केंद्र के बाहर फोड़े जा रहे बम, पुलिस द्वारा चलाई जा रही लाठियां-गोलियों की परवाह किए बिना बेखौफ होकर मतदान किया।

इन चुनावों में जहां एक ओर भारतीय जनता पार्टी को 303 सीटों पर जीत हासिल हुई, भाजपा गठबंधन के नाम 353 सीटें रही, वहीं दूसरी ओर कांग्रेस मात्र 52 सीटों पर ही सिमट कर रह गई। यूपीए गठबंधन के खाते में 91 सीटें आई। भारतीय जनता पार्टी की स्मृति इरानी ने कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को उनकी परंपरागत सीट अमेठी से हरा दिया। 80 सीटों वाले उत्तर प्रदेश में जहां कांग्रेस सिर्फ रायबरेली अर्थात सोनिया गांधी की सीट पर ही जीत दर्ज करा पाई, वहीं दूसरी ओर माया-अखिलेश के महागठबंधन की भारी चुनौती होने के बावजूद भाजपा ने 62 सीटें अपने नाम की। बुआ-बुबुआ गठबंधन को सिर्फ 15 सीट पर ही संतोष करना पड़ा।

यह पहला मौका था, जब नरेंद्र मोदी के पांच साल के शासनकाल के बाद भी देश में कोई सत्ता विरोधी लहर नहीं थी। मतदाता अपने क्षेत्र के उम्मीदवार

को नहीं बल्कि नरेंद्र मोदी को जीताने के लिए घरों से निकले। श्री मोदी ने भी अपनी जनसभाओं में मतदाताओं से यही कहा–आप पांच सेकेंड में 'कमल' का बटन दबाकर जो वोट देंगे, वह वोट न सिर्फ सीधा मेरे खाते में जाएगा, बल्कि पांच साल के लिए आपको मेरा मालिक भी बनाएगा। इसके अलावा मोदी ने जनता को ऐसे–ऐसे नारे दिए जो काम कर गए। 'मोदी है तो मुमकिन है', 'अबकी बार मोदी सरकार', 'अबकी बार 300 पार' जैसे नारे पूरे देश की जुवान पर चढ़े नजर आए। 'मैं भी हूं चौकीदार' के नारे ने तो राहुल गांधी के नारे 'चौकीदार चोर है' की हवा निकालकर रख दी। राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे राज्य में तो कांग्रेस का सफाया हो गया, जहां अभी चार महीने पहले ही उसने वहां अपनी सरकारें बनाई थी। अशोक गहलोत, कमल नाथ को अभी भी यह समझ में नहीं आ रहा है, ऐसा कैसे हो गया। राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, बिहार, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, उडिसा जैसे राज्यों में भाजपा ने न सिर्फ अपने पिछली बार के प्रदर्शन को दोहराया, बल्कि प्रचंड जीत भी हासिल की। उत्तर प्रदेश में बुआ–बबुआ की करारी हार ने तो सभी संभावित उम्मीदों पर पानी ही फेर दिया। तीसरा मोर्चा गठन करने की कवायद में लगे चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी तो सिर्फ तीन सीटों में सिमटकर रह गई। ममता बनर्जी की सीटें भी पिछली बार के मुकाबले घटकर सिर्फ 22 सीट पर ही सिमट कर रह गई।

इस बार के नतीजों ने पंडितों की नींद उड़ा दी है। लेकिन भाजपा की इस प्रचंड जीत के पीछे सिर्फ लोकलुभावन नारे ही नहीं हैं। मोदी सरकार का काम, राष्ट्रीय स्वाभिमान भी छिपा है। गरीबों के लिए जन धन खाते खोलना, उज्ज्वला योजना के तहत गरीबों को मुफ्त में गैस सिलिंडर–कनेक्शन, सौभाग्य योजना के तहत एलईडी बल्व, मुफ्त में बिजली कनेक्शन, प्रधानमंत्री आवास, शौचालय निर्माण, किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों के खाते में दो हजार रुपए की पहली किश्त और इन सबसे ऊपर पुलवामा की घटना के बाद पाकिस्तान के बालाकोट में भारतीय सेना द्वारा की गई एयर स्ट्राइक ने नरेंद्र मोदी के पुन: सत्ता में आने के पथ को प्रशस्त किया। 'घर में घुसकर मारेंगे' जैसी चेतावनी काम कर गई। देशवासियों को लंबे समय से ऐसे ही प्रधानमंत्री का इंतजार था।

ध्यानमग्न नरेंद्र मोदी

भारत का प्रधानमंत्री जब बर्फीले पहाड़ पर बनी एक गुफा में ध्यानमग्न स्थिति में बैठा नजर आए तो यह दृश्य न सिर्फ भारत के लोगों के लिए बल्कि विश्ववासियों के लिए एक कौतुहल और अचरज का विषय हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 18 मई को केदारनाथ धाम में बनी रुद्र गुफा में 17 घंटे तक ध्यान किया। गेरुआ वस्त्र में लिपटे ध्यानमग्न मोदी की तस्वीरें पूरी दुनिया ने देखी। यह पहला मौका था, जब देश के किसी प्रधानमंत्री ने इस तरह से किसी गुफा में जाकर योग साधना की हो। लोकसभा चुनावों के अंतिम चरण के मतदान से दो दिन पूर्व, जब प्रचार अभियान थम गया था। तब 18 मई की सुबह प्रधानमंत्री केदारनाथ पहुंचे। स्लेटी रंग के पहाड़ी परिधान में पहाड़ी टोपी पहने और कमर में केसरिया गमछा बांधे मोदी एक ही अंदाज में नजर आ रहे थे। यहां मंदिर परिसर में पहुंचने पर केदारनाथ के तीर्थ पुरोहितों ने उनका स्वागत किया, जिसके बाद उन्होंने भगवान शिव की पूजा-अर्चना और रूद्राभिषेक किया। करीब आधे घंटे चली इस पूजा के बाद उन्होंने मंदिर की परिक्रमा की और हाथ हिलाकर श्रद्धालुओं का अभिवादन किया। केदारनाथ दर्शन के बाद उन्होंने यहां चल रहे पुनर्निर्माण कार्यों की समीक्षा की। पीएम मोदी ने कहा, अब केदारनाथ में काम ठीक चल रहा है और मैं अपेक्षा करता हूं कि लोग सिंगापुर और दुबई जाने के अलावा केदारनाथ तथा भारत के अन्य जगहों पर भी जाएं क्योंकि अपने देश में भी देखने

लायक काफी कुछ है। उन्होंने कहा कि केदारनाथ में सभी प्रकार की सुख सुविधाएं विकसित हो चुकी हैं और आम पर्यटकों को यहां जरूरत की सारी सुविधाएं उपलब्ध होगी।

इसके बाद वे एक छड़ी के सहारे पहाड़ी चढ़ाई चढ़ते हुए रुद्र गुफा में चले गए और ध्यानमग्न हो गए। केदारनाथ मंदिर से इस गुफा की दूरी मजह 1.5 किलोमीटर है और यहां तक सिर्फ पैदल ही जाया जा सकता है। उनके सामने एक खिड़की मात्र थी, जिसे बाबा केदारनाथ मंदिर के सीधे दर्शन हो रहे थे। यह बात बहुत कम लोगों को मालूम होगी कि रुद्र गुफा निर्माण पहाड़ के चट्टानों को काटकर किया गया है। 5 मीटर लंबी और 3 मीटर चौड़ी यह गुफा 3583 मीटर यानि करीब 12 हजार फीट की ऊंचाई पर है। चुनावी माहौल में इस साधना के जरिए मोदी ने क्या कामना की, जब यह सवाल उनसे किया गया तो उन्होंने बहुत ही अलग जवाब दिया। श्री मोदी से पूछा गया कि आपने जीत की कामना नहीं की, तो इस पर उन्होंने कहा कि मैं जब भगवान के चरणों में आता हूं तो कभी कुछ मांगता नहीं हूं। मैं मांगने की प्रवृत्ति से सहमत भी नहीं हूं क्योंकि उसने (भगवान) आपको मांगने नहीं, देने योग्य बनाया है।

श्री मोदी ने कहा कि उनकी यह साधना मन की शांति, एकाग्रता प्राप्त करने के लिए थी। हर एक व्यक्ति शरीर और मन के बीच संतुलन साधने के लिए भगवान के चरणों में ध्यान लगाता है। श्री मोदी ने अपने इस दौरे के माध्यम से एक ओर जहां देश-दुनिया को ध्यान, योग, साधना का संदेश देने की कोशिश की है, वहीं दूसरी ओर यह भी स्थापित किया है कि उनके जीवन में ध्यान का कितना महत्व है। अपनी व्यस्त दिनचर्या में मोदी का ध्यान-साधना के लिए वक्त निकालना भी उनके स्वशासन को दर्शाता है। वैसे भी नरेंद्र मोदी का केदारनाथ-बद्रीनाथ और ध्यान साधना से पूरा संबंध रहा है। जब वे आरएसएस के साधारण कार्यकर्ता हुआ करते थे, उस दौर में भी उन्होंने अपना काफी समय केदारनाथ की पहाड़ी गुफा-कंदराओं में गुजारा है। उस दौर में भी वे नियमित रूप से केदारनाथ आकर यहां बनी गुफाओं में ध्यान आदि किया करते थे। उनकी 18 मई की केदारनाथ यात्रा इस बात का भी संदेश है कि भारतीय परंपरा और बाबा भोलेनाथ के प्रति आज भी उनके मन में अगाध विश्वास है।

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

पर्यावरण के संरक्षण में महिलाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है। वर्ष 1991 में विश्व बैंक ने पर्यावरण के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा था कि महिलाएं हमेशा से ही पर्यावरण संरक्षण में एक उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन करती आई है। प्राकृतिक संपदा जैसे भूमि, पानी, वन और ऊर्जा के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका सराहनीय है। वे सदैव अपने आसपास के परिवेश-पर्यावरण को लेकर सतर्क रहती हैं। विश्व विख्यात लेखक एसथर बोसेराप (Ester Boserup) ने वर्ष 1960 में अपनी पुस्तक 'वोमेंस रोल इन इकोनॉमिक डवलपमेंट' में पहली बार पर्यावरण की सुरक्षा में महिलाओं की उल्लेखनीय भूमिका का जिक्र किया था। बाद में यह बात पूरे विश्व को न सिर्फ पता चल गई, बल्कि विश्ववासियों ने पर्यावरण के क्षेत्र में महिलाओं की इस उल्लेखनीय भागीदारी को स्वीकार भी किया। ग्रीन बेल्ट मूवमेंट की संस्थापक और महिला अधिकारों के लिए लड़ने वाली प्रसिद्ध केन्याई राजनीतिज्ञ और समाजसेवी वंगारी मथाई ने 1977 में पर्यावरण के लिए अपनी मुहिम शुरू की। वह तब से ही केन्या के अहम लोगों में शुमार रहीं। वह जीवन भर पर्यावरण संरक्षण और अच्छे प्रशासन पर जोर देती रहीं। उनकी संस्था ने पूरे अफ्रीका में 4 करोड़ पेड़ लगाए। उन्हें साल 2004 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। वे नोबेल पुरस्कार पाने वाली पहली अफ्रीकी महिला थीं। 25 सितंबर 2011 को उनकी मौत कैंसर से जूझते हुए नैरोबी के एक अस्पताल में हुई। वर्ष 2006 में उन्हें इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार भी मिला था। वर्ष 2007 में उनको 'इंटरनेशनल अंडरस्टैंडिंग' के लिए नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने मथाई को यह पुरस्कार देते हुए उसे दुनिया में महिलाओं की ताकत का प्रतीक बताया था। इसके अलावा 1992 में भी राष्ट्रसंघ में पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा हुई थी।

हमारे देश के पर्यावरण संरक्षण में भी महिलाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है। हमारे देश की अग्रणी पर्यावरण संरक्षक मेधा पाटकर को भला कौन नहीं जानता। 'नर्मदा बचाओ' आंदोलन का संचालन करने में इनकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात से होकर बहने वाली नर्मदा नदी पर जब छोटे-छोटे बांधों के अलावा सरकार ने सरदार सरोवर बांध बनाने का निर्णय किया तो मेधा पाटकर इसके विरोध में उठ खड़ी हुईं। इस निर्माण कार्य के कारण हजारों आदिवासियों को विस्थापित होना पड़ा और किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। पाटकर ने अपना पूरा आंदोलन नर्मदा आंदोलन में लगाने के लिए अपनी पीएचडी की पढ़ाई अधूरी ही छोड़ दी। हमेशा सादी-सी सूती साड़ी और हवाई चप्पल पहनने वाली पाटकर को नर्मदा घाटी की आवाज के रूप में पूरी दुनिया में जाना जाता है। फर्राटे से अंग्रेजी बोलने वाली मेधा को देखकर यही लगता है कि वे नर्मदा घाटी की एक आम महिला हैं। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित मेधा पाटकर ने महेश्वर बांध के विस्थापितों के आंदोलन का भी नेतृत्व किया।

अंग्रेजी की सुप्रसिद्ध लेखिका और समाजसेवी अरुंधति राय ने भी लेखन के अलावा नर्मदा बचाओ आंदोलन में हिस्सा लिया। अरुंधति राय ने कई फिल्मों में भी काम किया है। 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग' के लिए उनको बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

पेड़ों को काटने से बचाने के लिए ग्रामीण महिलाओं ने वर्ष 1973 में उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में चिपको आंदोलन चलाया था। यह पर्यावरण की रक्षा से जुड़ा आंदोलन था। पेड़ को काटने से बचाने के लिए ग्रामीण महिलाएं उससे चिपकी रहती थी। इस आंदोलन की शुरुआत 1973 में देश के जानेमाने पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा, कामरेड गोविंद सिंह रावत, चण्डीप्रसाद भट्ट तथा श्रीमती गौरा देवी के नेतृत्व में हुई थी। यह आंदोलन किसानों ने वृक्षों की कटाई का विरोध करने के लिए किया था। वे वृक्षों पर अपना परंपरागत अधिकार जता रहे थे।

'चिपको आन्दोलन' का घोष वाक्य था-

'क्या हैं जंगल के उपकार, मिट्टी, पानी और बयार।
मिट्टी, पानी और बयार, जिंदा रहने के आधार'

असम की जीवन रेखा है ब्रह्मपुत्र

तिब्बत में कैलाश पर्वत के निकट जिमा यॉन्गजॉन्ग झील से निकले ब्रह्मपुत्र को असम की जीवन रेखा ऐसे ही नहीं कहा जाता है। इसके किनारे की उपजाऊ भूमि यदि असमवासियों के लिए वरदान है तो इसमें हर साल आने वाले बाढ़ और इसका कटाव श्राप है। इसके बावजूद असमवासी ब्रह्मपुत्र की अनुपस्थिति में जीने की कल्पना तक नहीं कर सकते। करीब 2900 किलोमीटर लंबे ब्रह्मपुत्र के किनारे सिर्फ असम की ही कला-संस्कृति-सभ्यता परवान नहीं चढ़ी है, बल्कि इसके किनारे तिब्बत और बांग्लादेश की कला-संस्कृति भी पली-बढ़ी है। असम में यह ब्रह्मपुत्र, तिब्बत में सांपो, अरुणाचल में दिहिंग कहलाती है। ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश की सीमा में जमुना के नाम से दक्षिण में बहती हुई गंगा की मूल शाखा पद्मा के साथ मिलकर बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती है। गंगा और ब्रह्मपुत्र की संयुक्त धारा 'मेघना' कहलाती है, जिसकी सहायक नदी बराक है। सुवनसिरी, तिस्ता, तोर्सा, लोहित, आदि ब्रह्मपुत्र की उप नदियां हैं। भारतीय नदियों के सभी नाम स्त्रीलिंग में पर 'ब्रह्मपुत्र' एक अपवाद है। संस्कृत में ब्रह्मपुत्र का शाब्दिक अर्थ 'ब्रह्मा का पुत्र' होता है। बोड़ो लोग इसे 'भुल्लम-बुथुर' भी कहते हैं, जिसका अर्थ होता है कल-कल की आवाज निकालना।

ब्रह्मपुत्र आज भी अपने-आप में असीम संभावनाएं छिपाए हुए हैं। ब्रह्मपुत्र के माध्यम से असम को विकास के उच्च शिखर तक पहुंचाया जा सकता है। ठीक से यदि विचार किया जाए तो पर्यटन क्षेत्र को गति देने में ब्रह्मपुत्र एक

उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। तिब्बत से निकला ब्रह्मपुत्र असम के ऊंचे-ऊंचे पहाड़, हरी-भरी घाटियों से होते हुए अपना सफर तय करता है। ब्रह्मपुत्र में नौकायान के जरिए देशी-विदेशी पर्यटकों को असम में चारों ओर बिखरे पड़े प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन कराए जा सकते हैं। असम के डिब्रूगढ़, तेजपुर, गुवाहाटी, ग्वालपाड़ा, धुबड़ी आदि शहर ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे हुए हैं। इन सभी शहरों को जोड़कर बनाया गया एक पर्यटक पैकेज टूर भी लोगों को आकर्षित कर सकता है। ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे ये सभी शहर अपने-अपने तरीके से महत्वपूर्ण है। डिब्रूगढ़ में असम के इतिहास, तेजपुर में कला-साहित्य-संस्कृति, गुवाहाटी में विकास, ग्वालपाड़ा में लोक संस्कृति और धुबड़ी में पुरातत्व महत्व की चीजों को देखा-समझा जा सकता है।

ब्रह्मपुत्र मार्ग से बांग्लादेश होते हुए कोलकाता तक का सफर भी आसानी से किया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए अप्रैल, 2019 के अंत में गुवाहाटी के पांडू घाट से एक अत्याधुनिक पानी जहाज 'एमवी महाबाहु' को कोलकाता के लिए रवाना किया गया। इस जहाज में कुल आठ पर्यटक सवार थे। बांग्लादेश होते हुए कोलकाता तक का यह सफर 16 दिनों का था। सिर्फ पर्यटन ही नहीं, जल-मार्ग यात्रा, बिजली उत्पादन, रोमांचक खेल आदि को बढ़ावा देने में भी ब्रह्मपुत्र एक उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। राज्य सरकार ने ब्रह्मपुत्र की गहराई को बढ़ाने के लिए इसकी खुदाई और इसके दोनों किनारों पर एक्सप्रेस हाई-वे बनाने की भी घोषणा कर रखी है। इस परियोजना पर प्रारंभिक कार्य प्रगति पर है। राज्य सरकार ने वर्ष 2017 में 'नमामी ब्रह्मपुत्र' उत्सव का आयोजन कर इसकी संभावनाओं को खंगालने का एक सराहनीय प्रयास किया था। असम सरकार द्वारा आयोजित ब्रह्मपुत्र नद की महान प्राचीन शोभा का अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव है। असम में आयोजित यह अपनी तरह का पहला नदी-उत्सव था, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया था। देश के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने इस नदी उत्सव का उदघाटन किया था। इसके बाद राज्य सरकार की ओर से बराकघाटी में 'नमामी बराक' उत्सव भी मनाया गया। इस तरह से ब्रह्मपुत्र से जुड़ी संभावनाओं पर अध्ययन कार्य अभी भी चल रहा है। और असमवासियों को इसके सुखद नतीजों का इंतजार है।

किधर जा रही है युवा पीढ़ी

इस बात में कोई शक नहीं है कि भारत युवाओं का देश है। भारत विश्व का ऐसा पहला देश है, जहां आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवा है। यह युवा भी ऐसे हैं, जिनमें प्रतिभा और कार्य कुशलता कूट-कूटकर भरी है। भारत का युवा हर क्षेत्र में आगे है। शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, कला, साहित्य, प्रशासन, राजनीति हर क्षेत्र में भारतीय युवाओं का बोलबाला है। इतने प्रतिभाशाली युवा भारत के समक्ष यदि यह सवाल भी हो कि हमारी युवा पीढ़ी किधर जा रही है जो एक विरोधाभाषी सवाल लगता है। मगर, सवाल तो है और अपनी जगह कायम ऐसा सवाल है, जिसे नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता। यह सवाल युवाओं से जुड़े होने की वजह से एक प्रकार से इसे देश के भविष्य से जुड़ा सवाल कहा जा सकता है।

कार्य-कुशलता के मामले में भले ही हमारे देश का युवा सबसे आगे नजर आते हैं, मगर नैतिकता के मामले में हमारा युवा वर्ग कहां खड़ा है। इस सवाल पर चिंतन करना जरूरी है। पहले हमारे देश के हर एक गांव-शहर में धर्मशाला, शिक्षण संस्थान और धार्मिक स्थल खुला करते थे, आज के दिन धड़ाधड़ वृद्धाश्रम, अनाथालय, पेइंग गेस्ट, हॉस्टल आदि खुलने लगे हैं। इनका खुलना और सफलता पूर्वक संचालित होना इस बात का संकेत है कि भारतीय परिवार में जबर्दस्त टूटन आ रही है। संयुक्त परिवार की अवधारणा तो न जाने कब की टूट चुकी है अब तो एकल परिवार भी बिखरने की कगार पर है। बेटे की शादी होते ही वह अपनी पत्नी के साथ अलग से घर बसाने की सोचने लगता है।

बेटी की शादी होने के बाद भी मां-बाप को इस बात की चिंता खाए रहती है कि पता नहीं कब बेटी ससुराल छोड़ मायके में आकर बस जाए। मैट्रिक की परीक्षा के बाद आगे की पढ़ाई के लिए बच्चों को शहर भेजें तो वह बाद में लौटकर घर आना ही नहीं चाहते। ऐसी स्थिति में मां-बाप बेचारों की सुध कौन ले। असम के ऐसे कई गांव-शहरों का जिक्र किया जा सकता है, जहां की युवा शक्ति महानगर में निवास करती है। ऐसे गांव-शहर में युवाओं की संख्या दिन-ब-दिन कम ही होती जा रही है। जो युवा गांव में रह गए, उनको भी अलग तरह की ही मुसीबतें उठानी पड़ती है। गांव में यदि पैसे हैं तो बच्चों की पढ़ाई के साधन, बुजुर्गों की दवा-इलाज के लिए स्वास्थ्य सेवाएं नहीं है और शहर में यह सब कुछ है तो पर्याप्त पैसे नहीं हैं। इस शहर और गांव के चक्कर में युवा बेचारा खुद ही जब दो पाटन में फंसकर रह गया हो तो वह अपने बुढ़े मां-बाप की सुध कैसे ले। मैं ऐसे बहुत से युवाओं को जानता हूं जो अपने गांव के महलों जैसे घर को छोड़ गुवाहाटी में तबेले जैसे घर (फ्लैट) में रहते हैं। ऐसे फ्लैट में कुल जमा चार आदमी के ही रहने की जगह हो तो युवा अपने मां-बाप को अपने साथ रखने की सोचे भी तो कैसे।

परिवार की टूटन, अकेलापन, काम का दबाव, घर-परिवार चलाने की चिंता और सामाजिक रुतबे को बनाए रखने का मानसिक दबाव न सिर्फ युवाओं की सहनशीलता पर हमलावर है, बल्कि उसके भटकाव का भी कारण बनता जा रहा है। हमारे समाज शास्त्रियों को इस दिशा में मिल-बैठकर चिंतन करना चाहिए कि इस समस्या से निपटने के क्या उपाय हो सकते हैं। आज हमारा समाज, हमारा देश उस दौर से गुजर रहा है, जब एक ही परिवार की तीन पीढ़ी तीन अलग-अलग शहरों में रहकर एक-दूसरे के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश कर रही है। बुढ़े मां-बाप गांव में अकेले, यों कहें तो गांव वालों के भरोसे अपने दिन गुजार रहे हैं। बेटा शहर में रहकर अपनी जरूरतों को पूरा करने की जद्दोजहद में लगा है और गांव में अकेले रह रहे बुढ़े दादा-दादी का इकलौता पोता अथवा पोती देश के किसी मेट्रो शहर का 'पेइंग गेस्ट' बनकर अपने कैरियर को चमकाने में लगी है। ऐसी हालात में यह सवाल दिमाग में उभरे बिना नहीं रहता कि आखिर हमारी युवा पीढ़ी किधर जा रही है।

लोकतंत्र की बुनियाद है मतदान

देश में लोकसभा के चुनाव चल रहे हैं। अब तक हुए दो चरणों के मतदान में मतदाताओं की खासकर युवाओं की भागीदारी प्रशंसा योग्य रही है। लोकतंत्र की सार्थकता ही जन भागीदारी पर टिकी है। मतदान को लोकतंत्र की बुनियाद कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस पूरी चुनाव प्रक्रिया में युवा मतदाताओं की भूमिका विशेष रूप से रेखांकित करने वाली है। हमारे देश में अब पहले वाली बात नहीं रही। देश का युवा पढ़ा-लिखा, समझदार और देश-दुनिया की खबरों पर नजर रखने वाला है। युवा वर्ग को न तो प्रलोभित किया जा सकता है और न ही बरगलाया जा सकता है। संभवत: यही कारण है कि 30 साल बाद वर्ष 2014 में हमारे देश में पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनी। वर्ष 2014 में भारतीय जनता पार्टी को 282 और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन को 336 सीटें मिली। इस बार एक बार फिर देश में चुनावी समर शुरू हो चुका है और सभी पार्टियों की नजरें युवा खासकर पहली बार मतदान करने वालों पर टिकी हुई है। इस साल केचुनावों में कुल 89.9 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे, इनमें 1.6 करोड़ नए मतदाता हैं, जिनकी उम्र 18 से 19 साल के बीच है।

देश के विभिन्न राज्यों में अब तक दो चरणों का मतदान हो चुका है और पांच चरणों के चुनाव बाकी बचे हैं। अब तक हुए दो चरणों के मतदान में युवाओं की भागीदारी को देखकर कहा जा सकता है कि हमारे देश का भविष्य गंभीर सोच रखने वाले समझदार नागरिकों के हाथों सुरक्षित है। लोकतंत्र को तभी सफल माना जाता है, जब उसके नागरिक, मतदाता अपना राष्ट्रीय धर्म निभाने के प्रति जागरूक और तत्पर हों। हमारे देश में मतदान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इस प्रक्रिया में अमीर-गरीब, शिक्षित-अनपढ़ सभी का

मान बराबर होता है और कहा जाए तो देश का हर एक मतदाता चुनाव वाले दिन देश का राजा होता है। लोकतंत्र में भी प्रजा को राजा कहा गया है। कोई यदि इस बात के मर्म को समझना चाहे तो उसे भारत में हर पांच साल के अंतराल पर होने वाले लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया को जानने-समझने के लिए हमारे देश का चक्कर जरूर लगाना चाहिए। मतदान वाले दिन देश के प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री से लेकर एक गरीब आदमी तक आपको मतदाताओं वाली कतारों में दिख जाएंगे। 125 करोड़ की आबादी वाले देश में 90 करोड़ मतदाताओं की साझेदारी से सफलतापूर्वक और सर्वमान्य सरकार का चुनाव कर लेना कोई मामूली बात नहीं है। इस काम को सफल बनाने के लिए राष्ट्रीय चुनाव आयोग की अगुवाई में देश भर में राज्य सरकारें, गृह मंत्रालय, केंद्र सरकार, विभिन्न राजनीतिक पार्टियां महीनों पहले से चुनावी प्रक्रिया में जुट जाती है। भारतीय चुनाव प्रक्रिया को विश्व भर में सम्मान की नजरों से देखा जाता है। वैसे भी सभी को पता है कि भारत विविधता वाला देश है। यहां सैकड़ों जाति-जनजाति, अनेकें धर्म, वर्ण, संप्रदाय, कितनी ही भाषा, बोलियों के लोग पहाड़, रेगिस्तान, जंगल, शहर, गांव, नगर, महानगरों में रहते हैं। पूरे पांच साल तक अपनी-अपनी पहचान के दायरे में कैद लोग जब देश में चुनाव आते हैं तो एक ही पल में भारतीयता की छतरी के नीचे आकर खड़े हो जाते हैं। यही बात है जो भारत को अन्य देशों से अलग एक महान देश बनाती है। वैसे तो लोकतंत्र में प्रजा को ही राजा कहा जाता है, लेकिन प्रजा का अधिकार मतदान केमाध्यम से अपना प्रतिनिधि भर चुनने का है, वहीं प्रतिनिधि आगे चलकर देश की संसद में जाकर देश संचालन के नियम-कायदे बनाता है। इस लिहाज से अगर देखा जाए तो मतदान प्रक्रिया को लोकतंत्र की सबसे गंभीर प्रक्रिया कहा जाता है। भूल से भी मतदाताओं ने यदि गलत अथवा अयोग्य व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि चुन लिया तो इससे न सिर्फ सरकार, बल्कि लोकतंत्र भी कमजोर हो सकता है। इसीलिए मेरा सभी मतदाताओं से अपील है कि मतदान जरूर करें और सही व योग्य व्यक्ति के पक्ष में मतदान कर देश और देश के लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करें।

स्वच्छ हवा : सौ बीमारी की एक दवा

स्वच्छ और साफ हवा में सांस लेना प्राणी मात्र का बुनियादी अधिकार है। स्वच्छ और साफ हवा के बिना इंसान का जिंदा रहना तो दूर रहा परिंदों का पर मारना भी मुश्किल है। कहते हैं, स्वच्छ हवा अपने-आप में सौ बीमारियों की दवा होती है। संभवत: इसीलिए गांव की हवा को शहर की दवा के बराबर बताया गया है। लेकिन क्या हम विश्ववासी स्वच्छ और साफ हवा में सांस ले पा रहे हैं। विश्व के प्राणी मात्र को स्वच्छ हवा नसीब हो रही है। ऐसे सवालों के जवाब 'नहीं' में होना यह बताता है कि हम कैसी दुनिया में रह रहे हैं। बढ़ते उद्योग-कारखाने, वाहन, जहाज-हवाई जहाज आदि ने हमारे जल-थल-नभ तीनों को ही प्रदूषित कर रखा है। विश्व के पर्यावरण शास्त्रियों को इस समस्या ने खासा चिंतित कर रखा है, लेकिन फिलहाल इस समस्या का हल कहीं नजर नहीं आता। पिछले दिनों पहले उपग्रह रोधी हथियार का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण के बाद ही देशवासियों को पता चल पाया कि अंतरिक्ष में भी कचरा फैला हुआ है। यह कचरा इस भारतीय प्रक्षेपण से ही फैला है, ऐसी बात नहीं है। अंतरिक्ष में उससे पहले किए गए विभिन्न प्रक्षेपण का कचरा पहले से ही मौजूद है।

वैसे तो असम सहित पूर्वोत्तर राज्य अभी तक इस समस्या से दूर है। चारों

ओर फैली पहाड़ियां, हरी-भरी वादियां, नदी-झरने, तालाब, मैदान सब कुछ है यहां, मानों प्रकृति ने अपना सारा खजाना यहीं लूटा दिया हो। लेकिन गुवाहाटी की हवाओं में घुलता प्रदूषण हमारे भविष्य के लिए बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। महानगर की सड़कों पर दौड़ते वाहनों की कतारें, महानगर के आसपास स्थित कारखाने, ईंट-भट्टों की चिमनियों से निकलता काला धुआं हर रोज हवा में जहर घोलने का काम करता है। आजकल गुवाहाटी की सड़कें भी रात भर जागती रहती हैं। इन सड़कों पर रात 12 बजे भी वाहनों की उतनी ही कतारें लगी रहती है, जितनी दोपहर 12 बजे लगी रहती है। महानगर की जहरीली होती हवा ने पूर्वोत्तर के अन्य शहरों के लोगों को भी अभी से संभल जाने की चेतावनी दे दी है। जहरीली हवाओं की वजह से दमा, सांस, दिल, नेत्र आदि से संबंधित बीमारियों के मरीजों की संख्या भी बढ़ने लगी है। प्रदूषित हवा को भी ऐसी बीमारियों की एक प्रमुख वजह बताया जाता है। जहरीली हवा में लगातार सांस लेते रहने की वजह से दमा और कभी-कभी तो टीवी जैसी बीमारी भी हो सकती है। प्रदूषित हवा का सबसे अधिक गहरा असर छोटे-छोटे स्कूली बच्चों पर पड़ता है। मोटे-मोटे शीशे के चश्मे लगाए बच्चे अक्सर हमें दिख जाते हैं। इसके अलावा त्वचा से संबंधित बीमारी, बालों का समय से पहले सफेद होना अथवा झड़ना प्रदूषित हवा की वजह से ही होता है। ऐसी बात नहीं है कि हम सभी मिलकर इस समस्या का हल नहीं निकाल सकते। भले ही हम जहरीली हवा को पूरी तरह से साफ नहीं कर सकते, मगर इस समस्या से उत्पन्न खतरे को तो कम कर ही सकते हैं। वृक्षारोपण, वाहनों के कम उपयोग और घर से बाहर निकलते समय माउथ-मास्क का उपयोग कर हम जहरीली हवा के उत्पादन और सेवन पर कुछ हद तक अंकुश लगा सकते हैं। हमारे समाज में अक्सर देखा जाता है कि एक ही कार्यालय में जाने के लिए एक ही परिवार अथवा बिल्डिंग के लोग एकाधिक वाहनों का उपयोग करते हैं। वह लोग यदि किसी एक व्यक्ति के वाहन में बैठकर कार्यालय आदि में जाने लगे तो बाकी बचे वाहनों से होने वाला प्रदूषण अपने आप कम हो जाएगा। इसके अलावा अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर हम हवा में घुलते कार्बन डाई ऑक्साइड को कम कर ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ाने में मददगार साबित हो सकते हैं।

भारत ने आंतरिक्ष में भी लहराया अपना परचम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 मार्च, 2019 की दोपहर राष्ट्र के नाम संबोधित करते हुए देशवासियों को बताया कि पहले उपग्रह रोधी हथियार का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण कर भारत विश्व के उन चार देशों के समूह में शामिल हो गया है, जिनके पास यह क्षमता है। अब तक ऐसी शक्ति केवल अमेरिका, रूस और चीन के पास थी। भारतीय मिसाइल ने प्रक्षेपण के तीन मिनट के भीतर ही लो अर्थ ऑर्बिट में एक सैटेलाइट को मार गिराया। इसके साथ ही अंतरिक्ष में मार करने की क्षमता हासिल करने वाले देशों की सूची में भारत भी शामिल हो गया। लो अर्थ ऑर्बिट धरती के सबसे पास वाली कक्षा होती है। यह धरती से 2000 किमी ऊपर होती है। धरती की इस कक्षा में ज्यादातर टेलीकम्युनिकेशन सैटेलाइट्स को रखा जाता है। अपनी एंटी सैटेलाइट (ए सैट) के द्वारा अब भारत अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम को सुरक्षित रख सकेगा। इसरो और डीआरडीओ के संयुक्त प्रयासों से इस मिसाइल को विकसित किया गया है। भारत के इस कार्यक्रम का नाम 'मिशन शक्ति' रखा गया है। भारत का 'मिशन शक्ति' अंतरिक्ष में देश की संपदा को सुरक्षित रखना है। भारत ने इस शक्ति को पाने के लिए खूब मेहनत की। अग्नि 5 मिसाइल के सफल परीक्षण के समय ही कई विशेषज्ञों ने यह संभावना जताई थी कि भारत के पास अंतरिक्ष में मार करने की क्षमता है। लेकिन, उस समय आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की गई थी। चीन और अमरीका पहले से ही इस क्षमता से लैस होने के कारण भारत की चिंताएं वैसे ही बढ़ी हुई थी। साल 2007 में चीन ने जब अपने एक खराब पड़े मौसम उपग्रह को मार गिराया तब भारत की चिंता बढ़ गई थी। उस समय इसरो और डीआरडीओ ने संयुक्त रूप से ऐसी एक मिसाइल को विकसित करने की दिशा में अपने प्रयास तेज कर दिए थे। अंतर्राष्ट्रीय पाबंदियों और जिम्मेदार देश होने

के कारण भारत ने पहले इस क्षमता को हासिल होने के बारे में कोई पुष्टि नहीं की थी। लेकिन वर्तमान में बढ़ते सामरिक खतरों को देखते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विश्ववासियों के समक्ष इस मिसाइल के सफल परीक्षण की घोषणा करने के साथ यह भी जानकारी दी कि अब भारत भी इस प्रकार के विशिष्ट क्लब में शामिल हो गया है।

भारत ने विश्ववासियों के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया है कि यह क्षमता एक निवारक है और किसी भी राष्ट्र के खिलाफ निर्देशित नहीं है। इस सफल परीक्षण के बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने एक बयान जारी कर कहा कि पृथ्वी की निचली कक्षा में परीक्षण किया गया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि परीक्षण से उत्पन्न मलबा कुछ ही सप्ताह में पृथ्वी पर वापस आ जाए।

वहीं दूसरी ओर इस सफलता के करीब एक सप्ताह बाद अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने हमारे देश द्वारा किए गए इस परीक्षण को बेहद भयानक बताया है। नासा ने मिशन शक्ति को लेकर कहा है कि इस परीक्षण के कारण अंतरिक्ष की कक्षा में मलबे के करीब 400 टुकड़े फैल गए हैं। भारत के इस कदम से अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) में मौजूद अंतरिक्ष यात्रियों के लिए नया खतरा पैदा हो गया है। हालांकि सच्चाई यह भी है कि तीन महाशक्तियों द्वारा पूर्व में जो प्रयोग किए थे, उनमें इससे कहीं ज्यादा मलबा अंतरिक्ष में फैल चुका है। वहीं भारत ने नासा के उक्त दावे को सिरे से ही खारिज कर दिया है। डीआरडीओ के पूर्व चीफ वीके सारस्वत ने कहा, 'यह एक महज काल्पनिक बयान है। यह भारत की प्रगति के साथ डील करने का अमेरिका का अपना तरीका है। जहां तक हमारे ए सैट मिसाइल टेस्ट का सवाल है, इन सभी ऑब्जेक्ट्स में पर्याप्त गति नहीं है जिससे ये लंबे समय तक स्पेस में टिक सके। ए सैट टेस्ट के बाद 300 किमी की ऊंचाई पर बने मलबे बिना ऊर्जा या गति के आखिरकार गिरकर पृथ्वी के वातावरण में जलकर नष्ट हो जाएंगे।' स्पेस के मौजूदा मलवे पर सारस्वत ने कहा, स्पेस में पहले से ही लाखों मलबे मौजूद हैं, क्या किसी को उनसे खतरा नहीं है? कुल मिलाकर इस सफलता के बाद भारत जल, थल, नभ, परमाणु क्षेत्र के साथ-साथ अंतरिक्ष में भी अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम हो गया है।

गहराता जल संकट

यह जानते हुए कि जल ही जीवन है, हम न त जल के संरक्षण के प्रति सचेत हैं और न ही जल-दोहन को लेकर गंभीर। हमारी इसी उदासीनता का नतीजा है कि आज ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे गुवाहाटी महानगर के कई इलाके जल संकट के दौर से गुजर रहे हैं। हर साल गर्मी का मौसम आते ही यह समस्या और अधिक गंभीर हो जाती है। महानगर के नए-नए इलाकों में दो बूंद पीने के पानी के लिए संघर्ष शुरू हो जाता है। यह स्थिति सिर्फ गुवाहाटी की हो, ऐसी बात नहीं है। देश के सभी महानगर और बड़े-छोटे शहर इसी समस्या से जूझ रहे हैं। सभी महानगरों में कृत्रिम बाढ़ और पेयजल की किल्लत जल से जुड़ी दो अलग-अलग समस्याएं प्रस्तुत करती है। यह स्थिति बहुत पहले से चली आ रही है, ऐसी बात नहीं है। इसके लिए न तो प्रकृति जिम्मेदार है और न ही यह कोई लाइलाज बीमारी है। इन सारी समस्या की जड़ भी हम हैं और निदान भी हम हैं। गुवाहाटी जैसे महानगरों में कंक्रीट के जंगल खड़े होने की वजह से बरसात का पानी भू-गर्भ में अंदर तक जा ही नही पाता। इंसानों के आवास की समस्या ने सार्वजनिक जलाशय आदि को भी लील लिया है। इस वजह से एक ओर जहां बरसात का पानी नालियों-गटर में बह जाता है, वहीं दूसरी और फ्लैट-अपार्टमेंट, उद्योग-कारखाने आदि में क्षमता से अधिक जलदोहन होने के कारण भूगर्भ में जल का स्तर गिरता ही जा रहा है। पहले जहां जमीन में सौ मीटर की गहराई में जहां जलधारा मिल जाया करती थी, आज सात-आठ सौ मीटर तक बोरिंग करने के बाद भी जलधारा नहीं मिलती। बेंगलुरू शहर का जल संकट आने वाले दिनों में हमारे देश की एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आ सकता है। हम सभी जल संरक्षण पर ध्यान देकर इस समस्या का समाधान निकाल सकते हैं। इसके लिए संबंधित सरकारी विभाग भी हमें सलाह-मशविरा के साथ ही अन्य सभी प्रकार का सहयोग दे सकता है। इन सबके लिए सबसे पहले जरूरी है कि लोगों को इस बारे में जागरूक किया जाए, उनको बताया जाए कि जल

ही जीवन है। बिना जल के जिंदा रहने की कल्पना तक नहीं की जा सकती। इसके लिए विभिन्न गैर सरकारी समाजसेवी संस्थानों को आगे आना होगा और स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करनी होगी। हमारे पास जब भगवान का दिया 'ब्रह्मपुत्र' नामक वरदान है तो हमें ब्रह्मपुत्र के जल उपयोग के बारे में भी चिंतन करना पड़ेगा। राज्य सरकार केंद्र व अन्य संबंधित एजेंसियों के साथ मिलकर इस बारे में परियोजना बनाए और ब्रह्मपुत्र के पानी का दोहन-शोधन कर उसे पेयजल के रूप में महानगरवासियों के घरों तक पहुंचाए। गुवाहाटी में जापानी कंपनी 'जाईका' पिछले कई सालों से ऐसी एक योजना पर काम भी कर रही है। सरकार को चाहिए कि वह जाईका द्वारा हाथों में ली गई योजना को लाल फीताशाही में उलझने से बचाए। कहा जा रहा है कि इस योजना के पूरा होने पर महानगरवासियों के घरों तक पीने का पानी पहुंचने लगेगा।

गुवाहाटी की ही बात करें तो पिछले दो दशकों में गुवाहाटी की जनसंख्या में गजब की बढ़ोतरी हुई है। जनसंख्या बढ़ी तो उसके साथ-साथ पानी का उपयोग भी अधिक होने लगा, लेकिन जल संरक्षण कम होता चला गया। एक अपुष्ट आंकड़े के अनुसार आज के दिन 9.57 लाख लोग 328 वर्ग किलोमीटर में फैली गुवाहाटी में निवास कर रहे हैं। सरकार अब गुवाहाटी महानगर के दायरे को बढ़ाने और राजधानी के विस्तार पर विचार कर रही है। सरकार की इस सोच को लेकर जनता में गुस्सा है। जनता गुवाहाटी का विकास चाहती है, लेकिन जल संकट जैसी समस्याओं का निदान भी चाहती है। महानगर की बड़ी आबादी आज के दिन पानी खरीदकर पीती है। एक दिन यही समस्या जनाक्रोश का कारण बन सकती है। ऐसे में राज्य सरकार समय रहते ही कुछ सोच-विचार ले तो बेहतर होगा।

जहां तक असम की बात है तो गुवाहाटी को छोड़ अन्य कहीं अभी तक जल संकट की स्थिति पैदा नहीं हुई है। लेकिन आने वाले दिनों में ऐसी समस्या पैदा नहीं होगी, यह भी नहीं कहा जा सकता। लिहाजा हमारे सचेत होने का समय अब आ गया है, अगर हम समय रहते ही सचेत नहीं हुए तो यह समस्या राज्य के अन्य बड़े शहरों में भी फैल सकती है।

पाक की शह पर भारत में चल रहा है आतंक का खेल

यह बात किसी से भी छिपी नहीं है कि हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान की शह पर भारत में आतंक का खेल चल रहा है। इतिहास पर नजर डालें तो पाकिस्तान अपने जन्म के बाद से ही भारत को अस्थिर करने में लगा है। जम्मू-कश्मीर को भारत से हड़प लेने के लिए पाकिस्तान के जनक कहे जाने वाले मोहम्मद अली जिन्ना ने लाख प्रयास किए थे, लेकिन वे कामयाब नहीं हो पाए। अपनी इसी नाकामी का बदला लेने के लिए पाकिस्तान तब से भारत के पीछे पड़ा है। वर्ष 1971 की 26 मार्च को जब पाकिस्तान से टूटकर बांग्लादेश बना, उसके बाद से तो पाकिस्तान भारत को परेशान करने में कोई कमी नहीं रख छोड़ी है। पाकिस्तान के शह पर भारत पर किए गए आतंकी हमलों की यदि सूची बनाई जाए तो यह बहुत लंबी होगी। मुंबई ब्लास्ट से लेकर संसद पर हमला, पठानकोट सैन्य छावनी पर हमला, उरी सैनिक शिविर पर हमला, पठानकोट अटैक ऐसे कई हमले हैं, जो आज भी भारतवासियों के जेहन में ताजे हैं। ऐसे हमले होते हैं तो भारत विश्व-दरबार में जाकर हो-हल्ला मचाता है, पाकिस्तान को सबूत सौंपता है। कुछ दिन तक पाकिस्तान के साथ संबंध तोड़ लेता है, लेकिन बाद में सब कुछ पहले जैसे ही चलने लगता है। यह बात अब किसी से भी छिपी नहीं है कि पाकिस्तान में भारत के साथ जिहाद छेड़ने के नाम पर सौ से अधिक आतंकी संगठन सक्रिय हैं, वह भी पाकिस्तानी सेना व आवाम के सहयोग से। दरअसल पाकिस्तान भारत के साथ दुश्मनी करने में ही अपनी जीत देखता है। उसे इस बात का अहसास भी नहीं है कि भारत के साथ दुश्मनी निभाने के चक्कर में पाकिस्तान आज पूरी तरह से बर्बाद हो चुका है। भारत और पाकिस्तान एक ही दिन अलग हुए थे। भारत की जनसंख्या भी पाकिस्तानी जनसंख्या से कहीं अधिक है। लेकिन भारत जहां एक ओर विकास की बुलंदियों को छू रहा है,

वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान अपनी बदहाली के दिन गिन रहा है।

पाकिस्तान के मन में इस बात को लेकर भी क्षोभ है कि उसका पड़ोसी देश भारत इतना समृद्धि और बलशाली कैसे हो सकता है। भारत में चाहे किसी भी पार्टी की सरकार रही हो, सभी ने पाकिस्तान के साथ न सिर्फ दोस्ताना रिश्ते की वकालत की, बल्कि कोशिशें भी की मगर उधर से जवाब हमेशा गोलियों की शक्ल में आया। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी और पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो के आत्मीय संबंधों को पूरे विश्व भर में सम्मान के साथ देखा जाता है, लेकिन यह दोस्ती दोनों देश की दोस्ती को प्रगाढ़ करने के काम नहीं आई। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जब बस में सवार होकर लाहौर पहुंच गए थे, लेकिन उनकी इस दोस्ताना बस यात्रा का जवाब भी पाकिस्तान की ओर से कारगिल की लड़ाई के तौर पर दिया गया। मनमोहन सिंह के शासनकाल के दौरान मुंबई में किया गया आतंकी हमला आज भी भारतवासियों के जेहन में ताजा है। वर्ष 2008 की 26/11 को हुए इस अटैक में कम से कम 178 लोग मारे गए थे और 300 से अधिक लोग घायल हुए थे। इस घटना से देशवासियों की आंखों में मारे गुस्से के लहू उतर आया था लेकिन इसके जवाब में हुआ कुछ नहीं। तब की केंद्र सरकार न तो पाकिस्तान पर दबाव ही बना पाई और न ही पाक में बैठे मुंबई अटैक के गुनाहगारों को भारत वापस ला पाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के सभी प्रमुखों को न्यौता देकर यह संदेश एक बार फिर देने की कोशिश की थी कि भारत अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ अच्छे संबंध चाहता है। फिर प्रधानमंत्री मोदी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मिलने बिन बुलाए मेहमान की तरह अचानक लाहौर भी हो आए, लेकिन पाकिस्तान की ओर से इसका जवाब पठानकोट के सैन्य छावनी पर हमले के रूप में मिला। पाकिस्तान द्वारा पठानकोट हमले के गुनहगारों को सजा दिलाने का आश्वासन दिए जाने पर पाक सैन्य अधिकारियों को पठानकोट सैन्य छावनी का मुआयना तक करने दिया गया, लेकिन नतीजा शून्य निकला। अब पुलवामा के हमले ने पूरे देश को झंकझोर कर रख दिया और अब देशवासी आर-पार की लड़ाई चाहते हैं ताकि पाक जैसे आतंक प्रेमी राष्ट्र को उसकी औकात बताई जा सके।

एनआरसी

राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) का 30 जुलाई, 2018 को अंतिम मसौदा जारी कर दिया गया। इसी के साथ जहां एक ओर दिसपुर से दिल्ली तक के गलियारे में राजनीति उफान पर है, वहीं दूसरी ओर धुबड़ी से सदिया के लोगों में चिंता और तनाव का माहौल है। एनआरसी की अंतिम सूची जारी होने में अभी भी कम से कम पांच महीने देर हैं। इस अवधि को उच्चतम न्यायालय बढ़ा भी सकता है। अंतिम मसौदा सूची में कुल 3,29,91,384 लोगों में से 2,89,83,677 लोगों के नाम शामिल किए गए हैं और 40,07,707 लोगों को बाहर रखा गया है। केंद्र सरकार, राज्य सरकार और एनआरसी के राज्य संयोजक प्रतीक हाजेला बार-बार यह बात कह रहे हैं कि यह मसौदा एनआरसी की अंतिम सूची नहीं है। जिनके नाम सूची में शामिल होने से रह गए हैं, उन सभी को एनआरसी अधिकारी बताएंगे कि उनके नाम मसौदा सूची में क्यों नहीं

शामिल किए गए और उसके बाद उनको अपने-अपने दावे-शिकायतों को दर्ज करा एनआरसी में नाम शामिल करने का मौका मिलेगा। इसके बाद भी यदि किसी का नाम सूची में शामिल नहीं होता है तो उसके लिए न्यायालय के दरवाजे खुले हुए हैं।

एनआरसी के अंतिम मसौदे में 40 लाख से अधिक लोगों के नाम दर्ज नहीं होने का मतलब यह नहीं है कि ऐसे सारे लोग बांग्लादेशी हो गए। हो सकता है जब एनआरसी की अंतिम सूची जारी की जाएगी, तब तक इन 40 लाख लोगों में से कई लाख लोगों के नाम एनआरसी में शामिल हो चुके होंगे। राज्य सरकार और केंद्र सरकार का कहना है कि किसी एक भी भारतीय का नाम एनआरसी में शामिल होने से छूटेगा नहीं, जबकि आसू सहित तमाम संगठनों की मांग है कि सरकार यह सुनिश्चित करे कि एक भी विदेशी का नाम एनआरसी में शामिल न हो पाए। अभी जबकि दावे और शिकायतें निष्पादित होनी है, बहुत से लोगों के नाम एनआरसी में शामिल होंगे, लिहाजा अभी यह कहना ठीक नहीं होगा कि 40 लाख लोगों को बांग्लादेशी करार दे दिया गया है और न ही इसको लेकर ओछी राजनीति की जानी चाहिए। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी, बसपा अध्यक्ष मायावती बहन जी जैसे लोग असम की एनआरसी को लेकर घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं, जबकि इनको असम के लोगों से कोई लेना-देना नहीं है। मायावती ने तो आज तक असम के दर्शन भी नहीं किए होंगे। ममता बनर्जी का यह बयान की एनआरसी को लेकर देश में 'गृह युद्ध' पैदा हो जाएगा, उनकी राजनीति मंशा को दर्शाता है। एनआरसी को लेकर दोनों सदनों में चर्चा के नाम पर जमकर बहसबाजी हुई। कांग्रेस के गुलामनबी आजाद ने इस मुद्दे को मानवता से जोड़ते हुए इस पर किसी भी प्रकार की राजनीति न करने की बात कही तो भाजपा अध्यक्ष ने राज्यसभा में एनआरसी को पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष तथा प्रधानमंत्री राजीव गांधी का सपना बताकर कांग्रेस को बैकफुट पर लाकर खड़ा कर दिया। हालांकि उनके इस बयान पर संसद में जमकर हंगामा हुआ कि कांग्रेस की हिम्मत नहीं थी, भाजपा ने एनआरसी लाने की हिम्मत दिखाई। इन सब के बीच राज्य की राजनीति में वैसा भूचाल नजर नहीं आता। पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने एनआरसी को अपना मानस पुत्र बताते हुए इसके अद्यतन कार्य में मीन-मेख

निकाली। मालूम हो कि श्री गोगोई के शासनकाल में सन् 2015 के मई के अंत से एनआरसी की आवेदन प्रक्रिया शुरू हुई थी। एनआरसी को लेकर पिछले कई दशकों से आंदोलन कर रहे अखिल असम छात्र संघ ने इस पर जरूर खुशी जताते हुए इसका स्वागत किया। आसू सलाहकार डॉ. समुज्ज्वल कुमार भट्टाचार्य ने इसके लिए उच्चतम न्यायालय, एनआरसी अद्यतन के काम में लगे 55 हजार अधिकारी-कर्मचारी, श्री हाजेला सहित तमाम राज्यवासियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि 40 लाख से अधिक लोग मसौदा सूची में शामिल किए जाने के अयोग्य पाए गए हैं। पूर्व की केंद्र सरकार असम में 50 लाख बांग्लादेशी घुसपैठियों के होने की बात संसद में कह चुकी है। ऐसे में आसू इस बात की समीक्षा करेगी कि एनआरसी के अंतिम मसौदे से बाहर हुए लोगों की संख्या 50 लाख के आंकड़े को क्यों नहीं छू पाई। इन सब के बीच अखिल भारतीय संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (एआईयूडीएफ) के प्रमुख तथा धुबड़ी के सांसद मौलाना बदरुद्दीन अजमल ने जिनके नाम मसौदा सूची में शामिल होने से रह गए हैं, वैसे सभी को हर प्रकार की मानवीय-कानूनी सहायता देने की बात कही है। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि एनआरसी असम के भविष्य को तय करेगी, लिहाजा इसको लेकर किसी को भी बिना वजह की राजनीति नहीं करनी चाहिए।